

ग्रन्थ-संख्या—६८

प्रकाशक तथा विजेता

भारती-भण्डार

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

वि० १९६,

मूल्य ४।।)

मुद्रक—

कृष्णाराम मेहता

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

१—सूफ़ी शब्द

इस शब्द के सम्बन्ध में बहुत सी धारणाएँ बन गई हैं। किसी की धारणा है कि यह फ़िर्का कम्बल (सूफ़) पहनता था इसी कारण इन्हें यह नाम दिया गया। एक दूसरा मत है कि इनके पूर्वज अहले सुफ़का अर्थात् हज़रत साहब के साथी थे इसीलिये यह सूफ़ी कहे जाने लगे। मेरी व्यक्तिगत धारणा है कि सूफ़ी का उद्गम फ़ैल सूफ़ (Philosophy) से है जिसका मूल अर्थ ज्ञान है।

इस सम्प्रदाय का हज़रत अली अर्थात् मुहम्मद साहब के दो सौ वर्ष बाद से अधिक विकास हुआ। इनके स्वतन्त्र विचारों के कारण इन पर अत्याचार बढ़ते गए परन्तु कुछ समय के उपरान्त इनके उच्च विचारों के कारण बहुतों ने इस सम्प्रदाय का आश्रय लिया और इसके सिद्धान्तों को समझ कर औरों को समझाने का प्रयत्न किया।

सूफ़ी विशेष रूप से ईरान का ही मत नहीं है। अपने वेदान्ती, भक्ति-मार्गी, कुछ अंशों में बौद्ध तथा पश्चिमीय रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय वाले सूफ़ियों से विशेष भिन्न नहीं हैं। मूलतः सब एक ही हैं परन्तु भिन्न भिन्न देशों में उनके नामकरण भिन्न हो गये हैं। वास्तव में वे सभी सत्य के अन्वेषक और अलौकिक प्रेम के भिक्षुक हैं।

२—सूफ़ी कौन हैं ?

सूफ़ी दिव्य प्रेम के भिक्षुक हैं। न इन्हें कुकू से मतलब है न ईमान से, क्योंकि दोनों का यह ढोंग मानते हैं। संसार में हर ओर ढोंग देख कर तथा किसी को बंटा बजाते और किसी को वनावटी माला जपते देख कर इन का मन विरक्त हो उठता है। वे इन सब बाहर के बन्धनों को तोड़ कर पूजा जप और माला के पाखण्ड से बच कर अपने प्रियतम की खोज में ही तन्मय रहना चाहते हैं।

सूफ़ी के निकट मतमतान्तर ऊँच नीच, हिन्दू मुसलमान आदि का कोई मूल्य नहीं। वह तो संसार की विविधता में एकता देखता है, जहाँ कहीं उसे अपने प्रियतम का आभास मिल जाता है वहाँ वह मस्तक झुका देता है। अपने मज्दब के सम्बन्ध में एक सूफ़ी ने कहा है :

“मर्द आशिक रा न वाशद इल्लते,
आशिकां रा न देहे मिल्लते।
मज्दबे इश्क अज्र हमा दीनहा जुदास्त,
आशिक रा मज्दब व मिल्लत खुदास्त।”

अर्थात् प्रेमी का लगाव संसारो इल्लत से परे है। उसका मज्दब कोई नहीं। सब दीनों में अलग वह केवल भगवत प्रेम ही से सरोकार रखता है।

यही वह अपने जीवन से बतलाना चाहता है। उसके निकट प्रेम ही साधन है प्रेम ही साध्य है। सूफ़ी उस परदे को हटाने का प्रयत्न करता है जो दैवी प्रेम को छिपाये है और अपने उद्देश्य को प्रेम ही द्वारा पहुँचता है। अपनेपन को नष्ट करके, वह परमात्मा से मिलने की इच्छा रखता है। जहाँ एक बार वह परदा उठा कि वह प्रेम के अर्थ को जान जाता है, और उसमें तन्मय हो हरिभजन के आनन्द में डूबा अपने दिन बिता देता है।

३-—सूफ़ी मत के मूल सिद्धान्त

सूफ़ी का प्रमुख ध्येय अपने अहं को मिटाना है। हमने ने इसी को एक उदाहरण द्वारा बताया है :

“ किसी ने प्रियतम के दरवाजे पर जाकर खटखटाया। अन्दर से एक आवाज ने पूछा ‘तू कौन है?’ उस ने कहा ‘मैं’। आवाज ने कहा ‘इस घर में ‘मैं’ और ‘तू’ दो नहीं समा सकते’। और दरवाजा नहीं खुला। वह दुःखी प्रेमी वापिस जंगल में तप करने चला गया। साल भर कठिनाइयाँ सह कर वह लौटा और उसने फिर दरवाजा खटखटाया। फिर उससे वही प्रश्न किया गया ‘तू कौन है?’ प्रेमी ने जवाब दिया ‘तू’। दरवाजा खुल गया। ”

इस सत्य तक पहुँचने के लिए सूफ़ियों के मत में एक मार्ग बताया गया है और उसके समझने के लिए यह जान लेना जरूरी होगा कि इस मत के आधार-भूत सिद्धान्त कौन कौन से हैं। सूफ़ियों के मूल सिद्धान्त निम्न-लिखित हैं :

(१) परमात्मा का अस्तित्व है : वही केवल यथार्थता है और शेष सब माया है। प्रायः उसे इयोनिक कहते हैं। केवल उसी का अस्तित्व है।

(२) सम्पूर्ण जगत् यानी वायु सृष्टि मारहीन है। अपनी आन्तरिक इयोनिक के अनिश्चित बह भंग अकार है। यह आन्तरिक इयोनिक यह - प्रकृति का काम करती है और आन्तरिक प्रकाश का स्वरूप ले जाती है।

(३) सत्य की प्राप्ति जीवन का उद्देश्य है।

होती है। या यों कहा जाय कि आत्मा ज्योति स्वर्पा नदी में मिल जाती है जिसकी वह पहिले एक लहर मात्र थी।

(६) यह अभ्यास स्वयं नहीं किये जा सकते। गुरु का होना अति आवश्यक है। यात्रा आन्तरिक और रास्ता अदृश्य है। वही पथ—प्रदर्शक हो सकता है जो इस पर चल चुका है। वही इससे परिचित है। ऐसा व्यक्ति मुक्त होता है।

(७) बहुत खोज के बाद गुरु मिलता है, और वह तभी प्राप्त होता है जब कि जिज्ञासु की पिपासा बहुत अधिक हो जाती है। उस को पहचानना कठिन है, पर समय अनुकूल होने पर वह स्वयं जान लिया जाता है।

(८) गुरु में पूर्ण विश्वास बहुत आवश्यक है और गुरु की आज्ञा का पालन शीघ्र ही फलदायक होता है। विश्वास से ही शिष्य का मार्ग प्रकाशमय हो उठता है, उसे देवी दृष्टि प्राप्त होती है और अन्त में वह प्रेम सागर में मग्न हो जाता है।

यही सूफी मत का सार है। प्रेमी सूफी को एक एक पर विचार करना और चलना आवश्यक है।

सूफियों का विश्वास है कि आत्मा को परमात्मा तक पहुँचने के लिए अनेक सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती हैं। उससे एकाकार होने के लिये 'नासूत, शरियत, मलकूत, जबरूत, मारकूत, फना, हकीकत क्रमवद्ध सीढ़ियाँ हैं जिनको पार करने उपरान्त ही हम परमात्मा तक पहुँच सकते हैं। इन सीढ़ियों पर पहुँचने का मार्ग 'अवृद्धत, इश्क, जोहद, मारकूत, वज्द, हकीकत, वसल, फना' है जिसे पथ-प्रदर्शक सच्चा गुरु बताता है। वास्तव में मार्ग और उद्देश्य का भेद एक सीमा तक पहुँच कर स्वयं ही मिट जाता है और साधक के निकट साधन और साध्य दोनों एक ही हो जाते हैं।

सूफी के लिए दरिद्र परन्तु तप और पवित्रता से पूर्ण जीवन आवश्यक है। उसके लिए आत्म-निरीक्षण तथा मन को एकाग्रता अनिवार्य है जिसके साधन उसे सत्गुरु से ही प्राप्त हो सकते हैं। अपने ध्येय तक पहुँचे हुए सूफी इसी को प्रमाणित करते हैं कि उनका अनुभव दिव्य ज्ञान के समान तर्क और बुद्धि के परे है। फिर भी उनके विश्वास की आधार-शिज्ञा होने के कारण वह अन्तर्गत अनुभव सत्य ही कहा जायगा। अस्तु हमारे तर्क और बुद्धि से परे जो एक अगाँचर सत्य है सूफी उसी में विश्वास रखता है। उसकी साधना उस तक पहुँचना है और उसकी सिद्धि उससे एकाकार हो जाना है।

यह विषय इतना विस्तृत है कि जिस पर विस्तार पूर्वक कुछ लिखना असम्भव है। सूफियों के, उत्पत्ति का अनुमान, मार्ग की अवस्थायें, रहस्य-

वादी के सात स्थान, गुरु की आवश्यकता, प्रेम की धारणा, मृत्यु का अनुमान आदि विषय ऐसे हैं जिनमें से एक एक पर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं।

प्रस्तुत संग्रह का उद्देश्य सूफ़ी कविता का दिग्दर्शन मात्र था। गुल्शानेराज, लवायह आदि पुस्तकें ऐसी हैं जिनमें सूफ़ी रहस्यवाद के सिद्धान्त विस्तार सहित दिये गये हैं। सादी की कृतियाँ ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर जाने वालों के लिए नैतिक नियमों का संकलन है। उसकी तुलना बौद्ध साहित्य के अष्टाङ्गिक मार्ग से की जा सकती है।

हाफ़िज़ और उमर खैय्याम प्रेम मदिरा का पान कराते हैं और अपने वाग के गुलाबों की भीनी भीनी सुगन्धि देते हैं। निज़ामी अपने गीतों में अलौकिक प्रेम की उमंग को लौकिक प्रेमी की भाषा में चित्रित करते हैं और महान रहस्यवादी जलालउद्दीन रुमी हमें इतनी ऊँचाई तक पहुँचा देते हैं जहाँ दिव्य स्पर्श का अनुभव होने लगता है।

वास्तव में सूफ़ियों की कविता में लौकिक आवरण में छिपी अलौकिकता हमें ऐसा आनन्द देती है जो चिर परिचित होने पर भी चिर नवीन है। पाठकों को मेरे इस कथन की सत्यता इस छोटी सी पुस्तक से मालूम हो जायगी।

मैं उन लेखकों तथा प्रकाशकों को धन्यवाद देता हूँ जिनकी निम्न पुस्तकों से मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन में बड़ी मदद मिली :

लिटरेरी हिस्टरी आफ़ परशिया—ब्राउन—(४ जिल्दें—केम्ब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस)

परशियन लिट्रेचर—लीवी

परशियन लिट्रेचर—जैकसन

डिक्शनरी आफ़ इस्लाम—ह्युज

मनतकुत्तर-अत्तार (नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

लैला मजनून निज़ामी—(नवलकिशोर प्रेस—लखनऊ)

गुल्शाने राज—शब्नवरी—मुरत्तिबा विद्दनीलड

दीवाने हाफ़िज़ शीराज़—अबदुल फ़तह अबदुल रहीम—(इरातवए ज़ामी उम्मानिया सरकार)

मिरादुल मननवी रुमी—मुरत्तिबा नकमाज़ हुसेन (आज़म ग़ीम प्रेस—हैदराबाद)

रुवाईदान उमर खैय्याम—(नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ)

गुल्शाने व वास्ता—सादी (मनवा, मुजबली, देहली)

दीवाने शम्श नवरेज़—अबदुल मलिक अरबी, गोरखपुर

(च)

लवायह जामी—(मतवा मुजवली देहली)

रुमी—सुलेमान नदवी (मतवा मारिफ आजमगढ़)

मैं स्वर्गीय मौलवी अन्सारी, पेश इमाम मुसलिम बोर्डिंग प्रयाग की स्मृति के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने अपनी वृद्धावस्था में कई महीनों तक आकर सूफी कविता के अनुवाद में मुझे सहायता दी। उनकी सहायता के बिना सम्भवतः यह संग्रह कभी निकलता ही नहीं। मैं अपने मित्र श्री रामचंद्र टंडन का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने प्रूफ ठीक करने में मुझे सहायता दी। इस पुस्तक के प्रकाशन और छपने में मदद देने के लिए मैं श्री राय कृष्णदास, डाक्टर मोतीचन्द तथा श्री वाचस्पति पाठक को धन्यवाद देता हूँ।

प्रयाग ।
१८-६-३६ ।

बाँके विहारी



सनार्ड
(सन् १९३१ ई०)



आपका पूरा नाम है अब्दुल मजीद मजदूद बिन अब्दम । आप राजना के निवासी थे । किसी किसी को यह भी धारणा है कि आपका निवास स्थान बलख था । आप फ़ारसी भाषा के प्रथम तथा एक उच्च सूफ़ी कवि थे । प्रोफ़ेसर ब्राउन ने अपनी 'लिटरेरी हिस्ट्री ऑफ़ परशिया' में आपके विषय में लिखा है :—

“मसनवी लिखने वाले तीनों लेखकों में आपका नाम सर्व-प्रथम है । अक्षर का नम्बर दूसरा, और जलालुद्दीन रूमी का तीसरा है ।”

निस्सन्देह फ़ारसी भाषा के सूफ़ी कवियों में यह तीनों सर्व-प्रथम हैं । परन्तु यह जो उपर्युक्त स्थान इन लोगों को दिया गया है वह साहित्य के इतिहास तथा समय के अनुसार है । यदि कविता की उत्तमता, भाव-प्रदर्शन तथा विचारों की गम्भीरता पर दृष्टि डाली जाय तो रूमी का नम्बर पहला, अक्षर का दूसरा तथा सनाई का तीसरा होगा ।

आरम्भ में सनाई भी एक दरबारी कवि थे और सुल्तानों की प्रशंसा में क़सौदे लिखा करते थे । परन्तु कुछ काल उपरान्त, सौभाग्य से इनकी भेंट एक सूफ़ी से होगई । जैसा कि दौलत शाह, जामी तथा अन्य इतिहास-लेखकों को पुस्तकों से प्रकट होता है । सत्संग का फल ऐसा हुआ कि जीवन के प्रति इनके विचारों में बहुत बड़ा उलट-फेर होगया । शम्स तवरेज के दीवान का सम्पादन करते हुए, उसकी भूमिका में, मौलवी अब्दुल मलक अचरी ने इस घटना का उल्लेख इस प्रकार किया है :—

“एक दिन सनाई, सुल्तान महमूद की प्रशंसा में एक कविता लिख कर नदी की ओर जा रहे थे । मार्ग में एक शराबख़ाने के दरवाजे से होकर निकले । उस समय लायेख़वार नामक एक प्रसिद्ध मदिरा-सेवी, साक़ी से कह रहा था कि सुल्तान महमूद के अन्वेषण के नाम पर एक प्याला भर दे । साक़ी ने कहा कि सुल्तान महमूद एक बड़ा भारी मुसलमान बादशाह है । दुनिया में मशहूर ही रहा है । उनके लिये ऐसा कहना मुनासिब नहीं है । लायेख़वार ने कहा कि वह बहुत घुरा आदमी है । अपने मुन्को को तो क़दम में रख नहीं सकता है, दूसरे मुन्को को जानने के लिये फिर रहा है । यह कह कर उमने प्याला उठाया और पी लिया । अबकी दाग़ उमने साक़ी से कविवर सनाई को भई कविता के नाम पर दूसरा प्याला मंगा । साक़ी ने कहा कि सनाई तो एक बहुत ही ऊँची तद्वियन का शायर है । उनकी कविता तो बड़े मजे की होती है । लायेख़वार ने कहा कि अगर वह ऐसा होता तो क्या ऐसे काम में लगा रहता । उमने कुछ बेहदा बने एक क़सद पर लिख रक्खा है और इनके सिवा यह भी नहीं समझता कि वह किस लिये पैदा हुआ है ।”

उसकी इन बातों से सनाई के हृदय पर एक ऐसा धक्का लगा कि उनके नेत्र खुल गये। सांसारिक बातों से हटा कर उन्होंने अपने दिल के घोड़े की वाग सत् की तरफ मोड़ दी और अब इस नवीन जगत में भ्रमण करने लगे। उन्होंने अपनी भावमयी कविता का आनन्द बहुतों को प्रदान किया। मौलाना रूम के सम्मुख यदि कोई उनकी प्रशंसा करता तो वह कह दिया करते थे, “यह तो सूर्य को अरुन्धा वतलाने के समान है।” मौलाना रूम ने अपनी मसनवी के आरंभ में सनाई के विषय में इस प्रकार लिखा है :—

“अत्तार रूह है, और सनाई उसकी दो आँखें। और मैं तो सनाई तथा अत्तार के पैरों के समान हूँ।”

प्रोफेसर निकल्सन ने उनके विषय में कहा है, “मनुष्य का आरंभ विवेक-पूर्ण जीवन, सत्, और तर्क से हुआ है।” जब रूमी के समान बड़े-बड़े विद्वानों ने सनाई की प्रशंसा की है तो उन्हें महान् कवि की पदवी से भूषित करना अत्युक्ति न होगा। बहुत से मनुष्य उनकी बड़ाई केवल इसी लिये करते हैं कि वह एक ईश्वर के प्रेम में मस्त कवि थे। परन्तु मेरी समझ में वह एक श्रेष्ठ सूफ़ी थे। और यद्यपि रूमी की समानता के न थे तब भी एक उत्तम और उच्च कवि थे। उनकी रचनाएँ “दिल” और “इश्क” बहुत ही उत्तम और उच्च भावनाओं की प्रेरक हैं।

सनाई की ख्याति उनके रचे हुए एक काव्य “हदीका” के कारण और भी अधिक हो गई। इसमें ग्यारह सहस्र पद हैं। इन पदों में आध्यात्मिकता की तथा आत्मिक अनुभवों की झलक पूर्णरूप से वर्तमान है। ब्राउन का कहना है कि इस पुस्तक की प्रतियाँ बहुत सुलभ नहीं हैं। इनकी कविता के महत्व को समझने के लिये “दीवान” देखना आवश्यक है, जिसकी एक हस्तलिपि मेरे पास है और जिसमें से कई एक कविताएँ मैंने इस पुस्तक में उद्धृत की हैं। प्रोफेसर ब्राउन का भी यही मत है। उनका कहना है कि “दीवान” में लिखी हुई कुछ कविताएँ “हदीका” से भी कहीं उत्तम हैं, और उनमें सनाई के भाव-नियंत्रण और व्यक्तित्व की पूर्ण झलक विद्यमान है। उदाहरण के लिए उन्होंने निम्न आशय के पद उद्धृत किये हैं :—

“वह हृदय जो सांसारिक पीड़ाओं और कठिनाइयों से परे है बहुत ही उत्तम है।

उमे प्रेम का मुद्गर अथवा हस्ताक्षर भी नहीं प्रदर्शित कर सकते।

मैं केवल आपका प्रेम चाहता हूँ और यदि वैभव अथवा धन मेरे भाग्य में नहीं है तो उसकी कोई चिन्ता नहीं।

कारण कि धन का सम्बन्ध संसार में है और संसार तथा प्रेम कभी साथ-साथ चल नहीं सकते।

जब तक आप मेरे हृदय में निवास करते हैं तब तक वह सांसारिक पीड़ाओं का अनुभव भी नहीं कर सकता।" (लि० हि० प०, जिल्द २, पृ० ३१७)

सनाई की मृत्यु सन् ११३१ ई० में हुई।

उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न-लिखित हैं :—

दीवान ।

हदीकुल हकीकत ।

तरीक़ुत-तहकीक़ ।

ग़रीबनामा ।

कारनामा ।

अज़लनामा ।

सैदल इवालुल उलमद ।

इश्कनामा ।

—

.

.

.

.

(१)

चंद अर्जीं दावाए दुरवेशो व लाफे आशिकी ।
ना चशीदा शरवते आँ नाजमूदा दर्दे दीं ॥

(२)

तना पाए आँ रह नदारी चे पोई ।
दिला जाय आँ चुत नदानी चे जूई ॥
अर्जीं रहरवाने मुखालिक चे चारा ।
कि वर लाक गाहे सरे चार सूई ॥
अगर आशिकी कुफो ईमाँ यके दाँ ।
कि दर अकल रानास्त ईनेक खूई ॥
तु जानी व अंकाशतस्ती कि शख्सी ।
तु आनी व पिदाशतस्ती सवूई ॥
हमाँ चीज रा ता न जोई न यावी ।
जुर्ची दोस्त रा ता न यावी न जोई ॥

(१) तू कब तक अपने इस उदासी वेष और प्रेम पर अभिमान करता हुआ बैठा रहेगा ? न तो तूने अभी उसका शर्वत ही पिया है और न उस पीड़ा के आनन्द का अनुभव ही किया है ।

(२) हे प्रेमी ! जब तू उस मार्ग में आगे बढ़ने की क्षमता ही नहीं रखता तब व्यर्थ में क्यों दौड़ रहा है ? ऐ मन ! जब तू उस प्यारे का स्थान ही नहीं जानता तब व्यर्थ में क्यों उसकी खोज कर रहा है ?

जब कि तू चौराहे पर खड़ा हुआ है तब इन भिन्न-भिन्न पथों पर चलने वाले पथिकों से किस प्रकार बच सकता है ?

यदि तेरे हृदय में लगन लगी हुई है तो अपने धर्म और उसके विपरीत धर्मों को एक ही समझ । यह बुद्धिमानी की बात है और अच्छे स्वभाव से सम्बन्ध रखती है ।

तू प्राण है, परन्तु तूने अपने आपको मनुष्य समझ लिया है । तू जल है परन्तु तूने अपने आपको घड़ा समझ रक्खा है !

अन्य वस्तुएँ खोज करने ही से प्राप्त होती हैं, परन्तु उस प्यारे के विषय में एक आश्चर्य की बात है । जब तक तू उसे पा न जायगा उसकी खोज ही न करेगा ।

यकीं दाँ कि तू ऊ न वाशी व लेकिन ।
चो तू दरमियाना न वाशी तू ऊई ॥

(३)

ए दिल अर उक़वात वायद दस्त अज़ दुनिया बेदार ।
पाकवाजी पेश गीरो राहें दाँ कुन इकिनयार ॥
ताजो तख्ते मुल्के हस्ती जुम्ज़ा रा दरहम शिकन ।
नज़वे मोहरे मुफ़लिसी ओ नेस्ती दर जाँ निगार ॥
पाय वर दुनिया नेही वर दोज़ चश्म अज़ नामो नंग ।
दस्त दर उक़वा ज़नो वर बंद राहें फ़ख़रो आर ॥
चू ज़ना ता कै नशीनी वर उमीदे रंगो वू ।
हिम्मत अंदर राह बंदो गाम ज़न मरदानावार ॥
आलमे सिफ़ली न जाए तुस्त अर्ज़ी जा वर गुज़र ।
जेहदे आँ कुन ता कुनी दर आलमे उलवी करार ॥
ता न गरदी फ़ानी अज़ औसाफ़े ई फ़ानी सकर ।
वे नेयाज़ी रा न वीनी दर बहिश्ते किर्दगार ॥
गर चो वूज़र आरज़ए ताजदारी रोज़े हश्र ।
वाश चू मंसूरे हल्लाज इंतज़ारे ताजदार ॥

विश्वास रख कि वह तुझमें सदैव वर्तमान रहता है, परन्तु जब तू बीच में से दूर हो जायगा उस समय वस वही वह रह जायगा ।

(३) हे मन ! यदि तू उसे प्राप्त करना चाहता है तो संसार को त्याग दे और अन्तःकरण को शुद्ध करके उस धर्म मार्ग में आगे बढ़ ।

सिंहासन और ताज, राज्य और अस्तित्व सबको एक किनारे रख दे । भिखारी बन जा और यह समझ ले कि मैं कुछ हूँ ही नहीं ।

इस संसार को ठुकरा दे, नाम और वैभव सबको लात मार कर आगे बढ़ । तू अपने अभीष्ट पर ही ध्यान जमाए रख, प्रतिष्ठा और अप्रतिष्ठा का कुछ विचार ही मत कर ।

स्त्रियों के समान बनाव शृंगार करता हुआ कब तक बैठा रहेगा ? मार्ग में आगे बढ़ने का साहस कर और पुरुषों के समान दृढ़ता से कदम आगे बढ़ा ।

यह नाशवान् संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं है ; अतएव यहाँ से चल दे और उस लोक में पहुँचने का प्रयत्न कर जिसके आगे अमर शब्द लिखा जाता है ।

जब तक तू इस क्षणभंगुर जगत के मिथ्या बन्धनों को तोड़ कर शुद्ध न हो जायगा, तब तक तू ईश्वर के बनाए हुए उस स्वर्ग में शान्ति-पूर्वक नहीं रह सकता ।

यदि तू मृत्यु के उपरान्त, उसके द्वार में पहुँच कर ताज पाने की इच्छा

अज हदीसे इश्के जॉवाजॉ मजन वर खीरा लाक ।
ता तू अंदर वन्दे इश्के खेश मॉदी उसतुवार ॥

(४)

चूँ इश्क वदस्त आमद तन गोर कुनो खूश जी ।
चूँ अवल वपा आमद पै कोर कुनो खम जन ॥
आतश अंदर खाकपाशाने हमा आलम जनद ।
हर कि रा दर रूप आवे तुस्त वर सर वाद नू ॥

(५)

खारस्त हमा जहानो अंगह ।
चूँ तां दरोँ मियाना वरदे ॥
दर तोँ कि रसद वदस्त मरदी ।
ता अजतो न चूँ पाए मरदे ॥

(६)

ऐ न जुजराए अवलो जानम ।
वै भारत करदा ईनो खानम ॥

रखता है, जिस प्रकार कि वृज्जर ने किया था, तो मन्वर के समान अपने आपको मिटा कर उसका अधिकारी बनने का प्रयत्न कर ।

अपने आप को सबसे पहले मिटा डाल, तब सन्चे प्रेमियों के प्रत्यक्ष ही बातों परके अभिमान गिजा । यदि ऐसा नाहीं कर सकता है तो अभिमान करना भी व्यर्थ है ।

(४) यदि तमने प्रेम प्राप्त हो जाये तो फिर शरीर में विना प्रयत्न का

मे नङ्गशे खयाले तो यकीनम ।
 वै खाले जमाले तो गुमानम ॥
 ता वा खूदम अज अदम कम कम ।
 चू वा तो शुदम हमा जहानम ॥

(७)

दीदए याकूव रा दीदारे यूसुक तूतियास्त ।
 जोहरए फरहाद वायद ता गमे शीरी कशद ॥

(८)

न आँजा मेहतरी वाशद न आँजा केहतरी वाशद ।
 न आँजा सरवरी वाशद न खैलो नै हशम वीनी ॥
 न दादे आलिमाँ मानद न ज़ल्मे ज़ालिमाँ मानद ।
 न जौरे जाविराँ मानद न मख़दूमो खदम वीनी ॥
 वजरे ख़िशतो गिल वीनी हमाँ शाहाने आलम रा ।
 चुनाँ दिलवर हज़ाराँ पेश दर जेरे क़दम वीनी ॥
 वे आ ता अहले मानी रा दरीँ आलम वशम वीनी ।
 वे आ ता लुक्के रव्वानो व अहसानो करम वीनी ॥

तू ही मेरे विश्वास का आधार है, और तेरे ही सौंदर्य पर मुझे अभिमान है ।

मैं जब तक अपना निजत्व मानता हूँ, तब तक बहुत हेय और तुच्छ हूँ । परन्तु जब तेरे साथ हो जाऊँगा तब सारा संसार हो जाऊँगा ।

(७) याकूव की आँखों का सुरमा यूसुक का दीदार है । उसी को लगा कर वह मिलन मन्दिर तक पहुँच सकता है । शीरी के लिये तड़पने को फरहाद के समान हृदय की आवश्यकता है ।

(८) उस स्थान पर तुझे सभी समान दिखलाई देंगे । छोटे-बड़े का भेद-भाव कहीं भी दृष्टि में न आवेगा । वहाँ पर न कोई सेनापति होगा और न सेना ही ।

न विद्वानों की प्रशंसा ही शेष रहेगी; न आतताइयों के अत्याचार ही रह जायँगे । न आतंकवादियों का आतंक रहेगा, न स्वामियों का ही अस्तित्व रह जायगा !

संसार के जितने भी सम्राट् थे, उन सभी को तू ईंट और मिट्टी के ढेर के नीचे दबा हुआ देखेगा, और इसी प्रकार सैकड़ों बलवानों तथा वहादुरों को पैरों के नीचे पड़ा हुआ पावेगा ।

यह आकर देख कि अपने आन्तरिक रहस्यों को समझने वाले लोग वास्तव में उदासीन रहते हैं, अथवा ईश्वर की दया, प्रेम और भक्ति का तमाशा देखते हैं ।

चे पाई गिरे ईं मैदों चे गरदी गिरे ईं जिदों ।
चे बंदी दिल दरों वीरों कि चंदी रंजो राम वीनी ॥

(९)

कज बराए पुज्जा करदन किशत आदम रा इलाह ।
दूर चेहल सुवहा इलाही तीन्ते पाकश खमीर ॥
चू तोरा दर दिल जे बहरे दोस्त न बुवद खार खार ।
नेस्त दर खैरे तो खैरे जाँ मकुन दर खीर खीर ॥
अज हमा आलम गुज्जारात अज हमा जानो दिलस्त ।
आँ तुई कज कुस्ते आलम ना गुज्जारी ना गुज्जार ॥
कम न गरदद गंजहाए फजलत अज ददहाय मा ।
तू निको क़ारी कुनो अज फजले खुद दर मा मगीर ॥
हेच ताअत नायद अज मा हम चुनी वे इस्तते ।
रायगाँ माँ आफ़रीदी रायगाँ माँ दर पिज्जार ॥

(१०)

दोस्ती दावा कुनी वो नमस रा फ़रमाँ वरी ।
गर समद ख़ाही चिरा दाशी तलव गारे वसन ॥

तू इस मैदान में इधर से उधर क्यों दौड़ रहा है और इस कारागार का चकर क्यों लगा रहा है ? इस जजड़ स्थान से क्यों प्रेम करने लगा है ? यहाँ रहने से तुझे बहुत से दुख उठाने पड़ेंगे, और सैकड़ों विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा ।

(९) आदम की खेती को हट कराने ही के लिये ईश्वर ने अपनी मृष्टि-रचना के समय उसकी पवित्र मिट्टी को चालीन दिनों में गूँथा था ।

जब तेरे हृदय में दोस्त की चाह नहीं है और न उसके हाथ में निकल जाने का ही शौक है, तो तेरी भलाई, भलाई नहीं कही जा सकती । व्यर्थ में अपने आपको कष्ट मत दे ।

यह सन्पूर्ण संसार नाशवान है दिन का भी कोई अन्तिम नहीं है । एक नू ही ऐसा है जो इस मृष्टि में खसक सकता है ।

हमारे अस्तित्व अर्थों में तेरा दुःख ही सारमा बरतना नहीं है । तू क्या है हमारे इन कुत्सित अर्थों पर खरब न दे । तू तेरा 'दया दूया' भाव रखना नहीं कर सकते ।

हमने इकलवियेन प्रायतन संभव तथा 'दाव' कहे कहे ऐसा वचक किया है तो बिना हमारे प्रायतन के तू से स्वकार कर ले ।

(१०) तू ईश्वर का ऐसा होने का भी दावा करता है और उस पर भी इन्हाओं के वन्दन से है । दाव तू वास्तव में, मन्वे 'दल' में, मन्वान में, मन्गाए हुए है तो मृष्टि की इच्छा करे रखना है ।

हेच कस नसतूद दर यक हाल दो मानूद रा ।
 हेच कस न गुनूद रोजो शव करीं दर यक वतन ॥
 खिरमने खूद रा वदस्ते खेशतन सोजेम मा ।
 किर्म पीलां हम वदस्ते खेशतन दोजद ककन ॥
 अज मुरादे खेश वरखेज अर मुरीदी इशक रा ।
 दर यमन साकिन न वाशी ता तु वाशी दर खुतन ॥
 आज रा खुरदन दिगर दाँ आरजू खुरदन दिगर ।
 हर दो नतवानी तो खुरदन या वलीदे या समन ॥
 पाय आँ मरदाँ न दारी जामण मरदाँ मपोश ।
 वर्ग वे वरगी न दारी लाके दरवेशी मजन ॥

(११)

राहे अत्रले आकिलौं रा रम्जे ऊ वर रम्ज वूद ।
 दर्दे जाने आशिकौं रा दर्दे ऊ मरहम बुवद ॥

राहे दीं पैदास्त लेकिन सादिके दीदार कू ।
 यक जहाने शौक वीनम आशिके खूँखार कू ॥

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं और इसी प्रकार रात और दिन का भी एक स्थान पर इकट्ठा होना असम्भव है। भगवान् से लगन लगा कर किसी दूसरी वस्तु को इच्छा हृदय में मत रख।

हम अपने ही हाथों से अपने खलिहान को (संचित सम्पत्ति को) नष्ट-भ्रष्ट कर डालते हैं। रेशम का कीड़ा भी अपने ही हाथों से अपने को कारा-गार में डाल लेता है।

यदि प्रेम तेरा उद्देश्य है तो सब से पहले अपने हृदय की आकांक्षाओं को मिटा डाल। उस सुन्दर स्थान (यमन) को प्राप्त करने के लिए इस स्थान (खुतन) का त्यागना आवश्यक है।

लालच को मिटा देना और वात है, और आकांक्षाओं को मिटाना दूसरी बात है। ऐ आराम से दिन व्यतीत करने वाले, तू दोनों को एक साथ नहीं मिटा सकता।

तेरे पैर उन मुर्दों के पैरों से भिन्न हैं, अतएव उन के समान वस्त्र धारण मत कर। त्यागियों का सामान तेरे पास नहीं अतएव त्यागी बनने का दावा न कर।

(११) ज्ञानियों के ज्ञान मार्ग में उसके रहस्य बहुत ही गम्भीर हैं और प्रेमियों की पीड़ा के लिए वह मरहम का काम करता है।

सत्य धर्म का मार्ग कुछ कुछ दिखलाई अवश्य पड़ता है परन्तु पूर्ण रूप से हमारी दृष्टि में नहीं आता। प्रेम करने के लिये सभी स्थान उपयुक्त हैं परन्तु कष्टों और कठिनाइयों को भेद कर प्रेम करने वाला कोई भी नहीं है।

सालहा याशद चो दुलदुल गुकतिओ ऊ खुद नकई ।
 वस बवादा आखिर दमे किरदारे बेगुकार कू ॥

सिरे बिस्मिहाह अजर खाही कि गरदद जाहिरत ।
 चू "सनाई" अन्वल अलकावे हसी वायद निहाद ॥

ऐ ख्वाजा तोरा दर दिल रैवस्तो सकाए ।
 घर हस्तिए ऊ चू कि हमोनस्त चे जाए ॥
 गर वातिनत अजु नूरे चकोनस्त मुनव्वर ।
 घर जाहिरे तो चू के हमी नेस्त सकाए ॥
 आरे चो बुवद सुरते तलवीस चो तहकीक ।
 पैदा शवदो हर चे सवावी व खताए ॥
 दावा के मुजरद बुवद अज शाहिदे माना ।
 वातिल शवद अज अस्त जे चूने व चराए ॥
 ता शाहिदे बजते तो बुवद हश्मतो नेमत ।
 दोमारे दिलत रा न बुवद हेच सकाए ॥
 ई हस्त वजूदश मुताल्लिक वरजाए ।
 ई हस्त हुनूलश मुतवहिद वरियाए ॥

वर्षों से तू दुलदुल के समान चहकता चला आ रहा है। कहता बहुत कुछ है परन्तु करता कुछ भी नहीं है। आखिर कभी तूने शान्ति के साथ किसी बात पर अमल भी किया है ?

ईश्वर के रहस्य को तू अभी समझ सकेगा, जब कि पहले "सनाई" के समान अपने हृदय की पवित्रता को आवश्यक बना लेगा।

यदि तेरे हृदय में विश्वास के साथ ही साथ सन्देह भी है तो ईश्वर में मिलना असम्भव है।

परन्तु यदि तेरे हृदय में विश्वास का उलाना है तो वाय सन्देह की कोई चिन्ता नहीं है।

यदि सन्देह किसी प्रकार विश्वास के रूप में परिणत हो जावे तो तिस्यन्देह अच्छे और दुरे का भेद प्रकट हो जावेगा।

निरर्थक किम' ज्ञान का दावा करना ठीक नहीं हुआ कब' है। हममें न तो किसी प्रकार की सचाई होती है और न कोई मर' जैसे दावे के लिए किसी प्रकार के तर्कों की आवश्यकता नहीं है।

जब तक संसारो पवित्रता और समारो विमुक्ति' के भाष्य है, तब समय तक तेरा गेगा हृदय कभी 'सनाई' का भ' कर सकता।

संसार की भेद वस्तु' दुखा अथवा आशावाद मंगल' में ही प्राप्त' सकता है, और संसारो वस्तु' ह' तथा अस्त' में मिल सकता है।

ता ईं दो रकीकाने तो हमराहे तो वाशन्द ।
 हरगिज न बुवद खाजा तुरा राह वजाए ॥
 शौ नेस्त तू अज खेशो मय अन्देश अज्राँ पस ।
 यकसाँ शमुर ईं हर दो वजाए व वफाए ॥
 अन्दर सिकते नेस्त चे नामे व चे नंगे ।
 वर वामे खरावात चे चुगदे चे हुमाए ॥
 गर निज्दे "सनाई" न शुदे खिलअते अन्वल ।
 अज दीदा नमूदे रहे तहकीक सनाए ॥

ता कै जे हर कसे जे पए सीम वीमे मा ।
 वज वीमे सीम गश्ता निदामत नदीमे मा ॥
 ता हस्त सीम वामा वीमस्त थारे ऊ ।
 चू सीम रक्त दर पए ऊ रक्त वीमे मा ॥
 ऐ आँ कि मुकलिसीस्त वलाए अजीमे तो ।
 सीमस्त गोई अस्त निशातो नईमे मा ॥
 वेदतर वेदों कि हस्त तमनाए तो मुहाल ।
 सीमस्त वैहक अस्तो वलाए अजीमे मा ॥

अतएव जब तक यह दो प्रतिद्वन्दी तरे साथ रहेंगे तब तक तू किसी पद को प्राप्त नहीं कर सकता है ।

तू मय से पहले अपने अहंकार को मिटा डाल, वस इसके उपरान्त किस प्रकार का भय न कर । समझ रख कि यह दोनों वस्तुएँ तरे पद को बढ़ावैगी मृत्यु के लिये गौरव और पद दोनों समान हैं । मदिरागृह की छत पड्यु हो अथवा हुमा, इससे किसी का क्या बनता विगड़ता है ?

यदि "सनाई" को उसकी कृपा पहले ही से प्राप्त न हो जाती तो उससे उस तक पहुँचने का मार्ग भी नहीं दिखलाई देता ।

हम चाँदी के लिये कब तक मय लोगों में भय खाने रहेंगे ? इसी चीज के डर से हमें लज्जित होना पड़ा है ।

जब तक हमारी गॉट में रुपया है तब तक भय भी हमारा साथ नहीं छोड़ सकता, परन्तु उसके जाने ही हमारा भय भी मदा के लिये किनारा क जखरा :

तुम निर्वन्तता को मयने वृग समझते हो और कहते हो कि रुपया हमारी शक्तता की कृती है ।

तुम समझ लो कि तुम्हारा यह विचार निर्र्थक है और यह रुपया हमें मयने मय आर्षितियों ही उद् दे है ।

आयन्द हर दो वाहम हर दो वहम रवन्द ।
 गोई विरादरन्द वहम वीमो सीमे मा ॥
 गर मा हमा सियाह गलीमेम तुफ़ा नेस्त ।
 सीमे सुपीद करदा सियह ई गलीमे मा ॥
 पे अज नईम करदा लिवासे खुद अज नसेज ।
 हौं ता जे रूग् कित्र नवाशी नदीमे मा ॥
 गोई बरहना पायाँ बर मा हसद वरन्द ।
 हर गह कि त्रिनगरन्द व कप्रो अदीमे मा ॥
 दर हसरते नसीमे सवाएम ए वसा ।
 आरद सवा नसीमो नयारद नसीमे मा ॥
 इमरोज पुखतायेम चो असहावे कहफ़ वार ।
 फ़रदा जे गोर वाशद कहफ़ो रक्तीमे मा ॥
 आलम चो मंजिलस्तो खलायक मुसाफ़िरन्द ।
 दर वै मुजव्वरस्त मक्कामे मुक्कीमे मा ॥
 हस्त आँ जहाँ चो सीमो फ़लक सीम दारे ऊ ।
 मा गल्लादार अजो व अमल हम क़सीमे मा ॥

रूपया और भय संसार में साथ ही साथ आते हैं और चले जाते हैं ।
ऐसा ज्ञात होता है मानों वे दोनों सगे भाई हैं ।

हमारे भान्य के मन्द होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है । इसी रूपये
ने हमें ऐसा बनाया है । इसी के न होने से हमारी गणना अभागों में है ।

अपने वैभव से भी बढ़ कर तुमने उत्तम ब्रह्म धारण किये हैं । सावधान !
अभिमान और अहंकार को लेकर हमारे पास मत आना ।

तुम कहते हो कि नंगे पाँव फिरने वाले हमारे जूतों को देख कर डाह करते
हैं । परन्तु यह बात नहीं है । वह तुम्हारी नरी की जूतियों पर दृष्टि भी नहीं
डालते ।

हम तो वायु के नरम और मस्त कर देने वाले भोंको के इच्छुक हैं ।
शीतलता के स्थान में वायु में कभी ताप भी हो सकता है । परन्तु वह हमारे
लिये नहीं है ।

आज हम सुन्दर भवनों में बड़े आनन्द से शान के साथ लेटे हुए हैं, कल
क़त्र में हमें शरण लेनी पड़ेगी ।

संसार एक यात्रा है, और मनुष्य यात्री हैं । यहाँ पर किसी का विश्राम
करना केवल एक धोखा है ।

परन्तु वह दूसरा लोक चाँदी के नुमान उज्ज्वल है । आकाश उमका
चोपा-ध्यञ्ज है । हमारे पास गल्ला बहुत है और आशाएँ बढ़ी हुई हैं ।

तीमारे नीम दाशतन्द अज मा जिमाऊन जमान ।
 तीमार दासद पाँ के जमा दाद नीमे मा ॥
 मा अज जमाना उमे नका नाम करणम ।
 पे वाण मा के हस्त जमाना गरीमे मा ॥
 दर वस्के ईं जमानण नापायदारे अूम ।
 विशनी कि मुक्ततसर मसले जद हकीमे मा ॥
 गुरु आँ जमाना मारा मानिन्दे दाया अस्त ।
 वस्ता दरे उमीदे रजीओ कतीमे मा ॥
 ता ऊ वजामो दिल हमा गौं रा वे परवरद ।
 मानिन्दे मादराने शफोको रहीमे मा ॥
 चूँ मुहते वरायद वर मा अदू शानद ।
 अज वादे आँ के वूद सदाके हमीमे मा ॥
 गर दानदत वदस्त शयो रोजो माहो साल ।
 चूँ दाले मुनहनी अलिके मुस्ताकीमे मा ॥
 अंगह फरो वरद वजामीं वे खयानते ।
 आँ कामते मुक्कव्यमा जिस्मे जसीमे मा ॥

भय की चिन्ता करना हमारे लिये मूर्खता है। भय उसी के लिये छोड़ दो जिसने उसे उत्पन्न किया है, तथा जिसने तुम्हें वह प्रदान किया है।

हमने जमाने से दो वस्तुएँ ऋण में ली हैं। एक जीवन और दूसरी अमरता। हमारी वर्वादी इसी कारण हो रही है कि जमाना यह चाहता है कि हम उससे ऋण लेते रहें।

इस खोटे और भाग्यहीन जमाने के लिये विद्वानों ने एक छोटा सा उदाहरण दिया है।

वह कहते हैं कि यह हमारे प्रति एक धात्री के समान है। दूध पीने वाले तथा बड़े बच्चे दोनों ही इससे ऐसी ही आशा रखते हैं।

हम चाहते हैं कि वह दिलोजान से सबका पालन-पोषण करे और हमसे एक दयालु माता का सा वर्त्ताव करे।

परन्तु कुछ समय उपरान्त वही हमारा शत्रु हो जाता है। गौकि किसी समय वह हमारा एक शुभेच्छु मित्र था।

समय ने—रात-दिन, वर्षों और महीनों ने—तुम्हारे ऊपर वह विपत्तियाँ गिराई हैं कि तुम्हारी कमर भुक गई है।

अन्त में यही आपत्तियाँ एक घातक के समान तुम्हें मृत्यु के मुख में ढकेल देती हैं।

रैहाने रूहे मा चे फ़रागस्तो फ़ारेगी ।
 मशगूलयस्त शगलें अज़ावे अलीमे मा ॥
 सर गश्ता शुद "सनाई" यारव तु रहनुमाए ।
 ऐ रहनुमाए खल्क खुदाए रहीमे मा ॥
 मारा अगरचे फ़ेल ज़मीमस्त तू मगीर ।
 यारव वा फ़ज़ले ख़ोशत ज़े फ़ेले ज़मीमे मा ॥

(१२)

ऐया माँदा वेमूजिचे हर मुरादे ।
 हमा साल दर मेहनतो इज्तेहादे ॥
 न दर हक्के ख़ुद मर तोरा इनक़याजे ।
 न दर हक्के हक्क मर तोरा इनक़यादे ॥
 चो दीवानगाँ माँदई दर तफ़क्कुर ।
 कि गोई तुरा चू वरायद मुरादे ॥
 ज़े हिसें दो रोज़ा मुक़ामे मजाज़ी ।
 बहर गोशाए करदा जातुलइमादे ॥
 हमाना वखाव अन्दरी ता वेदानी ।
 कि मारा जुज़ी नेस्त दीगर मश्आदे ॥

हमारा जीवन आनन्दमय कैसे हो सकता है ? विश्वास तथा बेफिक्री से ।
 कार्य में व्यस्त रहना तथा चिन्ता से परे रहना भी दुख देने वाली वस्तुएँ हैं ।

भगवन् ! "सनाई" सीधे मार्ग को भूल गया है । उसे फिर उसी सत्य
 मार्ग पर ला । तू ही संसार का पथ-प्रदर्शक और दयालु दाता है ।

यह सत्य है कि हम पापी हैं । हमारे कर्म बुरे हैं । परन्तु तू अपनी दया
 दिखला और हमें क्षमा प्रदान कर ।

(१२) तू बिना किसी इच्छा या स्वार्थ के वर्ष भर परिश्रम तथा प्रयत्न
 करता रहा है ।

न तो तू अपनी ही चिन्ता करता है और न ईश्वर की ही उपासना
 करता है ।

बस एक पागल के समान कभी इस गली में और कभी उस गली में घूमा
 करता है ।

तेरो कोई इच्छा किम प्रकार पूर्ण हो सकती है जब तू इस दो दिन के
 संसार में भवन निर्माण करने में लगा हुआ है ?

तू सांसारिक कार्यों में डम प्रकार संलग्न है, मानो स्वप्न देख रहा है ।
 तनिक मात्रधान होजा और समझ ले कि तुझे और भी कहीं लौट
 कर जाना है ।

चे बेचारा मरदी चे सर गश्ता खलकी ।
 चे वर चातिले वाशदत इसतिनादे ॥
 मजाजीस्त ईं शूम दुनिया कि दायम ।
 तोरा नेस्त इल्ला वरु अत्तमादे ॥
 पस ऐ ख्वाजा दावा रसद आँ कसे रा ।
 कि मावूदे ऊ गश्ता वाशद जमादे ॥
 पसंगह रसीदन वतहकीके माना ।
 तमन्ना कुनी वा चुनी एतकादे ॥
 वेदानी हमीं मइक आँ क्रद्र वारे ।
 कि जाए मईशत दो वाशद करादे ॥
 तु गर राहे हक रा हमी जोई अब्वल ।
 तलव करदा वाशद सदीलुर रिशादे ॥
 जियादत बुवद मर तुरा हर जमाने ।
 व आमालो अरुआले खेश एतमादे ॥
 पस अज नेस्ती साजे आँ राह साजी ।
 कुजा बेहतर अज नेस्ती नेस्त जादे ॥

तू लाचारी और विपत्तियों का शिकार हो रहा है। न मालूम तुझे क्या हो गया है जो एक निरर्थक बात पर विश्वास कर रहा है ?

यह अनित्य संसार तेरे लिये सुनहला है—मन-मोहक है—और तूने भूल से उसी में चित्त लगा रक्खा है।

फिर बता कि वह मनुष्य, जो एक सारहीन वस्तु की ओर आकर्षित हो रहा है, ईश्वर से मिलने का दावा किस प्रकार कर सकता है ?

और फिर संसार में इस प्रकार संलग्न रह कर तू आन्तरिक भेदों को किस प्रकार समझ सकता है ?

परीक्षा करने से तुझे यह तो ज्ञात ही हो जायगा कि जीवन व्यतीत करने के लिये दो संसार हैं।

यदि तू ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग समझ लेना चाहता है तो सबसे पहले एक सीधे और सच्चे मार्ग का इच्छुक बन।

इसके उपरान्त तेरी सदैव उन्नति होती रहेगी और तू न्ययम् अपने कार्यों पर विश्वास करेगा।

उस समय तू अपने आरको नष्ट करके उस मार्ग पर चलने को प्रस्तुत होगा, जहाँ कि अहंकार को मिटा डालने से बड़ कर और कोई वस्तु ही नहीं है।

सलाहे "सनाई" दरीनस्त दायम ।
 शवद दर रहे इश्क हमचू रिशादे ॥
 वे गुलम सलाहे दिल अज रूए माना ।
 सलाहस्त ई मशपूर अन्दर कसादे ॥
 न बीनी कि परवानओ शमा हरगिज ।
 कि वर वातिनश खीरा गरदद विदादे ॥
 शवज खुद वरी गर्तावर हकीकत ।
 तुरा वे तो हासिल शवद इनहिदादे ॥
 वरी गरदद अज खेशतन चू "सनाई" ।
 कुनद ऊ जे खंशी खुरा चू जियादे ॥

(१३)

अगर मुश्ताक़े दीदारी व दायम ।
 उमीदे दीदने दीदार दारी ॥
 जे दीदारत न पोशीदस्त दीदार ।
 वे बी दीदार गर दीदार दारी ॥
 दिला ता चू "सनाई" दर रहे दी ।
 तरीके जोहदो इसतिगफारदारी ॥
 मुसलमाँ नेस्ती ता हमचो गवरौ ।
 जे हमनी वर मियाँ जुजार फदागी ॥

"सनाई" का भलाई इसी में है कि वह प्रेम का सर्व्व सीधा और सच्चा मार्ग पकड़े रहे ।

मैंने अपने आन्तरिक विश्वास के बल पर मन को सत्यता का वर्णन कर दिया है । यह एक बहुत ही उत्तम बन्तु है । इसकी गणना घुराई में मत कर ।

क्या तुम नहीं समझते कि दीपक और पतंग में कैसा प्रेम है ? पतंग सर्व्व उम्मी के प्राण्य में मग्न रहता है । वह कभी किसी दूसरे का ध्यान भी नहीं करता है ।

अपने आपको भुला दे । हकीकत (ईश्वरीय वास्तविकता) तक पहुँचने का वही उपाय है । उम्मी उपाय से तू अपने आप को भी दूर कर सकता है ।

जब "सनाई" का अपनत्व मिट जायगा तब वह अपनत्व का अभिमान रखने वालों के समान कैसे रहेगा ?

(१३) यदि तेरे हृदय में दर्शनों की लालसा लगी हुई है, यदि यही तेरा अभिष्ट है,

तो स्मरण रख कि वह तेरी दृष्टि से छिपा नहीं है । अगर तेरी (ज्ञान) नेत्रें हैं तो उसको देख ले ।

वे दिन 'तू' 'सनाई' के समान धर्म-मार्ग में पवित्रता और विवेक का होना कब तक सम्भव है ?

क्या तू धर्म-मार्ग में दृढ़ नहीं है जो अग्नि की पृजा करने वालों के समान अपनी जगम में निरन्तर का ध्यान करि हुए है ?

(१४)

अथा अज चंवरे इमलाम दायम करदा सर वेहूँ ।
 जे मुजन करदा दिल खारी जे विदअन करदा सर मशहूँ ॥
 हवा हमवारा शैताने शुदा वर नअसे तो सुलताँ ।
 तनत रा जेह पैराया दिलत रा कुफ़ पैरा मूँ ॥
 अगर दर एतक़ादे मन वशकी ता वनज्म आरम ।
 अला रममे तो दर तौहीद फ़स्ले गोशदार अकनूँ ॥
 तुरा पुरखीद खाहम मन जे सिरें वैजए मुर्ती ।
 चे गुप्तस्त अन्दरीं माना तुरा तलक़ीने अक़लातूँ ॥
 सुपैदो ज़र्द मी वीनम दो आव अन्दर वके खाना ।
 वज्राँ यक़ खाना चन्दीं गूना मुँगा आयद हुमीं वेहूँ ॥
 न गोई अज चे मानी गश्त परें ज़ारा चूँ कतराँ ।
 जे वहरे चे दुमे ताऊस रंगीं शुद चु वू क़लमूँ ॥
 हुमायो चुग्द रा आख़िर चे इह्त वूद दर खिलक़त ।
 चेरा शुद दर जहाँ ईं शूमो आँ शुद ईं चुनीं मैमूँ ॥
 न गोई कज के मी गरदद चकाक़ इलहाने मूसीकार ।
 न गोई कज चे मी मानद तदर्ब अनवाए असक़ातूँ ॥

(१४) हे मनुष्य ! तूने सच्चे धर्म का त्याग कर दिया है। उसके पवित्र नियमों को छोड़ कर इन्द्रियों का दासत्व स्वीकार कर लिया है।

तेरे सिर पर सदैव शैतान सवार रहता है और धर्म-विरुद्ध आचरण करने तथा अपनी इच्छाओं को पूरा करने में तुझे अतीव आनन्द आता है।

यदि तुझे मेरे विश्वास के प्रति कोई सन्देह है तो मैं तेरे सम्मुख कविता की कुछ पंक्तियाँ कहता हूँ। यह उसके प्रति विश्वास प्रकट करती हैं। इन्हें ध्यान से सुनना।

मैं तुझसे चिड़िया के अंडे का राज पूछता हूँ। वता, अक़लानून ने इस विषय में क्या कहा है ?

मैं देखता हूँ कि एक अंडे के अन्दर सफ़ेद और पीले, दो तरह के पानी हैं, और इसी अंडे से सैकड़ों प्रकार के पक्षी उत्पन्न होते हैं।

अब यह वता कि कौवे के पर काले क्यों हुए और मोर की पूँछ रंग विरंगी क्यों हुई ? उसमें इतने रंगों का समावेश होने का क्या कारण है ?

उल्लू और हुमा के जन्म में क्या खराबी है, जिसके कारण उल्लू को लोग घुरा मानते हैं और हुमा का देखना शुभ शकुन समझा जाता है।

पपीहे को ऐसे मधुर स्वर में सुन्दर राग अलापना कौन सिखाता है, और चकोर को इतने सुन्दर वस्त्र पहनने को कौन देता है ?

तफक्कुर कुन यके दर खिलकृत शाहीनो मुरगावो ।
 वे गोई कजु चे मानी रास्त ई जीं सक्त अजु आँमू ॥
 यके चू रायते सीमीं हमेशा दर हवा नाजौं ।
 यके रा जौरके जर्री रवाँ हमवारा दर जैहूँ ॥
 गुरेजाँ ई के चू गरदद वजाँ अजु चंगे ऊ ऐमन ।
 शितावाँ आँ के चू रेजद जे हिर्सो शहवा अजु वै खूँ ॥
 अजवतर जीं हमा आनस्त कीं परिन्दा मुर्गारो ।
 मुरत्तव मसकने वादस्त दीगर साँतो दीगर गू ॥
 यके -रा वेशए साजी यके रा वादिए आँमू ।
 यके रा कुल्लए काको यके रा साहिले जैहूँ ॥
 यके खुद रा वतमए आँ वगरदूँ बुर्दा चू कारूँ ।
 यके खुद राजे वीमे आँ वआव अकगन्दा चू जुन्नूँ ॥
 नगीरद वाद रा चंगाँ नशोयद आव रा रंगाँ ।
 यके खनीन इलमासस्त व दीगर जौरके जैतूँ ॥
 नगोई ता चेरा करदन्द फेलो चंगे आँ जाहन ।
 नगोई ता चेरा दादन्द रंगे ई वराँ अकसूँ ॥

शाहों और मुर्गावियों की तरफ ध्यान से देख कर बताओ कि इन में इतना अन्तर किस प्रकार हुआ ? किसने उनकी रचना में इतना भेद डाल दिया ?

जिमके कारण एक रूपद्वल भंडे के समान वायु में फहराती रहती है और दूसरी एक सुनहली नाव के समान पानी में तैरा करती है ।

मुर्गावी शाहों के पंजे से अपने प्राण बचाने के लिये छिपती फिरती है, और शाहों उनका रक्त बहा कर और उनको खाकर अपनी क्षुधा शान्ति करने के उद्योग में लगी रहती है ।

इसमें भी अधिक आश्चर्य की एक दूसरी बात है । यह दोनों पत्नी वायु में रहने वाले हैं । परन्तु इस पर भी भिन्न-भिन्न हवाओं में रहते हैं ।

किसी को जंगल की हवा भली मान्य होनी है और किसी को जलाशयों के किनारे की वायु लाभदायक है । कोई-कोई काफ पर्वत की चोटियों पर रहना पसन्द करती है और कोई नदियों के किनारे ।

एक पत्नी दूसरे का शिकार करने के लिये आकाश में चकर लगाया करता है और दूसरी उसके भय से नदी में जाकर छिप रहता है ।

शिकारी पत्नी का कटोर पंजा वायु को थामने में अममर्थ है और जल-पत्तियों का रंग नदी के पानी से नदी शुभता ।

बताओ किम कारण शिकारी पत्नी का दिल इतना कटोर है और पंजा इतना हृद तथा जल के पत्नी का रंग इतना सुन्दर ?

अगर हमचूँ मने आजिज्ज इरीं मानी कि पुरसीदम ।
 चे गोई इर सवाते तो सराये हव्वे अकतीमूँ ॥
 न माली हर निदाले रा चो मालस्त हस्त जायो गिल ।
 जे बहरे तपके खुरशोदस्त चूँ लुके हवा मकहँ ॥
 चेरा दर चक जमीं चंदीं नवाते मुखतलिकु वीनम ।
 जे गुल वज्र नरगिना वज्र चासमीना अज समन मौजूँ ॥
 हमेदूँ मेखुरानद् आव लेकेशाँ हसी रोयद् ।
 वरंगे रंगे सिवरो मुंडुलो वारंगे मा जर्यूँ ॥
 अगर इह्न तवाए शुद् वजूदे जुमला पस चूँ शुद् ।
 चके मुमलिक चके मीलो चके आरद् चके ताहूँ ॥
 अज अंगूरस्तो खशखाशस्त अल्ले उनसुरे हरदो ।
 चेरा दानिश वरद् वादा चेरा जाव आवरद् अरुयूँ ॥
 हमाना ईँ कि मन गुकनम तवाए कर्दे न तवानद् ।
 न अकलानूना न अंदर द जरको हीलओ अरुमे ॥

अच्छा, यदि इस विषय में तुम भी मेरे ही समान अनजान हो और इन समस्याओं को सुलझाने में असमर्थ हो तो अपने ही सांसारिक रहन महन को देखो और समझो ।

जब सूर्य तपता है, और हवा गर्म होती है, तो तुम वृक्ष को छाया की शरण क्यों लेते हो ? यह इम लिये कि तुम मिट्टी तथा पानी के संयोग से उत्पन्न हुए हो और इन्हीं लिये चित्त को प्रसन्न करने वाची हवा को भी आवश्यकता है ।

फिर यह बताओ कि पृथ्वी पर नाना रंग की वस्तुएँ क्यों उत्पन्न की गई हैं ? गुलाब, नरगिन, चमेली और बेला इत्यादि के पुष्प क्यों खिलते हैं ?

उनको पानी से सीया जाता है, परन्तु वे उत्पन्न होते हैं पृथ्वी में से । उनमें से किन्ती का रंग श्वेत होता है, किन्ती का पीला, किन्ती का लाल और काया ।

यदि यह कहा जाय कि इस शारीर में किन्ती का हाथ नहीं है तो फिर इनके खिलने के ढंग पृथक् पृथक् क्यों हुए ? ये भिन्न-भिन्न क्यों न अपनी बहार क्यों दिखावाते हैं ? एक सिमटा हुआ है, दूसरा जिनट कर फैलता है, कोई सीधा है तो कोई चपटा ।

अंगूर तथा पोस्ता दोनों को अन्तर्निहित एक ही है ; परन्तु फिर गरम नशा क्यों लाती है और अजीब बेलुप क्यों कर देती है ?

इससे यह निश्चय होता है कि हममें अज्ञान का अन्तर्निहित भाव है ; अकलानून अपनी दिव्यता में लगे रहकर अपनी लक्ष्मी में निर्या करने में असमर्थ हैं ।

मगर वेचूँ खुदावन्दे कि फ़रज़न्दाने आदम रा ।
 वक्रुदरत दर वजूद आवुर्द वे आलत व काफ़ो नू ॥
 ख़दावन्दे कि दायम हस्त असहावे मआसीरा ।
 जनावे फ़ज़ले ऊ मामन अज़ावे अदले ऊ मामू ॥
 हमेशा वूद पेश अज़ या हमेशा वाशद ऊ वेशक ।
 वक़ाला रवना मीगो व मीदौ वस्के ऊ वेचूँ ॥
 कलामश हमचो वादश हक़ वलेकिन गुफ़ते ऊ मुशकिल ।
 सिफ़ातश हमचो ज़ातश हक़ वलेकिन सिर्रे ऊ मख़ज़ू ॥
 हमू वरिश्तन्दए दौलत हमू दानिन्दए फ़िक़रत ।
 हमू दारिन्दए गेती हमू दारिन्दए गरदू ॥
 के पिनहाँ कर्दे जुज़ एज़िद वसंगे ख़ारा दर आज़र ।
 कि रोयानद हमीं जुज़ वै जे ख़ाके तीरा आज़रगू ॥
 सदक़ हैरौ व दरिया दर दवाँ आहू व सहरा वर ।
 रगीदो आरमीदा हर दो दर दरिया व दर हामू ॥
 के पुर करदो के आगन्द अज़ गयाहो क़तरए वारौ ।
दहाने ईँ व नाफ़े आँ जे मुशको लूख़ए मक़नू ॥

हाँ, यह काम निस्सन्देह उस अनुपम जगत्कर्ता ईश्वर का है, जिसने अपनी इच्छा शक्ति केवल शब्द द्वारा (" सृष्टि हो जा " इस शब्द से) मनुष्य मात्र को बिना किसी प्रकार की सहायता के उत्पन्न किया है ।

ईश्वर वह है जो सदैव पापात्माओं पर दया दिखलाता है और उनको शरण देता है । उसके राज्य में रह कर मनुष्य अपने आपको खोटे कर्मों से बचा सकता है ।

उसका न आदि है और न अन्त । उसकी उपमा यदि किसी से दी जा सकती है तो केवल उमी से ।

वह जो कुछ कहता है वह अवश्य होता है । उसका कथन भी उसी के समान पवित्र है । परन्तु उसका कहना कठिन है । उसके गुण भी उसी के समान हैं, परन्तु उनका भेद पाना कठिन है ।

वह हमें धन-सम्पत्ति प्रदान करता है और हमारे हृदय की बातों को जानता है । यह संसार और आकाश सब उसी के अधिकार में हैं ।

ईश्वर के अनिश्चित पत्थर में अग्नि किसने छिपा रक्खी है और उसकी शक्ति के मित्राय काली मिट्टी में से लाल रंग के फूल किसने उत्पन्न किये हैं ?

नदी में मीपियाँ और जंगल में हिरन उमी ने उत्पन्न किये हैं । दोनों अपने अपने म्यानों में आगम से रहने और भागने फिरते हैं ।

उमी परब्रह्म ने वरमा के पानी के वूँद से मीप का मूँद भरवाया और जंगल की वान में हिरग की नाक में मुश्क उत्पन्न की ।

जे बहरे आँ कि चूँ सीमीं सिपर गरदद दर अफ़ज़नी ।
 कि काहद माहरा हर माह हत्ता आदा कल उरज़ूँ ॥
 कि वन्दद चूँ ख़िज़ाँ आयद हज़ाराँ किल्लए अदकन ।
 कि पोशद चूँ बहार आमद हज़ाराँ हृष्टए गुलगूँ ॥
 कि गरदानद मुलव्वन कोह रा चूँ रौज़गर रिज़वाँ ।
 कि गरदानद मुनक़श वाग़ रा चूँ सहने अर किलयूँ ॥
 दो आवे मुखतलिफ़ रा मुत्तफ़िक़ वाहम कि गरदानद ।
 बक़दरत दर यके मौज़ा कुन्द हर दो वहम भाज़ूँ ॥
 पसंगह नुतफ़ा गरदानद वजू शख़ो कुन्द पैज़ा ।
 मिसालश मोहकमो सावित निहादश मुत्तफ़िक़ मोज़ूँ ॥
 यके आलिम यके जाहिल यके ज़ालिम यके आजिज़ ।
 यके मुनयम यके मुफ़लिस यके शादाँ यके महज़ूँ ॥
 तआला शानहू कि जुमला अज़ आव ऊ पिदीद आनुर्द ।
 पसंगह जुमला दर दम वै दखाक अन्दर कुन्द मदफ़ूँ ॥
 अया दिल वस्ता दर दुनिया व गश्ता गाफ़िल अज़ उक़दा ।
 चे सूद अज़ सूदे इम रोज़त कि फ़रदा मी शवी मानूँ ॥
 चो आलम रा हमी दानी कि फ़ानी गश्न खाहद पत्त ।
 वमेहरे आलमे फ़ानी चरा दिल करदर्ई मरदूँ ॥

वह कौन है जिसने अपनी शक्ति से चन्द्रमा को आकाश में चमकाया है और उसे घटावा तथा बढ़ाता है ?

पर्वत को स्वर्ग के समान नाना रंग के पुष्पों से कौन सजाता है और उपवन विविध प्रकार के पौधों तथा फूलों से कौन सुशोभित करता है ?

फिर कौन अपनी शक्ति से दो वस्तुओं को मिला कर एक कर देता है ? और फिर उसे विन्दु के रूप में परिणत कर उससे मनुष्य उत्पन्न करता है ?

और ऐसा वैसा मनुष्य भी नहीं बरन् सुन्दर शरीर वाला और आँसू-नाक-कान इत्यादि से दुरुस्त ।

विद्वान, मूर्ख, गुणी, दार्शनिक, तत्त्ववेत्ता और बड़े बड़े ज्ञानी इसी ने अपनी शक्ति से उत्पन्न किये हैं ।

वह इतना बड़ा कारीगर है कि उसने इन सबको केवल जल में उत्पन्न किया और फिर उन्हें मिटा कर मिट्टी में मिला दिया ।

हे संसार के व्यवसायियों और अंत की न सोचने वाले ! आज के लाभ के पीछे तुम इतना क्यों पड़े हुए हो जब कि कल मनु के उदगन्त तुम्हें पाटा उठाना पड़ेगा ।

जब तुम्हें यह ज्ञान है कि संसार झल्लक है तो फिर उसने इन प्रश्न तर्हीन क्यों हो रहे हो ?

इलाही वंदए बेचारए मिसकीं "सनाई" रा ।
 कि ऊ अज दीनो ताअतहाय तो दरमाँदओ मदयूँ ॥
 अगर चे हस्त ऊ मतऊँ बजिहतहा तमा दारद ।
 वदी तौहीदे नामतऊँ जजाए अज तो नामहनूँ ॥

(१५)

ऐ पेश रवे हरचे निकोईस्त जमालत ।
 वै दूर शुदा आफतो नुकसाँ जे कमालत ॥
 ऐ भरदुमके दीदए मा वंदए चशमत ।
 वै जाने पसंदीदए मा हाल जे हालत ॥
 राम खुरदनम इमरोज हरामस्त चो वादा ।
 अज वख्त वमन दादा जमाना वहलालत ॥
 ऐ बुलबुले गोइंदा व ए कवके खिरामाँ ।
 मै खुर कि जे मै वाद हमेशा परो वालत ॥
 जोहरा वनिशात आमद चूँ याफ़ समाअत ।
 खुरशेद वरशक आमद चूँ दीद जमालत ॥
 हर रोज दिगर गूना जनद शाख वरीं दिल ।
 ई बुलअजवी बीं कि वर आवुर्द निहालत ॥

हे ईश्वर ! "सनाई" तेरा सेवक है । वह दीन है, नाचीज है, परन्तु सदैव से तेरा भक्त रहा है ।

वह नीच करके प्रसिद्ध हो रहा है । परन्तु उसे पूर्ण आशा है कि सच्ची भक्ति के उपलक्ष में वह तुझसे इनाम पायेगा ।

(१५) हे भगवन् ! तेरा रूप सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है । वह अनुपमेय है । तेरा कमाल हानि और आपत्ति से परे है ।

मेरी आँख की पुतली, तेरी आँखों को प्रतीक्षा में सदैव तन्मय रहती है और मेरे प्रिय तथा रोगी प्राण तेरे प्राणों का एक अंश हैं ।

आज मैं अर्थीर हो रहा हूँ । मुझमें एक नवीन प्रसन्नता समाहित हो रही है । कारण कि भाग्य ने आज मेरे नेत्रों के सम्मुख तेरा जलवा प्रगट कर दिया है ।

हे मुन्दर राग अलापने वाली बुलबुल और शीघ्रगामी कवक तू प्रेम में मस्त रह । इस प्रणय रूपी मदिरा से तेरे परों में उड़ने की शक्ति सदैव बनी रहेगी ।

तेरा गाना सुन कर ज़हरा मोहित हो गया और तेरा रूप देख कर सूर्य भी लज्जित हो गया है ।

तेरा बेल-वृद्ध से मुमज्जित शरीर देखने योग्य है क्योंकि यह तेरा सुमज्जित शरीर मेरे चित्त का प्रतिदिन नये ढंग में लुभाता है ।

जाँ नीज वशुकराना वनिज्दे तो फ़रिस्तम ।
खुद कारे दो सद जाँवे कुनद यूए विसालत ॥

(१६)

राजे अज़ल अन्दर दिले उश्शाक़ निहाँनस्त ।
जाँ राज़ ख़बर याक़ कसे रा कि अयानस्त ॥
कूरा ज़े पसे परदए उश्शाक़ दुई नेस्त ।
जाँ मिस्तल न दारद कि शहंशाहे जहाँनस्त ॥
गोयन्द अज़ाँ मैदाँ ऊरा कि दर आमद ।
कै खाजा दिलो रह ख़ाना व ख़ानस्त ॥
गर माहे जलाल आमद दर नात कुसूफ़े तो ।
वर तीरे विसाल आमद दर शिन्दे कमानस्त ॥
ऐ कूए दो सद वार हज़ार अज़ सरे माना ।
कुस्तस्त कजे शाँ वजुज़ अंकिस्त निशानस्त ॥
आँ कसं कि रिदाए ज़रे मा वर कतिक़ उफ़तद ।
आँ नेस्त रिदा अज़ सिक़ते तैए लिसानस्त ॥

मैं अपने प्राणों तक को कृतज्ञता से तेरे लिये अर्पण कर सकता हूँ । तेरे मिलने की सुगन्ध ही दो सौ प्राणों के बराबर है ।

(१६) मृष्टि के आदि के रहस्य प्रेमियों के हृदय में गुप्त हैं । इस भेद को वही जान सकता है, जिस पर वह प्रकट हो ।

वह अपने प्रेमियों से किसी प्रकार का छिपाव नहीं रखता है । और वह अनुपम इसी लिये कहा जाता है कि वह सम्पूर्ण संसार का चादशाह है ।

प्रेमियों को इस क्षेत्र में घुसने की (प्रविष्ट होने की) आज्ञा अवश्य दी जाती है परन्तु उनके दिलों और प्राणों की इस प्रणयक्षेत्र में नज़र ली जाती है ।

यदि उसका चन्द्रमुख तेरी दृष्टि से ओभल हो गया है, यदि तेरी दृष्टि के सम्मुख एक मोटा आवरण आ गया है, तो इसमें तेरे ही विचारों का अपराध है । और यदि उसके मिलन में किसी प्रकार का सन्देह है तो इसमें भी तेरे गुमानों का ही अपराध है ।

इस हृदय में लाखों वार उसके रहस्य प्रकट हुए हैं, परन्तु आकुलता की अग्नि से हृदय ऐसा जल गया है कि अत्र आगे बढ़ने का साहम भी नहीं होता है ।

हमारी ज़री की यह चादर जिसके कन्धों पर डाल दी जाती है, उसका मानों मुँह बन्द कर दिया जाता है । यह चादर नहीं है । इनमें दूसरे का मुँह बन्द करने का गुण है । (इसका आशय यही है कि हमारे दर्जे को पहुँच कर मनुष्य को दशा ऐसी हो जाती है कि वह रहस्य खोल नहीं सकता ।)

गोयन्द निकोयस्त दरी परदा दिले मा ।
 मीदाँ व हकीकत कि जे इकवाले एहसानस्त ॥
 नज्मे गोहरे मानी दर दीदए दावा ।
 चूँ मरदुमके दीदा दर्गी राफल निहानस्त ॥
 दर राहे फना नामदर्ई जाय अज्जीजाँ ।
 कीं शेरे "सनाई" सबवे कुव्वते जानस्त ॥

(१७)

खेज ऐ दिल वर फिगन ईँ मरकवे तहवील रा ।
 वन्नक कुन वर ना कसों आँ आलमे तातील रा ॥
 ना गुजारे खत्ते माना हर्फे रंगारंग रा ।
 मह कुन अज लौहे दावा नज्शे कालो कील रा ॥
 अंदरीं सकहाय मानी दर रहे मानी मजू ।
 आँ कि दर सरना नयादी नकहे इसराफील रा ॥
 कै कुनद वरदाशत दरमाँ दर वियावाने खिरद ।
 नावदाने वामे गिलखन सैले रोदे नील रा ॥
 दस्ते इनाहीम वायद वर सरे कोहे फिदा ।
 ता न वुरद तेरो वुराँ दस्ते इस्माईल रा ॥

लोग कहते हैं कि इस पद के भीतर हमारा दिल बड़े आनन्द में है। यदि ऐसा है तो इसे भी उसकी दया का चिह्न समझना चाहिये।

ऊपरी दृष्टि से यदि उसके रहस्य को देखा जाय तो आँख भुलावे में अवश्य आ जायगी।

प्रिय प्राण ! अभी तक तुम मृत्यु के समझ नहीं पड़े हो। यदि ऐसा अवसर आता तो तुम भी समझ जाते कि "सनाई" की यह कविता तुम्हें बल प्रदान करने वाली है।

(१७) ऐ दिल, उठ और अपने उद्यम में लग। वहाना छोड़ दे और बेकारों को निरन्धरी मनुष्यों के लिये छोड़ दे।

उन नमाम निरर्थक बातों को छोड़ दे। इनसे कोई आशय नहीं निकलता। व्यर्थ किसी बात का दावा करने में समय को बर्बाद न कर और अधिक बाने मत बना।

उन मौखिक बातों के द्वाग आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने का प्रयत्न मत कर। कारण कि " इमगर्तील " " सरना " में प्रविष्ट नहीं होते।

इसकी बुद्धि इस बात को किस प्रकार मान सकती है कि भाड़े के मजदूर की छत का नावदान नाम नदी की वाड़ को सहन कर सकता है।

फिदा के पद पर इस्माइल का हाथ न काटने के लिये यदि कोई तलवार चला सकता है तो वह केवल इनाहीम का हाथ है।

मर्त नू ईशान मरियम आवद अन्दर गने सिद्धक ।
 ना ने दानद कहे वरुं प्यारने ईजील न ॥
 दर नाथे तारीक कुजा योनद द्धाने परशाग ।
 सां के क दर रोहे रीशान नी न योनद पीन न ॥
 आवद तुम्हे नू रीशाने पुर नूद के शब्द तुरा ।
 नू वरुं नू नू न नुवद अरुवण कर्दीन रा ॥
 गेव प्रकट्टे संक का नापन वसे हम्मत नूनी ।
 नू वरीनी दर सरं नूद तंगे इकगईल रा ॥

(१८)

अब हवाय ककदारों कागे ककारों मखाद ।
 दर सराण नूद सलमां तखने अरुवारी मजो ॥
 गारो पाण रोहे दरवेशाने आं दरगाह रा ।
 दर कके दन्ते उरुने अहद अन्मारी मजो ॥
 दर वने रा नूरे सिद्धके इकई रद के देहद ।
 नूरे नुगशीद रा अन्दर शबे तारी मजो ॥
 दर सरं तूरे हवा तंनूरे शहवत मी जनी ।
 इकके भरदे लंतरानी रा वरीं तारी मजो ॥

ईश्वरीय मार्ग पर चलने के लिये मरियम के पुत्र ईसा के समान मनुष्य की आवश्यकता है। क्योंकि उसे धर्म-ग्रन्थ ईजील के शब्दों का मूल्य मालूम रहता है।

जिस मनुष्य को दिन के उजाले में हाथी न सुझता हो वह रात्रि के अन्धकार में मच्छड़ का मुख किस प्रकार देख सकता है ?

यदि कन्दील के अन्दर वाले दीपक में तेल न हो तो बाहर से उसमें तेल भरा होना तुम्हे रोशनी कब देगा !

यदि तुम्हे उठना है तो इत्नी समय उठ और जो कुछ करना है कर ले, अन्यथा जिस समय चमदूत तेरे सिर पर मृत्यु की तलवार लेकर आ उपस्थित होगा, उस समय शोक के अतिरिक्त कुछ हाथ न आवेगा।

(१८) उदासियों के पास सुन्दर स्वर्ण-मन्दिर कहाँ से आये और सुलमान के पास ऐवारी (जादू) का तख्त कहाँ से आ सकता है ?

इस मन्दिर में आने वाले प्रेमियों के पैर में जो काँटा चुभना है, उसे दुलहिन के हाथ में खोजने से क्या लाभ होगा ?

इस मार्ग में सत्य प्रणय की चमक किसको प्राप्त हो सकती है ? अंधेरी रात में सूर्य कैसे प्राप्त हो सकता है ?

नू सांसारिक विषयों में पड़ा हुआ जीवन के भूठे सुखों का आनन्द लूट रहा है। फिर क्या इस बुरी अवस्था में रह कर नू सच्चा प्रणयी किस प्रकार हो सकता है ?

वर तो स्नाही नमो शैवीं दर कफन जारी कशाद ।
नामो इश्वरे दोस्त रा जुज अज रारे ज्ञारी मजो ॥

(१९)

कसे कू जे गोशे हकीकत अयाँ शुद ।
मजाजी सिकाते वै अन्दर निहाँ शुद ॥
निशाने बुवद अज हकीकत मर ऊ रा ।
चे शुद ई कि अज नेस्ती वे निशाँ शुद ॥
कसे कू चुनीं शुद कि मन शरह करदम ।
यकीं दों कि ऊ वादशाहे जहाँ शुद ॥
गलिक शुद जमीनो जमों रा पसंगह ।
चो कररोधियाँ साकिने आसमों शुद ॥
रवाँ गशत करमाने ऊ चूँ सियाही ।
मरुरा कि गुफ़ ई चुनीं शौ चुनाँ शुद ॥
चो दर नेस्ती जद दमे चंद ईसा ।
तने वेरवाँ अज दमश वा रवाँ शुद ॥
न वीनी कि हर कू जे खुद गशत कानी ।
जे अहे वक्ता गशतो साहब किराँ शुद ॥

हाँ, यदि तू अपनी शैतान इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना चाहता है तो विनय तथा नम्रता के साथ अपने प्यारे से प्रेम-याचना कर। तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।

(१९) जिस पर ईश्वर का रहस्य प्रकट हो जाता है, वह संसार के समस्त बन्धनों से छूट जाता है।

इस वास्तविकता को प्राप्त कर लेने का चिह्न यही होता है कि मनुष्य मृत्यु पर विजय प्राप्त कर अपने आपको मिटा देता है।

जो मनुष्य ऐसा हो जाता है, जैसा कि मैंने वर्णन किया, वह साधारण मनुष्य से बहुत ऊँचा हो जाता है, और संसार का सम्राट् बन जाता है।

वह पृथ्वी तथा जीवधारियों का वादशाह होकर आकाश पर चढ़ जाता है। वह स्वर्गीय दूत का पद प्राप्त कर लेता है।

उसमें इतनी शक्ति हो जाती है कि उसकी आज्ञा सभी मानते हैं !

उसमें इतनी सामर्थ्य आ जाती है जितनी ईसा में थी। वह भी उन्हीं के समान चार फूँकेँ मार कर मरे हुए मनुष्य को जीवित कर सकता है।

जो मनुष्य ऐसा होता है वह मृत्यु को प्राप्त होकर अमर हो जाता है और फिर संसार में वह पथ-प्रदर्शक समझा जाता है।

हमज नेस्ती शुद कि या मुश्ते खाके ।
मोहम्मद व जंगे सिपाहे गरौं शुद ॥
बत्ता दर रहे नेस्ती कस्र करदन ।
गुमाहौं यकीं शुद यकीं हा गुमाँ शुद ॥
कसे पू जे हद्दे रमूज अन्त आजिष ।
य्याने "सनाई" वरु तरजुमा शुद ॥

(२०)

अव्वल खलल ए खाजा अन्दर अमल आयद ।
फरदा की यनिच्दे तो रन्गुले अजल आयद ॥
जायल शुदा गीर आँ हमाँ मुल्के तो वयक दम ।
अंगह की रन्गुले मलिके लमयजल आयद ॥
हर साल यके काख कुनी दीगर दर वै ।
हर रोज़ तुरा आरजूए नौ अमल आयद ॥
जीं काख दर आउरदा य ओयूके मन इमरोज ।
हक्कला कि हमाँ वूए रसूमे तलल आयद ॥
शादी व गुमत अदलहोओ हिस् वऐवाँ ।
दानम जे तुजूमे जे हिस्सावे जुमल आयद ॥

यह एक ऐसी शक्ति है कि जिससे शक्तिवान् होकर मुहम्मद साहब एक मुट्ठी धूल लेकर एक बृहन् सेना से भिड़ने के लिये पहुँच गये थे ।

इस मृत्यु-मार्ग में बहुधा ऐसा होता है कि सन्देह विश्वास के रूप में और विश्वास सन्देह के रूप में परिवर्तित हो जाता है ।

जिसको उस विश्व के रचयिता का भेद नहीं ज्ञात है, उसे यह भेद, "सनाई" का यह वर्णन पूर्य तथा समझा सकता है ।

(२०) तुम्हारे जीवन में जो सब से पहला रुकावट होता है, जो सब से पहला विघ्न आ उपस्थित होता है, वह उस समय होता है जब मृत्यु का दृत् आकर निर पर सवार होता है ।

जिन समय उन अविनाशी इश्वर का दृत् आ जात है, उन समय तेरी सारी दादशाही समाप्त हो जाती है ।

प्रत्येक वष नू उनी संस्र में एक नया भवन तैयार करना है और प्रत्येक दिन तेरे हृदय में कोई न कोई नया काम करने की इच्छा होती है ।

तेरे इन आकाश-चुन्दो महलों में, यदे बान्त्व में देखा जावे तो खिदरगो और जंगलों की वृ आता है ।

तेरी प्रसन्नता और शोक, तेरी मृत्युता और डह का मन्वध इन मरल से है । यह सम्पूर्ण दान तेरी ममन् में अतिपवित्रा की गणना के दिनाच से हुआ करती है ।

ऐ वस कि न बाशा तू व ऐ वस कि बरीं चरती ।
 वे तो जोड़लो जोड़राओ हूतो हमन आगद ॥
 हरचंद तू तमादरी कागद जे कताकिय ।
 वै हक हम आज फजलो कजाए अजल आगद ॥
 रोजे की बदीवाँ मसलन देर तर आई ।
 तरसा की दर असबावे विजारत सालल आगद ॥
 गुफ़्त "सनाई" कि व दीवाने विजारत ।
 ऐ वस कि दीवाने विजारत बदल आगद ॥

(२१)

ऐ आँ कि तुरा अज तूईए तुम्न तसर्मक ।
 आँ बेह कि न गोई सखन अज यूए तसच्चुक ॥
 दर कूए तसच्चुक व तकल्लुक मगुजार हेच ।
 जीरा कि हरामस्त दरी कूए तकल्लुक ॥
 दर उशवए खेशी तू व आँ राह न दानी ।
 ऐ दोस्त तुरा अज तूईए तुस्त तवक्कुक ॥

ऐसा बहुधा होगा कि जब तू मिट जायगा तब तेरी अनुपस्थिति में इस आकाश के ऊपर "जोहल" और "जोहरा" नामक सितारे "हूत" और "हमल" के "बुर्ज" में दिखाई देंगे ।

तू जिन वस्तुओं के प्राप्त करने की अपने भाग्य से आशा रखता है, वह सभी तुम्हें तभी प्राप्त होंगी जब ईश्वर की तेरे ऊपर दया होगी तथा उसकी आज्ञा होगी ।

उदाहरण के लिये एक बात ले, कि जिस दिन तू कचहरी में देर से पहुँचता है, उस दिन तुम्हें यह भय लगा रहता है कि कहीं पदाधिकारी क्रोधित न हो जावें ।

"सनाई" ने यह बात इम लिये कही है कि बहुधा यह देखने में आता है कि मंत्री के न्याय में भी अन्तर पड़ जाता है ।

(२१) हे मनुष्य, तेरी बुद्धि पर अहंकार का पर्दा पड़ गया है। तू अहंकार के अधिकार में आ गया है। तेरे लिये यही अच्छा होगा कि तू सूफियों के रास्ते का वर्णन विल्कुल छोड़ दे ।

सूफियों के मार्ग में कभी बनने का प्रयत्न मत करना । कारण कि इस मार्ग में बनना बहुत ही बुरा है ।

तू अपने चोचलों और करेवों को नहीं छोड़ता है। ऐसा ज्ञात होता है कि सिर से पैर तक स्वार्थ में फँसा हुआ पड़ा है ।

राहेस्त हकीकत कि बरा नेस्त निहायत ।
 जिनहार मकुन दर रहे तहकीक तवक्कुक ॥
 तो चन्द हमीं खाही मिनहाजुल मेराज ।
 एह्याए जल्मे दीं वा शरहे तआरुक ॥
 कि नशनवद इमरोज "सनाई" वहकीकत ।
 विगिरिफ़ व इत्तार रहे इश्क तअन्नुक ॥
 गर नेक अजो विशनवी ऐ दोस्त अज्जी पस ।
 वर शाहिदे यूसुक न कुनी क्रिस्तए यूसुक ॥

(२२)

ऐ ऐने हकीकत अन्दर ऐन ।
 वाज करदा जे बहरे दीदन ऐन ॥
 पेशे ऐने तो ऐने दोस्त अर्यों ।
 तू रसीदा व ऐन गोई ऐन ॥
 चूँ कि आयद जे ऐने तो हमा तो ।
 एस्तादा चो सहे जुलकरनेन ॥
 ता तू गोई तुई व अँ तू तुई ।
 आन अच तो दरोज वाशद देंन ॥

ईश्वरीय वास्तविकता का मार्ग बहुत ही बड़ा है । यदि इस मार्ग में तुम्हें आगे बढ़ना है तो सावधान होकर चलना । मार्ग में विधाम करना उचित नहीं है ।

तू कब तक इन्नति के मार्ग का इस प्रकार इच्छुक रहेगा, कि अपने को प्रसिद्ध करने के लिए धार्मिक विद्याओं को जीवित रखेगा ।

"सनाई" आज तेरी जोख पड़ता न सुनेगा भी नहीं क्योंकि वह हदय के साथ अपने को भिटाने का मार्ग ग्रहण कर चुका है

मित्र, यदि इस बात को तुम इस समय ध्यान से सुन लो तो 'पर यूसुक

कै मुसलम तुनद तुरा तीहीद ।
 चूँ कि इसनाद मी कुनी इगनेन ॥
 पेश तो ज मिर्गा न नाविलो हक ।
 चंद गोई तफाऊने गाँन ॥
 दर गके हाल मुसतलील तुनद ।
 इजतिमाण वजूरे मुसतलिकेन ॥
 अजबल अज सोश पेश नेद तो कदम ।
 ता जुदा गरदद अश्ले मों अज देन ॥
 नजर अज रौर मुनकते कुन जोँ के ।
 शाहिदे रौर गर दिल आरद गैन ॥
 चन्द गोई जे हाले सोश कि काल ।
 काले वेहाल आर वाशद व रैन ॥
 चूँ “सनाई” जे खुद न मुनकतई ।
 चे दिकायत कुनी जे हाले हुसैन ॥

होगा, उस समय तक तुम्हारी स्वार्थ-भावनाएं भी दूर नहीं हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त ‘तू’ शब्द का मुख से निकालना भी तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा।

जब कि तुम ‘मैं’ और ‘तू’ को दो सिद्ध कर रहे हो और उनमें अन्तर समझते हो तो फिर ईश्वरीय मार्ग में आगे बढ़ने के योग्य तुम नहीं हो।

तुम स्वयम् इस बात को समझ सकते हो कि ऐसा विचार रखते हुए ईश्वर तक पहुँचना और उसके भेदों को समझना तुम्हारे लिये कितना कठिन है।

एक ही अवस्था और एक ही समय में दो प्रतिकूल बातों का एकत्रित होना असम्भव है, और विल्कुल असम्भव है।

दोनों बातें इकट्ठी हो ही नहीं सकतीं, सब से पहले इस बात का प्रयत्न करो कि तुम्हारा सारा अहङ्कार मिट जावे, जिससे कि तुम्हारी वास्तविकता, धर्म से पृथक् हो जावे।

दूसरों की तरफ से अपनी दृष्टि फेर लो। कारण कि यदि उनकी तरफ देखोगे तो तुम्हारे हृदय में बुराई उत्पन्न होगी।

अपना वर्णन कब तक रहेगा। इससे किसी प्रकार के लाभ की सम्भावना नहीं है। इन मौखिक बातों से और दावों से तुम्हें लज्जित होना पड़ेगा और वदनामी उठानी पड़ेगी।

“सनाई” का कहना है कि यदि तुम अपने अपनत्व का परित्याग नहीं करते हो तो फिर ‘हुसैन’ का क्या वर्णन करते हो ?

(२३)

कसे कन्दर सके भरदों व मैखाना कमर वन्दद ।
 वरावर कै बुवद वा आँ कि दिल दर खैरो शर वन्दद ॥
 जे दी हरगिज नआरद याद वज्र करदा अदेशत ।
 दिल अन्दर दिल फरेये नरजो दर्दे मा हजर वन्दद ॥
 वसा पीरे मुनाजाती कि वा मरकद फिरो मानद ।
 वसा रिदे खराशाती कि जी घर शेरे नर वन्दद ॥
 कसे कू वा अर्यों वाशद खवर पेशश मुहाल आमद ।
 चो खिलवत वा अर्यों साऊद कुजा दिल दर खवर वन्दद ॥
 चो दर दावा कमरवन्दी जे मानी वेखवर वाशी ।
 कुजा दानद कसे मानी कि दर दावा कमर वन्दद ॥
 न फिरऔने शवद आँ कस कि जा अंदर जर्मी साऊद ।
 न याकूबे शवद आँ कस कि दिल रा दर पिसर वन्दद ॥
 वतरखो वरत मी नाजी गहे नरगत गहे वरगत ।
 वतरखो वरत कै नाऊद कसे कू ररत वर वन्दद ॥

(२३: शरादखाने के मनुष्यों की जो मनुष्य सेवा करता है, वह उससे अच्छा है जो सांसारिक कगड़ों में व्यस्त रहता है ।

न तो वह बीती हुई बातों का ध्यान करता है और न भविष्य के धन्यों का । न तो उसे अपने काम में आने वाली वस्तुओं का ही विचार है और न शरीर को सुख देने वाली चीजों का ।

बहुतेरे प्रार्थना करने वाले सवारी पर चलने पर भी थक जाते हैं । और बहुधा ऐसा देखा जाता है कि प्रणय-मार्ग में मस्त शेर पर सवार होकर चले जाते हैं ।

जिसके सन्मुख वह प्रकट हो गया तथा जिसने उसके जल्वे को देख पाया उसके हाल-चाल जानने की क्या आवश्यकता है ? जो प्रत्येक क्षण उसके समग्र है, उसको खबर की क्या चिन्ता है ।

अहङ्कार में आ जाने पर, बड़ बड़ कर बातें करने से तू आन्तरिक उन्नति से वंचित रह जायगा । कारण कि मौखिक दावा करने वाले आध्यात्मिक शक्ति को प्राप्त करने में अरुमर्थ रहते हैं ।

ध्यान देकर देखो कि संसार से मोह करने वाला मनुष्य (उस पर अपना घर बनाने वाला) कूकून होकर रह जाता है और पुत्र को प्यार करने वाला याकूब हो जाता है ।

मुझे अपने वैभव और पद का गर्व है । इन वस्तुओं को प्राप्त करके मैं दूसरों को तुच्छ समझता हूँ । परन्तु यह अहङ्कार व्यर्थ है । यह सब वस्तुएँ क्षणिक हैं ।

दरो हमचूँ "सनाई" वाश न दींदारी न दुनिया ।
कसे कूँ "सनाई" शुद दरे ई हर दो दर बन्दद ॥

(२४)

मे गिरिप्रतारे नियाजो आजो हिरसो अतलो माल ।
जिमतिहाने नफसे हिस्सी चंद वाशी दर बवाल ॥
चंद दर मैदाने कुदसे अज सीरा ताजी अस्पे लाक ।
चूँ न दारी दागे इशक अज हजरते कुदसे जलाल ॥
वातिन अज मानीत पाको जाहिर अज दावा पिदीद ।
चूँ तिही तवली वरार आवाज अज जरमे दवाल ॥
मर्द वाशो वर गुजार अज हक गरदूँ पाए खेश ।
ता शवी रसता अर्जी अलकाजहाये काल व काल ॥
रुह रा दर आलमे रुहानियाँ कुन आव सुर ।
नफस रा दर सुम्मे अस्पे रुह कुन कतउलमनाल ॥
चूँ मुकस्सल गरती अज औसाके नकसानी बइल्म ।
अज हमा अजसादे नकसानी कुनद रुह इनकिसाल ॥

अच्छा तो तब हो जब तू भी "सनाई" के समान ही हो जावे, जिसके पास न धर्म है और न संसार । क्योंकि 'सनाई' के समान मनुष्य दीन और दुनिया दोनों से पृथक् हैं ।

(२४) हे धन और माल, लालच तथा डाह के फन्दे में पड़ा हुआ मनुष्य ! तू इन सांसारिक वस्तुओं के पीछे कब तक पड़ा रहेगा ? वह सब क्षणिक हैं ।

जब तू उस विश्व-पालक परमेश्वर के रंग में नहीं रँगता तब व्यर्थ में पवित्रता का दावा करने से क्या लाभ होगा ?

तेरा अन्तःकरण अपवित्र है, आध्यात्मिक विकास से रहित है, और तेरी बाह्य शक्तियाँ भी हेय हैं । तू एक खोखले ढोल के समान है, जो कि चोट पड़ने पर वजने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करता ।

तुझे मनुष्यत्व प्राप्त करके सातों अकाश-खण्डों से ऊपर पहुँचना है । और उसी अवस्था में तू इन व्यर्थ के दावों से बरी हो सकेगा ।

अपनी आत्मा को उस स्थान में पहुँचा जहाँ पर बड़े-बड़े ऊँचे संतों की आत्माएँ निवास करती हैं । अपनी इन्द्रियों को शमन कर ले तभी तेरा कल्याण होगा ।

जब तू विद्या तथा ज्ञान के द्वारा अपनी इन्द्रियों को दमन करके पवित्रता के मार्ग में अग्रसर होगा, तब आत्मा शरीर के बन्धनों से छूट जायगी ।

जेहत कुन ता बुरी मंजिल अन्दर नूरे रह ।
 ता न मानी मुनकते दर औसते ज़िस्त जलाल ॥
 चूँ मुलकका गश्ती अज़ औसाके नकलानी तुरा ।
 दस्ते तक्रदीर ऊ तअला गोयद ऐ सैयद तअल ॥
 कै खबरदारी रसाने गर दरों वाकिक शर्वा ।
 ता कि खुरसंदी व मुश्ते इल्महाए दर मुद्दाल ॥
 रौ व जेरें सायए ला खानए इल्ल दगोर ।
 ता कि अज़ इल्लात दिनुमायद हमा राह मुद्दाल ॥
 चूँ व तके नेस्त गुल्ली दश मुद्दी ऊग यकी ।
 ई चुनीं भी याश अज़ अनकासे नस्त अन्दर हलान ॥

(२५)

शिगिफ़ अमद मरा दर दिल अजीं मुलताने जिन्दानी ।
 कि दर जिन्दाने मुलतानी गनम रीताने रिन्दानी ॥
 गरीबज जाहे नूरानी जे नाकरमानिए लखर ।
 दस्ते दुशमनों दर मौदा अंदर चाहे जुल्मानी ॥

तुम्हको आत्मिक प्रकाश में अपना मार्ग समझ करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि इन्द्रिय-जनित अन्धकार में आकर रुक न जाये ।

जिस समय तू इन्द्रियों के विकारों से रहित हो जायगा, उस समय परमेश्वर स्वयम् तुम्हें अपने पान बुला लेगा ।

जब तक तू इन साधारण विद्याओं पर सन्न रक्खेगा और जहाँ से ज्ञान का नय बुझ समझेगा तब तक अनुभव प्राप्त करके भी तू उसके समझ नहीं सकेगा ।

जा और विराग के अधिकार में अपने आप को रख, और संसार की वृत्तुल्य वस्तुओं में अपने को न फँसा, जिनसे सारी सज्दे तुझे संसार के वृत्तुल्य पदार्थों के द्वारा न दिखलाई दे ।

वैसे ही तू ने अपने आप को विकारों से परिच्छिन्न किया, तुम्हको समझ विराग हो जयग और फिर तुम्हें वैसे भी इन्द्रियों के वृत्तुल्य में न पड़ना पारिये ।

(२५) तुम्हें जिन के जन्मी सनाह पर खामखर्च होना है कि मैं सन्न लेना भी ईश्वर के मौतानी प ने में पदा गुण है ।

उसकी सेत में उसकी सनाह न मानी । उसके पान में उसका सनाह न दिया, जिनके परिस्तरापरमर सन्न के हावे कन्दी होकर लीये गुनी जन्मी कागफार में दर अपने गीर पदानी दर सन्न है ।

दरो हमचूँ “सनाई” वाश न दींदारो न दुनिया ।
कसे कूँ चूँ “सनाई” शुद दरे ईं हर दो दर बन्दद ॥

(२४)

मे गिरिमतारे नियाजो आजो हिरसो अजलो माल ।
जिमतिहाने नकसे हिस्ती चंद वाशी दर बजाल ॥
चंद दर मैदाने कुदसे अज खीरा ताजी अस्पे लाक ।
चूँ न दारी दागे इरक अज हजरने कुदसे जलाल ॥
वातिन अज मानीत पाको जाहिर अज दावा पिदीद ।
चूँ तिही तबली बरार आवाज अज जरुमे दवाल ॥
मर्दे वाशो बर गुजार अज हफ़ गरदूँ पाए खेश ।
ता शयी रसता अर्जी अलकाजहाये कील व काल ॥
रुह रा दर आलमे रुहानियाँ कुन आव खुर ।
नफ़स रा दर सुम्मे अस्पे रुह कुन कतउलमनाल ॥
चूँ मुफ़स्सल गरती अज औसाके नफ़सानी वइत्म ।
अज हमा अजसादे नफ़सानी कुनद रुह इनफ़िसाल ॥

अच्छा तो तब हो जब तू भी “सनाई” के समान ही हो जावे, जिसके पास न धर्म है और न संसार । क्योंकि ‘सनाई’ के समान मनुष्य दीन और दुनिया दोनों से पृथक् हैं ।

(२४) हे धन और माल, लालच तथा डाह के फन्दे में पड़ा हुआ मनुष्य ! तू इन सांसारिक वस्तुओं के पीछे कब तक पड़ा रहेगा ? वह सब क्षणिक हैं ।

जब तू उस विश्व-पालक परमेश्वर के रंग में नहीं रँगता तब व्यर्थ में पवित्रता का दावा करने से क्या लाभ होगा ?

तेरा अन्तःकरण अपवित्र है, आध्यात्मिक विकास से रहित है, और तेरी बाह्य शक्तियाँ भी हेय हैं । तू एक खोखले ढोल के समान है, जो कि चोट पड़ने पर बजने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं करता ।

तुझे मनुष्यत्व प्राप्त करके सातों अकाश-खण्डों से ऊपर पहुँचना है । और उसी अवस्था में तू इन व्यर्थ के दावों से बरी हो सकेगा ।

अपनी आत्मा को उस स्थान में पहुँचा जहाँ पर बड़े-बड़े ऊँचे संतों की आत्माएँ निवास करती हैं । अपनी इन्द्रियों को शमन कर ले तभी तेरा कल्याण होगा ।

जब तू विद्या तथा ज्ञान के द्वारा अपनी इन्द्रियों को दमन करके पवित्रता के मार्ग में अग्रसर होगा, तब आत्मा शरीर के बन्धनों से छूट जायगी ।

जहत कुन ता चुरी मंजिल अन्दर नूरे रह ।
 ता न मानी मुनकते दर औसते जिल्ल जलाल ॥
 चूँ मुसफ़का गश्ती अज औसाके नक़सानी तुरा ।
 दरते तकदीर ऊ तअला गोयद ऐ सैयद तअलाल ॥
 कै ख़दरदारी रसाने गर दरों वाक़िक शर्बी ।
 ता कि ख़ुरसंदी व मुश्ते इल्महाए दर मुहाल ॥
 रौ व ज़ेरे सायए ला ख़ानए इह्ला वगीर ।
 ता कि अज इल्लात धिनुमायद हमा राहे मुहाल ॥
 चूँ व तके नेफ़स गुफ़ी वश शुदी ऊरा यकीं ।
 ई चुनीं मी वाश अज अनफ़ासे नफ़स अन्दर हलाल ॥

(२५)

शिग़िक़ आमद मरा वर दिल अजीं सुलताने जिन्दानी ।
 कि दर जिन्दाने सुलतानो मनम शैताने रिन्दानी ॥
 गरीबज जाहे नूरानी जे नाकरमानिए लशकर ।
 वदस्ते दुशमनाँ दर माँदा अंदर चाहे जुल्मानी ॥

तुम्हको आत्मिक प्रकाश में अपना मार्ग समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि इन्द्रिय-जनित अन्धकार में आकर रुक न जावे ।

जिस समय नू इन्द्रियों के विकारों से रहित हो जायगा, उस समय परमेश्वर स्वयम् तुम्हें अपने पास बुला लेगा ।

जब तक नू इन साधारण विद्याओं पर सत्र रखेगा और उन्हीं से उत्पन्न ज्ञान को सब कुछ समझेगा तब तक अनुभव प्राप्त करके भी नू उसको समझ नहीं सकेगा ।

जा और विगन के अधिकार में अपने आप को रख, और संसार की बहुमूल्य वस्तुओं में अपने को न फँसा, जिनमें सारी महारतें तुझे संसार के बहुमूल्य पदार्थों के द्वारा न दिखलाई दें ।

जैसे ही नू ने अपने आप को विकारों से बचिप्र किया, तुम्हको उसका विश्वास हो जायगा और फिर तुम्हें वैसे ही इन्द्रियों के चहुँप में न पड़ना चाहिये ।

(२५) तुम्हें इससे ज्यादा समझ भय आवश्यक होता है 'इ' में समझ लेना भी शैतान के शैतानी व ने में पडा हुआ है

उसकी सेना ने उसको 'अल' न कानी, उसके वर ने उसका माय न दिया, जिसके परेशान-स्वकार मरु के हाथो उन्ही लोहर लोहेरे कुर्ब कनी कारागार में वह अपने दिन खतीब कर रहा है

सिपाहे बंकराँ दारी व लेकिन बेवका जुमला ।
 हमा दर अश्वा मगररन्द दर गमजी व नादानी ॥
 जे वद रुई व खुदराई हमाँ यकवारगी रफ़ा ।
 जे गुलशनहाय रुहानी वगुलखनहाय जिस्मानी ॥
 तलवगारन्द नुजहत रा व नशनासन्द ई माया ।
 कि गुलशनहाय जिसमानीस्त गिलखनहाय रुहानी ॥
 दराँ दरिया फ़िगन खुद रा कि मौजश वाश्त अन्न हिकमत ।
 कि जजए ऊ बक्रीमत तर युवद अज दुरे उम्मानी ॥
 अगर गोया व पैदाई यके खामोश पिनहाँ शौ ।
 खुशा खामोशे गोयाओ खुशा पैदाओ पिन्हानी ॥
 फिरस्ती गर तुरा वर सिरें जाने खुद बकूक उकतद ।
 कुजा वाक्किक तवानद शुद कसे वर सिरें यजदानी ॥
 अज्जाँ रू दर मकाने जेह हम वारा मकीनी तू ।
 कि अंदर वंदे हफ़ अख्तर असीरे चार अरकानी ॥
 चेरा दर आलमे अन्नली न परीँ चूँ मलायक तू ।
 चेरा तू इनसिआ जिन्नी दरन्दो हे तनो जानी ॥

ऐ दिल ! तेरे अधिकार में अगणित सैनिक हैं, परन्तु उनमें स्वामिभक्ति का विस्कुल अभाव है। सब को मिथ्याभिमान और छल ने धोखे में डाल रक्खा है।

वह सब के स्वार्थ तथा अपकर्म्मों के कारण, यकायक आत्मिक प्रकाश में से निकल कर शारीरिक सुखों में व्यस्त हो रहे हैं।

उनके हृदय में सांसारिक आमोद-प्रमोद और विलास के विचारों ने घर कर लिया है। और उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं है कि शारीरिक सुख आत्मा को निर्वल बना देते हैं।

तुम यदि किसी नदी में तैरना चाहते हो तो ऐसी नदी में तैरो जिसमें हिकमत (वैद्यक) की लहरें उठती हों। कारण, कि ऐसी नदी का एक साधारण पत्थर का टुकड़ा भी मोती से अधिक मूल्य रखता है।

यदि तू वाचाल है और उसके साथ ही साथ सबकी दृष्टि के सम्मुख भी है तो चुप हो जा और तनिक छिप भी जा। क्योंकि जो मनुष्य चुप और गुप्त रह कर अपना कार्य करता है वह अच्छा होता है।

यदि अपने प्राणों का रहस्य तुझ पर प्रकट हो जावे तो तुझे स्वतंत्रता मिल जायगी। इसके उपरान्त ईश्वर का भेद तुझे ज्ञात हो जायगा।

तू सदैव से नादान चला आ रहा है। इसका कारण यही है कि तू सात सितारों की शर्तें मानता है और चारों दिशाओं के भीतर बन्द है।

तू इस बुद्धि को दुनिया में स्वर्गीय दूतों के समान क्यों नहीं विवरण करता ? मनुष्यों व जिन्नों के समान शरीर तथा प्राणों की चिन्ता में व्यस्त क्यों हो रहा है ?

चे पेचानी सरज ताअत चे वाशी रोजो शव गाकिल ।
 चे पोशी जामए शइवत दिलो जाँ रा चे रंजानी ॥
 कि ता दस्ते जवाँमर्दी जे दुनिया दर न अफशानी ।
 चुनाँ दाँ दर खते दीँ दर कि दस्ते वा हमर दानी ॥
 वदीँ हिन्मत कि अन्दर सर हर्मीँ दारी सर अन्दर कश ।
 सजाये पंचवो दू की न मरदे रज्म मैदानी ॥
 अगर खाही कि व हशमत जे अहलिल वैते दीँ वागी ।
 वे आवी दर रहे ईमाँ यके तस्लीमे सलमानो ॥
 अया मै खुरदए गफलत कुनू मस्ती व मैहोशी ।
 खुमार अज दीँ कुनद फरदा कमाले खेश नुकसानी ॥
 व पेशे आदमे शरई सुजूदे इनकियाद आवर ।
 गर अज शुवहत न चूँ इवलीसो दर पैकारे शैतानी ॥

(२६)

शाहरा खाही कि वीनी खाक शौ दरगाह रा ।
 जाये खूयत आव जन मैदाने शाहंशाह रा ॥
 हम व चश्मे शाह खूय शाह खाही दीदो वस ।
 दीदा अंदर कारे शइ कुन कोरिए वदखाह रा ॥

तू ईश्वर को भुलाकर दिन-रात सांसारिक भ्रमों में पड़ा रहता है और इन्द्रियों की वृत्ति में अपने दिल तथा प्राणों को कष्ट देता रहता है ।

जब तक तू साहस तथा प्रतिज्ञा के साथ इस संसार को नहीं छोड़ देगा, उस समय तक सच्चे धर्म को नहीं जान सकेगा और न उस मार्ग में आगे ही बढ़ सकेगा ।

जो कुछ जानता और समझता है उसी पर सब करके बैठ रहना त्रियों का कार्य है । यह समर-भूमि में वीरों के समान लड़ना नहीं है ।

तू इस धर्म-मार्ग में यश और पद प्राप्त करने का इच्छुक है तो सलमान की भाँति तेरी प्रतिष्ठा होगी ।

इस समय तू आलस्य में पड़ा हुआ है । मदिरा की मस्ती में सब कुछ भूला हुआ है । परन्तु प्रलय के दिन यही भूल तेरे लिये हानिभद मिले होगी ।

तुझे उस सृष्टिकर्ता के सन्मुख भक्ति-भाव से शिर झुकाना उचिit है और इवलीस के समान सन्देह में न पड़ कर शैतान के समान कार्य में दक्षिit होना चाहिये ।

(२६) यदि तू उस राजराजेश्वर के दर्शनों की अभिलाषा रखता है तो उसके मन्दिर की धूल बन जा और उसके आने के मार्ग में अपनी प्रतिष्ठा का छिड़काव कर दे ।

उसका मुख केवल उसी के नेत्रों से देखा जाता है, अन्य सब धर्म-प्राणियों को उसकी नजर करके उसके शत्रु को समझना पना है ।

आह गम्माज आमद अन्दर राहे इश्की आशिकी ।
 वन्द वर नेह दर निहाँ खानए खमोशी आह रा ॥
 दर्दे इश्क अज मर्दे आशिक पुर्स अज आकिल मपुर्स ।
 का गही न बुवद जे आवे चाह यूसुक जाह रा ॥
 अत्रले वाकिंदस्त मनिशाँ अत्रल रा वर तगते इश्क ।
 आसमाँ उश्शाकराओ रेसमाँ जोलाँद रा ॥
 गर सिपर विक्रगनद अत्रल अज इश्क गो विक्रगन रवास्त ।
 रूप खातूँ सुखे वादा खाक वर सर दाह रा ॥
 दर्द मूसा वार खाही जामे फिरअनी तलव ।
 वा रजाओ आकियत रोजे मलामतगाह रा ॥

(२७)

गाहे रज्म आमद वेया ता मैल जी मैदाँ कुनेम ।
 मर्दे इश्क आमद वेया ता गिर्दे ऊ जौलाँ कुनेम ॥
 चंग दर कित्राके ईं माशुके आशिककुश जनेम ।
 पस लगामे नेस्ती रा वर सरे फरमाँ कुनेम ॥

आह भरने से प्रणय प्रकट हो जाता है । सभी लोग ऐसे मनुष्य को समझ जाते हैं । अतएव उसको मुख से निकलने ही न दे ।

प्रेम का मजा किसी ज्ञानी को क्या मालूम होगा ? उसे तो वही जान सकता है जिसने प्रेम किया है । अतएव उसके स्वाद के विषय में प्रेमी से ही प्रश्न करना उचित है । कारण कि जिसको यूसुक का ज्ञान प्राप्त है वह कुएँ के पानी के विषय में क्या कह सकता है । प्रेम को पीड़ा का अनुभव प्रेमियों को ही हो सकता है ।

हमारो बुद्धि किसी काम को नहीं है, उसमें कुछ करने को सामर्थ्य नहीं है । वह उस प्रेम को समझ नहीं सकती । प्रेमियों के लिये आकाश बनाया गया है और जुलाहों के लिये सूत ।

यदि बुद्धि प्रणय से पराजित हो जावे तो इसमें कोई हानि की बात नहीं है । दुलहिन यदि स्वयम् अपने आपको सँवार सकती है, तो किसी परिचारिका की क्या आवश्यकता है ?

यदि मूसा के समान प्रणय-पीड़ा का इच्छुक है तो किसी फरऊन का सामना कर और सब प्रकार की मलामतों को सहन कर ।

(२७) युद्ध का समय निकट है, चलो समर भूमि को चलें । प्रणय-मार्ग का वीर आ गया है, आओ उससे युद्ध करने चलें ।

चलो, इस प्रेमी को मार डालने वाली प्रेमिका का शिकारवन्द पकड़ लें, और मृत्यु का सुख-पूर्वक आवाहन करें ।

गर बरायद खते तौकी अश वरीं मसूरे मा ।
 घाज दौदा वर खते मन्सूर दुरअफ़शाँ कुनेम ॥
 अज खयाले चेहरये गन्माजो रंग आमेजे ऊ ।
 पस दररमे हाजियाँ गह तौक गह कुरचाँ कुनेम ॥
 नंगे ईं मसजिद परस्ताँ रा दरे दीगर जनेम ।
 चूँ कि मसजिद लायगह शुद क़िवलारा वीराँ कुनेम ॥
 खाके पाए मरकबे उश्शाक़ रा अज रूप फ़क़्त ।
 तूतिघाए चश्मे शाहाने हमा गैहाँ कुनेम ॥
 ईं न शर्ते मोमिनी वाशद न रस्मे वेख़ुदी ।
 ताअते सुलताँ वे माँदम खिदमते दरवाँ कुनेम ॥
 चूँ अरुस्ताने तबीयत महरमे माँ नेस्तन्द ।
 वा अजीजाने तरीक़न्द शायद अर पैमाँ कुनेम ॥
 हर चे अज पेशी व वेशी हस्त दर अतराफ़े मा ।
 मा वदाँ अज दिल सलाये मा अलेहा फ़ाँ कुनेम ॥
 ऐ "सनाई" ता दरीं दामी मजन दम जुज व इश्क़ ।
 हात चूँ शमए मुनीरौ रौशनो तावाँ कुनेम ॥

यदि वह हमारी प्रार्थना को किसी प्रकार स्वीकार कर ले तो हम उसके दर्शनों पर अपने नेत्रों के अश्रु-विन्दुओं को न्योछावर करने के लिये उद्यत हैं ।

उसके उस सुन्दर मुख के ध्यान में, प्रेमीजन कभी तो भ्रमर के समान उस पर मठराने के लिये उद्यत होते हैं और कभी अपने प्राणों को उस पर न्योछावर कर देने के लिये कटिवद्ध हो जाते हैं ।

तुन्हें उन लोगों का साथ छोड़ देना चाहिये, जो मसजिद और मन्दिर के भगडों में पड़े हुए हैं । जब मसजिद में कीचड़ और पानी भर जाये तब क़िवला को जाकर उजाड़ डालें ।

प्रेमियों का पद बहुत ही ऊँचा होता है । इस संसार के सम्राटों से भी वह कहीं बड़े-बड़े हुए हैं ।

यह ईमानदार होने की शर्त नहीं है और न इसे बुद्धिमानी ही कह सकते हैं कि हम राजा को छोड़ कर द्वारपाल की सेवा में लगे रहें ।

यदि हमारे स्वभाव की ख़ुदियाँ हमारा साथ नहीं देती हैं, तो हमें उचित है कि प्रेम के मार्ग में बढ़ने वाले मनुष्यों का उदाहरण अपने सम्मुख रखें ।

इसके अतिरिक्त हममें यदि किसी बात की कमी है और कोई वस्तु मात्रा से अधिक वर्तमान है तो उनको दूर कर देना ही उचित है । उन्हें मिटा देना चाहिये ।

"सनाई" का कथन है कि मनुष्य को इस ईश्वरीय प्रेम को छोड़ कर और किसी तरह अपने मन को न दौड़ाना चाहिये. जिससे वह भी प्रेम को इस अलौकिक आभा से दीपक के समान उज्वल हो उठे ।

अंदलीवे ई नवाही दर ककस औला तरी ।
 काशकारा अंगहे गरदी कि माँ पिनहाँ कुनेम ॥
 तात फरमाने न आमद जी ककस वेरु मपर ।
 चू शुदी ताऊस जायत मंजरे ऐवाँ कुनेम ॥

(२८)

ता मोतकिके राहे खरावात न गर्दी ।
 शाइस्तए अरवावे करामात न गर्दी ॥
 अज्र वन्दे अलायक न शवद नअसे तो आज्राद ।
 ता वन्दए रिंदाने खरावात न गर्दी ॥
 दर राहे हकीकत न शवी किन्लए अहरार ।
 ता किदवए असहावे लिवासात न गर्दी ॥
 ता खिदमते रिंदौं न गुज्जीनी व दिलो जाँ ।
 शायस्तए सुक्काने समावात न गर्दी ॥
 ता नेस्त न गरदी चो “सनाई” जे अलायक ।
 निजदे उकला अहले मुवाहात न गर्दी ॥

(२९)

अज्र पए मरदानगी पाइन्दा जात आमद खयार ।
 वज्र पए तर दामनी अंदक हयात आमद समन ॥

तू इस उपवन की बुलबुल है । तुझे पिंजरे में ही बन्द रहना उचित है ।
 क्योंकि वास्तव में तू प्रकट तभी होगी जब हम तुझे छिपा देंगे ।

जब तक तेरे लिये आज्ञा न हो पिंजड़े में से निकल कर बाहर जाने का
 प्रयत्न मत करना । हाँ, उस समय, जब तू मयूर बन जायगी हम बड़ी
 प्रसन्नता के साथ तुझे अपनी अट्टालिका के ऊपर स्थान देंगे ।

(२८) जब तक तू प्रणय मार्ग में पाँव तोड़ कर नहीं बैठेगा तब तक
 करामातियों में तेरी गणना नहीं हो सकती है ।

जब तक प्रणय-मार्ग के मस्त लोगों की इज्जत न करेगा तब तक तेरी
 इन्द्रियाँ सांसारिक बन्धनों से बाहर नहीं आ सकती हैं ।

जब तक तू मनवाले प्रेमियों के आगे होकर उसी मार्ग पर नहीं चलेगा
 तब तक ईश्वर को पहचानने में तू समर्थ नहीं हो सकता ।

यदि तन और मन से तू इन मस्तों की सेवा न करेगा तो उस लोक में
 रहने वालों को तुझे अपने बीच में स्थान देना असम्भव है ।

जब तक तू “सनाई” के समान संसार के समस्त बन्धनों को तोड़ कर
 अलग न कर देगा, तेरी गणना ध्यानियों में नहीं की जा सकती ।

(२९) अपने लक्ष्य पर मर मिटने के लिये बड़ साहसी लोग चुने गये हैं,
 जिनकी कभी मृत्यु नहीं होती और पाप-कर्म करने के लिये उन मनुष्यों की

गारो ना देव शीतो या फरिस्ता दर मसाक।
 जिमलिदाने नरमे हिर्मी चंद दाशी मुमनहन ॥
 नू दुके रक अज नो देव ईनक दर आमद जिदरईल।
 नू दर आमद जिदरईल ईनक दुहे शुद अहेमन ॥
 दौ जमानो या जा हर दो वयक दम दर कशद।
 नू निर्हे दे दे नागाह दुकशापद दहन ॥
 मू दे हजरत न पोयद हेच दिन वा आरजू।
 वा चुनी गुलशा न सुसपद हेचकस वा पैरहन ॥
 गर हमी कारी कि परहा रोयदत जी शमगाह।
 हम चो किमे पीला दर गिरे निहादे खूद मतन ॥
 यारे नानी बन्द अजी जा जी के दर सह्राए हशन।
 मरु फासिद दुद खाहद रोडे बाजारे सुजन ॥
 बाशे कियला दर रहे तौहीद न तवाँ रक रास्त।
 वा रजाए दोन्त वायद वा हवाए खेस्तन ॥

सृष्टि की गर्द है, जिनको बहुत थोड़े दिन जीने के लिये दिये गये हैं (वास्तव में मनुष्य वही है जो इस थोड़े से जीवन को अपकर्मों में व्यतीत न करके ईश्वरीय खोज में संलग्न रहता है)।

तू उस परब्रह्म की खोज में आगे बढ़। उस समय तुम्हें दिखलाई देगा कि शैतान स्वर्गीय दूतों से युद्ध कर रहा है। इन सांसारिक विषय-वासनाओं में कब तक फँसा रहेगा ?

तेरे अन्दर से बुराइयों का भूत भाग गया है और उसमें अब सद्भावनाओं का प्रकाश हो गया है। स्वर्गीय दूत के आ जाने पर शैतान कब रह सकता है ?

धर्म का घड़ियाल जब अपना मुन्ध खोलना है तो दोनों लोकों को निगल जाता है।

कोई भी मनुष्य हृदय में किन्ना अन्य आकांक्षा को लेकर इस दरवार की ओर अग्रसर नहीं हो सकता और ऐसी प्रियतमा के साथ कोई भी किन्ना प्रकार का बन्ध पटन कर शयन नहीं कर सकता।

यदि तू इस समारम्भों जाल से निकल भागने के लिये पर-चाहता है तो रेशम के कीड़े के समान अपने आस-पास जाला मत लगा।

यदि यहाँ से कोई सामान अपने साथ ले जाना चाहता है तो आध्यात्मिक वस्तुओं को अपने साथ ले जा, क्योंकि मृत्यु के उपरान्त तू जिस स्थान पर पहुँचना है वहाँ खाली दानों से काम नहीं चल सकता।

इस प्रणय माग में तू दो लक्ष्य अपने सामने रख कर मत चल। और न इस प्रकार काम ही चल सकता है। या तो तू अपनी ही इच्छाओं के अनुसार काम कर या अपने दार की इच्छाओं पर चल।

यार नामए मा व मन दर आलमे हुस्नस्त तो वस ।
 चूँ अर्जी आलम वुरूँ रपती न मा वीनी न मन ॥
 चंग दर कित्राके साहव दौलते जन ता मगर ।
 वर तर आई जी सरिश्ते गौहरे हरके मजन ॥
 पोशिश अज दीं साज ता वाकी बेमानी वहे आँके ।
 गर वरीं पोशिश न मीरी हम तू रेजी हम कफन ॥

(३०)

दर गहे खलक हमा जक्रों करेवस्तो हवस ।
 कार दरगाहे खुदावन्दे जहाँ दारदो वस ॥
 हर कसे नामे कसी याक़ अर्जी दरगह याक़ ।
 ऐ विरादर कसे ऊ वाश मैं अदेश जे कस ॥
 वंदए खासे मलिक वाश कि वा दागे मलिक ।
 रोज़हा ऐमनी अज शहना व शवहा जे असस ॥
 गर चे दर तायती अज हजरते ऊ ला तामन ।
 वर चे गर मासियती अज दरे ऊ ला तैअस ॥

‘मेरे’ और ‘हमारे’ का चर्चा केवल इस संसार तक ही है। यहाँ से निकल कर मेरे और ‘हमारे’ का भाव नितान्त निर्मूल सिद्ध होता है।

किसी बड़े आदमी की शरण ले, जिससे तू इन बुरी बातों से बचा रहे और उनका तुझ पर कोई असर न हो।

यदि अपने आप को किसी रंग में रँगना है तो प्रेम-रंग में रँग। क्योंकि इस रंग में रँगा हुआ मनुष्य मृत्यु के बन्धनों से छूट जाता है।

(३०) यह संसार विभिन्न जीवधारियों का निवास-स्थान, झल-कपट तथा विविध वासनाओं का क्रीड़ा-स्थल है। किसी काम का नहीं है। यदि किसी काम की कोई वस्तु है तो वह केवल ईश्वरीय लोक। एक धार्मिक मनुष्य बन जा और ईश्वरीय प्रेम में लवलीन हो जा। अन्यथा जितनी भी वस्तुएँ हैं सब तुझे दुःखद प्रतीत होंगी।

यदि किसी को किसी प्रकार का यश प्राप्त हुआ तो वह केवल उसी ईश्वर के मन्त्रन्ध में। अतएव हे मित्र ! तू उसी की सेवा में संलग्न रह और किसी से भय मत कर।

उस वादशाह का तू अनन्य भक्त बन जा। उसकी सेवा के अतिरिक्त किसी बात की चिन्ता मत कर। उसकी सेवा, उसके सेवक का पद, तुझे सदैव सांसारिक जातों से बचाये रहेगा।

तू भक्ति करन्ता है, परन्तु इस पर भी ईश्वर की तरफ से निश्चिन्त मत होना और अपकर्म्म करके भी उसकी दयालुता के प्रति निराश न होना।

गर चे खूबो तू सूए जिश्त बखारी मनिगर ।
 कंदरीं मुल्के चो ताऊस निगरस्त मगस ॥
 तू फरिश्ता शबी अर जेहद् कुनी अज पए आँके ।
 यगें तूतस्त कि गश्तस्त बतदरीज अतलस ॥
 आशिकी वर खुदो वर शहवतो वर खावो खुरिश ।
 नस्से गोयाय तो अज हिकमत अजाँनस्त अखरस ॥
 चंग दर गुफ्तए यजदानो पैयंवर जन अजाँ के ।
 काँ चे कुरआनो खबर नेस्त फिसानस्तो हवस ॥
 पोस्त वेगुजार कि ता साफ़ शवद खूने तो जाके ।
 कि चो वे पोस्त बुवद साफ़ शवद खू जे अदस ॥
 नामे वाकी तलवी गर्दे कमाँ ज़ारी गर्दे ।
 कज कमाँ ज़ारी कम उम्र ने आवद करगस ॥
 आज बगुजार कि वा आज ब हिकमत न रसी ।
 वर वयाँ वायदत अज हाले “सनाई” वर रस ॥

तू भला है परन्तु इस पर भी बुरे से घृणा मत कर । बुरे से बुरे मनुष्य से भी भलाई की आशा की जा सकती है । (क्योंकि इस संसार में मन्खी के भी मोर के समान नक़शो निगार होते हैं) ।

प्रयत्न करने से तू देवत्व प्राप्त कर सकता है । शहतूत के वृक्ष की पत्तियाँ धीरे-धीरे अतलस के रूप में परिणत हो जाती हैं ।

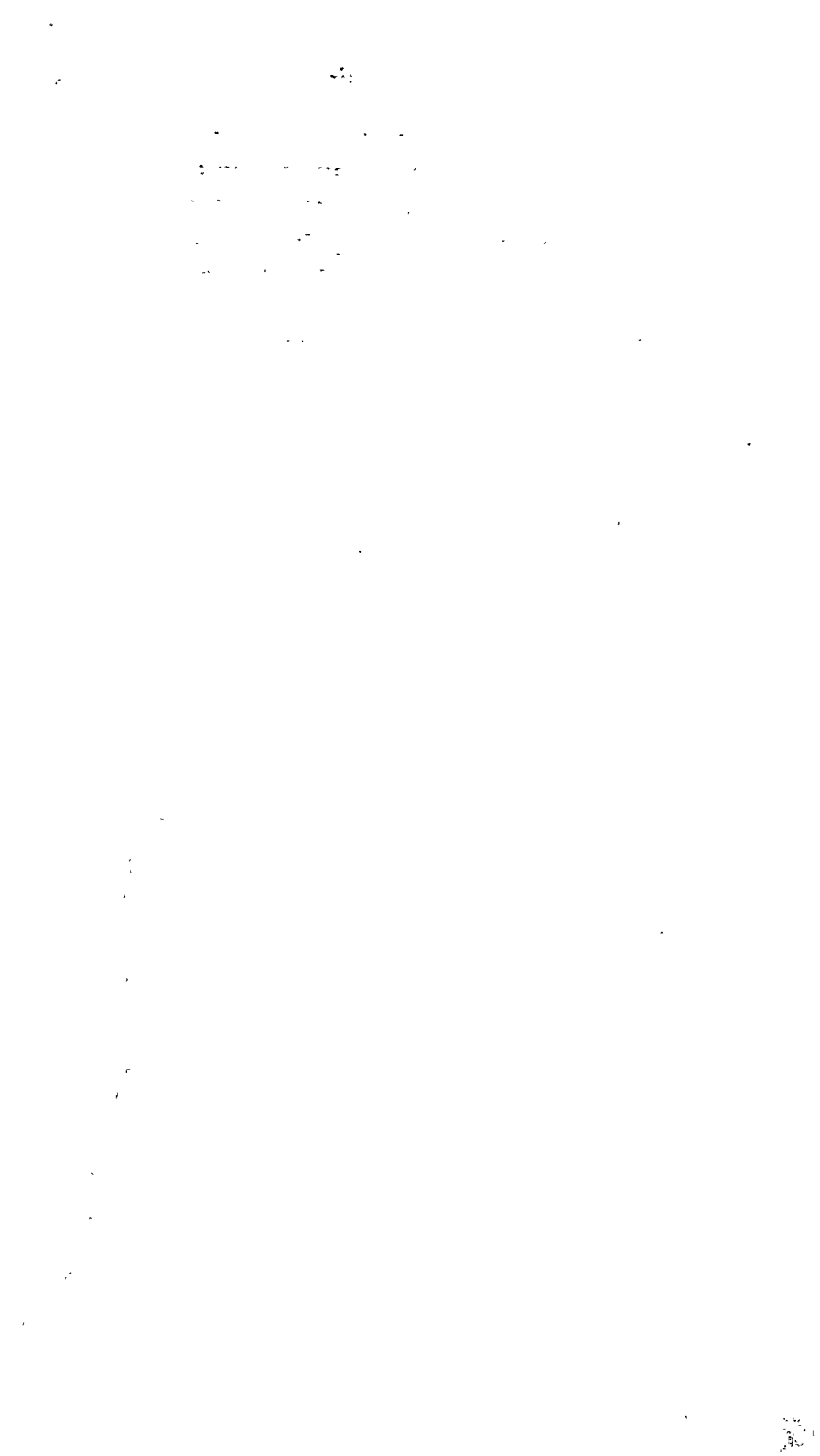
तू सदैव विषय-वासनाओं की पूर्ति में लवलीन रहता है और आँख मूँद कर खाने और सोने में आनन्द अनुभव करता है । इसी कारण तेरी इन्द्रियाँ इतनी बलवती हो गई हैं ।

भगवान और पैगंबर के कहने पर चल, कुरान और हदीसों को पढ़, उनके सिवा सब बेकार कहानियाँ हैं ।

अपनी खाल उतार दे जिससे तेरा रक्त शुद्ध हो जावे । अपने आपको पवित्र करने के लिये बाह्य लालसाओं का त्याग कर दे । तू इस बात को स्वयम् समझता है कि छिलका उतार देने से मसूर का रंग साफ़ निकल आता है ।

यदि तूझे अपना नाम शेष रखना है तो किसी को दुःख पहुँचाने का प्रयत्न मत कर । अपने इसी गुण के कारण गृद्ध ने इतना लम्बा जीवन प्राप्त किया है ।

लालच को अपने हृदय में भूल कर भी स्थान न दे । लालच के कारण सत्य-ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती । यदि इसका उदाहरण चाहता है तो “सनाई” का हाल देख ले और उससे शिक्षा प्राप्त कर ।



उमर खय्याम

(स्यु ११२१ ई०)





उमर बिय्यास

(कवि की कुछ 'शक्तियों' का उगम के एक प्राचीन चित्रकार द्वारा अंकित भाव चि

यह कवि तथा ज्योतिषी थे। ईरान में उनकी ख्याति इस लिये नहीं है कि वह एक ब्रह्मवादी कवि थे वरन् इस लिये है कि वह गणित-शास्त्र और ज्योतिष-शास्त्र के ज्ञाता थे। क्रिस्ट्जजेराल्ड के अनुवाद द्वारा पाश्चात्य में इनका नाम अमर हो गया है, और पूर्व की अपेक्षा में पच्छिम इनकी ख्याति अधिक है। इनकी कविता एक अनोखे ढंग की है। सूफ़ी लोगों की कविता में आत्मवाद होता है, परन्तु इनकी कविता में निराशावाद की लहर है। इनकी कविता परंपरा से स्वतंत्र है और तत्कालीन रुढ़ियों से मुक्त। यह एक बड़े व्यंग्यात्मक कवि थे और आडम्बर (धार्मिक चिह्नों) की आलोचना बड़े खोरदार शब्दों में किया करते थे। इन्होंने स्थान-स्थान पर अनेक बार इसकी असफलता के विषय में अपनी लेखनो उठाई है। हम लोगों में वह रुवाइयात के लेखक के नाम से प्रसिद्ध हैं। अब बड़े-बड़े विद्वान् इस विषय में सहमत हैं कि उनके नाम से जितनी भी रुवाइयाँ प्रसिद्ध हैं वह वास्तव में बहुत से कवियों की लेखनियों से निकली हुई हैं, जिनमें से इत्रसिना भी एक थे। कुछ रुवाइयाँ वास्तव में इन्हीं की हैं, परन्तु वे गणना में बहुत ही कम हैं। मौलाना सैयद सुलैमान नदवी ने अपने 'उमर खय्याम' नामी निबंध में जिसको उन्होंने 'ओरियेंटल कान्फ़्रेस' के सन्मुख पढ़ा था; इनके ऊपर बहुत ही बढ़िया प्रकाश डाला है। इस बात में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता है कि वह एक उच्च कोटि के कवि थे, और ख़ाजा इमाम के शब्दों में उनकी यह इच्छा कि मेरी क़ब्र ऐसे स्थान पर बने जहाँ कि वृत्त वर्ष में दो बार अपने पुष्प बरसाया करें, कीट्स की इच्छा के समान पूर्ण भी हो गयी। उनकी क़ब्र नैशापुर में बनी हुई है, जहाँ पर शेफ़ालू और नाशपाती के वृत्त अपनी पुष्प-वर्षा करते हैं। उनकी चतुष्पदी कविताओं का प्रचार रूस वालों द्वारा सबसे पहले यूरोप में हुआ था। तब से उनका नाम अधिकाधिक व्यापक होता जा रहा है।

उनकी रचनाएं निम्न हैं:—

रुवाइयात ।

ज्योतिष और गणित की पुस्तकें ।

(१)

आमद सहरें निदा जे मैखानए मा ।
कै रिंद खराबातिए दीवानए मा ॥
वर खेज कि पुर कुनेम पैमाना जे मै ।
जाँ पेश कि पुर कुनन्द पैमानए मा ॥

(२)

मै कुञ्चते जिस्मो कुञ्चते जानस्त मरा ।
मै काशिके असरारें निहाँनस्त मरा ॥
दीगर तलवे दीनवो उक्या न कुनम ।
यक जुरआ पुर अज हर दो जहाँनस्त मरा ॥

(३)

अज वादए नाव लाल शुद गौहरे मा ।
आमद वफुगाँ जे दस्ते मा सागरे मा ॥
अज वसकि हमी खुरेम मै वरसरे मै ।
मा दर सिरे मै शुदेम व मै दर सरे मा ॥

(४)

आशिक हमी रोजा मस्तो शैदा वादा ।
दीवानओ शोरीदओ रुसवा वादा ॥
दुर हुशायरी गुस्तए हर चीज खुरेम ।
चू मस्त शवेम हर चे वादा वादा ॥

(१) एक प्रभात काल में मेरे मदिरा-गृह से एक आवाज मेरे कानों में पड़ी कि 'ऐ मेरे मतवाले, मदिरा प्रेमी ! उठ बैठ । आ जीवन के प्याले के भर जाने से पहले ही हम उस ईश्वर के प्रेम रूपी प्याले का पान करें । मृत्यु होने से पहले ही उससे लगन लगा लें ।'

(२) प्रणय को मदिरा हमें बहुत लाभ पहुँचाती है । उससे हमारे शरीर तथा प्राणों को शक्ति प्राप्त होती है । उसके पाने से रहस्यों का पता लग जाता है । वस, मैं उस मदिरा का केवल एक घूँट चाहता हूँ । उसके उपरान्त न तो मुझे संसार अथवा जीवन की ही चिन्ता रहेगी और न मृत्यु की ।

(३) इस प्रणय-रूपी शुद्ध मदिरा के पान कर लेने से प्रणय-मार्ग में हमारी प्रतिष्ठा और भी अधिक हो गई है । मदिरा का पात्र भी सदैव भरा ही रहता है । इस प्रणय-मदिरा की अधिकता से, हमारे मस्तिष्क तक में घुआँ छा गया है, और सच्चे प्रणय को हमने पहचान लिया है ।

(४) प्रणयों को समस्त दिन प्रणय में ही मतवाला रहना चाहिये ।

(५)

एँ आँकि गुज़ीदए जहानी तु मरा ।
खुशतर जे दिलो दीदओ जानी तु मरा ॥
अज़ जाने सनमा अज़ीज़ तर चीज़े नेस्त ।
सद वार अज़ीज़ तर अज़ानी तु मरा ॥

(६)

खाही जे किराक दर कुगाँ दार मरा ।
खाही जे विसाल शादमाँ दार मरा ॥
मन वा तू न गोयम कि चेसाँ दार मरा ।
जे इन्साँ कि दिलत खास्त चुनाँ दार मरा ॥

(७)

चंदाँ वखुरम शराव कीं वूए शराव ।
आयद जे तुराव चूँ खम जेरे तुराव ॥
ता वरसरे खाके मन रसद मखमूरे ।
अज़ वूए तुरा वे मन शवद मस्तो खराव ॥

(८)

माओ मैओ माशूक दरिँ कुंजे खराव ।
जानो दिलो जामो जामा दर रहने शराव ॥

उसे पागल, व्याकुल होकर भटकते रहना चाहिये। होश में रहने पर प्रत्येक वस्तु की चिन्ता घेरे रहती है, परन्तु मतवाला हो जाने पर सभी वस्तुओं का ध्यान मस्तिष्क से दूर हो जाता है। यदि किसी का खयाल रहता है तो उसी वस्तु का जिसने मतवाला बना दिया है।

(५) प्यारे! तू मेरे लिए संसार में सब से बढ़ कर है। तू मुझको दिल, आँख और कान इत्यादि सभी से बढ़ कर प्रिय है। प्यारे! प्राण से बढ़ कर कोई वस्तु प्रिय नहीं होती, परन्तु तू मुझको प्राणों से भी सौ गुना अधिक प्रिय है।

(६) मैं तेरी इच्छा पर निर्भर हूँ। यदि तू अपने वियोग में मुझे तड़पाना चाहता है तो तड़पा, और मिलन का सुख देना चाहता है तो सुख दे। तू त्रिम अवस्था में मुझे रखना चाहता है रख। मैं कभी इसके विरुद्ध अपने मुख मे एक शब्द भी नहीं निकालूँगा।

(७) मैं इतनी मदिरा पान करूँगा, कि उसकी महक मेरे फर्श के नीचे से निकलती हुई ममाधि तक जा पहुँचे, और उसमें से भी निकलने लगे ताकि कोई मतवाला प्रेमी उम तक आ पहुँचे, और उसकी महक से और भी मतवाला तथा वेमुध हो जावे।

(८) इस मुनमान, ब्रीहड़ में, मैं हूँ, मदिरा है और और मेरी प्या है। प्राणों को, दिल को, प्याले को तथा वस्त्रों को, मदिरा के लिये गिरवी रख

फ़ारिग़ ज़े उमीदे रहमतो बीमे अज़ाब ।
आज़ाद ज़े ख़ाक़ओ नादो ज़े आतिशो आब ॥

(९)

हर दिल कि दरु मेहो मोहब्बत वसिख़िस्त ।
गर साकिने मसजिदस्त वर अहले कुनिस्त ॥
दर दक्तरे इज़क़ नामे हर कस के नख़िस्त ।
आज़ाद ज़े दोज़ख़स्त वो फ़ारिग़ ज़े वहिस्त ॥

(१०)

असरारे जहाँ चुनों के दर दक्तरे मान्त !
गुफ़तन न तवाँ जाके बवाले सरे नास्त ॥
बूँ नेस्त दरीं मरदुमे नादीं अहल ।
गुफ़तन न तवाँ हर उश्चे दर खातिरे नास्त ॥

(११)

वर तर्जे लिपहरे खातिरु रोज़े नख़ुस्त ।
लौहो क़लमो वहिस्तो दोज़ख़ नी जुन्त ॥
पस गुफ़त मरा मोअल्लिन अज़ इल्ते दुग़स्त ।
लौहो क़लमो वहिस्तो दोज़ख़ वा तुल ॥

(१२)

मे आम्दा अज़ आलमे रुहानी तप्त ।
दौरो गुदा दर पंजो चहागे शशो हप्त ॥

दिया है। न तो यही कहता हूँ कि 'हे भगवन् ! कुछ कर' और न उसके क्रोध का ही भय है। मैं इस समय जल, वायु, अग्नि और मिट्टी इत्यादि पारों भूतों से पृथक् हूँ।

(९) जिस कवच में प्रेम की लपट लग गई, वह चाहे मसजिद में निवास करता हो चाहे दुतखाने में, जिस जिनो का भी नाम प्रेमियों की सूची में ला गया, उसको न तो सरक की ही चिन्ता है और न स्वयं की इच्छा।

(१०) संसार की दुम बाते, जिन्हें हमारा दिल समझता है, शयद नहीं ही जा सकती है। क्योंकि यह मेरे सर का बाग़ है। इन नादान मनुष्यों में कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य नहीं है, यद्यपि अपने कवच का भेद हम शयद कर ही नहीं सकते हैं।

(११) मूढ़ि किस समय उगत हूँ ही, मेरा कवच भी कामनाओं का देग़ था। उसमें भी स्वर्ग-भारत के भेद-भारत इतनाम थे। उन समय नहीं भिन्न होने वाले गुन ने कवच ठीक पाए था कि, कवची और कवच, कवच नहीं और कवच के फेर में क्यों क्या हुआ है। वा सप नी के ही काम है।

(१२) मे फ़ारिग़-मिस्तान के फेर में रहे हुए मन्दा, नु कर्मा के कवचों में

(१६)

साक़ी मैं मारेक़त मरा मकरमतस्त ।
दर मशरवे बेमारेक़ताँ नासियतस्त ॥
बेमारेक़त आदमी बेकार आयद् हेच ।
मक़सूद् जे आदमी हर्मी मारेक़तस्त ॥

(१७)

युतख़ानओ कादा ख़ानए वंदगी अस्त ।
नाक़ूस ज़दन तरानए वन्दगी अस्त ॥
मेहराबो कलीसाओ तसदीहो मलीय ।
हज़्ज़ा कि हमा निशानए वन्दगी अस्त ॥

(१८)

अज़ मंज़िले कुप्र ता बर्दा यक नक़्मन् ।
वज़ आलमे शक तावैसफ़ी यक नक़्मन् ॥
हँ यक नक़्मे अज़ीज़ रा नूश मीदार ।
कज़ हानिले उम्रे मा हमी यक नक़्मन् ॥

(१९)

हर दपतरे आलीये मख़ानी इशक़्म ।
सर दैते फ़लीदए ज़बानी इशक़्म ॥
ऐ ख़ाँके ख़दर नशारी अज़ आलमे इशक़्म ।
हँ नुक़ता बेदीके जिन्दग़ानी इशक़्म ॥

(१६) हे साक़ी ! मुझको पुरस्कार में मिलान-भगिना प्राप्त हुई है । जिनको मिलान-सुख का अनुभव नहीं हुआ उसका अभिन्न व्यर्थ है । उनको निर्वन्म पहना पाहिये । मनुष्य-जीवन का उद्देश्य केवल ईश्वर में नाच न ही करना है ।

(१७) मन्दिर तथा वादा, दोनों ही ईश्वर की पूजा के स्थान हैं । ईश्वर बजाना उसी को आवाहन करना है । मक़सूद् की मानव, गिरजा की बेदी, तसदीह और माला मय में सज्ज है । यह उसी फ़लीदर की पूजा की स्मृति में है ।

(१८) धर्म तथा इसके प्रतिष्ठा पाने में बलिदान ही कर्म है और इसी प्रकार समस्त तप जिरान में वृत्त बन कर्म है । अतएव दोनों में यदि किसी प्रकार की विभिन्नता है तो पौरुष तप उन को एक मानना उन को शक़्म में स्थान पर । अतएव ही हमारे जीवन का सार केवल यही सब दन है ।

(१९) अज़-अज़ की शक़्म तथा मख़ानी केवल धेन में ही प्रक़्त होती है । यह एक-एक धरम में ही प्रक़्त होती है । अतएव ही किये मरमे इशक़्म

(२०)

दर मैकदग इस्क अजल इस्मे मनस्त ।
रिदी व परस्तीदने मै कस्मे मनस्त ॥
मन जाने जहानम् अंदरीं देरे मुयाँ ।
ईं सूरते कौन जुम्लागी जिस्मे मनस्त ॥

(२१)

दर हेच सरे नेस्त कि असरारे नेस्त ।
दिल रा खवर अज अंदको विस्मायारे नेस्त ॥
हर तागका खंद राहे दर पेश ।
इस्ला रहे इस्क रा कि सालारे नेस्त ॥

(२२)

साकी दिले मन जे दस्त गर खाहद रफ़ ।
वहस्त कुजा जे खुद वदर खाहद रफ़ ॥
सूफी कि चु जकें तंग अज खेश पुरस्त ।
यक जुरआ अगर देही वसर खाहद रफ़ ॥

(२३)

आँ वादा कि काविले हयातस्त वजात ।
गाहे हैवाँ भी शवद वगाह नवात ॥

वस्तु प्रेम ही है। हे मनुष्य ! तू इस प्रेम-रूपी जगत का कुछ भी ध्यान नहीं रखता है। तू इस रहस्य को समझ ले कि जीवन, प्रणय का ही नाम है।

(२०) इस प्रणय के मदिरा-गृह की सूची में सब से पहला मेरा ही नाम है। मस्ती और मदिरा-पान मेरे हो हिस्से में आ पड़े हैं। शराव विक्रेताओं के इस घर में जो कुछ हैं मैं ही हूँ। मैं ही शरीर और मैं ही प्राण हूँ। यह समस्त संसार की सूरतों में केवल मैं ही मैं हूँ।

(२१) कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है, जो रहस्य से खाली हो, परन्तु दिल को थोड़े और बहुत का कुछ भी ध्यान नहीं है। प्रयेक भुंड का कुछ न कुछ मार्ग है। ये सब निश्चित मार्गों से आगे बढ़ रहे हैं। परन्तु प्रणय के गरोह का कोई निर्णित मार्ग ही नहीं है।

(२२) साकी यदि मेरा हृदय मेरे हाथ से जाता भी रहेगा तो क्या होगा ? वह स्वयम् एक नदी है और नदी अपने आप से बाहर कब होता है। यह बात अवश्य है कि यदि किसी अहंकारी तथा ओछे सूफी को यदि एक घूट भी अधिक दे दी जावे तो वह उबलने लगता है।

(२३) जिस मदिरा के पान करने से मस्ती आ जाती है, वह कभी बेसुध कर देती है और कभी ध्यान में ला देती है। यह समझना कि गुण अपने आप

ना जान न वरी कि हस्त गरदद हैहात ।
मौसूज वजाते तुस्त गर हस्त मिकात ॥

(२४)

दर सोमओ मदरसओ दैरो कुनिशत ।
तरसिंदए दोजखभतो जोयाए वहिश्त ॥
आँकस कि जे असरारे खुदा वा खवरस्त ।
जाँ तुख्म दर अंदरुने दिल हेच नकिश्त ॥

(२५)

तरसे अजलो वीमे फना हस्तिए तुस्त ।
वर्ना जे फना शाखे वक्का खाहद रुस्त ॥
मन अज दमे ईसवी शुदम जिंदा वर्जाँ ।
मर्ग आमदो अज वजूदे मन दस्त वैशुस्त ॥

(२६)

दरियाव कि अज रूह जुदा खाही रफ्त ।
दर परदए असरारे खुदा खाही रफ्त ॥
मै खुर कि न दानी जे कुजा आमदई ।
खुश जाँ चो न दानी के कुजा खाही रफ्त ॥

वर्तमान रहते हैं, उचित नहीं जँचता । उनका अस्तित्व भी तो उसी सर्व-
शक्तिमान के साथ लगा हुआ है ।

(२४) शिक्षा-मन्दिर, मन्दिर और मस्जिद में, जितने भी मनुष्य हैं, वह दो श्रेणियों में विभक्त किये जा सकते हैं । एक तो वह जो नरक से डरते हैं और दूसरे वह जो स्वर्ग के इच्छुक हैं । परन्तु जिसको ईश्वर से लगन लग गई है, वह इन बातों को कभी अपने हृदय में स्थान ही नहीं देता ।

(२५) मृत्यु का डर और विनाश का भय केवल तुम्हीं को है, वरन् विनाश वह वस्तु है जिनमें अमरत्व का अंकुर फूटना है । ईसा की कृपा से मेरे प्राणों को वह शक्ति प्राप्त हो गई है कि मृत्यु आकर और जीवन में निराश होकर लौट गई । मेरा सामाजिक अस्तित्व मिट गया है और मृत्यु अब मेरे निकट आकर ले ही क्या सकती है ?

(२६) अवकाश से कुछ न कुछ लाभ उठाने का प्रयत्न करो । कारण कि तुमको रूह से पृथक् होना आवश्यक होना है और ईश्वर की खोज में निकलना है । शराब पियो । तुमको न तो यही ध्यान है कि कहाँ मैं आये हो, और न यही विचार है कि कहाँ जाओगे । अतएव जो कुछ भी करना है अपने जीवन में कर लो । पीछे पड़ताना पड़ेगा ।

(२७)

वाहर बंदो नेक राज न तवानम गुफ़ ।
 दायम सखुने दराज न तवानम गुफ़ ॥
 हाले दारम् कि शरह न तवाँ दादन्द ।
 राजे दारम् कि वाज न तवानम गुफ़ ॥

(२८)

यारव तू करीमी व करीमी करमस्त ।
 आसी जे चे रु वरुँ जे वागे यरमस्त ॥
 वाताअतम अरवे वरुशी आँ नेस्त करम ।
 वा मासिएतम अगार ववरुशी करमस्त ॥

(२९)

ऐ वाए वरौँ दिल कि दरुँ सोजे नेस्त ।
 सौदा जदए मेहे दर अफरोजे नेस्त ॥
 रोजे कि तू बेवादा वसर खाही बुद ।
 जाया तर अजाँ रोज़ तुरा रोजे नेस्त ॥

(३०)

मन वन्दए आसीअम रजाए तू कुजा अस्त ।
 तारीक दिलम् नूरे सफ़ाए तू कुजा अस्त ॥
 मारा तू वहिश्त अगार वताअत वरुशी ।
 ईं मुज्द बुवद लुत्को अताए तू कुजा अस्त ॥

(२७) प्रत्येक अच्छे अथवा बुरे से अपना भेद नहीं कह सकता और न सदैव लम्बा चौड़ा बर्णन ही कर सकता हूँ । मेरा ऐसा हाल है कि जिसको खोल कर किसी से कह नहीं सकता और मेरा रहस्य ऐसा है कि जिसका साफ़ शब्दों में बर्णन ही नहीं हो सकता ।

(२८) भगवन् ! तू दयालु है और दयालुता से ही तेरी ख्याति है । फिर पापी को स्वर्ग से वंचित क्यों किया गया है ? यदि भक्ति और भजन के कारण तू मुझे क्षमा प्रदान करके अपनाता है, तो इसमें तेरी दयालुता कहाँ रही । हाँ, दुष्ट होने पर भी यदि तू मुझे अपनावे तब तेरी दयालुता अवश्य है ।

(२९) जिस हृदय में किसी प्रकार की पीड़ा न हो, वह शोचनीय है । और जो किन्मी के प्रेम में पागल न हो उस पर धिक्कार है । प्रेम-विहीन जितने भी दिवस तेरे व्यतीत हो रहे हैं, वह सब व्यर्थ हैं, उनमें तनिक भी सार नहीं ।

(३०) मैं पापिष्ठ हूँ । तेरी वह पापियों को क्षमा प्रदान करने वाली दया कहाँ है, जिससे मुझे भी क्षमा मिले ? मेरे हृदय में अन्धकार हो रहा है, अपने प्रकाश से उसे भी प्रकाशित कर दे । यदि भक्ति के कारण तूने मुझे स्वर्ग प्रदान किया तो इसमें तेरी कृपा कब हुई ।

(३१)

हर दिल कि दरु मायए तजरीद कमस्त ।
बेचारा हमा उन्न नदीमे नदमस्त ॥
जुञ्ज खातिरे फारिग कि निशादे दारद ।
बाक़ी हमा हर चे हस्त असवावे रामस्त ॥

(३२)

पुर खँ जे फिराक़त जिगरे नेस्त कि नेस्त ।
सौदाए नू साहब नज़रे नेस्त कि नेस्त ॥
बअँ कि न दारी सरे सौदाए कसे ।
सौदाए नू दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त ॥

(३३)

चूँ रिज़्के तु ऊँचे अज़ल क़िस्मत फ़रमूद ।
यक ज़र्रा न कम शुदो न खाहद अफ़ज़ूद ॥
आसूदा जे हर चे हस्त मी वायद शुद ।
आज़ादा जे हर चे हस्त मी वायद बूद ॥

(३४)

जानम व फ़िदाए आँ कि ऊ अह वुवद ।
सर दर क़दमश अगर नेहम सह वुवद ॥
खाही कि बेदानी बयक़ी दोज़ख बूद ।
दोज़ख बजहाँ सोहवते नाअह वुवद ॥

(३१) जिस हृदय में त्याग की उमंग कम है, वह जीवन भर लज्जित ही बना रहेगा। जिस हृदय में त्याग है, सांसारिक विघ्नों की छाया नहीं है, वही प्रसन्न है। शेष सभी वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं।

(३२) कोई भी हृदय ऐसा नहीं है, जो तेरे विरह से पीड़ित न हो और कोई भी ज्ञानवान् मनुष्य ऐसा नहीं है जो तेरे लिये व्याकुल न हो। तुझे किसी की भी चिन्ता नहीं है, परन्तु तेरा ध्यान सभी को है।

(३३) ईश्वर के इशारों पर नू नाचता है और वह जो चाहता है तुझे करना ही पड़ेगा। फिर तो तुझे यही उचित है कि संसार में किसी की पर्वाह न कर। क्योंकि दन्धनों से मुक्त रहने ही में भलाई है।

(३४) जो मनुष्य उस पर फ़िदा है, वह इन्सान है। उस पर मैं अपने आपको न्योद्धावर करने के लिये उद्यत हूँ। और उसके चरखों में पड़ा रहना सरल समझता हूँ। परन्तु यदि तुम नरक की वास्तविकता का ज्ञान करना चाहते हो, तो समझ लो कि ईश-विमुख, अज्ञानो मनुष्य की संगति ही नरक है।

(३५)

वोसीदा मुरक्काअंद ईं खामे चंद ।
ना रक्का रहे सिद्को सका गामे चंद ॥
वेगिरिक्का जे तामात अलिक लामे चंद ।
वदनाम कुनिन्दए निकू नामे चंद ॥

(३६)

दर आलमे जाँ वहोश मी वायद वूद ।
दर कारे जहाँ खमोश मी वायद वूद ॥
ता चरमो जवाँ व गोश वर जा वाशद ।
वे चरमो जवानो गोश मी वायद वूद ॥

(३७)

शव नेस्त कि अकल दर तहैयुर न शवद ।
वज गिरया कि नारे मन पुर अजदुर न शवद ॥
पुर मीं न शवद कासए सर अज सौदा ।
आँ कासा कि सर निगू बुवद पुर न शवद ॥

(३८)

आँहाँ कि मुहीते फजलो आदाव शुदन ।
दर कश्के उलूम शमए असहाव शुदन ॥
रह जीं शवे तारीक न बुरदंद बुरं ।
गुफंद किसानाओ दर खाव शुदंद ॥

(३५) कुछ ऐसे साधु हैं जो फटी हुई गुदड़ी पहने हुए हैं। वे सच्चे तथा पवित्र मार्ग से कहीं दूर हैं। वे पूरे ढोंगिया हैं। उन्होंने केवल कुछ शब्द ईश्वर के विषय में रट लिये हैं, और बहुत से अच्छे तथा सच्चे मनुष्यों को व्यर्थ में बदनाम करने का ठेका ले रक्खा है।

(३६) प्राणों के मस्बन्ध में मर्क गढ़ना आवश्यक है, और सांसारिक कामों में शान्ति से काम लेना उचित है। जिज्ञा, कान, नेत्र इत्यादि को उचित शिक्षा देने के लिये, उनमें मस्बन्ध-विच्छेद कर लेना आवश्यक है, जब उनकी न सुनोगे तो वह सभी ठीक मार्ग पर आ जायेंगे।

(३७) प्रत्येक गत को मैं उसका ध्यान करके रोता हूँ। परन्तु इस पर भी उसकी लगन न पागल नहीं होता हूँ। कब्य बात तो यह है कि ईश्वर के प्रति जो प्रेम उत्पन्न होता है वह गाने अथवा चिन्ता करने से उत्पन्न नहीं होता है, परन्तु अन्तःकरण तथा हृदय से उत्पन्न होता है।

(३८) संसार में एक से एक बड़ कर जानी मनुष्य हो चुके हैं। उन्होंने योग तथा ज्ञान के मार्ग में बहुत सी नवान खोजें की हैं, परन्तु वह लोग भी इस मायावय संसार से पर नहीं हो सके। केवल एक कहानी कह कर सो रहे।

(३९)

ता बूद् दिलम् जे इरक़ महरूम न शुद् ।
कम बूद् जे असरार कि मफ़हूम न शुद् ॥
अकनूँ कि हर्मीं दिनगरम् अज रूप खिरद् ।
मालूमम् शुद् कि हेच मालूम न शुद् ॥

(४०)

दर दह हरों के नीम नाने दारद् ।
अज वहे निशस्त आस्ताने दारद् ॥
नै खादिमे कस बुवद् नै मख़दूमे कसे ।
गो शाद बेजी कि खुश जहाने दारद् ॥

(४१)

कौमे जे गुजाक़ दर गहर उफ़तादंद ।
कौमे जे पए हूरो क्रसूर उफ़तादंद ॥
मालूम शवद चु पर्दहा वर दारंद ।
कज कए तु दूर दूर दूर उफ़तादंद ॥

(४२)

उमरत ताकै वखुद् परस्ती गुजरद् ।
या दरपए नेस्तीओ हस्ती गुजरद् ॥
मै खुर कि चुनीं उन्न कि गम दरपए ओस्त ।
ओँ वेह कि वखाव या व मस्ती गुजरद् ॥

(३९) जिन दिनों मैं प्रेम में पागल था, लगभग सभी रहस्य मुझ पर प्रगट थे। परन्तु जब ज्ञान से काम लेकर देखता हूँ, तो मालूम होता है कि मैंने अब तक कुछ भी नहीं समझा था।

(४०) संसार में वही मनुष्य सुखी है, जिसे खाने के लिए आधी रोटी मिलनी है, और बैठने के लिये थोड़ी सी जगह, जो न तो किसी का चाकर है, और न किसी का स्वामी। उससे कह दो, मग्न रहें उसका संसार सब से अन्ध्रा है।

(४१) कुछ मनुष्य व्यर्थ की बातें बना कर अहंकारी हो गये हैं। कुछ लोगों ने स्वर्ग की सुन्दरियां तथा सौन्दर्य का अखाड़ा ही बना डाला है। परन्तु जब रीच का पद उठा दिया जायगा, उस समय सब को जान हो लायगा कि वह तेरी गली से कहीं दूर जा पड़े है।

(४२) तेरी उन्न, अपने स्वार्थ में मग्न रह कर कब तक व्यतीत होनी रहेगी और कब तक तू इस जीवन तथा मृत्यु की खोज में व्यस्त रहेगा? आ और मदिरा-पान करके नरी में सब कुछ भुनाई। उन जीवन में, जिनमें दुःख तथा क्लेश हैं, सोना अथवा मत्त रहना कहां उत्तम है।

(४३)

इरक़े कि मजाजी बुवद आवश न बुवद ।
 चँ आतशे नीम मुर्दा तावश न बुवद ॥
 आशिक़ क़ायद कि सालो माहो शवो रोज़ ।
 आरामो करारो ख़ुरो खावश न बुवद ॥

(४४)

दर राह चुनाँ रौ कि सलामत न कुनन्द ।
 वा ख़ल्क चुनाँ जी कि क़यामत न कुनन्द ॥
 दर मसजिद़ अग़र रबी चुनाँ रौ कि तुरा ।
 दर पेश न खाहंदो इमामत न कुनन्द ॥

(४५)

दर राह ख़िरद वजुज ख़िरद रा मपसन्द ।
 चँ हस्त रफ़ीक़े नेको वद रा मपसन्द ॥
 सादी कि हमाँ जहाँ तुरा वेपसन्दन्द ।
 मी वाश वसुशदिली व ख़ुदरा मपसन्द ॥

(४६)

सादी कि तुरा क़तवने असरार रसद ।
 मपसन्द कि कस राज़े तू आज़ार रसद ॥
 अज़ मर्ग़ मे अन्देश वग़ामे रिज़क़ मख़ुर्द ।
 की हर दो बवक़ ख़ेश नाचार रसद ॥

(४३) सांसारिक प्रेम में वह प्रभा अथवा वह उज्वलता नहीं होती जो ईश्वरीय प्रेम में होती है। वह अधजली अग्नि के समान शोभाहीन होता है। प्रेमी तो ऐसा होना चाहिये जो वर्षों और महीनों क्या प्रत्येक क्षण वैकल और बेचैन रहे।

(४४) मार्ग में चलने हुए इस प्रकार चल कि लोग तुम्हें सलाम न कर सकें, और उनसे ऐसा बचाव कर कि वह तुम्हें देख कर उठ न सके हों। मसजिद में यदि जाना है तो इस प्रकार जा कि लोग तुम्हें इमाम न बना लें। सब बात और अपने को चतुर प्रकट मत कर।

(४५) बुद्धि के मार्ग में बुद्धि के अनिष्टिक किमी और को न मान। जब तुम्हें सार्थी अन्वेषा मिल गया है तो बुरे को पसन्द मत कर। यदि तू यह चाहता है कि सभी लोग तुझसे प्रसन्न रहें तो सर्वत्र प्रसन्न-चित्त रह और अपनी पसन्दों पर मत चल।

(४६) यदि तू संसार में बर्ताना तथा पुण्यवान बनना चाहता है तो ऐसे काम कर जिनसे किमी को कष्ट न पहुँचे। मृत्यु का कर्मा भय मत कर और लोभियों की विन्दा छोड़ दे। क्योंकि वह दोनों बन्तुर्गे समय पर स्वयम् ही आ उभरियत होती हैं।

(४७)

मौजूदे हकीकी वजुज इंसाँ न बुवद ।
वर फ़ाये कसे ई सखुन आसाँ न बुवद ॥
एक जुर्दा अजी शरावे वेगश मी कश ।
ता खलके खुदा पेशे तू चकसाँ न बुवद ॥

(४८)

चंदों मदे ई रह के दुई वरखेजद ।
गर नेस्त दुई जे रहरवी वरखेजद ॥
तु ऊ न शर्ही ऊ लेक गर जेहदकुनी ।
जाए वेरसे कज तु तुई वरखेजद ॥

(४९)

वदखाहे कसाँ हेच वमकसद न रसद ।
यक वद न कुनद ता वखुदश सद न रसद ॥
मन नेके तू खाहम व तू खाही वदेमन ।
तू नेक न वीनी व वमन वद न रसद ॥

(५०)

खरम दिले आँ कसे कि मारुक न शुद ।
दर जुन्वओ दरओ दर सूफ न शुद ॥
सीमुर्दा सिफत वअर्श परवाजी कर्द ।
दर कुजे खरावए जहाँ वूफ न शुद ॥

(४७) इस संसार में मनुष्य ही एक खास चीज है, परन्तु प्रत्येक के लिये यह समझना कठिन है। तू इस बेमेल मदिरा का एक घूँट पीले जिसके प्रभाव से ईश्वर के समस्त जीवधारी तुझे समान दृष्टि आवेंगे।

(४८) ईश्वर की खोज में, उसके पाने की इच्छा में, इतना आगे मत बढ़ जा कि भगवान् और भक्त के बीच का अन्तर ही जाता रहे। यदि यह भेदभाव ही नहीं रहेगा तो फिर उसके प्राप्त करने के लिये आगे किस प्रकार बढ़ा जावेगा। तू स्वयम् कभी ब्रह्म नहीं हो सकता परन्तु भक्ति और साधना से इस पद तक पहुँच सकता है कि तेरा अहम् भाव तुम्हसे पृथक् हो जावे।

(४९) दूसरों का बुरा चाहने वाला कभी अपने अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सकता। वह किसी से एक बुराई करता है कि इनने ही ने स्वयम् उसकी सौ बुराइयाँ इधर-उधर फैल जाती हैं। मैं तेरी भलाई चाहता हूँ और तू मेरी बुराई, तो इसका फल यही होगा कि तुझे भलाई नहीं प्राप्त होगी और मैं बुराई से अलग रहूँगा।

(५०) जो मनुष्य प्रतिष्ठित नहीं है, उसका जीवन बड़े आनन्द से व्यतीत होता है। वह बढ़िया कर्ता और कमल नहीं पहनता तो अच्छा करता है।

(५१)

अन्दर रहे इश्क जुमला साकाँ दुर्दन्द ।
 वन्दर तलवश जुमला बुजुर्गाँ खुर्दन्द ॥
 इमरोज शवोरोज जे करदा ईनस्त ।
 करदा तलवाँ दर गमे करदा मुर्दन्द ॥

(५२)

गर वादा वकोह दर्देही रक्तस कुन्द ।
 बुवद आँ कि वादा रा नक्तस कुन्द ॥
 अज वादा मरा तौवा चे मीं करमाई ।
 रुहेस्त कि ऊ तरवियते शखस कुन्द ॥

(५३)

आँ कौम कि सजादा परस्तद खरन्द ।
 जीराके वजरे वारे सालूस दरन्द ॥
 वीं अज हमा तुर्कातर कि दर्दीदये जोहद ।
 इस्लाम करोशन्दो जे काफिर बतरन्द ॥

(५४)

असरारे अजल वादा परस्तां दानन्द ।
 कदरे मै व जाम तंगदस्ताँ दानन्द ॥

ऐसा मनुष्य ही पत्नी के समान ऊपर आकाश में उड़ जाता है, और इस संसार के उजाड़-खण्ड का उल्लू नहीं बनता ।

(५१) प्रणय-मार्ग में, बहुत ही स्वच्छ और पवित्र मनुष्य भी गन्दे हैं, और ईश्वर को खोज में बड़े-बड़े प्रतिष्ठित मनुष्य भी हेय तथा तुच्छ हो रहे हैं। जिस प्रकार आज दिन है और फिर रात होगी, उसी प्रकार कल भी दिन और रात का चक्र आवेगा। यह कल के इच्छुक उसी की चिन्ता में मर गये हैं।

(५२) यदि किसी पहाड़ को मदिरा पिला दो तो वह भी हिलने लगे, इस लिये जो उसे बुरा बतलाता है वह स्वयम् बुरा है। मुझे मदिरा न पीने की शिक्षा क्यों देते हो ? यह तो ऐसी वस्तु है, जिसके द्वारा ईश्वर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

(५३) मृगझाला धारण करने वाले त्यागियों पर जो विश्वास करके उनको अभ्यर्थना करते हैं, वह मूर्ख हैं। ऐसे साधु कपट के बोझ से दबे हुए हैं। यदि उन्हें धार्मिक दृष्टि से देखें तो वह और भी बुरे सिद्ध होते हैं। उन्हें तो विधर्मियों से भी बुरा कहा जा सकता है।

(५४) मदिरा के माहकों पर ही जन्म के दिन के रहस्य प्रगट हुआ करते हैं, और शराव तथा प्यालों की इच्छा निर्धनों ही को हुआ करती है। यदि नू

गर चश्मे तो हाले मन वेदानद ना अजब ।
शक नेस्त कि हाले मस्त मस्ताँ दानन्द ॥

(५३)

सुस्ती मकुनो फ़रीज़िए हज़्ज़ वगुज़ार ।
दर ओहदए आँ जहाँ मनम वादा वयार ॥
दूर खून कसे व माले कसे क़त्द मकुन ।
वाँ लुज़्मा कि दारी ज़े कस्ताँ वाज़ मदार ॥

(५६)

दो कूज़ा गरे वदीदम अन्दर वाज़ार ।
वर पारए गिले हमी लक़द ज़द वित्यार ॥
वाँ गिल वज़वाने हाल वा ऊर्मी गुरू ।
मन हमचो तू वूदा अम मरा गर्मेदार ॥

(५७)

गर गौहरे ताअतत न सुक़म हरगिज़ ।
वर गिदें रहत ज़े रुख न रक़म हरगिज़ ॥
नौमीद नेअम ज़े वारगाहे करमत ।
ज़ीराके यकेरा दो न सुक़म हरगिज़ ॥

(५८)

वाजे वूदम परीदा अज़ आलमे राज ।
यू ता कि परम दमे नशीनी वकराज ॥

मेरे हाल को जानता है, तो इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है ? मस्त लोगों को बातें मस्त ही जाना करते हैं ।

(५५) आलम में मत पड़ा रह और ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर । उस लोक का योक्त मैं अपने सिर पर लेता हूँ । वस्तु मदिग ला ; और कुछ न चाहिये । किसी के प्राणों तथा धन को लेने का कुसित विचार मत कर और जो कुछ भी तुम्हें प्राप्त है, उसमें से दूसरों को भी दे ।

(५६) कल मुक्तो हाट में एक कुन्दार दिखलाई दिया था जो थोड़ी-सी गोली मिट्टी को अपने पैरों से गौद रहा था । वह मिट्टी उसने वह शब्द बह रही थी कि मैं भी तेरे हा समान किमी समय मनुष्य के रूप में थी और मुझ में भी यह सब बातें बसतान थी ।

(५७) भगवन् ! मैंने कभी तेरी पला नही को और न तुझ तक पहुँचने का प्रयत्न ही किया है, परन्तु इस पर भी मैं निराश नहीं हूँ । तुम्हें तेरी कृपा का भरोसा है । कारण कि मैंने कभी भी अपने दुःख में एक को दो नहीं कहा । सदैव तुम्हें तेरा ध्यान रहा है ।

(५८) मैं एक वाज था और उस राज्यमय लोक से हम आया जो

ईँ जा के न याफतम् कसे महरमे राज ।
जाँ दर के दरामदम् बुहूँ रक्षतम वाज ॥

(५९)

मा आशिके आशुकुओ मस्तेम इमरोज ।
दर कूए बुताने वादा परस्तेम इमरोज ॥
अज हस्तिए खेशतन वगुले रुस्ता ।
पैवस्ता व मेहरावे अलस्तेम इमरोज ॥

(६०)

रफुन्द जे रफुगाँ यके न आमद वाज ।
ता वा तू वगोयद अज पसे पर्देए राज ॥
कारत जे नियाज मी कुशायत न निमाज ।
वाजीचा बुवद निमाज वे सिदुको नियाज ॥

(६१)

मो पुरसीदी कि चीस्त ईँ नवशे मजाज ।
गर वर गोयम हकीकतश हस्त दराज ॥
नकशेस्त पिदीद आमदा अज दरियाए ।
वाँगाह शुदा वकैरे आँ दरिया वाज ॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो । परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया ।

(५९) हम आज प्रेमी हैं । लगन लग रही है । हालत खराब है और मतवाले हो रहे हैं । हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं । हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने में छुपे हुये बैठे हैं ।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर कोई भी नहीं आया । अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है । तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पृत्रा से । जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है ।

(६१) तू मुझमें इस बाह्य मौन्दूर्य के विषय में पृथ्वता है ? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा । वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उभन्न हुआ है, और फिर उसी में जाकर विलुप्त हो जाता है ।

(६२)

ऐ वाक़िफ़े अस्तरारे ज़मीरे हमाकस ।
 दर हालते इज्ज दस्तगोरे हमाकस ॥
 चारव तो मरा तौवा देहो उज़्रपेज़ीर ।
 ऐ तौवा देहो उज़्रपेज़ीरे हमा कस ॥

(६३)

पंदे देहमत अग़र वमनदारी गोश ।
 अज़ वहे खुदा जामए तज़वीर मपोश ॥
 उक़वा हमा रोज़स्त दुनिया यक़दम ।
 अज़ वहे दमे मुल्के अवद मफ़रोश ॥

(६४)

वगुज़ार दिला वसवसए फ़िक़े मोहाल ।
 दर कश क़दहे वादओ वुगुज़ार ज़ो मलाल ॥
 आज़ाद शओ मुज़र्दो वादा परस्त ।
 ता मर्द शवी रसी वसर हद्दे कमाल ॥

(६५)

मै ख़ुर कि न इल्म दस्तगीरद न अमल ।
 इह्ला करमो रहमत हक़के इफ़्तो जल ॥
 आँ तायफ़ए कि अज़ ख़िरे मै न ख़ुरन ।
 अज़ जुम्लए अनआम शुमारए अहवल ॥

(६२) हे ईश ! तू प्रत्येक मनुष्य के गुप्त से गुप्त भेदों से परिचित है और लाचारी तथा दुखद अवस्था में सब की सहायता करता है। भगवन् ! मुझे पापों से बचने की शक्ति प्रदान कर। तू सभी की प्रार्थना सुनता तथा स्वीकार करता है।

(६३) यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुमको एक शिक्षा देता हूँ। परमेश्वर के लिये कपटी मत बनो। हल-हज्ज का जाना मत पढ़ो। मचाई एक ऐसी वस्तु है जो सदैव रहती है और परलोक तक साथ देती है। नमिस्सी बात के लिये अपना परलोक मत दिगाओ।

(६४) ऐ हृदय ! व्यर्थ की चिन्ताओं के भ्रमेणु में अपने आत्मको मत डाल। मदिरा का एक प्याला पीले और शीर को अपने हृदय में समाप्त मत दे। स्वतंत्र, बन्धन-हीन और मदिरा-सेवी बन जा, जिससे मद्यार के मन्तान अपने पूर्ण पद को प्राप्त कर सके।

(६५) मदिरा पान कर मतजाना मत जा। पर इतल न तो तेरो किसी प्रकार की सहायता हो परेगा और न उनके उन्मोह में जोई काम हो

ईँ जा के न याकतम् कसे महरमे राज ।
जाँ दर के दरामदम् वुरूँ रपतम वाज ॥

(५९)

मा आशिके आशुकुओ मस्तेम इमरोज ।
दर कृए वुताने वादा परस्तेम इमरोज ॥
अज हस्तिए खेशतन वगुले रुस्ता ।
पैवस्ता व मेहरावे अलस्तेम इमरोज ॥

(६०)

रफुन्द जे रफुगाँ यके न आमद वाज ।
ता वा तू वगोयद अज पसे पर्देए राज ॥
कारत जे नियाज मी कुशायत न निमाज ।
वाजीचा वुवद निमाज वे सिदक़ो नियाज ॥

(६१)

मो पुरसीदी कि चीस्त ईँ नवशे मजाज ।
गर वर गोयम हकीक़तश हस्त दराज ॥
नक़शेस्त पिदीद आमदा अज दरियाए ।
वाँगाह शुदा वक़ैरे आँ दरिया वाज ॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो । परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया ।

(५९) हम आज प्रेमी हैं । लगन लग रही है । हालत खराब है और मतवाले हो रहे हैं । हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं । हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के क्रोने में छुपे हुये बैठे हैं ।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर कोई भी नहीं आया । अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है । तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा में । जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल से बढ़ कर नहीं है ।

(६१) तू मुझसे इस वाह्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है ? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा । वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उत्पन्न हुआ है, और फिर उसी में जाकर विलुप्त हो जाता है ।

ईँ जा के न याकतम् कसे महरमे राज ।
जाँ दर के दरामदम् वुरूँ रफतम वाज ॥

(५९)

मा आशिके आशुकुओ मस्तेम इमरोज ।
दर कूए वुताने वादा परस्तेम इमरोज ॥
अज हस्तिए खेशतन वगुले रुस्ता ।
पैवस्ता व मेहरावे अलस्तेम इमरोज ॥

(६०)

रफुन्द जे रफुगाँ यके न आमद वाज ।
ता वा तू वगोयद अज पसे पर्देए राज ॥
कारत जे नियाज मी कुशायत न निमाज ।
वाजीचा वुवद निमाज वे सिद्को नियाज ॥

(६१)

मी पुरसीदी कि चीस्त ईँ नन्नरो मजाज ।
गर वर गोयम हकीकतश हस्त दराज ॥
नकरोस्त पिदीद आमदा अज दरियाए ।
वाँगाह शुदा वकैरे आँ दरिया वाज ॥

लेकर आया था कि कदाचित् ऊपर उड़ने का अवसर प्राप्त हो । परन्तु जब इस संसार में, मैंने किसी को भी अपना भेद समझने वाला न पाया तो फिर मैं जिधर से आया था उधर ही चला गया ।

(५९) हम आज प्रेमी हैं । लगन लग रही है । हालत खराब है और मनवाले हो रहे हैं । हम अपनी प्रेमिकाओं के कूचों में मदिरा पान करते रहते हैं । हमें अपने जीवन की तनिक भी चिन्ता नहीं है और आने वाले प्रलय के दिन के कोने में छुपे हुये बैठे हैं ।

(६०) यहाँ से सभी लोग चले गये, परन्तु उन जाने वालों में से लौट कर काई भी नहीं आया । अतएव पर्दे के भीतर का रहस्य ज्यों का त्यों गुप्त बना हुआ है । तेरा काम यदि पूरा होगा तो नम्रता और विनय से, न कि दिखावटी पूजा से । जिस वस्तु में सत्यता तथा नम्रता नहीं है, वह बच्चों के खेल में बढ़ कर नहीं है ।

(६१) तू मुझसे इस वाक्य सौन्दर्य के विषय में पूछता है ? यदि मैं आदि से लेकर अन्त तक इसका वर्णन करूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायगा । वास्तव में प्रकट यह होता है कि यह जीवन एक नदी से उभरता हुआ है, और फिर उसी में जाकर विद्युत् हो जाता है ।

(६२)

ऐ वाकिके अस्तरारे जमीरे हमाकस ।
 दर हालते इब्ज इस्तगोरे हमाकस ॥
 चारव तो मरा तौवा देहो उज़्ज़पेज़ीर ।
 ऐ तौवा देहो उज़्ज़पेज़ीरे हमा कस ॥

(६३)

पंदे देहमत अजर वमनदारी गोश ।
 अज़ वहे खुदा जामए तज़वीर मपोश ॥
 उक़या हमा रोज़स्त दुनिया चक़दम ।
 अज़ वहे दमे मुल्के अवद मफ़रोश ॥

(६४)

वगुज़ार दिला वसवसए फ़िके मोहाल ।
 दर कश क़दहे वादओ वुगुज़ार जो मलाल ॥
 आज़ाद शओ मुज़र्दो वादा परस्त ।
 ता मर्द शवी रस्ती वसर हदे कमाल ॥

(६५)

मै ख़ुर कि न इल्म इस्तग़ीरद न अमल ।
 इल्हा करमो रहमते हज़क़े इब्जो ज़ल ॥
 ओ तायक़ए कि अज़ ख़िरे मै न ख़ुरन ।
 अज़ जुम्लए अनआम शुमारए अहवल ॥

(६२) हे ईश ! तू प्रत्येक मनुष्य के गुण से गुण भेदों से परिचिन है और लाचारी तथा दुखद अवस्था में सब की सहायता करता है । भगवन् ! मुझे पापों से बचने की शक्ति प्रदान कर । तू सभी की प्रार्थना सुनता तथा स्वीकार करता है ।

(६३) यदि तुम मेरी बात मानो तो मैं तुमको एक शिक्षा देता हूँ । परमेश्वर के लिये कपटो मत बनो । ज़ल-इब्ज का जानना मत पढ़ना । सबसे एक ऐसी वस्तु है जो सदैव रहती है और परलोक तक साथ देती है । तनिक सी बात के लिये अपना परलोक मत दिगाओ ।

(६४) हे हृदय ! व्यर्थ की चिन्ताओं के भरोसे में अपने आपसे मत डाल । मदिरा का एक प्याला पीजे और शोक को अपने हृदय में स्थान मत दे । स्वतंत्र, दन्दन-हीन और मदिरा-मैयी बन जा, जिसके मनुष्य के सम्मान करने पूर्ण पद को प्राप्त कर सके ।

(६५) मदिरा पान कर मतदर ना बन जा । यह ज्ञान न तो किसी विन्ती प्रकार की सहायता ही बरेगा और न इसके बरतने से कोई लाभ ही

(७३)

मन वादा खुरम वलोक मस्ती न कुनम ।
अला वक्रदए दराज दस्ती न कुनम ॥
दानी गरजम जे मै परस्ती चे बुवद ।
ता हमचो तू खेशतन परस्ती न कुनम ॥

(७४)

मा खिक्रए जोहद दर सरे खुम करदेम ।
वज ख्राके खरावात तयम्मुम करदेम ॥
वाशद कि दरूने मैकदा दरयावेम ।
उमे कि दरूने मदरसा गुम करदेम ।

(७५)

यारव मन अगर गुनाह वेहद करदम ।
वर जानो जवानीओ तने खुद करदम ॥
चू वर करमत वसूके कुल्ली दारम ।
वरगश्तमो तौवा करदमो वद करदम ॥

(७६)

चंदाँके जेखुद नेस्त तरम हस्त तरम ।
हरचंद वलंद पायातर पस्त तरम ॥
जाँ तुफाँ तर आँके अज शरावे हस्ती ।
हर लहजा तू हुशियार तरम मस्त तरम ॥

(७३) मैं मदिरा अवश्य पीता हूँ परन्तु मस्ती नहीं दिखलाता, और सागर को छोड़ किसी दूसरी वस्तु की तरफ हाथ भी नहीं बढ़ाता। तुम बता सकते हो कि शराव पीने से मेरा क्या आशय है? यह कि तुम्हारे समान अपने आपे को न समझूँ।

(७४) मदिरा के लिये मैंने परहेजगारी से हाथ खींच लिया और शराव-खाने की धूल से वज्र कर लिया। ऐसा मैंने इस लिये किया कि शिवालय में अपनी उम्र का जितना भाग व्यतीत किया है, उसे पुनः प्राप्त कर लूँ।

(७५) हे भगवन् ! अपनी युवावस्था में, अपने इस शरीर तथा प्राणों से मैंने इतने अपकर्म किये हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। परन्तु मुझे तेरी कृपा का पूरा विश्वास है इसी लिये मैंने अपकर्मों से हाथ खींच लिया है और बुगई को न्याय दिया है।

(७६) मैं जितना ही अपने आपे को मिटाता जाता हूँ, उतना ही मेरा जीवन बढ़ता जा रहा है और जितना ही अधिक अपने ऊँचे होने का घमंड करता हूँ, उतना ही अधिक पतन की तरफ जा रहा हूँ। इससे भी विलक्षण एक और बात है। इस जीवन की तरफ में जितना ही सतर्क हो रहा हूँ, उतना ही उसमें और फँसना जा रहा हूँ।

(८१)

ताचे तवानी खिदमते रिंदाँ मी कुन ।
 बुनियादे निमाजो रोजा वीरों मी कुन ॥
 तशिनो सखुने रास्त जे "खय्याम उमर" ।
 मै मी खुरो रह मी जानो यहसों मी कुन ॥

(८२)

जुद अज हमा नाकसाँ निहोंदारी तू ।
 राज अज हमा अबलाहों निहोंदारी तू ॥
 निनिम कि मियाने मर्दुमा कारे तू चीस्त ।
 जयम अज हमा मर्दुमा निहोंदारी तू ॥

(८३)

पे जिन्दगिए तनो तवानम हमा तू ।
 जामे व दिने पे दिलो जानम हमा तू ॥
 तू हगिए मन शुदी अज आनम हमा तन ।
 मन बेहा शुदम दर तू अजानम हमा तू ॥

(८४)

हर यामो यराकसो गर कीरोजा ।
 मयाकर मशी व वीलते दह रोजा ॥
 यय कने कलक मेच कये जाँन वरद ।
 इयरोज सुत यिकसो कयदा कोजा ॥

इंसान के मृत्यु की

(८५)

मांसम कल्पते, हृत् नवद्वार करदा ।
 वज्र तापानो मानियत नवनी करदा ॥
 शीतल मि. इनायते नू. वाशर वाशद ।
 ना करदा नू करदा करदा नू न करदा ॥

(८६)

मे. नेक नू करदा बर्दादा करदा ।
 प्रयोग कल्पते, हृत् नवद्वार करदा ॥
 दर अफु मकुन तकिया कि हरगिब न युवद ।
 ना करदा नू करदा करदा नू ना करदा ॥

(८७)

मे. दर रों बंदगियत चकनीं बहो मेह ।
 दर दर दो जहाँ खिदमते दरगाहे नू. घेह ॥
 नकवत नू. नितानोओ सआदत नू. देही ।
 वारय नू. वफजले खेश विसतानों वदेह ॥

(८८)

अज आतशो वादो आव खाकेम हमा ।
 दर आलमे कौन दर हलाकेम हमा ॥
 ता तन वा मास्त दर जकाएम हमा ।
 नू. तन वरवद रवाने पाकेम हमा ॥

यदि आज घड़ा फूटता है तो कल कूजा भी टूट जायगा । यदि आज विजय है तो कल पराजय भी अवश्यम्भावी है ।

(८५) मैं अब ईश्वर की दया का भिखारी बन गया हूँ । पूजा-पाठ इत्यादि सभी का परित्याग कर चुका हूँ । कारण कि जहाँ उसकी कृपा होगी वहाँ वदी भी नेकी मे परिणत हो जायगी ।

(८६) हे मनुष्य ! तूने शुभ कर्म तो एक भी नहीं किया है, हौं अपकर्म अवश्य बहुत किये हैं । परन्तु इस पर भी तू ईश्वर की दया पर भरोसा रखता है । चूमा तुझे प्राण नहीं हो सकती । जो कुछ हो चुका है वह मिट नहीं सकता और जो कुछ हुआ नहीं है वह हो नहीं सकता ।

(८७) हे भगवन् ! तेरी भक्ति के मार्ग में सब समान हैं । किसी प्रकार का भी अन्तर नहीं है । और दोनों लोकों में तेरी ही सेवा सर्वश्रेष्ठ है । तू मनुष्य की दुर्बुद्धि को लौटा कर सुबुद्धि उसे प्रदान करता है । हे परमात्मन् ! दया कर और यह लैन-देन कर ले ।

(८८) हम सब मनुष्य अग्नि, पवन और वायु से मिल कर बने हैं । और इस जीवन के बन्धनों में पड़ कर जन्म मृत्यु के चक्कर में पड़े हुए हैं ।

(८९)

गह गश्ता निहाँ रू वकस ननुमाई ।
 गह दर सोत्रे कौनों मकाँ पैदाई ॥
 वीं जलवागरी वखोश्तन वनुमाई ।
 खुद ऐन अयानी व खुदी वीनाई ॥

(९०)

ऐ दिल अगर अज गुवार तन पाक शवी ।
 तू रुहे मुजस्समी वर अकलाक शवी ॥
 अर्शस्त नशीमने तू शरमत वादा ।
 काई व मुक्कीम खित्तए खाक शवी ॥

(९१)

चूँ मी न खद व इखितयारत कारे ।
 खुश वाश दरीं नफस कि हस्ती वारे ॥
 चूँ वाक्कीए ऐ पिसर जे हर असरारे ।
 चन्दीं चे वरी वेहूदा हर तीमारे ॥

(९२)

वर गीर जे खुद हिसाव अगर वा खवरी ।
 कन्वल तू चे आवदीं व आखिर चे वरी ॥

जब तक यह शरीर हमारे साथ रहेगा तब तक हमें बहुत से कष्ट उठाने पड़ेंगे परन्तु इसके दूर होते ही सब कष्ट सदैव के लिये दूर हो जावेंगे और पवित्र प्राण ही प्राण रह जायेंगे ।

(८९) उसके रंग निराले हैं । कभी तो पर्दे के अन्दर छुपा रहता है और अपना मुख किसी को भी नहीं दिखलाता और कभी इस संसार की प्रत्येक सूरत में अपना जलवा दिखलाता है । तू स्वयम् यह नये-नये रूप धारण करता है । कभी तो ऐसा हो जाता है कि दिखलाई पड़ता है और कभी स्वयं दृष्टि वन जाता है ।

(९०) हे हृदय ! यदि शरीर के साथ तेरा सम्बन्ध न रहे, यदि वह तुझसे पृथक् कर दिया जावे, तो आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा । वस फिर तू आकाश तक पहुँचने योग्य हो जायगा । तेरे रहने का स्थान आकाश पर है, इस पृथ्वी पर नहीं । अतएव तुझे इस बात के लिये लज्जा आनी चाहिये कि उस ऊँचे स्थान से गिर कर तू यहाँ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है ।

(९१) जब कोई कार्य तुम्हारी शक्ति से परे है तो जो कुछ कर सकने हो उसी पर प्रसन्न रहो । अरे भाई ! जब तुम सभी भेदों को जानते हो तो व्यर्थ में, इन बन्धनों में पड़ कर, इतने कष्ट क्यों उठा रहे हो ?

(९२) यदि तुममें कुछ ज्ञान है, तो अपने ही कर्मों का अपनी ही

गोई न खुर्म दादा कि नीं वायद मुर्द ।
नीं वायद मुर्द गर खुरी बरना खुरी ॥

(९६)

रीं बेखदरी खुदीं अगर आमदनी
ना अज कके मन्ताने अऊन दादा खुरी ॥
नू बेखदरी बेखदरी कारे नू मन्ताने
हर बेखदरे रा न रमद बेखदरी ॥

(९७)

गर आमदनेम वायद मुर्द नाम फरे
पर नीज शुदने वसन मुर्द के इरामे
वे जाँ न मुर्द कि खंदरी के मन्ताने
न आमदमे न शुदमे न मुर्दमे ॥

(९८)

जानी कि पसंदीदा आमदमे मन्ताने
नकदूते फदूते आमदमे आमदमे
खदरे पर मौनितो जदूते आमदमे
ददरु मन्ताने वा निषे आमदमे ॥

वामनाओं की पूर्ति के लिये लिये हुए कारों का विचार करना ही इराक़ के लोग
तुम हम संसार में आध में तो साथ में क्या जान के लिये जान के लिये जान
क्या तो जानोसे । तुम यह जानते हो कि सरना बरानी के लिये जान के लिये
सरना तो है ही, बियो वा न लियो

(९६) यदि तुम वायदर ही तो वे वायदर ही ही वायदर ही ही वायदर ही ही
पामदर, मुर्द के वायदर, से रफिक न वायदर ही ही वायदर ही ही वायदर ही ही
सबसे । तुम बेखदर ही खीरे खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना,
खीरे खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना,

(९७) यदि तुम आमदनेम वायदर ही तो वे आमदनेम वायदर ही ही आमदनेम वायदर ही ही
भी न आमदनेम वायदर ही ही आमदनेम वायदर ही ही आमदनेम वायदर ही ही
वद वायदर ही ही आमदनेम वायदर ही ही आमदनेम वायदर ही ही आमदनेम वायदर ही ही
खीरे न मुर्द

(९८) तुम आमदनेम वायदर ही तो वे आमदनेम वायदर ही ही आमदनेम वायदर ही ही
सबसे खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना,
खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना,
खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना, कि खदरे वरना,

(८९)

गह गश्ता निहाँ रू वकस ननुमाई ।
 गह दर सोवे कौनों मकाँ पैदाई ॥
 वीं जलवागरी वखोश्तन वनुमाई ।
 खुद ऐन अयानी व खुदी वीनाई ॥

(९०)

ऐ दिल अगर अज गुवार तन पाक शवी ।
 तू रूहे मुजस्समी वर अफलाक शवी ॥
 अर्शास्त नशीमने तू शरमत वादा ।
 काई व मुक्कीम खित्तए खाक शवी ॥

(९१)

चूँ मी न रवद व इखितयारत कारे ।
 खुश वाश दरीं नफस कि हस्ती वारे ॥
 चूँ वाक्कीए ऐ पिसर जे हर असरारे ।
 चन्दीं चे वरी वेहूदा हर तीमारे ॥

(९२)

वर गीर जे खुद हिसाव अगर वा खवरी ।
 कव्वल तू चे आवर्दी व आखिर चे वरी ॥

जब तक यह शरीर हमारे साथ रहेगा तब तक हमें बहुत से कष्ट उठाने पड़ेंगे परन्तु इसके दूर होते ही सब कष्ट सदैव के लिये दूर हो जावेंगे और पवित्र प्राण ही प्राण रह जायेंगे ।

(८९) उसके रंग निराले हैं । कभी तो पर्दे के अन्दर लुपा रहता है और अपना मुख किसी को भी नहीं दिखलाता और कभी इस संसार की प्रत्येक सूरत में अपना जलवा दिखलाता है । तू स्वयम् यह नये-नये रूप धारण करता है । कभी तो ऐसा हो जाता है कि दिखलाई पड़ता है और कभी स्वयं दृष्टि वन जाता है ।

(९०) हे हृदय ! यदि शरीर के साथ तेरा सम्बन्ध न रहे, यदि वह तुझसे पृथक् कर दिया जावे, तो आत्मा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा । वस फिर तू आकाश तक पहुँचने योग्य हो जायगा । तेरे रहने का स्थान आकाश पर है, इस पृथ्वी पर नहीं । अतएव तुझे इस बात के लिये लज्जा आनी चाहिये कि उस ऊँचे स्थान से गिर कर तू यहाँ पर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है ।

(९१) जब कोई कार्य तुम्हारी शक्ति से परे है तो जो कुछ कर सकते हो उसी पर प्रसन्न रहो । अरे भाई ! जब तुम सभी भेदों को जानते हो तो व्यर्थ में, इन बन्धनों में पड़ कर, इतने कष्ट क्यों उठा रहे हो ?

(९२) यदि तुममें कुछ ज्ञान है, तो अपने ही कर्मों का, अपनी ही

गोई न खुरम वादा कि मी वायद मुर्द ।
मी वायद मुर्द गर खुरी वरना खुरी ॥

(९३)

री देखवरी गुर्जा अंगर वाखवरी ।
ता अज कफे मस्ताने अजल वादा खुरी ॥
तू वेखवरी वेखवरी कारे तू नेस्त ।
हर देखवरे रा न रसद वेखवरी ॥

(९४)

गर आमदनम वखुद बुदे नाम दमे ।
वर नीज शुदने वमन बुदे कै शुदमे ॥
वे जॉ न बुदे कि अंदरीं वैरे खराव ।
न आमदमे न शुदमे न बुदमे ॥

(९५)

खाही कि पसंदीदए अनाम शवी ।
मक्यूले क्यूले खासओ आम शवी ॥
अन्दर पए मौमिनो जहूदो तरसा ।
वदगू मवाश ता निको नाम शवी ॥

वासनाओं की पूर्ति के लिये किये हुए कार्यों का हिसाब कर लो । देखो, जब तुम इस संसार में आए थे तो साथ में क्या लाए थे, और वहाँ से जाते समय क्या ले जाओगे । तुम यह कहते हो कि मरना जरूरी है मैं शराब न पिऊंगा । मरना तो है ही, पियो या न पियो ।

(९३) यदि तुम वाखवर हो तो वेखवर बन जाओ । जिससे प्रणव में पागल, मृत्यु के बन्धनों से रहित, मतवालों के हाथ की मदिरा का स्वाद ले सको । तुम वेखवर हो और सुस्ती करना तुम्हारा काम नहीं है । प्रत्येक वेखवर और मतवाले को यह अधिकार नहीं है कि वह वास्तविक रूप में ऐसा हो जावे ।

(९४) यदि इस संसार में आना मेरे अधिकार में होता तो मैं यहाँ कभी भी न आता, और यदि जाना मेरे हाथ में होता तो मैं क्यों जाता ? इससे बढ़ कर कोई भी बात न होती कि मैं इस ऊजड़ स्थान में न आता, न जाना और न रहता ।

(९५) तुम में सर्वप्रिय बनने की इच्छा होनी चाहिये । ऐसा करो जिसमें सब लोग तुम्हें पसन्द करें और अपने सन्देश्यी तथा अन्य लोग भी तुम्हें अच्छा समझें । तू मौमिन, यहूदी तथा ग़र की बुराई उनकी अनुपस्थिति में मत कर, जिससे लोग तुम्हें अच्छा समझें ।

(९६)

वामन तो हर उधे गोई अज की गोई ।
 पैवस्ता मरा मुलहिदो वेदीं गोई ॥
 मन खुद मुकदम हर उधे गोई हस्तम ।
 इन्साफ वेदेह तुरा रसद की गोई ॥

(९७)

धा दर्द कनाअत कुनो आजाद वजी ।
 दर वन्दे फजनी मशो आजाद वजी ॥
 मुनिगर वफजनी जे खुदी गुस्ता मखुर ।
 दर कम जे खुदी निगह कुनो शाद वजी ॥

(९८)

ता दर हविसे लालो लयो जामे मै ।
 ता दरपए आवाजे दफो चंगो नै ॥
 ईहा हमा हशवस्त खुदा मीदानद ।
 ता तर्के तअल्लुक न कुनी हेचे नै ॥

(९९)

हरचन्द जे दस्ते दह गमकश वाशी ।
 दर जौरो जफाए चख्ख ता खुश वाशी ॥
 जिनहार जे दस्ते ना कसाँ आवे जुलाल ।
 वर लव मचकाँ अगर दर आतश वाशी ॥

(९६) तू मुझे बुरा समझता है। जो कुछ भी कहता है, वह शत्रुता से। इसी लिये तू मुझे सदैव अहंकारी तथा विधर्मि कहा करता है। मैं स्वयम् इस बात को मानता हूँ कि तू मुझे जैसा कहता है, वास्तव में मैं वैसा ही हूँ। परन्तु तनिक न्याय की दृष्टि से देख कि तुझे यह कहना उचित है अथवा नहीं।

(९७) आपत्तियों को धैर्य के साथ सहन कर और स्वतंत्र जीवन व्यतीत कर। अधिक लाभ करने की इच्छा मत कर और निश्चिन्त होकर रह। जो तुझसे बढ़ कर है उससे ईर्ष्या मत कर और न वैसा बनने की चिन्ता कर। जो तुझसे कम है, उसको तरफ देख और सदैव आनन्दित रह।

(९८) सांसारिक प्रलोभनों में व्यस्त रहना, नाच-रंग का इच्छुक होना, उचित नहीं है। ईश्वर खूब जानता है कि इन बातों में कोई सार नहीं है। यदि कुछ करना चाहते हो तो संसार के प्रति अपने बन्धनों को तोड़ दो। त्याग ही सब कुछ है।

(९९) समय के चक्र में पड़ कर तुम विपत्तियाँ उठा रहे हो। भाग्य

(१००)

यादें घेनाज़ ता दयाए याची ।
अज़ दर्द मनाल ता शेकाए याची ॥
मी वाश बक्ते, बेनवाई शाकिर ।
ता आक़वतुल अम्र नवाए याची ॥

(१०१)

गर शार्दाए ख़ेशतन दरों मीदानी ।
फा सूदा दिले रा बग़मे बेनिशानी ॥
दर मातमे अज़ले लेश बेनशीं हमाँ उम्र ।
मीदार मुसीबत कि अजब नादानो ॥

(१०२)

हंगामे सुफ़ेदा दमे ख़ुरोसे सहरी ।
दानी कि चरा हमी कुन्द नौहागरी ॥
यानी कि नमूदन्द दर आईनए सुन्द ।
फज़ उम्र शबे गुज़रतो तू बेख़वरी ॥

(१०३)

ऐ सोख़तए सोख़तए सोख़तनी ।
वै आतिशे दोख़ख़ अज तू अफ़रोख़तनी ॥

तुम्हें रुला रहा है । पर इस पर भी सावधान रहो । आग में पड़े हुए होने पर भी ईश्वर-विमुख मनुष्यों के हाथों का ठण्डा पानी हाठों से न लगाना ।

(१००) आपत्तियों को फ़ेलते रहो, जिससे तुम्हें उनसे बचने की कोई औपधि मिल जावे । पीड़ा के विरुद्ध आवाज़ मत उठाओ ताकि उसके लिये कोई दवा मिल जावे । आश्रय हीन होने पर भी कृपज्ञता का भाव हृदय से दूर मत करो, ताकि तुम्हें कुद्व प्राप्त हो जावे ।

(१०१) यदि तुम किसी चिन्ता रहित व्यक्ति को विपत्तियों में फँसा देने से ही प्रमत्त हो सकते हो तो अपनी बुद्धि पर खेद प्रकट करो । अपनी नादानी पर शोक करो और अपना समस्त जीवन इसी पश्चात्ताप में व्यतीत कर दो

(१०२) प्रभात काल के धूँधले प्रकाश में—बहुत तड़के ही, मुर्ग क्यों बाँग दिया करता है ? उसके चिल्लाने का आशय तुमको सचेत करना है । वह कहता है कि तुम्हारे जीवन की एक रात व्यर्थ में व्यतीत हो गई है । अब उठो और सावधानी से अपना कार्य करो ।

(१०३) हे जले-भुने हुए और जला डालने योग्य मनुष्य ! तू इतना

इनका नाम था इलियास अबू मुहम्मद । इनकी रचनाएँ अधिकतर आत्म-संबंधी न होकर शिक्षाप्रद कहानियों के रूप में हैं । उनमें वही भाव हैं जो “किदोस्ती” की रचनाओं में । परन्तु अन्तर भी है । जैसा कि लिब्री ने लिखा है, “इनके विषयों का संबंध स्वयं अपने आप से है । उनमें शृंगार रस की प्रधानता है । “किदोस्ती” ने अपनी कविता में अधिकतर प्राचीन वीरों के वीरोचित कृत्यों का निरूपण किया है । परन्तु इन्होंने ऐसा नहीं किया है । हालांकि इन विषयों की कमी नहीं थी । इनकी रचनाओं को हम ‘रोमान्स’ के नाम से पुकार सकते हैं । इन्हें काव्य कहना उपयुक्त न होगा । यह ईरान के प्राचीन और बड़े बड़े कवियों में हैं । इनमें अपने विषय को वर्णन करने की शक्ति समुन्नत अवस्था में वर्तमान थी और उपयुक्त शब्दों और भाषा पर भी इनका पूर्ण अधिकार था । इनकी कल्पना ऊँची उड़ान उड़ाने वाली थी । उसमें माधुर्य के अतिरिक्त कहर रस का भी अच्छा समावेश रहता था । प्रोफेसर ब्राउन ने एक स्थान पर लिखा है, “इस देश (ईरान) के बड़े बड़े कवियों में आपका नन्दर तीसरा है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि रोमान्टिक मसनवी के लिखने में इन्होंने कमाल दिखलाया है । ईरान और टर्की दोनों में इनकी ख्याति अभी तक बनी हुई है ।” इनकी रचनाओं में भावों की गम्भीरता के अतिरिक्त आकर्षण भी है । “मखजनुल असरार ’ जिसमें से कई एक पद मैंने दिये हैं, एक रहस्यवाद से सन्दन्ध रखने वाली रचना है और “सनाई” के “हदीका” तथा “रुमी” की मसनवी के ढंग में लिखी गई है । मैंने कुछ पद इनके खुस्तरो-शीरी से भी उद्धृत किये हैं, जो कि एक प्रकार से आत्मचरित ही के नमान हैं । इससे विदित होता है कि इनमें रहस्यवाद भी था ।

मुख्य मुख्य रचनाएँ :—

मखजनुल असरार ।

खुस्तरो-शीरी ।

जैला मजनू

हफ्त पैकर

स्कन्दनामा ।

गुप्तार दर बाज़ जुसतने दिल

हातिके खिलवत वमन आवाज दाद ।
 दाम चुना कुन कि तवाँ बाज दाद ॥
 आद दरीं आतरी पाकत चरास्त ।
 वाद जुनेदत करी खाकत तुरास्त ॥
 खाके तवारिन्दह वतावृत वरुश ।
 आतरी तादिदा वचाकृत वरुश ॥
 गाफिल अर्जा वेश न वायद नशस्त ।
 दर दरे दिल रेज गर आवंत हस्त ॥
 दर खमे ईं खम कि क्यूदे खशस्त ।
 क्लिस्तए दिल गो कि सेरादे खशस्त ॥
 दूर शौ अज राहे जनाने हवास्त ।
 राहे तौ दिल दौं दो दिल रा शनास्त ॥
 अर्शी पराने कि जे तन रस्ता अन्द ।
 शहपरे जिदरील धरो वस्ता अन्द ॥

हृदय की खोज का जिक्र

एकान्त में, भविष्य के पुकारने वाले ने मुझे आवाज लगाई कि इतना ही करण ले जितना चुका सके ।

तेरी इन पवित्र अग्नि में जल क्यों सम्मिलित है ? और वायु तेरी मिट्टी को ऊपर क्यों उड़ाता है ?

इस ताप को बढ़ाने वाली मिट्टी को अपना समाधि के प्रति अर्पण कर दे और चमकती हुई अग्नि अपनी आत्मा के हाथ में नौप दे ।

इसमें अधिक सुन्न बैठे रहना उचित नहीं है यदि तुम में किसी प्रकार मज भज शेष है तो हृदय-मन्दिर के द्वार पर चल

उसी लोहे की मटके आकाश के अन्दर अपने हृदय के उम गर का बरान कर जो बहुत ही मज कहा जाता है

वाननाओ में रहित हो जा तेरा मार्ग यदि किसी को ज्ञान है तो दिल को अनाव उसी में मित्रता कर

जो लोग अपने शरीरों को छोड़कर ऊपर उठ गये हैं—उन्होंने ज्ञान प्राप्त कर लिया है—उन्होंने हृदय को स्वर्गीय दूत जिन्नल को वादगादी सम्मिल कर ली है ।

बाँके अना अज्दो जहाँ ताफतन्द ।
 कूत जे दरयूज्जए दिल याफतन्द ॥
 दीदओ गेशपुरअज गरज अफज्जनी अन्द ।
 कारगरे परदए वेरूनी अन्द ॥
 पुंवा दर आगनदा चोगुल गोशे तो ।
 नरगिसे चश्म आवलए होशे तो ॥
 नरगिसो गुल रा चे परस्ती ववाग ।
 ए जे तो हम नरगिसो हम गुल वदाग ॥
 दीदा कि आईना हर नाकस अस्त ।
 आतशै ऊ आवे जवानी वसस्त ॥
 तवा कि वा अन्नल वदल्लाल गीस्त ।
 मुन्तजिरे नक़दे चेहल साल गीस्त ॥
 ता व चेहल साल के वालिग शवद ।
 खर्जे सफर हाश मवालिग शवद ॥
 वार कनू वाएदत अफसू मरन्वा ।
 दर्स चेहल सालगी अफनू वेरन्वा ॥

जिन लोगों ने संसार से मुख मोड़ लिया है, उन्होंने भीख माँगने की शक्ति हृदय से ही प्राप्त की है ।

आँख और कान इच्छाओं के कारण प्रदान किये गये हैं । इनका सम्बन्ध केवल स्थूल शरीर तथा संसार के बाह्य सौन्दर्य से है ।

तेरे कानों में गुलाब के पुष्प के समान रुई भरी हुई है और तेरे नेत्रों का नरगिस तेरी बुद्धि का छाला है ।

तू उपवन में जाकर नरगिस और गुलाब के पुष्पों पर क्यों मोहित हो रहा है ? यह दोनों स्वयम् तेरे प्रेम में मतवाले हो रहे हैं ।

तेरे नेत्र भली और बुरी, दोनों प्रकार की वस्तुओं को देखते हैं । जब तक युवावस्था की चमक है उनमें भी शोभा है ।

इच्छा, जो कि बुद्धि को दलाल बनाए हुए है उस समय की प्रतीक्षा में है, जब तू चालीस वर्ष का हो जावेगा ।

जिस समय तू चालीस वर्ष का होगा उस समय इच्छा की भी उद्वल-कूद समाप्त हो जायगी । उसमें शान्ति तथा गम्भीरता आ जायगी । परन्तु उस समय तक उसके मार्ग-त्रय का लेखा-जोखा बहुत बढ़ जायगा । उसके कार्यों की सूची बहुत लम्बी हो जायगी ।

अब तुझे कोई सहायक मंत्र मिलना चाहिये । व्यर्थ की बातों से कोई लाभ नहीं है । चालीस वर्ष व्यतीत हो जाने की प्रतीक्षा कर ।

दस्त वर आवर जे मियाँ चारा जूए ।
 ईं रामे दिल दिले रामखार जूए ॥
 राम मखुर अलवत्ता चो रामखार हस्त ।
 गरदने राम विशकन अंगर चार हस्त ॥
 हर नकसे रा कि जवूने रामस्त ।
 चारीग चारों मददे मोहकमस्त ॥
 चूँ नकसे ताजा शवद वादो कस ।
 नेस्त शवद सद राम अजौँ चक नकस ॥
 सुन्दे नखुस्पी चो नकस वर जनद ।
 सुन्दे दोवम वाँग वर अखतर जनद ॥
 बेशतरीं सुन्द वखारी रसद ।
 गर नपसीं सुन्द वयारी रसद ॥
 अज तो नआयद बतो वर हेच कार ।
 चार तलव कुन कि वर आयद जे कार ॥
 गरचे हमाँ ममलुकते खार नेस्त ।
 चूँ निगरम हेच बेहज चार नेस्त ॥
 हस्त चियारी हमार न गुजीर ।
 खासा जे चारे कि बुवद दस्तगीर ॥

प्रयत्न करने के लिये हाथ फैला और हृदय के शोक को कम करने के लिये, अपने साथ समवेदना प्रगट करने वाले किसी अन्य हृदय को खोज निकाल ।

जब तेरे प्रति सहानुभूति प्रगट करने वाला कोई है, तो किसी प्रकार की चिन्ता न कर । मित्र की उपस्थिति में दुख को अलग भगा दे ।

जो हृदय दुख के भार से दबा हुआ है, उसके लिये मित्रों का होना बहुत ही उत्तम है ।

दो आश्रमियों के साथ कुछ समय के लिये मन-बहलाव होता है और उन्हीं कुछ समय में मैकड़ों दुख दूर हो जाते हैं ।

जब पहला प्रभात अपनी उज्ज्वलता लेकर प्रकट होता तब वह आकर नागों को डंट बनाता है ।

यदि यह दूसरा प्रभात नहायता न दे तो पहले प्रभात को लज्जित होना पड़े ।

तू न्वयम अपने कर्ध को पूर्ण करने में असमर्थ है । अतएव किसी ऐसे मित्र की खाज कर जो तेरे कर्ध को पूर्णता तक पहुँचा सके ।

नारा देश इतना हेच तथा तुच्छ नहीं है, परन्तु जब मैं ध्यान में देखता हूँ तो मित्र से बढ़ कर कोई अन्य ज्ञात नहीं होता ।

सभी को एक मित्र की आवश्यकता होती है और विशेषकर ऐसे मित्र की जो नहायता कर सके ।

ईं दो से यारे कि तू दारी तरन्द ।
 खुशकतर अज हलकए दर वर दरन्द ॥
 दस्त दरआवेज वफित्राके दिल ।
 आवे तो वाशद कि शबी खाके दिल ॥
 चूँ मलिकुलअर्श जहाँ आफरीद ।
 ममलुकते सूरते जाँ आफरीद ॥
 दाद वतरतीवे करम रेजिशी ।
 सूरतो जाँरा वहम आमेजिशी ॥
 जीं दो हम आगोश दिल आमद पिदीद ।
 आँ खलक़े कू वाखिलाकत रसीद ॥
 दिल कि वदो खुतवए सुलतानिअस्त ।
 अक़दशे रूहानीओ जिसमानिअस्त ॥
 नूरे अदीमत जे सुहैले वैअस्त ।
 सूरतो जाँ हर दो तुफैले वैअस्त ॥
 चूँ सखुने दिल वदिमागम रसीद ।
 रौगने मगजे वचिरागम रसीद ॥
 गोश दराँ हलक़ा ज़वाँ साखतम ।
 जान हदक़ हातिके जाँ साखतम ॥

तेरे दो-तीन मित्र हैं। तू उन्हें बहुत ही अच्छा समझता है। परन्तु वे तुझे किसी प्रकार की सहायता नहीं दे सकते।

अतएव तू हृदय के पल्ले को खूब सँभाल कर थाम ले। यदि तू हृदय का सहारा पकड़ लेगा तो तेरी प्रतिष्ठा बढ़ जायगी।

स्वर्ग के स्वामी ने सृष्टि की रचना की, और उन देशों को बनाया जहाँ मनुष्य रहते हैं, जिनके शरीर तथा प्राण प्रधान अंग हैं।

अपनी कृपा से उसने शरीर और प्राणों को एक किया।

उस समय इन दोनों के संसर्ग से मन उत्पन्न हुआ। यह वही बालक था जो आगे चलकर विरोधी के रूप में पाया जाता है।

मन वही वस्तु है जो शरीर तथा आत्मा का सार समझा जाता है। इसी के कारण मनुष्य की वादशाही भी है।

तुफ़ में उसी का प्रकाश है और शरीर तथा प्राण उसी के साथी हैं।

मन की आवाज़ जैसे ही मेरे मस्तिष्क में पहुँची, वैसे ही उसमें ज्ञान का प्रकाश होगया।

अन्तरात्मा में जो पुकार रहा था, अथ मैं उसी के ध्यान में मग्न हो गया।

चर्द ज्यों गशतम अज्यों करविही ।
 तवाजे शादी पुरो अज्ज राम तेही ॥
 रेखतम अज्ज चशमए गर्म आवे सर्द ।
 कातरो दिल देगे मरा गर्म कर्द ॥
 दस्त दर आबुरदम अज्यों दस्त बन्द ।
 राहजनों आजिजो मन जोर मन्द ॥
 चक्र तग अज्यों राह दो मञ्जिल शुदम् ।
 ता दयके तग वदरे दिल शुदम् ॥
 मन सूर दिल रकतमो जाँ सूर लद ।
 नीमए उमरम शुदा दर नीम शद ॥
 दर दरे मकसूरए रूहानीयम ।
 गूए शुदा ज्ञानते चौगानियम ॥
 गूए परस्त आमदा चौगाने मन ।
 दानने दिल गस्त गिरीदाने मन ॥
 पाए जे तर साखतओ सर जे पा ।
 गूए तिकत गशतमो चौगौँ तुना ॥
 कारे मन अज्ज दस्त मन अज्ज खुद शुदा ।
 सद जे चके दीदा चके सद शुदा ॥

इस साहस के कारण मेरी मूक वाणी में वाक्-शक्ति आ गई, चित्त प्रसन्न हो गया और दुःख दूर हो गये ।

भारी तथा जलती हुई आँखों से मैंने आँसुओं के रूप में ठण्डे पानी को बहा दिया । कारण कि उसके कारण शरीर में भी तपन थी ।

अपने हाथों को भी मैंने बन्धनमुक्त कर लिया और मुझमें इतना बल आ गया कि इन्द्रियाँ अब मेरे वश में आ गईं ।

दो दिन के मार्ग को मैंने अपनी शक्ति के कारण केवल एक ही दौड़ में पूरा कर लिया और एक ही क्षण में दिल के कपाटों तक पहुँच गया ।

मन की तरफ जाने के प्रयत्न में ही मैं अथमरा ना हो गया और आधी ही गत में मेरी अबन्धा भी आधी रह गई ।

आत्मिक द्वार के सम्मुख पहुँच कर मैंने समस्त शरीर मुनायम हो गया । जो शरीर इन्हे के समान कड़ा था वहाँ गेद के समान बन गया ।

मैं उम गेद के प्रेम में मग्न हूँ और मेरा गुच्छुबंद मन की चादर का अंचल बना हुआ है ।

मैं शिर को पैर और पैर को शिर बना कर गेद के समान लुढ़कना हुआ आगे बढ़ा । कभी कभी इन्हे के समान नीचा भी खड़ा हो जाता था ।

इस समय मैं अपने आपसे नहीं था । मेरी चेष्टाएँ भी एक प्रकार

हम सफ़रों जाहिलो मन नौ सफ़र ।
 गुरवतम अज वेकसीयम तत्खतर ॥
 रू ना कजाँ दर वेतवानम गुजरत ।
 पाए दरूँ नै व सरे वाजगशत ॥
 चूँ कि दरौँ नक़व जवानम गिरिफ़्त ।
 इश्क़ नक़ीवाना इनानम गिरिफ़्त ॥
 वरदरे आ महरमे ईं दर मनम ।
 सर जे वराए तो जे तन वर कनम ॥
 हलका ज़दम गुफ़्त दरौँ वक्त़ कीस्त ।
 गुफ़्तम अगर वार देही आदमीस्त ॥
 पेश रवाँ परदा वरन्दाख़तन्द ।
 परदए तरकीब दरन्दाख़तन्द ॥
 अज हरमे खासा तरीने सरा ।
 वाँग वरामद कि "निजामी" दरा ॥

शिक्षित तथा व्यर्थ हो गई। यहाँ तक कि सौ मुझे एक दिखाई पड़ता था। और एक, सौ के रूप में।

अन्य यात्री मेरी अवस्था को समझ नहीं रहे थे और मैं एक नया यात्री था। कोई भी किसी प्रकार की सहायता नहीं देता था, इस कारण, इस यात्रा में मुझे कष्ट अधिक भोगना पड़ा।

मुझ में, दरवाजे के भीतर घुसने का साहस नहीं था। पैर भी अन्दर ले जाने के विषये आगे नहीं बढ़ते थे। इसके अनिश्चित पीछे फिर जाने का ध्यान ही नहीं था।

उस संकीर्ण स्थान पर मेरी जिद्द रुक गई। उस समय प्रेम मेरा पथ-प्रदर्शक बना।

उसने उम्मादिन करने हुए कहा कि द्वार पर आ। मैं इसका भेद जानता हूँ। मैं जहाँ तक हो सकेगा तेरी सहायता करूँगा।

मैंने दरवाजे की साँकल बजाई। मन ने पृथ्वा कि इस समय कौन आया है। मैंने उत्तर दिया कि आजा दीजिये तो एक मनुष्य अन्दर आए।

ईश्वरीय सहायता ने तैयारी के आगे से पर्दा हटा दिया। शरीर को छोड़कर आत्मा पृथक् होगई।

उस राजभवन के दर से भीतरों भाग में, जिसमें पहुँचना अत्यन्त कठिन था, एक आन्दोलन आते कि "निजामी" यदि भीतर आना चाहता है तो चला आ।

खास तराँ महरम आँ दर शुदम ।
 गुल्ल दहँ आय दहँ तर शुदम् ॥
 वार गहे चाक़तम अक़रोख़ता ।
 चश्मे वद अज़ दीदने आँ दोख़ता ॥
 हक़ ख़लोफ़ा व यक़े ख़ाना दर ।
 हक़ हिकायत वयक़ अक़साना दर ॥
 मुल्के अज़ाँ पेश कि अक़लाक़ रास्त ।
 दौलते आँ ख़ाक़ कि आँ ख़ाक़ रास्त ॥
 दर नक़्त आघाद दमे नीम मोज़ ।
 नदर नशाँ ग़त शहँ नीम रोज़ ॥
 सुख़ नवारी वअदव पेशे ऊ ।
 लाल क़वाए ज़फ़र अन्देशे ऊ ॥
 तलज़ जवाने वज़की दर शिकार ।
 ज़ेर तरे ऊ वसीहए दुर्दे ख़ार ॥
 क़न्दे क़र्मा करदा क़मन्द अक़गने ।
 सीम ज़ेरा सारवा रोई तने ॥
 ईं हमा परवानवो दिल शमा बूद ।
 जुमला पराग़न्दा ओ दिल जमा बूद ॥

अब मैं उस द्वार के रहस्य को भली भाँति समझ गया और मन ने कहा यदि और आगे बढ़ने की इच्छा रखते हो तो चले आओ । यह सुन कर मैं और भी भीतर बढ़ गया ।

अब मैंने अपने मन के अन्दर जो देखा, वह बहुत ही विलक्षण वस्तु थी । उस अकथनीय शोभा का केवल अनुभव किया जा सकता है ।

मन रूपी उन्नी मन्दिर में सान मार्ग थे और सातों सिलसिले भी वहीं थे ।

उस देश को आकाश से भी बढ़ कर पाया । पृथ्वी का नमस्त वैभव वहाँ प्रस्तुत था ।

उम्र अधजनों म्यान के स्थान में यती मीने के उस भाग में मैंने मन को बैठा हुआ पाया

उसके पान ही फेफड़ा, एक लाल मवार के रूप में बड़ी ही नरमी के माध शिर मुक़ाए हुए खड़ा था ।

पित्त भी वही था और उसके नाचे ही तलछट पीने वाला तिल्ली भी उपस्थित थी ।

बुद्धि अपने स्थूल शरीर पर चाँदी का कवच धारण किये हुए आक्रमण के सामान से नैम वही खड़ी हुई थी ।

यह सब पतंगों के समान थे और मन दीपक के समान । यह सब उनके आज्ञाकारी ज्ञान होने थे ।



मन बकिनाअत शुदा मेहमाने दिल ।
 जाँ वनवा दादा वसुलताने दिल ॥
 चूँ अलमे लशकरे दिल याकतम ।
 रूप खुद अज आलमियाँ ताकतम ॥
 दिल व जवाँ गुफ़ कि ऐ वे जवाँ ।
 मुर्गे तलव वगुज़र अर्जी आशियाँ ॥
 आतशे मन महरमे ईं दूद नेस्त ।
 ईं जिगरे ताज्रा नमक सूद नेस्त ॥
 वे नमकाँरा तू जिगर मीदेही ।
 गंज जे दुर ज़र जे गोहर मीदेही ॥
 साया अम अज सर्व तवानातरअस्त ।
 पायम अजाँ पाया वदालातर अस्त ॥
 गंजमो दर कीसए क़ारूँ नियम ।
 वा तो मस्तम जे तो वेहूँ नियम ॥
 मुर्गे लवम वा नफ़से गरमे ऊ ।
 परे जवाँ रेखता अज शरमे ऊ ॥
 साख्तम अज शर्मे सर अक़गन्दगी ।
 गोशे अदव हलज़ा क़शे वन्दगी ॥

मैं बड़े ही धैर्य के साथ मन का अतिथि हुआ। और उस सम्राट् के संमुख अपने प्रार्थों की भेंट लेजाकर रक्खी।

जब मन की सेना का झन्डा मुझे मिल गया, उस समय मैंने सन्पूर्ण संसार से अपना सम्वन्ध छुड़ा लिया।

मन ने जुवान से कहा कि ओ मूक इच्छुक पत्नी! उस घोंसले का परित्याग कर दे। उस सांसारिक घोंसले से कोई सम्वन्ध न रख।

मैं अपने लिये ख्याति नहीं चाहता और तेरी इन हाल ही में लिखी हुई कविताओं में भी कुछ आनन्द नहीं है।

जिनको अंतरात्मा का आनन्द प्राप्त नहीं है, तू उन्हें नीरस बना देता है और रुपये तथा मोतियों के ढेर के ढेर उन्हें दे डालता है।

मेरी छाया सरो के वृक्ष से भी कहीं बड़ी तथा ऊँची है और मेरा पद उस पद से भी कहीं बढ़कर है।

मैं एक कोप अवश्य हूँ, परन्तु वह कोप नहीं जो क़ारूँ की थैली में बन्द है।

मैं तेरे साथ हूँ, तुझ में व्याप्त हूँ, परन्तु तुझ से बाहर नहीं हूँ। मन की इन सारपूर्ण बातों को सुन कर मेरी जिह्वा ने लज्जा का जामा पहन लिया।

और मैंने अपना शिर मुका लिया। मैंने अपने कानों को बड़े अदव के साथ मन की इन बातों को सुनने के लिये उधर ही लगा दिया।

चूँके नदीदम जे रियाजत गुज़ीर ।
 गश्तम अज़ीं लाजा रियाजत पेज़ीर ॥
 लाजये दिल अहदे मरा ताजा कर्द ।
 नामे 'निज़ामी' फलक आवाजा कर्द ॥

हिकायत ईसा पैगम्बर अलेहिस्सलाम

पाए नसीहा कि जहाँ मी नवश्त ।
 दर सरे बाज़ारचए मी गुज़श्त ॥
 गुर्ग सगे दर गुज़र उक़तादा दीद ।
 यूसुफ़श अब चह बदर उक़तादा दीद ॥
 दरसरे आँ जीफ़ा गरोहे क़तार ।
 दर तिक़ते करगसे मुर्द़ार ख़ार ॥
 गुफ़ यके वहशते ई दर दिमाग़ ।
 तीरगी आरद चु नक़स दर चिराग़ ॥
 वाँ दिगरे गुफ़ अग़र हासिलत्त ।
 कोरिग़ चश्मत्तो बलाए दिलत्त ॥

मैंने समझ लिया कि प्रार्थना तथा भक्ति बहुत ही आवश्यक वस्तुएँ हैं ।
 अतएव अपने स्वामी से इसके लिये आज्ञा ले ली ।

मन ने मेरी प्रतिज्ञा में सहायता पहुँचाई और "निज़ामी" के नाम को
 आकाश तक पहुँचा दिया ।

पैगम्बर ईसा की कहानी

हज़रत ईसा संसार में बहुत भ्रमण किया करने थे । एक दिन वह एक
 छोटे से बाज़ार में घूम रहे थे ।

मार्ग में एक शिकारी कुत्ता पड़ा हुआ था । उसके शरीर से प्राण
 निकल चुके थे ।

उसके आत्म पक्ष एक भीड़ लग रही थी और वह लोग मरे हुए जानवर
 के मांस को खाने वाले ग़ुड़ों के समान उनकी बुग़डियों वनना रहे थे ।

एक ने कहा कि इनका डर मन्सूफ़ को ऐसा गन्दा कर देता है, जैसे
 दीपक को मुख की भाष ।

दूसरे ने कहा कि यह तो बड़ा ही भयानक है । इनको देखने में भय के
 मारे हृदय धड़कने लगता है ।

हर कस अजाँ परदा नवाण मरुद ।
 वर मरे आँ जीका जकाण नगूद ॥
 नूँ वसखुन नौवते ईसा रसीद ।
 पंच रिहा कर्द बेमाना रसीद ॥
 गुफ़ जे नकशे कि दर ऐवाने उस्त ।
 दुर वसुकैदी न चो दन्दाने उस्त ॥
 पंच कसौँ मनिगरो यहमाने खेश ।
 दीदा फ़ेरोवर बगरीवाने खेश ॥
 आईना रोजे कि विगीरी बदमन ।
 खुद शिकन आँ रोज मशो खुद परमन ॥
 खेशतन आरा मशौँ चूँ बहार ।
 ता नकुनद दर तो तम रोजगार ॥
 जामण ऐवे तो तुनक रिशता अन्द ।
 जाँ वतो नौ परदा फ़ेरो दिशता अन्द ॥
 चीस्त दरी हलकण अंगुशतरी ।
 काँ न बुवद तौक़े तो चूँ विनगरी ॥

• प्रत्येक मनुष्य ऐसे वचन कह कर कुत्त के मृत शरीर को बुरा कह रहा था ।

जब हज़रत ईसा की बारी आई तो उन्होंने बुराइयों को छोड़ कर उसकी अच्छाइयों का वर्णन करना प्रारम्भ किया ।

उन्होंने कहा कि उसके शरीर की अच्छाइयों को देखने से मालूम होता है कि उसके दाँत मोती से भी अधिक स्वच्छ हैं ।

वह मनुष्य जो उसकी बुराई कर रहे थे, यह सुन कर हँसने लगे ।

दूसरे मनुष्यों के दोषों और अपने गुणों को मत देखो । जब दूसरों के दोषों की तरफ़ दृष्टि जाय, अपने को देखो ।

अपने आप को दूसरों से बढ़ कर लगाने का प्रयत्न मत करो । ऐसा करना स्वार्थपरता से खाली नहीं है ।

यदि तुम दूसरों में दोष निकालोगे, संसार तुम्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखेगा ।

तुम्हारे दोषों का आवरण बहुत हल्का है और इसीलिये नौ आकाश के नौ पर्दे तुम्हारे ऊपर डाले गये हैं ।

इस आकाशी घेरे में, वह क्या वस्तु है, जो तुम्हारे गले में तौक़ के समान पड़ी हुई है ?

गर न सगी तौक़े सुरइया मकश ।
 गर न खरी वारे मसीहा मकश ॥
 कीस्त फलक पीर गुदा वेवए ।
 चीस्त जहाँ दुजद ज़दा वेवए ॥
 जुमलए दुनिया जे कोहन ता वनी ।
 चू गुजरिन्दस्त नयरजद वजी ॥
 अदोहे दुनिया मख़र ए ख़ाज़ा खेज़ ।
 गर तो ख़ुरी वख़शे "निज़ामी" वरेज़ ॥

हिकायत मोविदे हिन्दू कि मारिफ़त याफ़्त

मोविदे अज़ किशवरे हिन्दोस्ताँ ।
 रहगुजरे वर्द सूए दोस्ताँ ॥
 मरहलए शीद मुनक़श रदान ।
 नमलुकते याफ़ मुजव्वर विसात ॥
 गुनचा वखू वसता चो गार्दू कमर ।
 लालए कम उम्र जे खुद वे ख़दर ॥
 मोदलते शाँ ता नक़से वेश नह ।
 हेच कसे आक़वत अन्देश नह ॥

सुरइया का तौक़ उठाने का प्रयत्न मत करो यदि तुम हुने नहीं हो। यदि गये नहीं हो तो मसीह को अपने ऊपर सवार मत कराओ।

आकाश क्या है? एक बृद्ध विधवा। संसार क्या है? एक चोर की लुट्टी हुई विधवा।

नई ख़ौर पुरानी इनके चक़ों में मत पड़ो। संसार के बदलने पर एक कौड़ी के भी नहीं रहोगे।

पग़र बाँध कर उठ पड़े हो ख़ौर इस संसार की चिन्ता मत करो। यदि तुम मानो भी तो "निज़ामी" का भाग अलग निकाल दो।

एक ब्राह्मण की कहानी जिसने ईश्वर को प्राप्त कर लिया

भारतवर्ष में, एक दिन एक पारना स्तुत्य ब्राह्मण की तरफ़ ध्यान निकल गया।

उसने वहाँ बहुत ही सुन्दर स्थान दिख़लाई दिया। उसने जल का सुन्दर फ़र्श दिखा हुआ था।

ख़ौर मसौदर कतिर्दा बिस को ग़ाक़रिब कर रही थी। जल के सुन्दर स्तनी में भूम रहे थे।

परन्तु उनका जीवत ख़र ही दिने का था। इस कल्प निर्मा का भी ख़्याल नहीं जाता था।

पीर चो जाँ रौजए मीनू गुज्जश्त ।
 वादे महे चन्द वदाँसू गुज्जश्त ॥
 जाँ गुलो बुलबुल कि दराँ वाग दीद ।
 नालए मुश्ते जगानो जाग दीद ॥
 दोजखे उफ़ाद वजाने वहिश्त ।
 क़ैसरे आँ क़स्र शुदा दर कुनिश्त ॥
 सवजा वतहलील खारे शुदा ।
 दस्तए गुल पुशतए खारे शुदा ॥
 पीर दराँ तेज रवाँ विनगरीस्त ।
 वर हमा खनदीद वखुद वरगिगीस्त ॥
 गुप्त कि हंगामे नुमाइन्दगी ।
 हेच नदारद सरे पावन्दगी ॥
 हर चे सर अज ख़ाक व आवा कशद ।
 आक़वतश सर वख़रावी कशद ॥
 वेह जे ख़रावी चो दिगर कूए नेस्त ।
 ज़ज वख़रावी शुदनम रूए नेस्त ॥
 चू नज़र अज वीनिशे तौकीक़ साख़त ।
 आरिके खुद गश्तो खुदा रा शिनाख़त ॥

वृद्ध भक्त उस स्थान से अपने घर को लौट गया और उसके कुछ ही महीने बाद पुनः उधर ही आ निकला ।

उमने उस उपवन में पुष्प खिले हुए देखे थे और बुलबुलों का राग सुना था । अब वहाँ पर चील-कौआँ का जमघट देखा ।

स्वर्ग, नर्क में परिणत हो गया था । उस सुन्दर उपवन की शोभा अर्थात् पुष्प किनारा कर गया था ।

और वास जल कर पीली पड़ गई थी । पुष्पों के गुच्छों के स्थान पर अब कंटक ही कंटक दिग्बलाई पड़ने थे ।

वृद्ध शीघ्रता से इन सब वस्तुओं को देख गया । फिर वह इन सब पर हँसा और अपने ऊपर आँसू गिराए ।

उमने अपने मनमें सोचा कि आग्निर, दिग्बात्रे का कोई मूल्य नहीं होता है ।

मिट्टी और पानी के संयोग से जो वस्तु उत्पन्न हुई है, वह नाश होकर ही रहती है ।

जब विनाश का मार्ग ही सर्वोत्तम है फिर उसे छोड़ कर मुझे और किस तरह जाना चाहिये ।

जब उममें ज्ञान उत्पन्न हुआ तब उसने अपने स्वरूप को समझ और ईश्वर को पहचान लिया ।

सैरफये गोहरे आँ राज़ शुद ।
 ता वअदम सूए गोहर वाज़ शुद ॥
 ए के मुसलमानीवो गवरीत नेस्त ।
 चश्मे तोरा क़तरए अवरीत नेस्त ॥
 कमतर अज़ाँ मोविदे हिन्दू मवाश ।
 तर्के जहाँ गीरो जहाँ जू मवाश ॥
 खेज़ रिहा कुन कमरे कुल जे दस्त ।
 कू कमरे खेश बखूने तो दस्त ॥
 चन्द्र चो गुल खीरासरी साखतन ।
 सर बकुलाहो कमर अकराखतन ॥
 हस्त कुलाहो कमर आभाते इश्क ।
 हर दो रिहा कुन बखराघाते इश्क ॥
 गह कुलहत खाजगिए गिल देहद ।
 गह कमरत वन्दगिए दिल देहद ॥
 कोश कर्ज़ी खाजा गुलामी रेही ।
 ता चो "निज़ामी" जे निज़ामी रेही ॥

अब वह इस रहस्य को पहचानने वाला हो गया और ईश्वर के मूल्य को समझ कर उसी तरफ़ बढ़ गया ।

मूर्ख ! न तो तू धर्म का ही कुछ ज्ञान रखता है और न ईश्वर को समझने की शक्ति । तू तो नितान्त निर्लज्ज है ।

उस हिन्दू ब्राह्मण से पीछे मत रह जा । इस संसार की खोज़ मत कर, इसका त्याग कर देना ही उत्तम है ।

इन सांसारिक प्रलोभनों में मत पड़, वह तुझे मिटा डालने पर तैयार हैं ।

एक पुष्प के समान अपने रंग और रूप पर कब तक गर्व करना रहेगा । दोषी और पटक़े पर ग़मर करता रहेगा ।

दोषी और पटक़ा प्रेम के लिये आइने हैं । प्रेम के मार्ग में इनका त्याग अवश्य है ।

कभी यह ताज़ तुम्हें पुष्प के समान इस उपवन का सजावट़ बना देता है और कभी यह पटक़ा तुम्हें इच्छाओं का दास बना देता है ।

प्रयत्न कर कि दास के स्थान पर स्वामी होकर रहे और फिर "निज़ामी" के नग़ान अफ़सान को मिटा कर स्वतंत्र होजावे ।

खुसरो व शीरीं

जमाना खुद जुर्जां कारे नदानद ।
 कि अन्दोहे देहद जाने सितानद ॥
 चो कार उफतादा गरदद वेनवाप ।
 दरश दरगीरद अज हर सू बलाप ॥
 बहर शाखे गुले कू दर जनद चंग ।
 वजाप गुल वेवारद वर सरश संग ॥
 चुनाँ अज खुशदिली वे वह गरदद ।
 कि दर कारश तवरजद जह गरदद ॥
 चुनाँ तंग आयद अज शोरीदने सगत ।
 कि वर वायद गिरिक्कश जाँ जहाँ रगत ॥
 इनाने उम्र अर्जाँ साँ दर नशेवस्त ।
 जवानी रा चुनीं पा दर रकेवस्त ॥
 कसे आवद जे दौरौं रस्तगारी ।
 कि वर दारद इमारत जाँ इमारी ॥
 मसीहावार दर वै वर नशीनद ।
 कि वा चंदीं चिरागश कस नवीनद ॥

खुसरू और शीरीं

समय एक विचित्र वस्तु है। उसे दूसरों को नष्ट करने में आनन्द आता है। जब कोई विपत्तियों का मारा असहाय हो जाता है, तब उसके चारों तरफ अन्धकार ही अन्धकार छा जाता है।

यदि किसी पुष्पकी डाल को हिलाता है तो पुष्प न गिरकर उसके शिर पर पत्थर गिरते हैं।

खुशी से वह इतना महरूम हो जाता है कि उसके लिए तिर्याक भी जहर हो जाता है।

उसकी अवस्था इतनी हीन हो जाती है कि वह इस संसार को छोड़ देने पर उतारू हो जाता है।

अवस्था ढलती जा रही है और युवावस्था भी किनारा करने के लिये उरसुक हो रही है।

काल के चक्र में वही मनुष्य नहीं पड़ता है जो इस स्थान को प्यार नहीं करता, यहाँ अपना घर नहीं बनाता।

ईसा के समान ऐसे मंडप में बैठा रहता है जहाँ सहस्रों दीपकों के प्रकाश से भी वह दिखलाई नहीं पड़ता है।

जहाँ देवस्तो वक्ते, देव वस्तन ।
 बख़ुश खूई तवाँ अज देव रस्तन ॥
 मकुन शौजख बख़ुद वर ख़ूए वद रा ।
 वहिश्ते दीगराँ कुन ख़ूए खद रा ॥
 चु दारद ख़ूए तो मरदुम सरिश्ती ।
 हर्माँ जाओ हर्माँ जा दर वहिश्ती ॥
 मख़ुस्प ए दीदा चंदाँ गाफ़िलो मस्त ।
 चो हुशयाराँ वर आवर जीँ जहाँ दस्त ॥
 कि चंदाँ ख़ुफ़ु खाही दर दिले खाक ।
 कि फ़रमोशत कुनद दौराने अक़लाक ॥
 वदाँ पंजाह साला हुक्का वाजी ।
 वदाँ एक मोहरा गिल ता चन्द वाजी ॥
 जे पंजह साल अगर पंजह हज़ारस्त ।
 कलम दरकश कि हम नापायदारस्त ॥
 नशायद आहर्नी तर बूदन अज संग ।
 वेदाँ ता रेग चूँ रेजद वफ़रसंग ॥

संसार एक भ्रेत के समान है और अच्छे स्वभाव तथा गुणों के द्वारा ही उससे छुटकारा मिल सकता है ।

तू बुरा स्वभाव छोड़, अपने लिये नर्क न बना । अपने स्वभाव को ऐसा बना कि दूसरे लोग भी तुझे स्नेह की दृष्टि से देखें ।

ऐसा न बन कि और तुझसे दूर भागने का प्रयत्न करें । यदि तेरा स्वभाव मनुष्यता से परिपूर्ण होगा तो तू यहाँ भी स्वर्ग में रहेगा और वहाँ भी ।

हे नयन ! इतने मतवाले मत बनो । मतर्कता से काम लो और निद्रा को दूर करो ।

समाधि में सोने के लिये इतना अवकाश मिलेगा कि सांसारिक विपत्तियाँ भी तुझे भूल जायँगी ।

अतएव इन प्रलोभनों पर इस समय आसक्ति मत दिखला । तूने पचास वर्ष तमाशा किया और वह भी केवल एक गोले से (सुहरे से) । अब कब तक इसी खेल में व्यस्त रहेगा ?

यदि पचास हजार वर्ष भी तुझे मिलें तो उन्हें अन्वीकार करदे । उनमें किसी प्रकार का स्वाद नहीं है ।

पत्थर सबसे कठोर वस्तु है, परन्तु वह भी रेत के रूप में कौनों तक उड़ता है ।

जर्मी नुतयेस्त रंगश च नरेज्जद ।
 कि वर नुतए चुर्नी जुज्ज खू न खेज्जद ॥
 वसा खूने के शुद दर खाके ई दशत ।
 सियहवख्ते नरस्त अज्ज जेरे ई तशत ॥
 हराँ जराँ कि आरद तुंद वादे ।
 फरीदूने वुवद या कैकुवादे ॥
 कफे गिल दर हमा रूप जर्मी नेस्त ।
 कि वर वै खूने चंदी आदमी नेस्त ॥
 कि मीदानद कि ई दैरे कोहन साल ।
 चे मुहत दारदो चूनस्त अहवाल ॥
 नमानद कस कि वीनद दौरै ऊ रा ।
 वदाँ ता दर नयावद गौरै ऊ रा ॥
 वहर सद साल दौरै गोरद अज्ज सर ।
 चे आँ दौराँ शुद आयद दौरै दीगर ॥
 वरोजे चन्द वा दौराँ दवीदन ।
 चे शायद दीदनो चे तवाँ शुनीदन ॥
 जे जौरो अदल दर हर दौर साजेस्त ।
 दरू दानिदा रा पोशीदा राजेस्त ॥

पृथ्वी एक कर्श है। उसका रंग क्यों नहीं उड़ता ? इस लिये कि रक्त के अतिरिक्त उस पर कोई दूसरा रंग ही नहीं चढ़ता ।

यहाँ पर बहुत से लोगों का रक्त बहा है, और कोई भी अब तक साफ बच कर नहीं निकल सका है। संसार में सभी फँस जाते हैं।

आँधी चलती है और कणों को उड़ा कर लाती है। वह कण फरीदू या कैकुवाद की राख के बने हुए होते हैं।

समस्त पृथ्वी में केवल एक हथेली भर गोली मिट्टी है और वह इस कारण कि वहाँ पर न मालूम कितने मनुष्यों का रक्त पड़ा हुआ है।

कौन कह सकता है कि यह प्राचीन गृह कितने वर्षों पहले बना था ? उसके विगत इतिहास का किसे पता है ?

कौन उसको देखने के लिये शेष रहेगा ? अतएव उसका रहस्य समझने के लिये ध्यान की आवश्यकता है।

प्रत्येक सौ वर्ष के उपरान्त नया दौर शुरू होता है और उन सौ वर्षों के उपरान्त दूसरा ।

कुछ दिनों में अथवा दो एक दौर देखने में क्या समझ में आ सकता है ?

प्रत्येक दौर में न्याय तथा अन्याचार दोनों ही होते हैं और एक विद्वान मनुष्य के लिये प्रत्येक दौर में कुछ न कुछ रहस्य गुप्त रहता है।

नमीखाही कि बीनी जौर वर जौर ।
 नयायद गुल्ल राजे दौर वा दौर ॥
 शबो रोज अवलक्रे शुद तुन्द रक्तार ।
 वई अवलक्रे इनाने खेश मसपार ॥
 वसद फन गर जुमाई जू फतूनी ।
 नशायद बुई अजी अवलक्रे हुनी ॥
 फलक चन्दाँ कि देगे खाक रा पुन ।
 नरक अज खूए ऊ खामी चू की मुन ॥
 कुमारिस्ताने चखे नाम खाया ।
 वने पुर माया रा बुईस्त माया ॥
 अरुसे खाक अगर बदरे मुनीरमन ।
 बदस्ता याद कुन अमरश कि पारमन ॥
 मगर हजके कि खाहद बूदन अज याद ।
 निलाके अम्र खाहद खाक रा दाद ॥
 अगर दाद आयदो गर न आयद इमरोज ।
 नू वरवादे चुनी मशअल मैं अकरोज ॥
 वरी यकमुते खाक ए खाक वर मुन ।
 गर अफरोजी चिरागे अज देहममुन ॥

तुमको अत्याचार पर अत्याचार देखना नहीं भाता और एक दौर का राज्य दूसरे दौर में प्रवृत्त नहीं किया जा सकता ।

रात और दिन एक ही प्रणामी बोटल घोड़े के समान हैं । इस घोड़े के सुबुई अपनी पाग मत कर देना ।

यदि तुम सैफदों विद्याओं में निपुण हो जाओ, तब भी इस बोटल घोड़े की शगरनों को दूर करने में समर्थ न हो सोगे ।

आवाश ने सिही की लौही को बूत ही पकाना परन्तु इस पर भी उम्कता बचापन दूर नहीं हुआ ।

आवाश का आवाशना वाक में अन्वयों का अन्वय कर के गला है, संसार प्रलयों में परिपूर्ण है और यद्यपि एक चतुर्मुखी समानो के समान है, परन्तु वह लूरी है लौही, जसमे कोई नजर नहीं है ।

सुना की अन्वय कर अन्वय वाक्य है की अन्वय की अन्वय देने में ही अन्वय है ।

इस की अन्वय कर अन्वय वाक्य का अन्वय में अन्वय की अन्वय का देना समझो अन्वय की अन्वय के अन्वय अन्वय के अन्वय ।

यदि तुम अन्वय कर अन्वय वाक्य में भी इस अन्वय की अन्वय का अन्वय करेगा तब भी यह अन्वय अन्वय अन्वय के अन्वय अन्वय न सोने ।

जर्मी नुतयेस्त रंगश चूं नरेजद ।
 कि वर नुतए चुर्नी जुज खूं न खेजद ॥
 वसा खूने के शुद दर खाके ईं दशत ।
 सियहवखते नरस्त अज जेरे ईं तशत ॥
 हरौं जरी कि आरद तुंद वादे ।
 फरीदूने वुवद या कैकुवादे ॥
 कफे गिल दर हमा रूप जर्मी नेस्त ।
 कि वर वै खूने चंदी आदमी नेस्त ॥
 कि मीदानद कि ईं दैरे कोहन साल ।
 चे मुदत दारदो चूंनस्त अहवाल ॥
 नमानद कस कि वीनद दौरै ऊ रा ।
 वदौं ता दर नयावद गौरै ऊ रा ॥
 वहर सद साल दौरै गौरद अज सर ।
 चे आँ दौरौं शुद आयद दौरै दीगर ॥
 वरोजे चन्द वा दौरौं दवीदन ।
 चे शायद दीदनो चे तवाँ शुनीदन ॥
 जे जौरो अदल दर हर दौर साजेस्त ।
 दरू दानिंदा रा पोशीदा राजेस्त ॥

पृथ्वी एक कर्श है। उसका रंग क्यों नहीं उड़ता ? इस लिये कि रक्त के अतिरिक्त उस पर कोई दूसरा रंग ही नहीं चढ़ता ।

यहाँ पर बहुत से लोगों का रक्त वहा है, और कोई भी अब तक साफ वच कर नहीं निकल सका है। संसार में सभी फँस जाते हैं।

आंधी चलती है और कणों को उड़ा कर लाती है। वह कण फरीदूं या कैकुवाद की राख के बने हुए होते हैं।

समस्त पृथ्वी में केवल एक हथेली भर गोली मिट्टी है और वह इस कारण कि वहाँ पर न मालूम कितने मनुष्यों का रक्त पड़ा हुआ है।

कौन कह सकता है कि यह प्राचीन गृह कितने वर्षों पहले बना था ? उसके विगत इतिहास का किसे पता है ?

कौन उसको देखने के लिये शोष रहेगा ? अतएव उसका रहस्य समझने के लिये ध्यान की आवश्यकता है।

प्रत्येक सौ वर्ष के उपरान्त नया दौर शुरू होता है और उन सौ वर्षों के उपरान्त दूसरा ।

कुछ दिनों में अथवा दो एक दौर देखने में क्या समझ में आ सकता है ?

प्रत्येक दौर में न्याय तथा अन्याचार दोनों ही होते हैं और एक विद्वान मनुष्य के लिये प्रत्येक दौर में कुछ न कुछ रहस्य गुप्त रहता है।

नमीखाही कि बीनी जौर वर जौर ।
 नयायद् गुफ़ राजे दौर वा दौर ॥
 शत्रो रोज अवलके शुद् तुन्द रक्तार ।
 वई अवलक इनाने खेश मसपार ॥
 वसद फन गर जुमाई जू फनूनी ।
 नशायद् बुई अजाँ अवलक हस्नी ॥
 फलक चन्दाँ कि देगे खाक रा पुस्त ।
 नरक अज खूप ऊ खामी चू की मुख ॥
 कुमारिस्ताने चखे नीम खाया ।
 वसे पुर माया रा बुर्दस्त माया ॥
 अरुसे खाक अगर बदरे मुनीरस्त ।
 वदस्तो याद कुन अमरश कि पीरस्त ॥
 मगर हजके कि खाहद् वूदन अज याद ।
 तिलाके अम्र खाहद् खाक रा शद् ॥
 अगर दाद् आयदो गर न आयद् इमरोज ।
 नू वरदादे चुनी मशअल मै अकरोज ॥
 दर्ी यकसुरते खाक ए खाक दर मुस्त ।
 गर अकरोजी चिरागे अज देहमगुस्त ॥

तुमको अत्याचार पर अत्याचार देखना नहीं भाता और एक दौर का रहस्य दूसरे दौर से प्रकट नहीं किया जा सकता ।

रात और दिन एक शीघ्रगामी कोतल घोड़े के नमान हैं । इन घोड़े के सुपुई अपनी वाग मत कर देना ।

यदि तुम सैकड़ों विश्वाओं में निपुण हो जाओ, तब भी इस कोतल घोड़े की शरारतों को दूर करने में नमर्थ न हो सकोगे ।

आशाश ने मिट्टी की लौड़ी को बहुत ही पकाया परन्तु इस पर भी उसका कटापन दूर नहीं हुआ ।

आकामा का जुवाखाना बहुत में धनधानों का धन हान कर ले गया है ।

संसार प्रलीभनी में परिपूर्ण है और यद्यपि एक चन्द्रगुणी रमणी के नमान है, परन्तु वा लूनी है और उसमें कोई नार नहीं है ।

सुशा को अगर याद रखना चाहता है तो दुनिया की त्याग देने में ही भलाई है ।

हवा की तरफ में जो नयाय होगा वा संसार में विकृत ही मृच्छ कर देगा उसकी धूल को सदैव के लिए भाइकर पीज देगा ।

यदि नू अपनी इस बेपरियों में भी इस दौर को जानने का प्रयत्न करेगा तब भी वह मिट्टी किनी प्रणव में बेनी नगावक न करेगी ।

नशुद मुमकिन कि ईं खाके खतरनाक ।
 वअंगुशते बुरीदा वर कुनद खाक ॥
 चु यूसुक जीं तुरंज अर सर वेतावी ।
 चु नारंजे जुलेखा जख्त यावी ॥
 सहरगह मस्त शौ संगे वरन्दाज ।
 जे नारंजे तोरंज ईं खाँ वेपरदाज ॥
 वुरू अकगन वतह जीं दारे नोहदर ।
 मकुन कैमन शवी जीं मारे नोहसर ॥
 नफस कू खाजा ताशे जिन्दगानीस्त ।
 वया परवरदए वादे खिजानीस्त ॥
 अगर यकदम जनो वेइशक मुर्वस्त ।
 कि वरमा यकवयक दमहा शुसुर दस्त ॥
 ववायद इशक रा करहाद वृदन ।
 पसंगाहे वमुर्वन शाद वृदन ॥
 मोहन्दिश दस्तये पौलाद तेशा ।
 जे चोवे नार वुन करदे हमेशा ॥

यह मुमकिन नहीं कि इस संसार में कटी उँगलियों वाला मिट्टी खोद सके ।

यदि यूसुक के समान तू इस नींवू से पृथक् हो जायगा तो जुलेखा की नारंगी के समान तुझ में भी घाव हो जायेंगे ।

प्रभात होते ही मतवाला बन जा और एक ढेला फेंक कर मार तथा नारंगी और नींवू से यह भोजनालय भर दे ।

इस शरीर रूपी गृह से जिसमें नौ इन्द्रियों के रूप में नौ द्वार हैं अपना सब सामान बाहर निकाल ले चल । देखना, इस नौ फन वाले सर्प की तरफ से सतर्क रहना ।

वह स्वाँस, जिससे हमारा जीवन कायम है विनाश-रूपी वायु की उत्पन्न की हुई है ।

प्रेम-विहीन एक भी साँस निकालना व्यर्थ है । कारण कि हमारे जीवन की साँसें गिनती की हैं ।

प्रणय के लिये “करहाद” का होना आवश्यक है और उसी अवस्था में मृत्यु के समय हर्ष होगा ।

“करहाद” सदैव फौलाद के वसूले का वेंट अनार की लकड़ी काट कर बनाया करता था,

जे बहरे आँके बाशद दस्तगौरश ।
 बदस्त अंदर बुवद करमाँ पिजीरश ॥
 चु विशुनीद ईं सखुनहाए जिगर ताव ।
 फराजे कोह करे आँ तेशा पुरताव ॥
 चुनीं गोयँद खाके बूद नमनाक ।
 सिना दर संग रफो चोथ दर खाक ॥
 अजाँ दस्ता वर आमद शोशाए नार ।
 दररहे गश्तो नार आवुर्द विसयार ॥
 अजाँ शोशा कनूँ गर नारयावी ।
 द्वाए दर्दे हर बीमार यावी ॥
 "निजामी" गर नदीद आँ नार बुन रा ।
 बदफतर दर चुनीं खाँद ईं सखुनहा ॥

हिकायत बुलबुल वा वाज़

दर चमने वाग चो गुलबुन शिगुफ़ ।
 बुलबुल वा वाज़ दर आमद वगुफ़त ॥

ताकि वह उसके हाथ से फिसल न जावे और हाथ ही में ठीक ठीक बना रहे ।

जब फरहाद ने हृदय को ब्रेघने वाली बातें सुनीं तो पर्वत की चोटी पर से उस वसूले को फेंक मारा ।

लोग कहते हैं कि वहाँ पर कुछ गीली मिट्टी थी । वसूले का फल पत्थर में घुस गया और दन्ता मिट्टी में ।

उसी दन्ते की लकड़ी में कन्ले फूटे और धीरे धीरे एक बड़ा भारी वृज उत्पन्न हो गया और उसमें अनार के सहस्रों फल उत्पन्न हुए ।

यदि उस अनार का तुम्हें एक भी फल मिल जावे तो सभी गंग दूर हो सकते हैं ।

"निजामी" ने इस अनार के वृज को नहीं देखा है, परन्तु पुस्तकों में इस कहानी को पढ़ा है

बुलबुल और वाज़ का वार्तान्ताप

जिन्स समय उपवन में गुलाब के पुष्प खिल रहे थे बुलबुल और वाज़ में इस प्रकार बातचीत हुई ।

कज हमह मुँगाँ तुई खामोश सार ।
 गोय चैरा बुरदई आखिर बेयार ॥
 ता तु लवे बसता कुशादी नकस ।
 यक सखुने नरज नगुफ्ती बकस ॥
 मंजिले तो दस्त गहे सनजरी ।
 तोमए तो सीनए कवके दरी ॥
 मनके बयकदम जदन अज काने रौब ।
 सद गोहरे सुपता वर आरम जे जैब ॥
 तोमए मन किर्म शिकारी चैरास्त ।
 खानए मन वर सरे खार चैरास्त ॥
 वाज बदो गुस्त हमा गोश वाश ।
 ग्लामुशियम विनगरो खामोश वाश ॥
 मनके शुदम कारशिनास अन्दके ।
 सद कुनमो वाज नगोयम यके ॥
 रौ कि तुई शेकतए रोजगार ।
 जाँके यके न कुनीओ गोई हजार ॥
 मनके हमा मानीयम ई सैद गाह ।
 सीनए कवके देहद अज दस्ते शाह ॥

बुद्धबुध ने वाज से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है ?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुझ से नहीं निकली।

संजर बादशाह के हाथ पर तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकंर के कलेजे को ग्याता है। पर इस पर भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोलने वाली हूँ। एक सौम में मैंकड़ों मोती के समान सुन्दर शब्द कट डालती हूँ।

किर क्या कारण है कि छोटें छोटें कीड़ों में मैं अपना पेट भरती हूँ और कौदों पर विश्राम करती हूँ।

वाज ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे देखते थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु उत्तम एक का भी नहीं करता हूँ।

तूने संसार से प्रसिद्ध कर रक्खा है। मेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु कबों कबों में एक ही है।

मैं विन्तुन भीतरी विचार रखने वाला हूँ और तूमी लिये यह संसार में

ईरान के सूफ़ी कवि

तो हमहूँ जख्म जवानी तमाम ।
 किर्म खुरीआखार नशीनी बल्सलाम ॥
 खुतबा चो दर नामे फरोदू कुनन्द ।
 हुक्म दर आवाजे दुहुल वू कुनन्द ॥
 सुयह चो ना बाँगे खहसलो दम ।
 खंदा जन अज राहे क्यूलो दम ।
 चर्खे कि दर नारज़ैर करबाद नेन ।
 हेच सरज तिकेश आजाद नेन ॥
 दर मक़श आवाज़ए नइमे बलन्द ।
 ना चो "निजानी" नशावा शह चन्द ॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है, मुझे बादशाह के हाथ में चकोर का मौता भिलवाता है।

तू केवल दाँते ही करना जानती है और इसी लिये तुझे मरने के लिये काँटे मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये काँटे।

नस्त्रियों में बादशाह के नाम का खुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि हँके की चोट का।

प्रभात के पान केवल एक आवाज है और वह है सुर्ग की। इसीलिये वह खेद के साथ हैंस कर रह जाता है।

आकाश के पान एक भी आवाज नहीं है। इसीलिये कोई भी इसके पन्दे में बाहर नहीं है।

जैसे दुर्लभ की कविता धरने में रक्तानि न प्राप्त कर। वही "निजानी" के समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नजरबन्द न कर दिया जावे।

कज हंमह मुँगाँ तुई खामोश सार ।
 गोय चैरा वुरदई आखिर वेयार ॥
 ता तु लवे वसता कुशादी नकस ।
 यक सखुने नरज नगुफ़ी वकस ॥
 मंजिले तो दस्त गहे सनजरी ।
 तोमए तो सीनए कवके दरी ॥
 मनके वयकदम ज़दन अज काने गैव ।
 सद गोहरे सुप्रता वर आरम जे जैव ॥
 तोमए मन किर्म शिकारी चैरास्त ।
 खानए मन वर सरे खार चैरास्त ॥
 वाज वदो गुफ़त हमा गोश वाश ।
 खामुशियम विनगरो खामोश वाश ॥
 मनके शुदम कारशिनास अन्दके ।
 सद कुनमो वाज नगोयम यके ॥
 रौ कि तुई शेफ़तए रोज़गार ।
 जाँ के यके न कुनीओ गोई हज़ार ॥
 मनके हमा मानीयम ई सैद गाह ।
 सीनए कवके देहद अज दस्ते शाह ॥

बुलबुल ने वाज से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है ?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुख से नह ली।

संजर बादशाह के ह तू वैठा रहता है और पहाड़ी चकोर के कलेजे को खाता है। पर : भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोलो हैं। एक साँस में सैकड़ों मोती के समान सुन्दर शब्द कह डालती हैं।

फिर क्या कारण है कि छोटे छोटे कीड़ों से मैं अपना पेट भरती हूँ और काँटों पर विश्राम करती हूँ।

वाज ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बखान एक का भी नहीं करता हूँ।

तुझे संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु बातें बनाने में एक ही है।

मैं बिल्कुल भीतरी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार जो

तू तो हमहू जख्म जदानी तमान ।
 किन्तु खुरीआखार नशीनी बल्लतमान ॥
 खुतबा ची दर नामे फरेदू कुन्द ।
 हुक्म दर आवाजे दुहुल तू कुन्द ॥
 सुवह ची ना बाँगे खरसस्तो दस्त ।
 खंदा जन अज रहे कसूलो दस्त ।
 चर्खे कि दर नारजैर फरयाद नेस्त ।
 हेच सरज विक्रेश आजाद नेस्त ॥
 दर नकश आवाजए नरमे बलन्द ।
 ता ची "निजामी" नशरी शह् दन्द ॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है तुझे बादशाह के हाथ से चकोर का सीना खिलवावा है ।

तू केवल दाँते ही करता जानता है और इसी लिये तुझे खाने के लिये कोड़े मिनते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये कोँटे ।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का गृतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि ढंके की चोट का ।

प्रभात के पान केवल एक आवाज है और वह है सुर्ग की । इसीलिये वह खेद के साथ हँस कर रह जाता है ।

आकाश के पान एक भी आवाज नहीं है । इसीलिये कोड़े भी उसके फन्दे में गहर नहीं है ।

उँचे दर्जे की कविता बनने में खदावि न प्राप्त कर । कहीं "निजामी" के समान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नजरबन्द न कर दिया जावे ।

कज्र हमह मुँगाँ तुई खामोश सार ।
 गोय चैरा वुरदई आखिर बेयार ॥
 ता तु लवे बसता कुशादी नकस ।
 यक सखुने नरज्र नगुस्की बकस ॥
 मंजिले तो दस्त गहे सनजरी ।
 तोमए तो सीनए कवके दरी ॥
 मनके वयकदम ज़दन अज्र काने गैव ।
 सद गोहरे सुप्रता वर आरम जे जैव ॥
 तोमए मन किर्म शिकारी चैरास्त ।
 खानए मन वर सरे खार चैरास्त ॥
 वाज्र वदो गुप्रत हमा गोश वाश ।
 खामुशियम विनगरो खामोश वाश ॥
 मनके शुदम कारशिनास अन्दके ।
 सद कुनमो वाज्र नगोयम यके ॥
 रौ कि तुई शेफतए रोज्रगार ।
 जाँके यके न कुनीओ गोई हज़ार ॥
 मनके हमा मानीयम ई सैद गाह ।
 सीनए कवके देहद अज्र दस्ते शाह ॥

बुलबुल ने वाज्र से कहा कि तू सब पक्षियों में बड़ा है। परन्तु कभी बोलता नहीं। इसका क्या कारण है ?

तूने जब से इस संसार में जन्म लिया है, उस समय से अभी तक एक भी अच्छी बात मुख से नहीं निकाली।

संजर वादशाह के हाथ पर तू बैठा रहता है और पहाड़ी चकोर के कलेजे को खाता है। पर इस पर भी चुप है।

मुझे देख, कितनी बोलने वाली हूँ। एक साँस में सैकड़ों मोती के समान सुन्दर शब्द कह डालती हूँ।

फिर क्या कारण है कि छोटे छोटे कीड़ों से मैं अपना पेट भरती हूँ और काँटों पर विश्राम करती हूँ।

वाज्र ने उत्तर दिया कि मेरी बात ध्यान से सुन। मुझे देख कर तू भी चुप साध ले।

मुझे केवल थोड़ा ही सा काम कर आता है। इस पर भी मैं सौ काम करता हूँ, परन्तु बखान एक का भी नहीं करता हूँ।

तुझे संसार ने प्रसिद्ध कर रक्खा है। तेरा प्रेम प्रसिद्ध है। तू काम एक भी नहीं करती परन्तु बातें बनाने में एक ही है।

मैं विस्कुल भीतरी विचार रखने वाला हूँ और इसी लिये यह संसार जो

चूँ तो हूँ वह चल्म ज़वानी तनाम ।
 किर्म खुरीओखार नशांनी बल्मलाम ॥
 खुतवा चो वर नामे फरेदूँ कुनन्द ।
 हुकम वर आवाजे दुहुल चूँ कुनन्द ॥
 सुवह चो वा बाँगे खरसस्तो वम ।
 खंदा जन अज राहं फसूलो वम ।
 चर्ख कि दर मारज़ेद फरयाद नेन् ।
 हंच सरज तिकेश आजाद नेन् ॥
 वर मकश आवाजण नरमे चलन्द ।
 ता चो "निजानी" नशावी शह वन्द ॥

एक प्रकार से आखेट का स्थान है मुझे बादशाह के हाथ से चनेर का भीना खिलवाता है ।

तू केवल बातें ही करना जानती है और इसी लिये तुम्हें पाने के लिये थोड़े मिलते हैं और बैठने तथा विश्राम करने के लिये काँटे ।

मस्जिदों में बादशाह के नाम का खुतबा (प्रार्थना) पढ़ा जाता है न कि डंके की चोट का ।

प्रभात के पास केवल एक आवाज है और वह है मुझे की । इसी लिये वह खेद के साथ हँस कर रह जाता है ।

आकाश के पास एक भी आवाज नहीं है । इसीलिये कोई भी हमारे खन्दे में दाहर नहीं है ।

ऊँचे दर्जे की काबला करने में खयाति न प्रकत कर । कहीं पास हमारी है नभान, इसी कारण से, तू भी एक नगर में नखरबन्द न कर दिया जाये

उत्पन्न होने पर उस लड़की को त्याग दिया। लड़की भी उनके विरह में पागल होकर वहीं पहुँची और उनके जीवन में भक्ति का मिश्रण करके संसार से चल बसी।

“मोक्ष-मार्ग की कठिनाइयाँ और उसके सातों भाग—प्रेम, ज्ञान स्वतंत्रता, सम्मिलन, आश्चर्य, निराशा और मृत्यु के रूप में—प्रगट किये गये हैं। मानव हृदय की मलिनताओं से पृथक होकर आत्मा अपने अभीष्ट को प्राप्त कर लेती है।”

(लि० हि० आ० पर जिल्द २, पृष्ठ ५१२)

“पक्षियों की कठिनाइयाँ तथा उनके भिन्न २ भाग्य, मोक्ष तथा सत्य पथ को ग्रहण करने वालों की विपत्तियों को प्रदर्शित करते हैं और इन बातों का वर्णन, पुस्तक को, जार्ज वनियन की लिखी हुई पुस्तक पिलग्रिम्स प्रायस, के समान बनाता है।”

(लीवी—परशियन लिटरेचर—पृष्ठ ४७)

अत्तार का जन्म नोशापुर में ११५७ ई० में हुआ था। यह अबू तालिब मुहम्मद के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके पिता का नाम था अबूवक्र इब्राहीम। उन्होंने बहुत से नगरों तथा देशों में भ्रमण किया था। जैसे रे, क्यूक, मिश्र, दमिश्क, मक्का, भारतवर्ष, तुर्किस्तान इत्यादि, परन्तु अन्त में यह अपने जन्मस्थान में ही जाकर रहे। यह रहस्यवाद की पुस्तकों को बहुत अधिक पढ़ा करते थे और लगभग ३९ वर्ष तक उन्होंने अपने इस अध्ययन को जारी रखा। रहस्यवाद के साहित्य में इनकी कुछ रचनाएँ बहुमूल्य प्रतीत होती हैं। उन्होंने सूफियों के सातों स्टेजेज का बहुत ही उत्तम भाषा में वर्णन किया है।

अपने उदण्ड विचारों के कारण उन्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा। मकान लूट कर उनको अन्त में निकाल दिया गया। सुना जाता है कि इसके उपरान्त वह मक्का को चले गये और वहाँ पर उन्होंने इसानुलईनव नामक पुस्तक लिखी।

उनकी मृत्यु का समय निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता। विशेषज्ञों में, इस विषय पर मतभेद है। कई एक कारणों से ब्राउन ने उनकी मृत्यु का होना सन् १२३० ई० में लिखा है। लेवी भी इससे सहमत है। प्राचीन कहानी के अनुसार यह कहा जाता है कि उनको चंगेज खॉं ने मार डाला।

प्रमुख रचनाएँ :—

पन्द नामा,
तज्जकिरातुल औलिया,
मन्तकुलतौर,
क़सीदा,
मुसीवत नामा,
बुलबुल नामा,
शुतुर नामा।

मुनकिरे गर गोयर्दी वस मुनकरस्त ।
 इश्क कू कज कुफ़ो ईमाँ वरतरस्त ॥
 इश्क रा वा कुफ़ो वा ईमाँ चे कार ।
 आशिके रा लहज़ए वा जाँ चे कार ॥
 आशिक आतश वर हमाँ ख़िर्मन जनद ।
 अर्रा वर कर्कश ज़न्द अर्दम जनद ॥
 दर्दा ख़ूने दिल वे वायद इश्क रा ।
 किस्सए मुशकिल वे वायद इश्क रा ॥
 साक्रिया ख़ूने जिगर दर जाम कुन ।
 गर नदारी दुर्द अज़ मा वाम कुन ॥
 इश्क रा दर्द वेवायद पर्दा सोज़ ।
 गाह जाँ रा परदा दर गह परदा दोज़ ॥
 ज़रये इश्क अज़ हमा आफ़ाक़ वेह ।
 ज़रये दर्द अज़ हमा उश्शाक़ वेह ॥
 इश्क मग़जे कायनात आमद मुदाम ।
 लेक इश्क आमद ज़े वेदर्दा तमाम ॥

यदि इस मत को न मानने वाला कोई कह बैठे कि यह तो विल्कुल ही मूर्खता है। भला ऐसी भी कोई लगन है जो नास्तिकता तथा धर्म से बढ़कर है!

तो उससे कह दे कि प्रेम को धर्म और नास्तिकता से क्या सम्बन्ध है! प्रेमियों को तो एक क्षण भर के लिये भी प्राणों का मोह नहीं होता है।

यदि क्षण भर के लिये भी उसके दिल में प्राणों की ममता जागृत हो उठे तो उसके शिर पर आरा चला देते हैं। प्रेमी अपना सम्पूर्ण खलिहान स्वयम् जलाकर भस्म कर डालता है।

प्रणय के लिये दर्द और हृदय का रक्त दोनों को न्योछावर कर देना चाहिए। प्रणय के लिये सबसे कठिन बात सदैव अनुरक्त रहना है।

ऐ साकी! अब प्याले में हृदय का रक्त भर दे। यदि तेरे पास तलछट नहीं है तो हम से उधार ले ले।

प्रेम के लिये, लगन के लिये ऐसा तलछट होना चाहिये जो पर्दे को ही जला डाले (अर्थात् कभी प्राणों को खो बैठे और कभी उसे फिर लौटा ले) कभी प्राण के पर्दे को फाड़ डाले और कभी उसे फिर सीदे।

प्रेम का एक क्षण भी सारे संसार से बढ़कर मूल्य रखता है और तनिक सी पीड़ा सम्पूर्ण संसार के प्रेमियों से बढ़कर है।

प्रणय इस सारे जगत का सार है; परन्तु इसमें दया का लेशमात्र भी नहीं है।

कुदसियां रा इश्क हस्तो दर्द नेस्त ।
दर्द रा जुन्न आदमी दर लर्द नेस्त ॥
हर के रा दर इश्क मोहकम शुद कदम ।
दर गुजरत अज कुफ़् ओ अज इस्लाम हम ॥
इश्क नूये फ़क़ दर बोकुशायदत ।
फ़क़ सूये कुफ़् रह बे नुमागदत ॥
इश्क रा वा काफ़िरी खेशी युवद ।
काफ़िरी लर्द ऐने दरवेशी युवद ॥
चू तुरा ई कुफ़् ओ ई ईमाँ न माँद ।
ई तने तू गुम शुदो ई जाँ न माँद ॥
वाद् अर्जी मर्द शवी ई कार रा ।
मर्द वायद ई चुनी असरार रा ॥
पाए दर नेह हम चो मरदानो मतर्स ।
दर गुजर अज कुफ़ो ईमानो मतर्स ॥
चन्द तरसी दस्त अज विकली वेदार ।
वाज शौ चू शेर मरदाँ दर शिकार ॥
गर तुरा सद् उकुवा नागह ओफ़तद ।
वाक न युवद चू दरौ रह ओफ़तद ॥

स्वर्गाय दूत प्रेमी हैं, परन्तु उनमें प्रणय पीड़ा नहीं है। पीड़ा के योग्य मनुष्य के अतिरिक्त और कोई नहीं है।

जो प्रेम में संलग्न है, उसको धर्म पावन और नास्तिकता से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है।

प्रणय तेरे सम्मुख फ़कीरी का द्वार खोल देता है और तेरा यही पद तुझे वहाँ पहुँचा देता है जहाँ ईश्वर को नहीं माना जाता है।

प्रणय और नास्तिकता में प्रगाढ़ सम्बन्ध है। वास्तविक प्रेमी वही है जो नास्तिक है।

जब तेरे पान तेरा धर्म और तेरी नास्तिकता कुछ भी नहीं रह जायगा तो यह तेरा शरीर और तेरा प्राण कुछ भी नहीं रह जायगा।

इसके उपरान्त तू इसके योग्य होगा। ऐसे कार्यों के लिये मनुष्य का पराक्रमी होना आवश्यक है।

वीर मनुष्य के समान अपने मार्ग में आगे बढ़ और किसी प्रकार का भय मत कर। नास्तिकता और धर्म दोनों का त्याग कर दे और डर मत।

तू कब तक भय खाता रहेगा, इस वाजकपन के स्वभाव को ढाँड़ दे। वीरों के समान आखेट करने में अपनी धुन में मग्न हो जा।

यदि तेरे मार्ग में यकायक कठिनाइयाँ आ पड़ें तो भी उनका भय मत कर।

हिकायत शेख सनअाँ

शेख सनअाँ पीर अइदे लेश वूद ।
 दर कमालश उअे गोयम वेश वूद ॥
 शेख वूद अंदर हरम पंजाह साल ।
 वा गुरीदाँ चार सद साहब कमाल ॥
 दर गुरीदे कानेऊ वूदे अजब ।
 मी नअासूद अज रयाअत रोजो शब ॥
 हम अमल हम इलम वा हम यार दारत ।
 हम अयाँ हम करक हम असरार दारत ॥
 कुर्व पंजह हज वजा आउरदा वूद ।
 उमरा उमरे वूद ता में करदा वूद ॥
 हम सलातो सौम बेहद दारत ऊ ।
 हेच सुन्नत रा करो न गुजारत ऊ ॥
 पेशवायाने कि दर पेश आमदन ।
 पेशे ऊ अज खेश वे खेश आमदन ॥

शेख सनअाँ की कहानी और उनका एक स्वप्न देखना

शेख सनअाँ अपने समय के एक बहुत बड़े साधु थे । उनके चमत्कार के विषय में जितना भी कहा जाय थोड़ा है ।

काब्रे की मस्जिद में पचास वर्षों तक उन्होंने फेरी लगाई और चार सौ पहुँचे हुए साधु शिष्य उनके साथ थे ।

आश्चर्य यह है कि जो कोई भी साधु उनके दर्शन करता था उनसे मिलता था वह फिर अहंनिरा ध्यान-मग्न और ईश्वरीय भेद को जानने में व्यस्त रहता था ।

ज्ञान और विद्या के अतिरिक्त उनकी अन्तर्दृष्टि बहुत ही पैनी थी और सब बातें उनपर प्रकट थीं । ठीक ठीक सभी भेदों का उन्हें ज्ञान था ।

पचास हज भी उन्होंने की थीं । और छोटे हज में तो उन्होंने अपनी सारी अवस्था ही व्यतीत कर दी थी ।

व्रत और उपवास भी वह बहुत अधिक रखते थे और किसी भी व्रत को योंही खाली नहीं जाने देते थे ।

बड़े बड़े सन्यासी और त्यागी जो उनके पास आते थे वह अपने आपे को भूल जाते थे ।

मूए भी वेशिगाफ़ु मर्दे मानवी ।
 दर करामातो मुक़ामात आमदी ॥
 हर के बीमारी व सुस्ती याफ़े ।
 अत्र दमे ऊ तंदुरुस्ती याफ़े ॥
 खल्क़ रा क़िलज़ुमला दर शादी व राम ।
 मुक़तदाए वूद दर आलम अलम ॥
 गर चे खुद रा क़िदवए असहाव दीद ।
 चंद शव ऊ हम चुनौ दर ख़ाव दीद ॥
 कत्र हरम दर राहश उक़तादा मुक़ाम ।
 सिजदा नी करदे बुते रा वर दवाम ॥
 चू वेदीदअँ ख़ाव वेदार अत्र जहाँ ।
 गुफ़्त दर्दा ओ दरोगा की ज़नाँ ॥
 यूसुफ़े सिद्दीक़ दर चाह ओफ़ाद ।
 उक़वए वस सअव दर राह ओफ़ाद ॥
 भी नदानम ता अर्ची राम जाँ वरन ।
 तर्के जाँ गुफ़तम अगर ईनाँ वरन ॥

वह सैकड़ों प्रकार के चमत्कार भी दिखला सकते थे । योग विद्याके पूर्ण ज्ञाता थे ।

उनमें वह शक्ति विद्यमान् थी कि रोगी मनुष्य उनकी फूँक से त्वत्थ हो जाता था ।

संतार के दुःख और शोक उनके लिये समान थे । वह संतार में एक प्रसिद्ध गुरु थे ।

जब उन्होंने अपने आपको साधुओं में एक श्रेष्ठ साधु के रूप में देखा तो कई दिनों तक लगातार एक त्वन्न देखा,

कि कावे की मसजिद से आते हुए मार्ग में वह एक स्थान पर पड़े हुए हैं और वहाँ एक मूर्ति की पूजा कर रहे हैं ।

जब संतार के रहस्यों से परिचित मनुष्य ने यह त्वन्न देखा तो वह दुःख से बोले शोक ! हाय शोक !

इस समय सच्चे यूसुफ़ कुए में गिर पड़े, और एक बहुत भयंकर घाटी मार्ग में आगई ।

मुझे यह ज्ञात नहीं है कि मैं इस शोक से अपने आपको कैसे बचा सकूँगा । और यदि किसी प्रकार धर्म को बचा भी लिया तो प्राण अवश्य ही देना पड़ेगा ।

नेस्त यकतन दर हमा रूप जर्मी ।
 कू नदारद उक़वए दर रह चुनीं ॥
 गर कुनद आँ उक़वा क़तआँ जाएगाह ।
 राह रौशन गर्ददश ता पेशगाह ॥
 वर वेमानद दर पसे आँ उक़वा वाज़ ।
 दर उक़वत रह शवद वर वै दराज़ ॥
 आख़िरुलअम्र आँ वदानिश ओस्ताद ।
 वामुरीदों गुक़ु कारेम ओक़ाद ॥
 मी वेवायद रक़ु सूए रूम ज़ूद ।
 ता शवद तावोरे ई माख़ूम ज़ूद ॥
 चार सद मर्दे मुरीदे मोतवर ।
 हमरही करदन्द वा ऊ दर सकर ॥
 मी शुदंद अज़ कावा ता अक़साए रूम ।
 तौफ़ मी करदंद सर ता पाए रूम ॥
 अज़ क़ज़ा रा वूद आली मंज़रे ।
 वर सरे मंज़र निशस्ता दुखतरे ॥
 दुखतरे तरसाए रूहानी सिफ़त ।
 दर रहे रूहुलअश सद मारेफ़त ॥

समस्त संसार में, कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं है, जिसे मार्ग में ऐसी घाटी न मिलती हो ।

यदि इस घाटी को वह पार कर जाता है तो अपने अभीष्ट तक पहुँचने का सीधा मार्ग उसे प्राप्त हो जाता है ।

यदि उस घाटी में वह भटक जाता है तो मुसीबत के कारण उसका रास्ता लम्बा हो जाता है ।

उन्होंने अपने आस पास बैठे हुए साधुओं से कहा कि मुझे एक बड़ा काम पड़ गया है ।

उसके भेद को समझने के लिये मुझे शीघ्र ही रूम की ओर जाना है ।

शेख के साथ चार सौ बड़े बड़े साधु हो लिये ।

वह कावे से लेकर रूम की अन्तिम सीमाओं तक और समस्त रूम में भ्रमण करते हुए गये ।

संयोग से एक दिन उन्होंने एक बहुत ऊँची अट्टालिका देखी, जिसमें एक लड़की बैठी थी ।

वह लड़की (गुवरा) ईसाई थी । पवित्रता की उज्वलता उसके मुख से प्रकट हो रही थी और वह अपने धर्म तथा आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली सैकड़ों बातों से भली भाँति परिचित थी ।

दर सियहरे हुस्त दर बुर्जे जमाल ।
 आक़तावे वूद इह्ला बेजवाल ॥
 आक़ताव अज रशके अक्से हए ऊ ।
 जर्दतर अज आशिकाने कूप ऊ ॥
 हर कि दिल दर जुल्के आँ दिलदार वस्त ।
 अज खयाले जुल्फ ऊ जुन्नार वस्त ॥
 हर कि जाँ दर लाले आँ दिलवर निहाद ।
 पाए दर रह ना निहादा सर निहाद ॥
 चू सदा अज जुल्के आँ मुशकी मुदे ।
 हम अज हिंदू सिकत पुरची मुदे ॥
 हर दो चशमश कितनाए उश्शाक वूद ।
 हर दो अदरुयश दखूची ताक वूद ॥
 चू नजर दर हए उश्शाक ऊ किगन्द ।
 जाँ बदस्ते गमचा दर ताक ऊ किगन्द ॥
 अदरुयश दर माह ताके दस्ता वूद ।
 नरदुने दर ताके ऊ वनिशिस्ता वूद ॥

वह बड़ी ही रूपवती और लावण्यमयी थी । उसका सौंदर्य पटने बढ़ने वाले मूर्य के समान प्रकाशमान था ।

मूर्य, उसके सौन्दर्य के आगे लज्जित होकर फीका पड़ रहा था और उसकी प्रभा, बाला के उन प्रेमियों के रंग से भी अधिक उर्द हो रही थी जो उसकी गली में पड़े हुए थे ।

जिस किसी ने भी उन दियतना को प्रेम की दृष्टि से देखा वह फिर उन्हीं के खयाल में डूबा रह गया ।

जिस मनुष्य ने अपने प्राण उसके ओठों में लगा दिये, उमने प्रेम मार्ग में कदम रखने से पहले ही अपना शिर दे डाला ।

जब शीतल पवन उमकी खुशियों से कम्बूरी को सुन्दर लेकर उड़नी भी नारे देश में एक प्रकार की आनन्द शायक मन्ती की तरह ली दौड़ जाती ।

उन दियतना के ये प्रेमी मेष प्रेमियों को आहत बताते बने थे और उमके मुख पर की विरही हुई आँके उन्को और भी बेचैन कर रही थी । उसकी दोनो भँडों की गोभा जामनी थी ।

जब वह अपने प्रेमियों की तरफ दृष्टि संशयित करती थी तो उसके शरीर व्याकुल होकर निराने के सिरे कड़काने लगे थे ।

उमकी भँडों में परेशा के उरर पद बालका पला हुआ था और उमने एक मनुष्य पैदा हुआ था ।

मरदुमे चशमश चो कर्दे मरदुमी ।
 सैद कर्दे जाने सद सद आदमी ॥
 रूप ऊ दर जेरे जुल्फे तावदार ।
 वूद आतिश पारए वस आबदार ॥
 जाले सैरावश जहाने तिश्ना दाश्त ।
 नरगिसे मस्तश हजाराँ दश्ना दाश्त ॥
 हर कि सूए चश्मए ऊ तिश्ना शुद ।
 दर दिले ऊ हर मेजह सद दश्ना शुद ॥
 गुफ रा चूँ वर दहानश रह नबूद ।
 नज दहानश हर कि गुफ आगह नबूद ॥
 हमसु शकले सोबानी शकले दहौंश ।
 वसता जुआरे तु जुल्फश वर भियाँश ॥
 चाँद भीमीं दर जनादावौं दाश्त ऊ ।
 हमसु ईसा दर सलुन जाँ दाश्त ऊ ॥
 सद दवागं दिल नुँ यूराफ गकँ सुँ ।
 आफगदा दर चाँद ऊ सर निर्गु ॥

गौहरे खुरशीदवश दर मूए दाश्त ।
 वुरकए शैरे सियावर रूप दाश्त ॥
 दुखतरे तरसा चु बुर्का वरगिरिफ़ ।
 वंद वन्दे शैख आतश दर गिरिफ़ ॥
 चू नमूद अज जेरे वुरका रूप खेश ।
 वस्त सद जुन्नार अज यक मूए खेश ॥
 गरचे शैख आँजा नजर दर पेश कर्द ।
 इश्के तरसाजादा कारे खेश कर्द ॥
 शुद दिलश अज दस्तो दर पा ओफ़ाद ।
 जाए आतश वृदो वर जा ओफ़ाद ॥
 हरचि वूदश सर वसर नावूद शुद ।
 जातशे सौदा दिलश पुर दूद शुद ॥
 इश्के दुखतर कर्द गारत जाने ऊ ।
 कुफ़ रेख्त अज जुल्फ़ दर ईमाने ऊ ॥
 शैख ईमाँ दाद तरसाई खरीद ।
 आफ़ियत बकरोख्त हस्वाई खरीद ॥
 इश्क वर जानो दिले ऊ चीर शुद ।
 ता जे दिल नौमीद अज जाँ सीर शुद ॥

उसके काले केशों में सूर्य के समान चमकदार एक मोती लगा हुआ था और वह अपने मुख पर काले बालों का घूँघट डाले हुए थी ।

उस ईसाई बाला ने जब अपने मुख से घूँघट हटा दिया तो शैख के शरीर के प्रत्येक जोड़ में आग लग गई ।

घूँघट उसके मुख से जैसे ही दूर हुआ वैसे ही शैख उसके प्रणय-पाश में बंध गया । उसने अपने एक ही बाल से सहस्रों जनेऊ पहिना दिये ।

शैख ने यद्यपि अपनी दृष्टि वहाँ से हटाने का प्रयत्न किया परन्तु उस ईसाई बाला का प्रेम अपना काम कर गया ।

शैख का हृदय उनके वश में नहीं रहा और फिर वह उस बाला के पैरों पर गिर गया । उनका हृदय जल रहा था वह टोक समय पर उचित स्थान पर जा गिरा ।

जो कुछ भी उनके पास था वह सब नष्ट हो गया और प्रणय की अग्नि से उसका हृदय जलने लगा ।

उस लड़की के प्रेम ने उनके प्राण नष्ट किये और उनकी कान्ती अलकों ने उनका धर्म देकर उसका धर्म खीन लिया ।

शैख ने बेचैनी लेली और अपने मुख को बंधकर अप्रतिष्ठा मान ले ली उसने ईमान बेच वृत्तपरत्ती खरीद ली ।

प्रणय का अधिकार उसके प्राणों और हृदय पर हो गया । यहाँ तक कि वह अपने दिल से निराश और जान से नंग आ गया ।

ईरान के सूफ़ी कवि

११५

यकदमश नै ख्वाव बूदो नै करार ।
 मी तपीद् अज इश्को मी नालीद् जार ॥
 चूं शवे तारीक . दर कारे सियाह ।
 शुद् निहाँ चूं कुफ़ दर जेरे गुनाह ॥
 इश्को ऊ आँ शव यके सद वेश शुद् ।
 लाजरम यकवारगी अज खेश शुद् ॥
 हम दिलज खुद् हम जे आलम वर गिरिफ़ ।
 खाक वरसर कदा मातम दर गिरिफ़ ॥
 गुफ़ वारव इम शवम रा रोज नेस्त ।
 वा मगर शमए जहाँ रा सोज नेस्त ॥
 दर रियाजत माँदाअम शवहा वसे ।
 खुद् निशाँ न देहद् चुनीं शव रा कसे ॥
 हम चो शना अज सोखतन तावम नमाँद् ।
 वर जिगर जुज खूने दिल आवम नमाँद् ॥
 हम चो शमा अज सोज तुफ़म मी कुशन्द ।
 शव हमी सोजन्दो रोजम मी कुशन्द ॥

चण भरके लिये भी उसकी आँख नहीं लगती थी और न कभी उसे चैन ही मिलता था । प्रेम व्यथा से तड़पता और खूब रोता था ।

जब रात्रि, काले आवरण में इस प्रकार छिप गई जिस प्रकार धर्म पापों के अन्दर छिप जाता है ;

तब शैख की पीड़ा सौ गुनी और बढ़ गई और इसीलिये वह यकायक मूर्च्छित हो गया ।

उसने भगवान तथा इस संसार दोनों से अपने दिल को हटा लिया । सिर पर धूल डाल ली और विलाप करना प्रारम्भ कर दिया ।

"ऐ खुदा ! क्या इस रात के बाद दिन नहीं होगा अथवा दुनिया का दीपक अब जलता नहीं है ।

मैंने बहुत सी रातें जागकर प्रार्थना करने में व्यतीत कर दीं, परन्तु इतनी मयानक और लम्बी रात मैंने अभी तक नहीं देखी । और न इम जीवन में मुनी ही है ।

दीपक के समान जलने हुए मुझे बहुत समय हो चुका है और अब थिक जलने की नामशय नहीं रही है । कर्जे पर दिल के रक्त के अतिरिक्त और कोई पानी नहीं रहा है ।

दिव्य के समान जलने की गर्मी मुझे मार डालती है । गत शमा की तरह मैं जलती हूँ और दिन मुझे मार डालता है ।

जुमलए शव दर शवे खूं माँदा अम ।
 पाए ता सर गार्का दर खूं माँदा अम ॥
 हर दमज शव सद शवे खूं बुगजरद ।
 मी न दानम रोजे मन धूं बुगजरद ॥
 हर कि रा यक शव चुनीं रोजी बुवद ।
 रोजी शव कारश जिगर सोजी बुवद ॥
 रोजी शव बिसयार दर तव बूदा अम ।
 मन बजोरे खेश इम शव बूदा अम ॥
 कारे मन रोजे कि मी परदाखतंद ।
 अज बराए इम शवम मी साखतंद ॥
 यारव इम शव रा न लाहद बूद रोज ।
 या मगर शमए कलक रा नेस्त सोज ॥
 यारवीं चंदीं अलामत इमशवस्त ।
 या मगर रोजे कयामत इमशवस्त ॥
 या जे आदम शमा गरदूं मुदी शुद ।
 या जे शर्म दिलवरम दर पदी शुद ॥

यारी रात में अकमोस में डूबा हुआ पड़ा रहा हूँ। सर से पैर तक उस में समा रहा हूँ।

रात को शकते हुए मुझ पर राम की वर्षा करता है। न मातूम दिन टैंग कटेगा।

यदि किसी मनुष्य को ऐसी एक रात भी व्यतीत करनी पड़े तो वह सन्तुष्ट अपने स्वप्न को जलाना ही रहे।

अहर्निश मैं एक प्रकार की सयंकर जलन में जलता रहा हूँ और आज जो रात को मैं केवल अपने वन के कारण बच गया हूँ।

ऐसा मातूम होना है कि जन्म के दिन मेरे भाग्य में इसी रात का मरण लिख दिया गया।

इस रात को भी, य बूदा, मातूम होना है दिन न चाहिये। अथवा आकाशी दीप जो इन समय जल नहीं रहा है।

हे बूदा, इस रात में इसी निशांतिया (जलण) मौजूद है कि अंधे देखने में यह अनामन (प्रलय) का दिन जान होना है।

बद जो हो सकता है कि आकाशी दीप नहीं आद को दया अपने में बच गया हो अथवा मेरी अविद्यता के मृत्यु हो देना हर जलान होकर पदों के अन्ध दिन गया हो।

शब दराजस्तो सियह चूं मूए ऊ ।
 वरना सद रह मर्दुमे वे रूए ऊ ॥
 मी बसोजम इम शवज सौदाए इश्क ।
 मी नदारम ताकते योगाए इश्क ॥
 अकल कू ता इल्म दर पेश आवरम ।
 या व हीलत अकल वा खेश आवरम ॥
 दस्त कू ता खाके रह वर सर कुनम ।
 या जे जेरे खाके खूं सर बर कुनम ॥
 पाए कू ता बाज जोयम कूए यार ।
 चश्म कू ता बाज वीनम रूए यार ॥
 यार कू ता दिल देहद दरयक गमम ।
 अकल कू ता दस्त गीरद यक दमम ॥
 जोर कू ता नालओ जारी कुनम ।
 होश कू ता साजे हुशायारी कुनम ॥
 रक्त सत्रो रक्त अकलो रक्त यार ।
 ई^ॐ चे दर्दस्त ई^ॐ चे इश्कस्त ई^ॐ चे कार ॥

उसके बाल के समान काली रात लम्बी है। यदि यह बात न होती तो मैं अभी तक उसका मुख बिना देखे हुए सौ बार मर चुका होता।

आज की रात मैं प्रणय की जलन में जल रहा हूँ और अब इस शरीर में प्रेम का आक्रमण सहन करने की शक्ति नहीं है।

वह ज्ञान कहीं है ताकि उसकी सहायता से विद्या अथवा किसी यत्न से बुद्धि को अपने पास लाऊँ !

वह हाथ कहीं है कि जिससे गली की मिट्टी सर पर डाल लूँ अथवा मिट्टी और रक्त के नीचे से शिर निकाल लूँ !

वह पैर कहीं कि जो यार की गली खोज ले। वह नेत्र कहीं जो उसके चेहरे को देख ले !

इस समय गम में (शोक में) घुल रहा हूँ। ऐसा कोई भी दोस्त नहीं दीखता जो मेरी दिलजोई करे। बुद्धि कहां है जो आकर मेरी सहायता करे।

वह सामर्थ्य कहीं है कि जिससे रोऊँ और चिटाऊँ ! होशियार करने वाला होश कहीं है !

सत्र चला गया, बुद्धि भी विलुप्त होगई, और दोस्त भी चला गया। यह कैसा प्रेम है, यह कैसा अन्धेर है और यह कैसा दुख है !”

जमा शुदने मुरीदान वगिर्द शेख व नसोहत करदन ऊ रा

जुमलए यारों वदिलदारीए ऊ ।
 जमा गशतंद आँ शवज्ज ज़ारीए ऊ ॥
 हमनशीने गुफ्तश ए शेखे केवार ।
 खेजो ई वसवास रा गुस्ज़ वेआर ॥
 शेख गुफ्तश इमशवज्ज खने जिगर ।
 करदा अम सद वार गुस्ल ऐ वेखवर ॥
 वाँ दिगर गुफ्ता कि तसवीहत कुजास्त ।
 कै शवद कारे तो वेतसवीह रास्त ॥
 गुफ्त तसवीहम वेयफ़गदंम ज़ेदस्त ।
 ता तवानम वर मियाँ जुन्नार वस्त ॥
 वाँ दिगर यक गुफ्तश ऐ पीरे कुहन ।
 खेजो दर खिलवत खुदारा सिजदा कुन ॥
 गुफ्त अगर महरूए मन ईजासते ।
 सिजदा पेशे रूए ऊ ज़ेवासते ॥
 आँ दिगर गुफ्ता कि ऐ दानाए राज़ ।
 खेजो खुद रा जमा कुन अन्दर नमाज़ ॥

चेलों का शेख को घेर कर शिक्षा देना

शेख के जितने भी मित्र थे वह सभी उसे सान्त्वना देने लगे और उसे आँसू बहाते देख कर सब उसके पास आकर इकट्ठे होगये ।

एक सखा ने उससे कहा कि ऐ बड़े साधु ! उठ बैठ और (नहा ले) इस वसवसे को हृदय से निकाल दे ।

शेख ने उत्तर दिया कि मैंने आज की रात अपने कलेजे के खून से सौ बार स्नान किया है ।

एक दूसरे ने कहा कि आपकी माला कहाँ है । बिना उसके सब काम ठीक कैसे चलेंगे ?

उसने कहा मैंने फेंक दी है, ताकि कमर में जनेऊ पहन सकूँ ।

उनमें से एक फिर बोल उठा कि हे वृद्ध फकीर ! उठ, और खुदा के सामने सर झुका ।

उसने उत्तर दिया कि यदि वह सुन्दरी मेरी प्रियतमा यहाँ मौजूद होती तो उसके सामने सर झुकाते हुए मुझे अच्छा मालूम होता ।

तब तक किसी और ने कहा कि ऐ भेदों के ज्ञाता ! उठो और दिल लगाकर नमाज़ पढ़ो ।

गुरू कू मेहरावे अवहृए निगार ।
 ता न वाशद जुज नमाजम हेच कार ॥
 वॉ दिगर गुक़श परोमानीत नेस्त ।
 ज़रए ददें मुत्तलमानीत नेस्त ॥
 गुक़ कस न बुवद पशीमाँ वेश अज़ी ।
 ता चेरा आशिक़ न वूदम पेश अज़ी ॥
 वॉ दिगर गुपतश कि देवत राह ज़द ।
 तीरे लज़लाँ वर दिलत नागाह ज़द ॥
 गुक़ देवे कू रहे मा मी जनद ।
 गो बेजन अलहक़ कि ज़ेवा मी जनद ॥
 वॉ दिगर गुक़ा कि हर कि आगाह शुद ।
 काँ चुनाँ शेखे चुनी गुमराह शुद ॥
 गुभत मन वस कार्ग़म अज़ नामो नंग ।
 शीशए साल्त्स विशिक़स्तम वसंग ॥
 आँ दिगर गुक़श कि चाराने क़दीम ।
 अज़ तो रंज़ूरन्दो नाँदादिल दो नीम ॥
 गुक़ चूं तरसा बचा खुशदिल बुवद ।
 दिल ज़े रंजे ईनो आँ गाक़िल बुवद ॥

उसने कहा कि प्रियतमा के भवन की महाराज कहाँ है ताकि उसमें नमाज पढ़ने के अतिरिक्त और मेरा कोई काम ही न रहे ।

किसी और ने कहा कि तुम्हें ऐसा करते हुए लज्जा भी नहीं आती । मुसल्मान होने की तुझे अणमात्र भी चिन्ता नहीं है ।

शेख ने कहा कि उससे अधिक और किसका हाल बदतर होगा जो उसका आशिक़ न हो ।

इसके उपरान्त किसी और ने कहा कि शैतान ने तेरा रास्ता रोक दिया है और तेरे हृदय पर यकायक बर्बादी का तीर मार दिया है ।

उसने उत्तर दिया कि वह शैतान जो हमेशा लूटता है बहुत ठीक करता है । उससे कह दो कि लूटे ।

किसी दूसरे ने कहा कि यदि किसी का यह ख़बर मिल गई कि इतना बड़ा पीर इस प्रकार पथ-भ्रष्ट हो गया है तब क्या होगा ।

उसने जवाब दिया कि इदज़त और नाम से मैं रहित हो गया हूँ और मैंने शीशे " साल्त्स " को पत्थर से तोड़ दिया है ।

किसी और ने कहा कि पुराने मित्र तुम्हें नाराज है । उनके दिल टूट गये हैं ।

शेख ने उत्तर दिया कि जब ईसाई की लड़की राजा हो जायगी तब दिल में किसी के भी नाराज होने का ख्याल न रह जायगा ।

आँ दिगर गुफ़ा कि वा यारों बेसाज़ ।
 ता खेम इमरोज़ सूए कावा वाज़ ॥
 गुफ़ा अग़र कावा न वाशद दैर हस्त ।
 होशियारे कावा अम दर दैर मस्त ॥
 आँ दिगर गुफ़त ईं ज़माँ कुन अज़म राह ।
 दर हरम बेनशीनो उज़्रे खुद बेखाह ॥
 गुफ़ सर वर आसताने आँ निगार ।
 उज़्र खाहम खास्त दस्तज़ मन बेदार ॥
 आँ दिगर गुफ़ा कि दोज़ख़ दूर हस्त ।
 मदेँ दोज़ख़ नेस्त हर कू आगाहस्त ॥
 गुफ़ अग़र दोज़ख़ बुवद हमराहे मन ।
 हक़ दोज़ख़ सोज़द अज़ यक आहे मन ॥
 आँ दिगर गुफ़ा वउम्मीदे वहिश्त ।
 वाज़ गरदो तौवा कुन ज़ौकारे चिश्त ॥
 गुफ़ चूँ यारे वहिश्ती रूप हस्त ।
 गर वहिश्ते वाएदम आँ कूए हस्त ॥

दूसरा बोला कि अब आकर साथियों से मिल जा ताकि हम सब फिर कावे को चले ।

पीर ने उत्तर दिया कावा न सही मन्दिर तो मौजूद है । मैं मन्दिर में मस्त होकर कावे से भी अधिक बुद्धिमान हो गया हूँ ।

तब किसी दूसरे ने कहा कि उठिये और चल कर मस्जिद में बैठकर चामा प्रार्थना कीजिये ।

शेख़ ने उत्तर दिया कि यदि ऐसा ही करना होगा तो उस प्रियतमा की चौखट पर शिर रखकर कहूँगा ।

किसी दूसरे ने कहा कि सब कामों से जानकारी रखते हुये इस नर्क में क्यों आ पड़े हो ।

शेख़ ने जवाब दिया कि यदि नर्क मेरे पास आ जावे तो मेरी एक ही आह से जल कर भस्म हो जावे ।

किसी ने कहा कि स्वर्ग की आशा में इस बुरे काम से हाथ खींच ले और अपने को सुधार ।

उत्तर मिला कि मेरे लिये स्वर्ग के समान सुन्दर मुख वाली प्रियतमा मौजूद है और अगर उससे भी ज्यादा किसी वस्तु की आवश्यकता होगी तो उसकी गली उपस्थित है ।

आँ दिगर - गुफ़श कि अज हक़ शर्मदार ।
 हक़ तआला रा वख़ुद आज़र्मदार ॥
 गुफ़ ई आतश चु हक़ दर मन फ़िगंद ।
 मन वख़ुद न तवानम अज गरदन फ़िगंद ॥
 आँ दिगर गुफ़तश बेरौ ऐ मन बेवाश ।
 वाज ईमाँ आवरो मोमिन बेवाश ॥
 गुफ़ जुज कुफ़ अज मने हैरौ मखाह ।
 हर कि काफ़िर शुद अजो ईमाँ मखाह ॥
 चू सख़ुन दर वै नआमद कारगर ।
 तन ज़दंद आख़िर वदाँ तीमारदर ॥
 मौजजन शुद परदए दिल शाँ जे सूँ ।
 वा चे आयद अज पसे पर्दा बुहूँ ॥
 तुर्जे रोज आमद चु वाज़रौँ सिपर ।
 हिंदुवे शव रा व वेग़ अफ़गंद सर ॥
 रोजे दीगर काँ जहाने पुर गुरूर ।
 शुद जे बहरे चश्मए ख़ुर ग़क़े नूर ॥
 शेख़ ख़िलवतसाज कूए यार शुद ।
 वा सगाने कूए ऊ दरकार शुद ॥

कोई फिर कहने लगा खुदा का लिहाज रख और उसको अपने ऊपर दयालु रखने का प्रयत्न कर ।

शेख ने उत्तर दिया कि जब खुदा ही ने मेरे दिल में यह आग पैदा कर दी है फिर धर्म और ईमान के पीछे क्यों पड़ूँ ।

दूसरे ने कहा कि इस से बाज आ और धार्मिक बन जा ।

उसने कहा मुझे कुफ़ के सिवा कुछ न चाहिये । ऐसा जो काफ़िर हो उस से धर्म की उम्मीद न कर ।

जब किसी को बात ने उसके ऊपर कुछ भी असर नहीं किया तो उसके साथ दया दिखलाने वाले उसके साथी सब चुप होकर बैठ रहे ।

उनके दिलों में रक्त का प्रवाह जोरों से हो रहा था और प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें भविष्य क्या रँग लाता है ।

दिवस रूपी यवन सोने की ढाल लिये हुये आया और उसने रजनी रूपी हिन्दू का शिर अपनी तलवार से फ़ाट डाला ।

दर्प पूर्ण जगत पुनः भगवान् भास्कर की उज्वलता में मौजें मारने लगा ।

शेख ने अपना आसन उसी प्रियतमा की गली में जमा दिया और उसकी गली के कूकरों के साथ निवास करने लगा ।

मोतकिक वेनशिस्त दर खाके रहश ।
 हमचु मूए गश्त रूपे चूं महश ॥
 कुर्वे माहे रोजो शव दर कूए ऊ ।
 सन्न कर्दज आफतावे रूपे ऊ ॥
 आकवत वीमार शुद वेदिल सितौंश ।
 हेच वर नरक सरअज आसतांश ॥
 वूद खाके कूए आँ वुत विस्तरश ।
 वूद वालाँ आसताने आँ दरश ॥
 चूं न वूद अज कूए ऊ वुगुजश्तनश ।
 दुखतरा आगह शुद जे आशिक गश्तनश ॥
 खोशतन रा आँजमी कर्द आँ निगार ।
 गुफ़ शेखा अज चे गश्ती वेकरार ॥
 कै कुन्द ए अज शरावे इश्क मस्त ।
 जाहिदाँ दर कूए तरसायाँ नेशस्त ॥
 गर बज्जुल्कम शेख इकरार आवरद ।
 हर दमश दीवानगी वार आवरद ॥
 शेख गुफ़श चूं जवूनम दीदई ।
 लाजरम दुजदीदा दिल दुजदीदई ॥

उसका चन्द्रमा के समान श्वेत और चमकदार मुख वालों के समान काला पड़ गया। वह रास्ते में मिट्टी पर बैठ गया।

लगभग एक मास वह उस गली में उसी प्रियतमा के पुनः दर्शन की प्रतीक्षा में पड़ा रहा।

अन्त में वीमार हो गया। परन्तु उसकी चौखट से अपना सर न उठाया।

यार की गली की धूल उसका विस्तर थी। उसके द्वार की चौखट उसके लिये तकिया के समान थी।

वह उस गली से कहीं जाता ही न था। अन्त में वह ईसाई वाला उसके पास पहुँची,

और उस पर दया भाव प्रदर्शित करते हुये पूछा ऐ शेख तू किस लिये बेचैन हो रहा है ?

ऐ प्रणय की मदिरा में मस्त साधु, पाक मुसलमान कभी ईसाइयों की गली में भी बैठा करते हैं !

हाँ, यदि मेरी काली अलकों पर, तेरा दिल आगया है तो सदैव के लिये वह पागल बना रहेगा।

शेख ने कहा कि तूने मुझको दुर्बल देख लिया है। मैं वृद्ध आशिक हूँ और कमजोर हूँ।

या दिलम देह वाज या वा मन बेसाज ।
 दर नियाजे मन निगर चंदी मनाज ॥
 जाँ फिशानम वर तो गर फरमाँ दिही ।
 वर तो छाही वाजम अज लव जाँ दिही ॥
 ऐ लत्रो जुलकत खियानो सूदे मन ।
 रूयो क्रूयत मकसदो मकसूदे मन ॥
 गह जे तावे जुलक दर तावम मकुन ।
 गह जे चश्मे मस्त दर खावम मकुन ॥
 दिल चु आतश दीदा चुं अत्र अज तूअम ।
 बेकसो बेयारो बेसत्र अज तूअम ॥
 बेतो वर जानम जहाँ विकरोखतम ।
 को सर्वाँ कज इश्के तो वरदोखतम ॥
 हमचो वाराँ अश्क भी वारम जे चश्म ।
 जाँ के बेतो चश्म ईं दारम जे चश्म ॥
 दिल जे दस्तो दीदा दर मातम बेमाँद ।
 दीदा रूयत दीदा दिल दर गम बेमाँद ॥

या तो दिल वापिस करदे या मेरी हो जा । मेरी मोहब्बत को देख और इतना नाच न कर ।

अगर तू आज्ञा दे तो मैं अपनी जान को न्योछावर कर दूँ और अगर तू चाहे तो मुझे अपने ओठों से फिर नई जान बरदा दे ।

ऐ प्रियतमा तेरे होठ और तेरी काली अलकें ही मेरी हानि और लाभ के कारण हैं । और तेरा मुख ओर गलां मेरा अभीष्ट है ।

कभी तू अपनी घुंघराली जुल्फों से मुझे बेचैन कर देती है और कभी अपनी मदमाती आँखों से मुझे बेहोश कर देती है ।

तेरो वजह से मेरे दिल में धक् धक् करके आग जल रही है । तूने ही मुझे बेखबर बना दिया है ।

तेरी जुदाई में मैंने अपनी जान की भी सुधि सुला दी है । और देख तेरे प्रेम में मैंने कौन सी दौलत हासिल की है ।

मैं बादल की तरह अपनी आँखों से आँसू बरसाता हूँ, क्योंकि जब तू नहीं है तब उन आँखों से यही उन्मीद करता हूँ ।

मेरा दिल मुझसे किनारा कर गया और आँख उसके दुख में बेचैन हो गई । आँख ने तेरा मुख क्या देखा कि वह सदैव के लिये मेरे दिल को दुख में फँसा गई ।

उंचे मनज दीदा दीदम कस नदीद ।
 उंचे मनज दिल कशोदम की करीद ॥
 अज दिलम जुज खाने दिल हासिल न मुंद ।
 खाने दिल ताके खुरम चूं दिल न मुंद ॥
 वेश अर्जा वर जाने ई मिसकी मजन ।
 दर फुतूदे ऊलकद चर्दी मजन ॥
 रोजगारे मन वशुद दर ईतजार ।
 गर बुवद वस्ले वेआयद रोजगार ॥
 हर शवे वर जाँ कर्मी साजो कुनम ।
 वर सरे कूये तो जाँ बाजो कुनम ॥
 रूये वर खाके दरत जाँ मीदेहम ।
 जाँ व निर्खे खाक अरजाँ मीदेहम ॥
 चन्द नालम वर दरत दर बाज कुन ।
 एक दमम वा खेशतन दम साज कुन ॥
 आफतावी अज तो दूरी चूं कुनम ।
 ज़री अम वे तो सवूरी चूं कुनम ॥

जो कुछ मैंने अपनी इन आँखों से देखा है वह किसी को भी दिखाई नहीं दिया और जो वोफ़ मैंने अपने दिल की वजह से उठाया है वह किसी ने भी नहीं उठाया है ।

मेरे दिल में अब खून के अतिरिक्त और कुछ भी शेष नहीं रहा है । मैं किस दिल का खून पान करूँ जब कि मेरे पास दिल ही नहीं है ।

इससे भी बढ़ कर अब इस दोन की जान के ऊपर हमला न कर और इसको भी जीतने का यत्न न कर ।

मेरी सारी उम्र इन्तिजारी में बीत गई अब यदि मिलन हो जाये तो फिर दिन निकल आयेगा ।

प्रत्येक रात को मैं अपनी जान दे देने की तय्यारी करता हूँ और तेरो गली में जान पर खेलना चाहता हूँ ।

तेरे दर्वाजे के सामने ही पड़ा रहकर मैं अपने प्राणों को गँवा देना चाहता हूँ और मिट्टी के मोल अपनी जान को बेच रहा हूँ ।

भला, कब तक मैं इस प्रकार तेरे द्वार पर बैठा हुआ आँसू बहाता रहूँ ? थोड़ी देर के लिये ही इस दर्वाजे को खोल दे और चण भर के लिये मुझसे दो बोल बोल दे ।

तू सूरज है, मैं तुझसे कुछ अधिक दूरी पर नहीं हूँ । मैं तेरे लिये ज़र्रे के समान हूँ, फिर तेरे पास बिना आये हुए कैसे रह सकता हूँ ।

गरचे हम चं ताया अम दर इजतराय ।
 दरजे हम अज रोजनत चं आफताय ॥
 हक गरदूं रा दर आरन जेरे पर ।
 गर फेरोद आरी वरी सर गस्ता सर ॥
 नी खम दर छाक जाने सोखता ।
 जातरी आहम जहाने सोखता ॥
 पायन अज इस्के तू दर गिल नाँदा अस्त ।
 दस्त अज शौके तू दरे दिल नाँदा अस्त ॥
 नी दर आयद जे अदरे ख्यत जाँ जे तन ।
 चन्द दाशो दा मनो पिन्हाँ जे मन ॥
 दुखतरश गुलु ऐ खचक अज रोजगार ।
 ताजे काकुरो करून कुन शर्मसार ॥
 चूं दमत सईअस्त दनसाजी मकुन ।
 पीर गस्ती कतदे दिल वाजी मकुन ॥
 ईं जमाँ अजने करून करदन तुरा ।
 बेहतर आयद जाँके अजने मन तुरा ॥
 चूं तो दर पीरी दयक नानेगिरौ ।
 इस्क वरजीदन न दितवानी बेरौ ॥

मैं ब्रह्मा हूँ। मेरी कोई निजी हत्ती नहीं है, लेकिन फिर भी मैं तेरे नरगेके से होकर सूरज की रोशनी की तरह अन्दर पहुँच जाऊँगा।

अगर तू मुझ बचैन के ऊपर वनिक सी भी दया दिखलायगी तो मैं इतना ऊँचा चढ़ जाऊँगा कि सातों आसमान मेरे नीचे हो जायँगे।

मैं अपने प्राण को जलाकर मिट्टी में मिला जा रहा हूँ और मेरी आह की आग में दुनियाँ भस्म हो चुकी है।

तेरे प्रेम के कारण मेरी जान पर आ बनी है और तुझसे मिलने के लिये अपना दिल धामे हुए बैठा हूँ।

जब तेरा मुँह पर्दे के अन्दर हो जाता है तो मेरी जान निकल जाती है। मेरे दिल की साथिन! तू अब तक मुझसे पृथक रहेगी।

लड़की ने उससे कहा कि ऐ दुनियाँ भर के नूर्ख! तुझे शर्म नहीं लगती। तुझे तो अब कन्न में जाने का सामान करना चाहिये।

तेरी साँस ठंडी हो चली है तू अब गर्मी न दिखा। अब बुझा होकर प्रेम करने के लिये उतावला न बन।

इस समय तू अपने कन्न का इन्तजान कर। अब यही तेरे लिए अच्छा होगा। मुझसे मिलने की इच्छा को अपने दिल से दूर कर दे।

तू बुढ़ापे में एक रोटी के लिये नाग नाग फिर रहा है। तू प्रेमी कैसे हो सकता है, जा यहाँ से दूर भी हो।

तू व पांगे नी त लारा मफतन ।
 के वमनो मारसाही मफतन ॥
 रोम मुकनरा मर वेगोई मर हुवार ।
 मन मराम मुज मुम इरके तो काम ॥
 आशिकारा ने जमा के पोर मई ।
 इरक वर हर दिल के जत नामोर करे म ।
 मुक हुसर मर करो कामे हुकूम ।
 दस्त बापर पाक अब इस्लाम मुम ॥
 हर के क हमसे पारे रोश नेस्त ।
 इरके क मुज रंगो पूर रोश नेस्त ॥
 रोम मुकुरा इर ने गोई आ कुनम ।
 उने करमाई जमा करमा कुनम ॥
 मुक हुसर मर तु हमली मई मर ।
 हरे बापर मर नीजन इतियार ॥
 सिन्हा कुन पेशे मुजे हरआ पेसाव ।
 सुप्र नोरो रोश अब इमा वेदोव ॥

जब कि तू एक रोटी नहीं बना सकता तो फिर आदशाही के लिये क्यों प्रयत्न कर रहा है ?

शेख ने उत्तर दिया कि तू चाहे जितनी सख्त बात कर मैं तेरे प्रेम के अतिरिक्त कोई काम नहीं कर सकता ।

प्रेमियों को बूढ़े और जवान होने से क्या मतलब है । वह हर एक अवस्था में समान है ।

प्रणय जिस दिल पर हमला करता है उस पर अपना रोव जमा लेता है । लड़की ने कहा कि अगर तू इस काम में पक्का है तो अपने धर्म इस्लाम को छोड़ दे ।

जो आदमी अपने प्यारे के धर्म का नहीं होता है उसका प्रेम रंग और तू से बढ़ कर नहीं होता है ।

शेख ने कहा तू जो कुछ कहेगी उसे मैं जरूर ही कहूँगा, और जो आज्ञा देगी उसे भरसक पूरा करने का प्रयत्न करूँगा ।

लड़की ने कहा कि अगर तू मेरा सब काम करने के लिये तय्यार है तो तुझको चार बातें माननी पड़ेंगी ।

तू मूर्ति पूजा कर, कुरान को जलादे, शराब पी और धर्म छोड़ दे ।

शेख़ गुफ़रा ख़न्न करदम इख़तियार ।
 वा से आं दीगर नदरम हेच कार ॥
 वा जमालत ख़न्न तानम ख़र्द मन ।
 वां से दीगर रा नतानम कर्द मन ॥
 गुफ़ वर खेजे बेआओ ख़न्न नोश ।
 ख़श बेनोशी ख़न्न आई दर ख़रोश ॥

रफ़तने शेख़ वा दुख़तर वै देरे मुगाँ व मस्त गरदीदन व

ख़बर शुदने तुरसायाँ अज़ अहवाले ख़ेश

शेख़ रा वुरदंद ता देरे मुगाँ ।
 आनदंद आँ जा मुरीदाँ दर फ़ुगाँ ॥
 आतिशे इश्क़ आवेकारे ऊ ववुर्द ।
 जुल्के तरस्ता रोज़गारे ऊ ववुर्द ॥
 शेख़ अलहक़ मजलिते वस्त ताज़ा दीद ।
 मेज़वाँरा हुस्ने वै अंदाज़ा दीद ॥
 ज़रए अज़लश न नाँदो होश हम ।
 दर कशीदा जाएगाह ख़ामोश हम ॥

शेख़ ने उत्तर दिया कि मैं शराब इख़तियार करता हूँ और बाक़ी की तीन चीज़ों की मुझे कोई ज़रूरत नहीं है ।

मुझे सिर्फ़ इतना अधिकार दे दे कि मैं तेरी मूर्त देखता रहूँ । वन में शराब पी सकता हूँ । और शेष की तीन बातों को मैं छोड़ता हूँ ।

उस लड़की ने कहा कि उठ कर आ और शराब पी । शराब पीने पर तुझे वह नशा आवेगा कि तू मतवाला हो जायगा ।

शेख़ का मुन्दरी वाला के साथ मदिरा गृह में जाना और मतवाला हो जाना तथा ईसाइयों का उसका समाचार जानना

शेख़ को शराबख़ाने में लिवा ले गये । उसके चेहरे उसकी दशा पर ख़ेद करते हुए और अन्य तर्क-वितर्क करते हुए रह गये ।

प्रेमान्नि ने उसकी प्रतिष्ठा को भूल कर दिया और ईसाई बाना ने उसका हाल ख़राब कर दिया ।

सत्य यह है कि शेख़ ने उस मदिरा गृह में एक बहुत ही आनन्ददायक मजलिस देखी और उसके मौन्दर्य को बहुत ही बढ़ा बढ़ा दिया ।

यह देखते ही शेख़ बेमुय हो गया और एक स्थान पर चुप होकर बैठ गया ।

काम विनाश कर्तुं इत्थं पापं श्रेयः ।
 मोक्षं कर्मैरेवैविलं कर्मैरेवैविलं ॥
 यः प्रपन्नं वा मुक्तं शयने शयति ॥
 इत्थं चैव मांसाद्यं चैव शयति ॥
 चैव हस्तेषु चैव शयति चैव शयति ॥
 जाले चैव शयति चैव शयति ॥
 आनिसं चैव शयति चैव शयति ॥
 मोक्षं चैव शयति चैव शयति ॥
 भास्यं चैव शयति चैव शयति ॥
 हस्तैश्चैव शयति चैव शयति ॥
 चैव शयति चैव शयति ॥
 शयति चैव शयति चैव शयति ॥
 शयति चैव शयति चैव शयति ॥
 शयति चैव शयति चैव शयति ॥
 शयति चैव शयति चैव शयति ॥
 शयति चैव शयति चैव शयति ॥
 शयति चैव शयति चैव शयति ॥

उसने अपनी प्रियतमा के हाथ से मदिरा से भग्न हुआ प्याला ले लिया और उसे पीकर अपने काम से हाथ खींच लिया ।

मदिरा और प्रेम दोनों इकट्ठे हो गये और उनके सम्पर्क से शरीर के हृदय में प्रणय पहले से लाख गुना बढ़ गया ।

इसके अतिरिक्त शैल ने अपने यार के अक्षरों का निकट से देखा और डिव्ये में छिपे हुए उसके लाल पर दृष्टि डाली ।

शौक से उसका प्राण फड़फड़ाने लगा और रक्त के चिन्दु उसके नेत्रों से जोरों के साथ टपकने लगे ।

उसने एक और प्याला लेकर पी लिया और अपनी प्रियतमा के केशों की घुँघराली लट को कान में पहन लिया ।

शैल को लगभग सौ पुस्तकें ज्ञानी याद थीं । कुरान का भी पाठ उसने बहुत से गुरुओं से किया था और वह भी उसे कण्ठस्थ था ।

जैसे ही मदिरा उमके कण्ठ से नीचे उतरी उसकी स्मरण शक्ति जाती रही और अहंकार चूर्ण हो गया ।

मदिरा के असर से उसकी बुद्धि और विवेचन शक्ति विलीन हो गई और जो कुछ भी उसे याद था, सब उसके ध्यान से जाता रहा ।

उसके पास जितने भी गुण थे उसमें जितनी भी विशेषताएँ थीं वह सब मदिरा के असर से जाती रहीं ।

इश्क़े आँ दिलवर बेमाँदश सावनाक ।
 हर चे दोगर बूद कुल्ली रफ़ पाक ॥
 शेख़ चूँ शुद मस्त इश्क़श जोर कर्द ।
 हमचु दरिया जाने ऊ पुर शोर कर्द ॥
 आँ सनम रा दीदमे दर दस्तो मस्त ।
 शेख़ शुद यकवारगी आँजा जे दस्त ॥
 दिल बेदाद अज दस्तो अज मै खुरदनश ।
 जास्त ता दस्ते कुन्द दर गरदनश ॥
 दुख्तरश गुफ्तए तू मर्दे कार ना ।
 मुद्ई दर इश्को मानी दार ना ॥
 गर क्रदम दर इश्क़ मोहकम दारिए ।
 मजहबे ईं चुल्के पुरखम दारिए ॥
 इक़तिदा गर तू बचुल्के मन कुनी ।
 वा मन ईं दम दस्त दर गरदन कुनी ॥
 गर नखाही कर्द ईंजा इक़तिदा ।
 खेजो मरौ ईनक आसा ईनक रिदा ॥

यदि कुछ रह गया उसके पास तो वह विपत्ति ढाने वाला उसकी प्रियतमा का प्रणय । इसके अतिरिक्त उसका सर्वस्व जाता रहा ।

शेख़ जिस समय मतवाला हो गया, उस समय उसके प्रेम ने और भी जोर बाँधा और नदी की बाढ़ के समान उसने उसके हृदय को जोश और शोर से परिपूर्ण कर दिया ।

एक और बात ने उसे और भी मतवाला बना दिया । उसने अपनी प्रणयिनी को हाथ में मदिरा का प्याला लिये हुए देखा ।

वस फिर क्या था, उसके दिल में वह भयंकर तूफ़ान उठा कि उसका दिल भिँक़ुल हाथ से जाता रहा और उसने चाहा कि अपनी प्रियतमा के गले में बाहें डाल दे ।

यह देखकर उसकी प्रेमिका ने कहा कि तू अच्छा आदमी नहीं है । तू केवल अपनी जवान से तो कह सकता है परन्तु कार्यों में उन बचनों को परिश्रम नहीं कर सकता ।

अगर तू प्रेम में संलग्न रहना चाहता है तो मेरी पुँषराली अलकों के समान ही विधर्मी बन जा ।

यदि तू मेरी अलकों की समानता कर लेगा तो उसी समय मेरे गले से लग जायगा ।

लेकिन यदि तू मेरी आला नहीं मानता तो वहाँ से चला जा । यह मेरी लाठी है और यह चादर ।

शेर आशिक गरत कार उफतादा बूद ।
 दिल जे शकलत वर कजा विनिहादा बूद ॥
 आँजमाँ कदर सरशा मस्ती न बूद ।
 यक नफस ऊ रा सरे हस्ती न बूद ॥
 आँजमाँ चूँ शेर आशिक गरत मस्त ।
 मस्त आशिक चूँ बुवद रफता जे दस्त ॥
 वर नआमद वा खुदी रुसवा शुद ऊ ।
 मी न तरसीदअज कसो तरसा शुद ऊ ॥
 बूद मै वस कोहना दर बै कार कर्द ।
 शेर रा सरगशाता चूँ परकार कर्द ॥
 पीर रा मै कोहनआ इशके जवाँ ।
 दिलबरशा हाजिर सचूरी कै तवाँ ॥
 शुद सारवाँ पीरो शुद अजदस्त मस्त ।
 मस्त आशिक चूँ बुवद रफता जे दस्त ॥
 गुनाब जे ताकत शुदम ऐ माहुरू ।
 अब मने वेदिल जे मौसाही वेगू ॥

शेर को जगन जग रही थी और वह अपना अर्भाष्ट भी मित्र करना चाहता था। वह वेदोशी में अपने दिल को भाग्य के हाथ में दे चुका था।

गंदरा पात में पहले ही उसे अपनी प्रेमिका के अनिरिक्त किशो का रूप बढा था। अब तो पात ही दूसरी ही गई।

अब वह जगन ही रहा था और उस मनबाली अवस्था में अपने प्राप को से चुका था।

गर बहुशायरी नगरतम वुत परस्त ।
 पेशे वुत मुसहफ बेसोजम मस्त मस्त ॥
 दुरतरश गुफ्त ईं जमों मर्देमनी ।
 खात्रे खुश वादत कि दर खदमनी ॥
 पेश अर्जी दर इस्क वूदी खाम खाम ।
 खुश बेजी चू पुस्ता गश्ती वस्तलाम ॥
 चू खवर नजदीके तरसायाँ रसीद ।
 कौंचुनों शेखे रहे ईशाँ गुजीद ॥
 शेख रा बुर्द सूप देर मस्त ।
 वाद अजाँ गुफ्त ता जुन्नार वस्त ॥
 शेख चू दर हल्कए जुन्नार शुद ।
 खिकाँ रा आतशजदो दरकार शुद ॥
 दिल जे दीने खेशतन आजाद कर्द ।
 ना जे कावा ना जे शेखी चाद कर्द ॥
 वादे चंदों सालत्रां ईमाँ दुरुस्त ।
 ईं चुनों चक वारा दस्त अज वै वशुस्त ॥

जब मैं अपने होश में था मैंने कभी मूर्ति के सामने शिर नहीं झुकाया अब मतवाली अवस्था में मूर्ति के सामने प्रतिज्ञा करके कुरान को अग्नि के हवाले कर दूँगा ।

ईसाई वाला ने कहा कि हाँ अब नू मेरे योग्य हो गया है और काम का आदमी बन गया है ।

अब जाकर सुख की नींद सो । इससे पहिले नू कच्चा था । अब पक्का हो गया है इसलिये खूब नजे में रहेगा ।

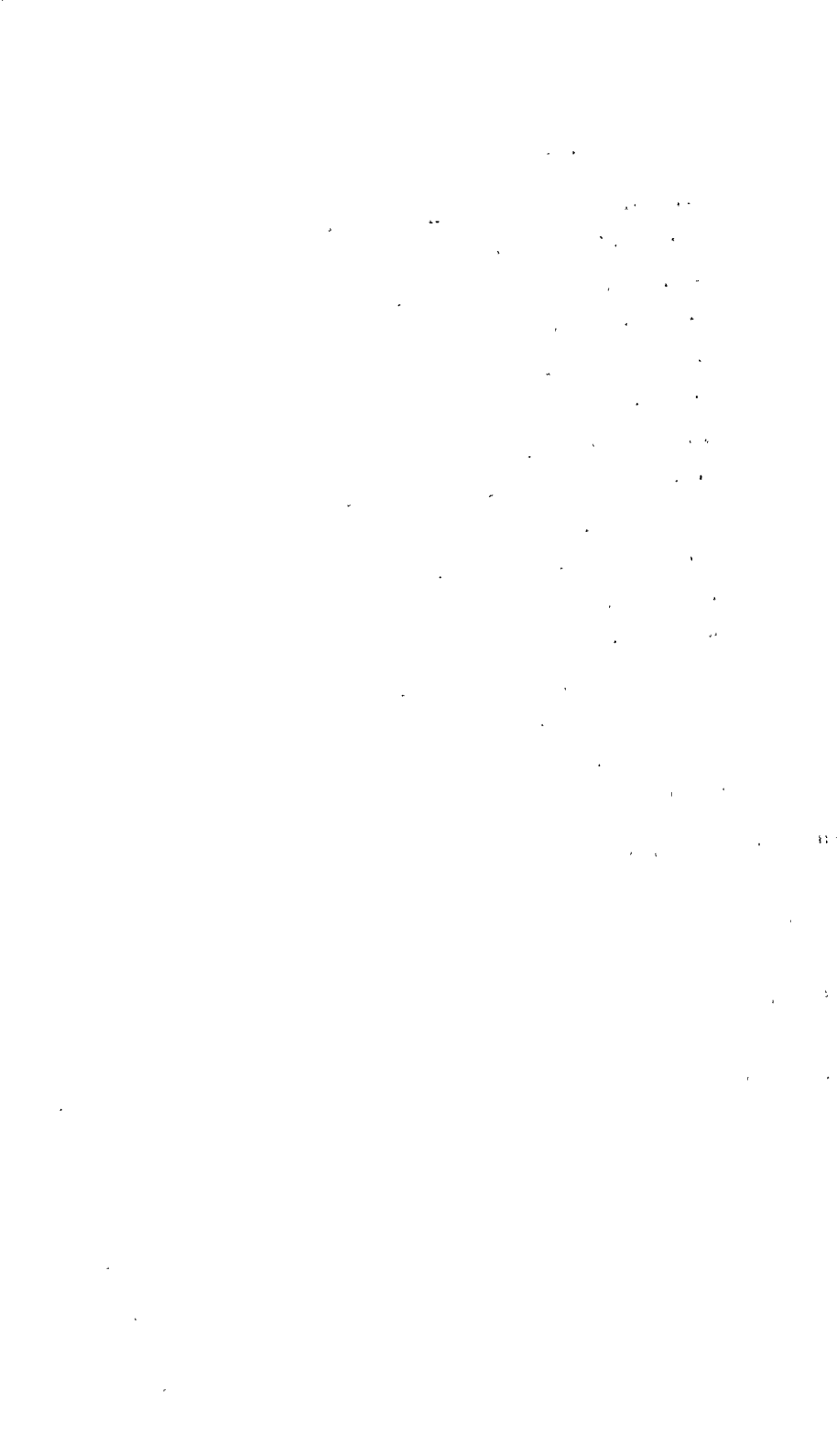
ईसाइयों को यह समाचार मिला कि इस प्रकार के एक शेख ने उनका धर्म ग्रहण कर लिया है ।

वे सब आये और शेख को उसी अवस्था में अपने गिरजे में ले गये । और उतसे कहा कि अब अपने धर्म को छोड़ कर हमारे धर्म की दीक्षा ग्रहण कर ।

शेख ने दीक्षा ले ली और अपनी गुदड़ी को आग में जला दिया ।

वह अपने धर्म से पृथक हो गया । अब न उसे कावे का ही ध्यान था और न अपने शेख होने की सुध ।

बहुत बरसों तक अपने धर्म पर दृढ़ रह कर अब उसने एकाएक उसे तिलांजलि दे डाली ।



जरिये इश्क़ अन्न कमी वर जस्त चुस्त ।
 बुर्द मारा वर सरे लौहे न खुस्त ॥
 इश्क़ अर्ची विस्तार करदस्तो कुन्द ।
 सुवह रा जुन्नार कर दस्तो कुन्द ॥
 पुख्तये अह्द अस्त अवजद ख्वाने इश्क़ ।
 सिर शिनासे शैव सर गरदाने इश्क़ ॥
 ई हना खुद रफ़ वर गो अन्दके ।
 ता तू कै ख्वाही शुदन वा मा यके ॥
 चू विनाये वस्ते तो वर अस्त वूद ।
 उँचे करदन वर उन्नीदे वरल वूद ॥
 वस्त ख्वाही व आशनाई याक़तन ।
 चन्द सोजन दर जुदाई याक़तन ॥
 वाज दुखर गुफ़ु कै पीरे असीर ।
 नन गरौ काबीनमो तू वस्त फ़कीर ॥
 सीमे जर वायद नरा ऐ बेख़वर ।
 कै शव बे सीम कारे तो चोवर ॥
 चू नदारी जर सरे खुद गीरो रौ ।
 नक़क़ये बेसिताँ जे मन ए पीरो रौ ॥

एकायक तेरे इश्क़ ने निकल कर मुझ पर हमला कर दिया और मैं फिर वहीं पहुँच गया जहाँ से चलना आरम्भ किया था ।

इस प्रेम ने ऐसे अनूठे काम किये हैं और करता रहता है । इतने शोख को दूसरे धर्म का अवलम्बी बना दिया और बनाएगा ।

प्रेम के प्रारम्भिक अक्षर पढ़ने वाला चेला भी ज्ञान का पञ्चा होता है और प्रणय की लगन में भटकने वाला मनुष्य ईश्वरीय रहस्यों में जानकारी रखता है ।

शोख ने फिर अपनी प्रेमिका से कहा कि यह सब हो चुका अब यह बतलाओ कि वस्त कब होगा ?

उसके लिये जो कुछ शर्तें थीं वह पूरी भी हो चुकीं । मैंने जो कुछ किया वह भी तुम्हारे मिलने की उन्नीद पर ।

अब तुम मुझे किस दिन अपना योग्य समझ कर मिलने की राह बनाओगी और मैं कब तक तुमसे अलग रहकर इस जुदाई की आग में जलता रहूँगा ?

लड़की ने उत्तर दिया कि ऐ नये दने हुए वूडे ! मुझे अपने लिये दौलत की आवश्यकता है और तू विस्तुल निखारी है ।

नादान ! जरा सोच तो सही रुपये और अशर्तों की नाँग तू किस प्रकार पूरी करेगा ? बिना चाँदी के वेशा कार्य किस प्रकार सोना बनेगा ?

तेरे पास अगर रुपया नहीं है तो अपनी रान्ना नाम और यहाँ से चला

हम चो खुर्शीदि सुबुक रौ कर्द वाश ।
 सन्न कुन मरदानावारो मर्द वाश ॥
 पीर गुफ़ु ऐ सर्व क़दे सीमवर ।
 अहदे नेको मी वरी अलहक़ वसर ॥
 कस नदानम जुन्न तो ए ज़ेवा निगार ।
 दस्त अज़ी शैवा सुखन आख़िर वेदार ॥
 दर रहे इश्क़े तो हर चम वूद शुद ।
 कुफ़ो इस्तामो ज़ियानो सूद शुद ॥
 चंद दारी वेकरारम ज़िन्तज़ार ।
 तू न दारी ई चुनी वामन करार ॥
 जुमलए यारौ ज़ेमन वर गशता अंद ।
 दुश्मने जाने मने सर गशता अंद ॥
 तू चुनी ईशाँ चुनाँ मन चं कुनम ।
 नै दिलम माँदा न जाँ मन चूँ कुनम ॥
 दोस्तर दारम मन ए ईसा सरिशत ।
 वा तो दर दोज़ख़ कि वे तो दर वहिशत ॥

जा। सफ़र के लिये यदि खर्च की जरूरत हो तो मैं तुम्हें अपने पास से कुछ दे सकती हूँ।

तेज चलने वाले सूरज की तरह अपने रास्ते पर आगे बढ़ और मर्दों को तरह साहस व धैर्य से काम ले।

बूढ़े ने कहा कि ऐ कठोर हृदय, परन्तु खूबसूरत माशूक़ ! सच बात तो यह है कि तू बड़ी खूबी के साथ अपने वादे को पूरा कर रही है !

मैं तो तेरे सिवाय किसी दूसरे यार को जानता भी नहीं हूँ। फिर ऐसी बातें करने से क्या लाभ !

मेरे पास जो कुछ भी था वह सब तेरे प्रेम में पड़कर गँवा चुका हूँ। अब न धर्म है और न खुदा।

नफ़ा और नुक़सान सभी कुछ जाता रहा। तू मुझे अपने लिये कब तक बेचैन रखेगी ? तूने तो मुझसे मिलने का वादा किया था।

मेरे जितने भी दोस्त थे वह सब मुझसे विलुप्त हुए हैं। और यही नहीं बल्कि मुझ दुखिया की जान के गाहक बन गए हैं !

तू इस प्रकार बदल गई और उन लोगों ने भी मुँह फेर लिया ! अब मैं क्या करूँ ? अफ़सोस न तो अब मेरा दिल ही रह गया है और न जान ही।

ऐ ईसा के समान दयालू प्रियतम ! मुझे तो तेरे साथ नर्क़ में रहना अच्छा है और बिना तेरे स्वर्ग भी मुझे बहुत बुरा मालूम देगा।

आक़बत चूं शेख़ आमद मर्दे ऊ ।
 दिल बसोख्त आँ माह रा वर दर्दे ऊ ॥
 गुफ़ का वीनम कनू ऐ नातमाम ।
 खूक वानी कुन मरा साले मुदाम ॥
 ता चु साले बुगुज़रद हर दो वहम ।
 उत्र बुगुज़ारेम दर शादी व राम ॥
 शेख़ अज़ फ़रमाने जानाँ सर न ताफ़ ।
 काँ कि सर तावद ज़े जानाँ सर न याफ़ ॥
 रफ़ शेख़े कावओ पीरे के वार ।
 खूक वानी कर्द साले इख़तियार ॥
 दर निहादे हर कसे सद खूक हस्त ।
 खूक वायद कुशत या जुन्नार वस्त ॥
 तू चुना ज़त मो वरी ऐ हेच कस ।
 काँ ख़तर आँ पीर रा उफ़ादो वस ॥
 दरदरुने हर कसे हस्त ई ख़तर ।
 सर वुरूँ आरद चो आयद दर सफ़र ॥

अन्त में जब शेख़ बिल्कुल उसके काम का होगया तो उस चन्द्रवदनी के हृदय में भी उसके प्रति दया उत्पन्न हुई ।

उसने कहा कि पूरे एक वर्ष तक रोज़ाना मेरे सुअर चराया कर ।

जब एक वर्ष पूरा हो जायगा तब हम दोनों मिलेंगे और साथ साथ रहकर समय बितावेंगे । और दुःख तथा आराम में एक दूसरे के साथ रहेंगे ।

शेख़ ने अपनी प्रेमिका के कहने को शिरोधार्य कर लिया । जो मनुष्य अपनी प्रणयिनी के वचनों को नहीं मानता वह रहन्य को नहीं समझ सकता है ।

कावे का शेख़ और इतना बड़ा माधु एक सुअर चराने वाले के रूप में परिणत हो गया और उसने एक वर्ष तक यह कार्य करना स्वीकार कर लिया ।

प्रत्येक मनुष्य के पास स्वभावतः इच्छाओं, रूपों, महत्त्वों सुअर होते हैं । फिर या तो उनको समाप्त ही कर डाला जावे अथवा उनको चराया जावे ।

ओ दीन-हीन मानव ! तू कदाचिन् यह सोचना होगा कि यह आपत्ति केवल उस शेख़ के ही ऊपर पड़ी ।

नहीं, बात दूसरी है । प्रत्येक मनुष्य के हृदय में यह विघ्न उपस्थित है और जब वह ज्ञान के मार्ग में अग्रसर होता है तब उसे इसका ज्ञान आता है ।

तू जे खूके खेश अगरे आगह नई ।
 सखत माजुरी कि भर्दे रहनई ॥
 चूं कदम दर रहनई मरदानावार ।
 हम वुतो हम खूक वीनी सद हज़ार ॥
 खूक कुश वुत सोज़ दर सहराए इश्क ।
 वरना हमचू शेख शौ रुस्वाए इश्क ॥
 आक़वत चूं शेखे दीं रुसवा न वूद ।
 दरमियाने रुम सर गोगा न वूद ॥

दर माँदने मुरीदान बकारे शेख व मुराजअत करदन व कावा

हमनशीनानश चुनाँ दरमानदंद ।
 कज़ फ़रोमाँदन वजाँ दरमानदंद ॥
 जुमला अज़ यारीए ऊ वगुरेखतन्द ।
 अज़ ग़मे ऊ खाक वर सर रेखतन्द ॥
 वूद यारे दरमियाने जमआ चुस्त ।
 पेश शेख आमद कि ए दरकार सुस्त ॥
 मी रवम इमरोज़ सूए कावा वाज़ ।
 चीस्त फ़रमाँ वाज़ वायद गुप्त राज ॥

यदि तू अपने सुअर को नहीं जानता है तो तू चमा के योग्य है, क्योंकि तू इस योग्य नहीं है ।

जब तू इस रास्ते में चलता है लाखों मूर्तियाँ और सुअर तेरे सम्मुख आते हैं ।

प्रेम के नाम पर सुअर को मार डाल और मूर्ति को तोड़ दे । यदि ऐसा नहीं करेगा तो शेख के समान प्रेम में पड़कर वदनामी का कारण बनेगा ।

यदि वह इस्लाम का सन्त इस प्रकार कलंकित न होता तो रुम के देश में सब लोग उसकी इस प्रकार कहानी न कहते ।

शेख के विषय में निराश होकर चेलों का कावे को वापस लौटना

शेख के साथी उसकी अवस्था देखकर निराश होगये । उनसे कुछ करते-धरते न बन पड़ा और खुद उनकी जान पर आ बनी ।

फिर वे सब उसका साथ छोड़कर पृथक होगये । शेख के शोक में वे सब सर धुनने लगे ।

उनमें से एक को शेख से अधिक स्नेह था । वह जाकर शेख से कहने लगा कि अब तो तुम्हारा कार्य चौपट हो गया !

मैं आज कावे को लौटा जा रहा हूँ । यदि तुम्हें कुछ कहना है तो कह दो ।

या दिगर हमचो नू तरसाई कुनेन ।
 चेश रा मेहरावे रुसवाई कुनेन ॥
 ई चुनीं तनहात नपसतदेम ना ।
 हमचु तो जुन्नार दर बनदेम ना ॥
 ना चे नतवानेन दीदम ई चुनीं ।
 जुद् वेगुरेवेम अज तो जीं जनीं ॥
 मोतकिक दर कात्रा वेनशानेन ना ।
 तान दीनेम उंचे नीं दीनेन ना ॥
 शेख गुफ़ा जाने मन दर तक वृद् ।
 हर कुजा खवाडेद वायद खन वृद् ॥
 ता मरा जानस्ता देरम जाण वस ।
 दुखतरे तरसाण रुह अकजाण वस ॥
 नीं न दानम अज चे रु आजादायेद ।
 जीं कि ईजा कार ना यकतायेद ॥
 गर गुमा रा कार उकतायेद देन ।
 हमदेमे वृदे मरा दर हर रामे ॥

क्या हम भी तुम्हारी तरह ईसाई बनकर अपने घर पर बदनामी का टीका लगवा लें ?

हम यह नहीं चाहते कि नू अकेला रहे और इस्लामिये हम भी अब ईसाई हो जायेंगे ।

तुम्हारी यह हालत हम अपनी आँसों से नहीं देख सकते और हमने यथने के लिये हम बहुत अह्द परों से भाग जायेंगे ।

हम कामे में पहुँचकर किसी कोने में छिप रहेंगे ताकि जो हम देख रहे हैं न देखे ।

शेख ने उत्तर दिया कि मेरी जान से आस लाग रही है । मैं तुम्हें क्या बतला सकता हूँ । जहाँ जाना हो अह्द जाओ ।

अब तक छिन्दगी है अब तक भरे रहते छिन्दे नही मन्दिर काती है और यह जाना प्रसन्न कामे माली ईसाई की लड़करी मेरी छिन्दगी का मरारा है ।

तुम्हें नहीं आहूँस तुम रामे देतिका नही हो । कमाविर हम बाल मेरक तुम्हारे ऊपर परों किसी प्रकार का काम माली नही ।

अगर तुमने मे कोई भी रूप काम मे कर जाय तो मुझे हर काम मे कोई न कोई क्या माली भिन्न जाय ।

वाज्र गरदेद ऐ रकीकाने अजीज ।
 मी नदानम ता चे खाहद वूद नीज ॥
 गर जे मा पुसन्द वर गोयेद रास्त ।
 काँ जे पा उफ़ादा सर गरदाँ चेरास्त ॥
 चरम पुरखूनो दहन पुर ज़ह माँद ।
 दर दहाने अज़दहाए क़ह माँद ॥
 हेच काफ़िर दर जहाँ नदेहद रज़ा ।
 उंचे कर्द आँ पीरे इसलाम अज़ क़ज़ा ॥
 रूए तरसाए नमूदन्दश जे दूर ।
 शुद जे दीनो अक़लो शेखी ना सवूर ॥
 जुल्क हमचुं हल्का दर हल्क़श फ़िग़द ।
 दर जवाने जुम्लए खल्क़श फ़िग़द ॥
 गर मरा दर सर जनिश गीरद कसे ।
 गो दरीं रह ईं चुर्नी उफ़द वसे ॥
 दर चुर्नी रह कस न सर गीरद न वुन ।
 हेच कस रा नेस्त रूए यक सखुन ॥

मेरे प्यारे साथियो तुम लोग अब यहाँ से खाना हो जाओ । मैं नहीं कह सकता कि आगे चलकर क्या होगा ।

अगर लोग मेरा हाल पूछें तो सब बातें ज्यों की त्यों बयान कर देना । ताकि वह लोग भी समझ जायें कि शोख क्यों वापस लौटने से लाचार है ।

लोग पूछें तो कह देना कि शोख की आँखें खून से भरी हुई हैं, उसका मुख बहर से कड़वा हो गया है और वह क़हर-रूपी अज़दहे के मुख में जा पड़ा है ।

किसी विधर्मियों के द्वारा भी ऐसा काम न होगा जैसा कि उस इस्लाम के पक्षे मानने वाले से हो गया है ।

एक ईसाई लड़की को शक़ उसे दूर से दिखला दी गई जिसे देखने ही उसका धर्म और ज्ञान सब कुछ जाता रहा ।

अन्तार के ममान बूल्क ने उसके गले में फन्दा डाल दिया और यह बात मारी दुनिया ज्ञान गई ।

अगर कोई आदमी मेरी कहानी सुनकर मुझे बुरा भला कहना शुरू करे तो उससे कह देना कि शक़ की राह में ऐसी बहुत सी बातें हुआ करती हैं ।

इस रान्ने में किसी भी आदमी को अपने सर और पैर का खयाल नहीं रखना है और न किसी को कोई बात ही कहने की सामर्थ्य देनी है ।

वसके चारों दर गमश वेगिरीस्तन्द ।
 गाह भी मुर्दन्दो गह भी जीस्तंद ॥
 शेख शौं दर हम तनहा माँदए ।
 दाद दीं वरवाद तनहा माँदए ॥
 आक्रवत रफतंद सूए कावा वाज ।
 माँदा जाँ दर सोखतन तन दर गुदाज ॥
 चूँ रसीदंद आँ अब्जीजाँ दर हरम ।
 लव फ़ेरो वसततंदो न कुशादंद दम ॥
 अज हयाये शेख खुद हैराँ शुदंद ।
 हर यके दरं गोशए पिनहाँ शुदंद ॥
 शेख रा दर कावा वारे रस्ता वूद ।
 दर इरादत दस्त अज कुल शुस्ता वूद ॥
 वुद वस वीनिन्दओ वस राह वर ।
 ज़रो न वूदे शेख रा आगाह तर ॥
 शेख चूँ अज कावा शुद सूए सफ़र ।
 आँ नवूदाँ जाएगा हाज़िर मगर ॥
 चूँ मुरीदे शेख वाज आमद वजाय ।
 वूद अज शेखश तिही खिलवत सराय ॥

सार्थी लोग उसके शोक में बहुत रोये और अपने प्राणों को पीड़ित करने लगे ।

उनका शेख और गुरु विधन्मीं होकर हम में अकेला रह गया था और उनसे पृथक् हो गया था ।

अन्त में वह सब कावे को लौट गये, परन्तु उनके प्राण पीड़ा से आकुल हो रहे थे ।

जब वह कावा पहुँचे, अफ़सोस के मारे ज़वान बन्द किये थे, और तकलीफ़ में घुल रहे थे ।

अपने गुरु की अप्रतिष्ठा से लज्जित होकर वह इधर-उधर छिपते फिरते थे ।

कावे में शेख का एक ऐसा मित्र भी था जो उसके स्नेह में अपना सब कुछ छोड़ बैठा था ।

वह बड़ी गन्मीर दृष्टि वाला और विद्वान था और शेख के भेदों को उससे अधिक और कोई नहीं जानता था ।

शेख जब कावे से हम को गया था उस समय वह मित्र घर पर नहीं था । कहीं बाहर गया हुआ था ।

जब वह बाहर से घर लौटकर आया उसने पूजा-गृह को शेख विहीन पाया ।

वाज्र पुरसीद अज्र मुरीदाँ हाले शेख ।
 वाज्र गुफ़न्दश हमा अहवाले शेख ॥
 कज्र क़ज़ा ऊ रा चे कार आमद वसर ।
 वज्र क़दर ऊ रा चे वाज्र आमद ववर ॥
 रूये तरसाए व यक मूयश वे वस्त ।
 राह वर ईमां जे हर सूयश वे वस्त ॥
 इश्क़ मी वाज्रद कनूँ वा जुल्फ़ो खाल ।
 खिर्का ग़शता मोहक़ा हालश बहाल ॥
 दस्त कुली वाज्र दाश्त अज्र ताश्तऊ ।
 खक़वानी मीकुनद ई साअतऊ ॥
 ई ज़माँ आँ ख़वाजये विस्तार दर्द ।
 वर मियाँ जुन्नार दारद चारक़र्द ॥
 शेख़ाना गर चे वसे दरदाँ वे तारख़ ।
 अज्र कोहन ग़वरेश मी न तवाँ शनाख़ ॥
 चूँ मुरीद आँ क़िस्सा विशुनूद अज्र शिग़िफ़ ।
 रूये खुद ज़ार क़र्द मातम दर गिरिफ़ ॥
 वामुरीदाँ गुफ़ ऐ तरदामनाँ ।
 दर वफ़ादारी न मरदाँ न ज़नाँ ॥

दूसरे चेलों से उसने शेख का हाल पूछा; उन्होंने ने सब शेख का हाल कह दिया ।

दूसरे चेलों से सब समाचार सुनकर उसकी समझ में आगया कि शेख को भाग्य ने कहाँ ले जाकर पटका था ।

उसकी समझ में आ गया कि वह अब एक ईसाई-वाला के प्रणय में फंसकर अपने धर्म को खो बैठा है ।

उसकी काली अलकों के जाल में पड़कर, उसने अपनी गुदड़ी को त्याग दिया है और अपनी हालत खराब कर ली है ।

खुदा की अभ्यर्थना से उसने बिल्कुल हाथ खींच लिया है और अब सुथर भगया करता है ।

उम मित्र को ज्ञान हो गया कि खुदा से प्रेम रखने वाला वह बूढ़ अब अपनी कमर में चार फेरों वाला जनेऊ बाँधे हुए है ।

दुमारा शेख बशरि अपने धर्म में उन्नति कर चुका था परन्तु अब प्राचीनता का मरणादित्य हर उसे पुनः उचित मार्ग पर लाना कठिन था ।

शेख के मित्र ने जब यह कहाना सुनी तो आश्चर्य और खेद से उसका मुख पीला पड़ गया ।

तब उसने अन्यान्य चेलों से कहा कि मैं पापियों, तुम वफ़ादारी में न तो दो के ही मजान दो और न मरदाँ के ।

यागं कार उक्ततादा वायद सद् ह्यार ।
 यार नायद जुञ्ज चुनीं रोञ्जे बकार ॥
 गर गुमा वृद्धेन चारे शेखे छवेश ।
 यारीण ऊ अञ्ज चे न गिरिपनेद् पेश ॥
 शर्म नां वाद आखिर ईं यारी युवद ।
 हक गुजारी ओ बकादारी युवद ॥
 चू निहाद ओं शेख वर जुन्नार दस्त ।
 जुन्लगी जुन्नार नां वायस्त वस्त ॥
 अञ्ज वरश अमदन नमां वायस्त शुद ।
 जुन्लगी तरसा हमी वाशस्त शुद ॥
 ईं न यारीओ मुवाक्कि वृदनस्त ।
 उंचे करदेद अञ्ज मुनाक्कि वृदनस्त ॥
 हरकि चारे छवेश रा यावर शवद ।
 यार वायद वृद्ध अगार काकिर शवद ॥
 वक्ते नाकामी तवाँ दानिस्त चार ।
 वृद्ध युवद दर कामरानी सद् ह्यार ॥
 शेख चू उक्ताद दर कामे निहंग ।
 जुन्ला जू जुगुरेखतंद अञ्ज नामो नंग ॥

लानत है तुम्हारी दोस्ती पर । मतलब के तो सैकड़ों चार हुआ करते हैं, लेकिन सच्चा दोस्त वही है जो मुसीबत के समय में काम आवे ।

अगर तुम शेख के दोस्त थे तो उसके साथ दोस्ती का हक क्यों नहीं अदा करते रहे ?

तुम्हें क्या लगनी चाहिये । क्या दोस्ती ऐसी ही होती है और शुक्र गुजारी और बकादारी इसी का नाम है ?

जब तुम्हारे शेख ने दूसरे धर्म की दीक्षा ली थी तब तुम्हें भी ऐसा ही करना था ।

जानवृत्त कर उसका साथ छोड़ देना ठीक नहीं था बल्कि उसी के समान सब को ईसाई हो जाना था ।

तुम लोगों ने जो कुछ किया है वह दोस्ती नहीं कही जा सकती है । यह तो बहुत बुरे आदमियों का काम है ।

अपने दोस्त का जो सच्चा साथी होता है वह हमेशा उसके तईं सच्चा ही बना रहता है । चाहे वह विधर्मी ही क्यों न हो जावे ।

जब आदमी के दिन बुरे होते हैं उसी वक्त दोस्त की पहचान होती है । अच्छे दिनों में ऐश के जलसों में तो सैकड़ों साथी हो जाते हैं ।

शेख जिस समय मुसीबत में पड़ गया, उस समय उसके सब साथी बदनामी के डर से उसको छोड़ कर भाग गये ।

इश्क रा बुनियाद वर वदनामी अस्त ।
 हर के जौं दर सर कशद अज खामी अस्त ॥
 जुम्ला गुफतन्द उंचे गुफ्ती पेश अर्जी ।
 वारहा गुफ्तेम वा ऊ वेश अर्जी ॥
 अजमे आँ करदेम ता व ऊ वहम ।
 हम नफस वाशेम वा शादी वा गम ॥
 जोह बेकरोशेम रुसवाई खरेम ।
 दी वरंदाजैमो तरसाई खरेम ॥
 लेके राये दीद शेखे कारसाज ।
 कज वरू यक वयक गरदेम वाज ॥
 चू नदीदज यारीए मा हेच सूद ।
 वाज गर दानीद मारा शेख जद ॥
 वाद अजाँ असहाव रा गुफ्त आँ मुरीद ।
 गर शुमारा कार वूदे वर मजीद ॥
 जुज दर हक नेसते जाये शुमा ।
 दर हजूर हरते सरो पाए शुमा ॥
 दर तेजुल्लुम दास्तन दर पेशे हक ।
 आँ यके वुदे अजाँ दीगर सवक ॥

प्रेम की नींव वदनामी होती है और इस द्वार से होकर निकलने वाला वदनाम हो जाता है ।

यह सुनकर सब चेलों ने दूर ही से कहा कि जो कुछ तू कहता है उससे कहीं ज्यादा हम लोगों ने किया ।

शेख को हमने हर तरह समझाया था और इस बात का पक्का इरादा कर लिया था कि दुख और आराम में उसके साथी रहें ।

हमने यहाँ तक कहा था कि हम भी उसी की तरह वदनामी मोल लेकर ईसाई हो जायें ।

लेकिन शेख ने हमारी एक भी न सुनी । उसकी यही राय हुई कि हम सब उसके पास से चले जायें ।

हम लोगों को साथ रखने में उसे कोई नफा नहीं दिखलाई दिया और हम को बहुत जल्द वहाँ से खाना कर दिया ।

यह बातें सुनकर शेख के उस खास चले ने कहा कि अगर तुम अच्छे काम करने वालों और समझदारों में होते,

तो शेख का हाल देखकर खुदा के दरवाजे पर अपना डेरा जमा देते । वहाँ उनकी मिन्नत करने और गिड़-गिड़ाकर शेख के लिये कहते ।

तब उसके दरवार में तुम्हारी सुनवाई होती जब वह तुम्हारा इस बात में एक दूसरे से बढ़ा-चढ़ा हुआ देखता और समझता कि तुम अपनी आन पर भर मिटने वाले हो,

ता चो हक़ दीदे शुमारा वर करार ।
 वाज दादे शेख़ रा वे इन्तज़ार ॥
 गर जे शेख़े खेश करदेत यहतराज ।
 अज दरे हक़ अज चे भी गशतेद वाज ॥
 चूँ शुनीदंद ईंसखुन अज इज्जे खेश ।
 वर नयावरदंद यक तन सर जे पेश ॥
 आँ मुरीदशा गुफ्त आँ खिजलत चे सूद ।
 कार चूँ उफ़ताद वर खेजेद जूद ॥
 लाजिमे दरगाहे हक़ वाशेम मा ।
 वज तजल्लुम खाक मी वाशेम मा ॥
 पैरहन पोशेम अज काग़ज हमा ।
 दर रसेम आखिर व शेख़े खुदहमा ॥

वाज़ गरदीदने मुरीदाँ अज़ कावा वरूम अज़ पए शेख़

जुम्ला सूए रुम रफ़्तंद अज अरव ।
 मोतकिफ़ गशतंद पिनहाँ रोजो शत्र ॥
 वर दरे हक़ हर यके रा सद हज़ार ।
 गह ज़ारी गह शफ़ाअत वूद कार ॥

तो वह फ़ौरन ही शेख़ को वापस लौटा देता ।

मानलिया कि तुमने शेख़ का साध छोड़ दिया, लेकिन खुदा के दर्वाज़े पर क्यों नहीं गये ।

दूसरे शिष्यों ने जब यह बातें सुनी तो लज्जा से उनके सिर झुक गये ।
 उनका अपराध प्रमाणित हो चुका था ।

इस पर उसी खास शिष्य ने कहा कि इस ताने से कुछ नहीं होता है ।
 काम आ पड़ा है । आओ, उठो ।

जल्दी हम सब इकट्ठे होकर मस्जिद में जमकर बैठ जावें । खुदा से फ़रियाद करें,

और फटे-पुराने कपड़े पहन लें । उम्मीद है कि उसकी दुआ से हम अपने शेख़ से फिर मिलेंगे ।

चेलों का शेख़ से मिलने के लिये कावे से रुम को

फिर से यात्रा करना

सब शिष्य गए अरब देश से रुम को चल दिये । वहाँ पहुँचकर वे अन्य लोगों की दृष्टि से झिपकर एकान्त स्थान में रहने लगे ।

उन लोगों ने ईश्वर के द्वार पर आसन जमा दिया । उनमें से प्रत्येक विनती करके, अपने गुरु को पुनः प्राप्त करने के लिये कहता ।

हमचुनाँ ता चिल शवाँ रोजे तमाम ।
 सर न पेचीदंद हर यक अज मुकाम ॥
 जुम्ला रा चिल शव न खुर वूदो न ख्वाव ।
 हमचुनाँ चिलदर ननाँ वूदो न आव ॥
 अज तजरो करदने आँ कौमे पाक ।
 दर फलक उपताद जोशे सावनाक ॥
 सज्ज पोशाँ दर कराजो दर करूद ।
 जुम्ला पोशीदंद अज मातम कवूद ॥
 आखिरुलअम्र आँ के वूदज पेशे सक ।
 आमदश तीरे दुआए वर हदक ॥
 वादे चिल रोज आँ मुरीदे पाक वाज ।
 वूद अंदर खिलवते खुद दर नमाज ॥
 मुहदम वादे वर आमद मुरकवार ।
 खुद जहाने कशक वर वै आशकार ॥
 मुस्तफारा दीदमी आमद चो माह ।
 दर वरहगन्दा दो गेसूए सियाह ॥
 मायए हक आफ्ताने रूप ऊ ।
 गुद जहाने जान वक्तो मूए ऊ ॥

इस प्रकार चाबीस दिन तक वह लोग लगातार ईश्वर अभ्यर्थना में निमग्न रहे ।

चाबीस दिन तक न तो उन्होंने भोजन ही किया और न शयन । और चाबीस रातें भी उन्होंने इसी प्रकार जागकर प्रार्थना में व्यतीत कीं ।

इस पवित्र जल की इस टेक से आकाश हिल उठा और शोर होने लगा ।

अब पवित्र धारण करने वाले देवताओं ने शोक में कलं बन्ध धारण कर लिये ।

अब वे देव देव देवों के मुखिया की प्रार्थना से नीर लक्ष्य पर जा लगा ।

यह तीन दिन समाप्त होने पर अब बड़े पवित्र देवा अपने आमन पर आमन होने बिना हुआ था ।

सुनिश्चित वायु चलने लगा और बड़े मन्त्र होकर कुम्भने लगा ।

अब देवा देव देवों के समान अत्यन्त पैमानेपरमान दो काली लई शकरी नदन में होने हुए अब दो दरक कले आ रहे हैं ।

अब दो नून नून दे समान देवरीय प्रना से प्रकाशित हो रहा है और दे संसार दो अने उलडे १२० बर पर न्येदावर थी ।

मी खिरामीदो तवस्सुम मी नमूद ।
 हर के मी दीदश दरो गुन मी नमूद ॥
 ओं गुरीद ऊ रा ओं दीद अज जायेजस्त ।
 के नवी अझाह दस्तन गीर दस्त ॥
 रहनुमाए खलअज बहरे खुदा ।
 शेख ना गुमरह खुदा राहश नुमा ॥
 मुस्तफा गुस्त ऐ बहिन्मत वस्त बलंद ।
 री कि शेखन रा बरू करदम जे बंद ॥
 हिन्मते आलात कारे खेश कर्द ।
 दम नजद ता शेख रा दर पेश कर्द ॥
 दरमियाने शेखो हक ता देर गाह ।
 वृद् गरदे व गुवारे वस सियाह ॥
 ओं गुवारज राहे ऊ वरदाशतम ।
 दरमियाने जुल्मतश नगुजारतम ॥
 करदमज बहरे शफाअत शवनमे ।
 मुंतशर वर रोजगारे ऊ हमे ॥
 ओं गुवार अकनू जे रह वरखास्तस्त ।
 तौया बेनशिस्तो गुनाह वरखास्तस्त ॥

वह धीरे धीरे टहल रहे थे और मुक्कुरा रहे थे । उनको जो कोई भी देखता था वह उनकी शोभा पर मोहित हो जाता था ।

उस चले ने जब पैगन्दर को देखा तब उठकर खड़ा हो गया और विनीत भाव से बोला कि ऐ खुदा के नवी, मेरी सहायता कीजिये ।

आप सारी दुनिया को खुदा का रास्ता दिखलाते हैं, हमारे पीर को भी, जो अपने रास्ते को भूल गया है, ठीक रास्ते पर लाइये ।

पैगन्दर साहब ने कहा कि ऐ ऊँचे हाँसले वाले मर्द, जा, मैंने तेरे पीर को क्रुद से छुड़ा दिया ।

तेरी ऊँची हिन्मत अपना काम कर गई । तूने जबतक शेख को आगे नहीं बढ़ा लिया दम भी न लिया ।

तेरे शेख और खुदा के बीच में बहुत दिनों से एक काला पर्दा आ गया था और वह भी गर्द-गुवार का ।

मैंने वह गर्द उसके सामने से हटा दी है और अब वह अंधेरे में नहीं रह गया है ।

मैंने उसके हाज पर एक फुआर छिड़क दी है, जिसकी वजह से वह सारी गर्द साफ हो गई है ।

अब उसने खराब काम करने से हाथ खींच लिया है और बुराई उससे दूर भाग गई है ।

तू यकीं मीदीं कि सद आलम गुनाह ।
 अज तके एक तीना वर खोजद जे राह ॥
 वहरे एहसों चूँ दर आयद मौजजन ।
 मह गरदानद गुनाहे मदीं जन ॥
 ईं दो से हरके वगुप्त अज यारे ऊ ।
 दर जामों गायव शुद अज दीदारे ऊ ॥
 मर्दअज शादीए ऊ मदहोश शुद ।
 नारए जद कासमाँ पुर जोश शुद ॥
 हम चुनाँ नारा जनों वेरूँ किताद ।
 जावे दीदा दरमियाने खूँ किताद ॥
 जुम्लए असहाव रा आगाह कर्द ।
 मुज्दगाने दाद अजमे राह कर्द ॥
 रफ़ वा असहावे गिरयानों दर्वाँ ।
 ता रसीद आँ जा कि शेखे खूकवाँ ॥
 शेख रा दीदन्द चूँ आतश शुदा ।
 दरमियाने वेकरारी खश शुदा ॥
 दीदाआँ दरवेश रा वाज आमदा ।
 वा खुदाए खेश दर राज आमदा ।

तू इस बात पर यकीन रख कि सारी दुनियाँ के बुरे काम केवल उनपर एक बार अफ़सोस करने से ही दूर हो जाते हैं ।

जब खुदा के अहसान का दरिया बाढ़ पर आ जाता है तब मर्दों और औरतों सभी की बुराइयों को धो देता है ।

यह दो-तीन बातें शेख के प्रधान चले से कहकर पैग़म्बर साहब तत्क्षण उसकी दृष्टि से ओझल हो गये ।

वह मनुष्य आनन्द में आकर भूमने लगा और मतवाला हो गया । और उसी अवस्था में इतने जोर से यकायक चिल्लाया कि आकाश में एक प्रकार का हुल्लड़-सा मच गया ।

इसी प्रकार चिल्लाता हुआ वह बाहर निकला और उसने रोना प्रारम्भ किया । यहाँ तक रोया कि आँसुओं के कीचड़ में लोटने लगा ।

अपने सारे साथियों को उसने यह आनन्द दायक समाचार कह सुनाया और यात्रा करने के लिये प्रवन्ध करने लगा ।

इसके उपरान्त अपने सब साथियों के साथ रोता विलखता और दौड़ता हुआ वह वहाँ पहुँचा जहाँ शेख सुन्नर चरा रहा था ।

इन सर्वों ने जाकर देखा कि शेख अग्नि के समान भड़क रहा है और बहुत ही व्याकुल हो रहा है ।

उस प्रधान शिष्य ने देखा कि वह साधु पहले ही से बुरे कामों से हाथ खींच चुका है और खुदा से दिल लगा चुका है ।

ईरान के सूफी कवि

हम फ़िगंदां वूद नाकूल अज दहाँ ।
 हम गुसिस्ता वूद जुन्नार अज मियाँ ॥
 हम कुलाहे गुन्न की अंदाखता ।
 हम जे तरसाई दिलश परदाखता ॥
 शेख चू अस्तहाव रा अज दूर दीद ।
 खेशतन रा दरनियाने नूर दीद ॥
 हम जे खिजलत जामा वर तन चाक कर्द ।
 हम बदस्ते इज्ज वर सर जाक कर्द ॥
 गाह चू अत्र अशके खूनी मीफ़िशॉद ।
 गाह दस्तज जाने शीरी मीफ़िशॉद ॥
 गह जे आहश परदए गरदू वेसोख ।
 गह जे हसरत वर तनेऊ खू वेसोख ॥
 हिक्मतते कुरानी असरारो खबर ।
 शुस्ता वूद अन्दर जमीरश सर वसर ॥
 जुमला वा याद आनदश चक्रवारगी ।
 वाज रस्त अज जेहो अज वेचारगी ॥
 चू बहाले खुद फ़ेरो निगुरीस्ते ।
 दर सजूद उफ़तादयो वेगुरीस्ते ॥

उसने अपने मुख से शंख को पृथक कर दिया है और जनेऊ को तोड़ डाला है ।

उसने ईसाइयों को टोपी को भी उतार कर फेंक दिया था और ईसाई होने का ख्याल भी हृदय से अलग कर दिया था ।

जैसे ही उसने इन सब चेलों को अपनी तरफ़ आते देखा उसे ऐसा ज्ञात हुआ कि वह उजाले में आगया है ।

नारें शर्म के उसने अपने वस्त्र फाड़कर फेंक दिये और खूदा के मन्मुख विर्नात भाव से बैठकर सर पर धूल डालने लगा ।

कभी तो वर्षा की ऋद्धि के समान अपने नेत्रों से शोक के आंमू बरमाता था और कभी अपने प्राण खो देने की इच्छा करता था ।

कभी उसका गर्म साँसों से आकाश का पदो जलने लगता था और कभी शोक और दुख से उसका गन्ध जलने लगता था ।

कुरान और हदीस के सारे रहस्य जो उसके मन्नाक ने धुन चुके थे, अब सब उसपर प्रकट हो गये और उसकी मुर्त्ता तथा काहली दूर हो गई ।

जब वह अपनी अबन्था पर विचार करता तो खूदा के नामने सर पटक कर रोने लगता था ।

हम चो गिल दर खूने दिल आगस्ता बूद ।
 वज्र खिजालत दर अरक गुमगस्ता बूद ॥
 चू चुनाँ दीदंद आँ असहावे ला ।
 माँदा दर अंदोहो शादी मुवतिला ॥
 पेशे ऊ रफतंद सरगरदाँ हमा ।
 अज पए शुकराना जाँ अफशाँ हमाँ ॥
 शेख रा गुफंद ए वेपरदा राज ।
 मना शुद अज पेशे खुरशीदे तो वाज ॥
 कुफ़ वरखास्त अज रहो ईमाँ नशास्त ।
 बुतपरस्ते रूम शुद यजदाँ परस्त ॥
 मौजजद नागाह दरियाये कबूल ।
 शुद शकाअत खाहे कारे तो रसूल ॥
 ई जमा शुकराना आलम आलमस्त ।
 शुक्र कुन हक़ रा चे जाए मालमस्त ॥
 मिन्नत ऐजिद रा कि दर दरियाय तार ।
 कर्द राहे हमचु खुर्शीद आशकार ॥
 आँ कि तानद कर्द रौशन रा सियाह ।
 तौवा तानद दाद वा चंदी गुनाह ॥

वह पुष्प के समान अपने हृदय के रक्त में रंग गया था और शर्म के पसीने से तरबतर हो रहा था ।

जब उसके साथियों ने अपने गुरु को आनन्द और शोक दोनों अवस्थाओं में मस्त देखा तो दौड़कर सब उसके पास पहुँच गये ।

और धन्यवाद दे दे अपने आपको उस पर न्यौछावर करने लगे ।

शेख से उन्होंने कहा कि हे बृद्ध गुरु, तेरे सूरज के सामने से रुकावट का पदी दूर हो गया है ।

कुफ़ (नास्तिकता) रास्ते से हट गया है मूर्ति का पूजक खुदा को मानने लगा है ।

बकायद खुदा की मुहब्बत ने जोर मारा और खुदा के दूत ने तेरी सिकागिरा की ।

अब यह मौक़ा ऐसा आ गया है कि खुदा का शुक्र किया जावे । रंज के दिन दूर हो गये हैं ।

उम खुदा का शुक्र (धन्यवाद) है जिसने अन्धकार से भरे हुए दरिया में मूरज के समान एक मात्र गुम्ना तेरे लिये निकाल दिया है ।

जो चन्द्रशर चीत्र को जो काला बना सकता है, उसमें धुरे कामों की भी नीचा दिखाने की ताकत है ।

आतिशे अज़ तौवा चूँ बेफ़रोज़द ऊ ।
हरचे यावद जुमला दरहम सोज़द ऊ ॥
किस्ता कोताह मी कुनम ईं जाएगाह ।
बूद शाँ अलवत्ता हाले अज़मे राह ॥
शेख़ गुस्ते करदा शुद दर हलक़ा वाज़ ।
रफ़ वा असहाव ता सूए हिजाज़ ॥

ख़्वाब दीदन दुख़तर तरसा व अज़ अक़ब शेख़ रफ़तन

दीद अज़ाँपस दुख़तरे तरसा वख़्वाव ।
कोफ़ताद दर किनारश आफ़ताव ॥
आफ़ताव आँगाह वकुशादे ज़वॉ ।
कज़ पए शेख़त रवाँ शो ईं ज़माँ ॥
मज़हवे ऊ गीरो ख़ाके ऊ वेवाश ।
ए पिलीदश कर्दा पाके ऊ ववाश ॥
ऊ चे आमद दर रहे तो अज़ मजाज़ ।
दर हक़ीक़त तू रहे ऊ गीर वाज़ ॥

जब वह किसी दिल में पश्चाताप की आग भड़का देता है तो उसके द्वारा गुनाहों को भी जला डालता है ।

मैं इस अवसर पर इस कथानक का थोड़े ही शब्दों में वर्णन करना उचित समझता हूँ । सारांश यह कि उन लोगों ने उसी समय यात्रा करने की ठान ली ।

शेख़ ने स्नान किया और पुनः अपने साथियों के बीच में बैठा और फिर उनके साथ अरब देश को चल दिया ।

ईसाई बाला का स्वप्न देखना और शेख़ के पीछे जाना

शेख़ के चले जाने के उपरान्त ईसाई की लड़की ने यह स्वप्न देखा कि उसके अंक में एक सूर्य आकर गिर पड़ा है,

और वह उससे कह रहा है कि इसी क्षण अपने प्रेमी शेख़ के पीछे रवाना हो जा ।

उसका धर्म स्वीकार करले और उसी की शिक्षाओं पर चल । तूने ही उसे अपवित्र किया था अब स्वयं उसके हाथों से पवित्र बन जा ।

वह सांसारिक प्रणय-जाल में फँसकर वेरे धर्म में आया था परन्तु न् वास्तव में उसके धर्म को स्वीकार कर ।

अज रहश बुदी वराहे ऊ दर आ ।
 चूँ वराह आमद तो हमराही नुमा ॥
 रहजनश बूदी तो पस हमरह वेवाश ।
 चंद अर्जी वे आगही आगह वेवाश ॥
 चूँ दर आमद दुखरे तरसा जे ख्वाव ।
 नूर मीदादे दिलश चूँ आफताव ॥
 दर दिलश दरदे पिदीद आमद अजव ।
 वेकरारश कर्द आँ दर्द अज तलय ॥
 आतिशे दर जाने सरमस्तश फिताद ।
 दस्त दर दिल अज दिलो दस्तश फिताद ॥
 मी नदानिस्त ऊ कि जाने वेकरार ।
 दर दरूने ऊ चे तुखम आवुर्द वार ॥
 कारश उक्लादो नवूदश हमदमे ।
 दीद खुद रा दर अजायव आलमे ॥
 आलमे काँजा मजाले राह नेस्त ।
 गुंग वायद शुद जवाँ आगाह नेस्त ॥

तूने उसको सीधे मार्ग से हटाया था। अब जा और उसके धर्म में परिवर्तित हो जा।

तूने उसको पथ—भ्रष्ट किया था अब जाकर उसकी सहायक बन और उसके साथ रह। वह अब अपने उचित मार्ग पर आ गया है। तू कब तक इस प्रकार मुन्ती में पड़ी रहेगी! अब खुदा को समझ ले।

ईसाई वाला यह स्वप्न देखकर चौंक पड़ी। उसका हृदय सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा था।

उसके दिल में एक विलक्षण पीड़ा उत्पन्न हो गई जिसने उसे एक आकुल निजामु बना दिया।

उसके मनवाले प्राण में एक जलन सी पैदा हो गई और दिल पीड़ित होने के कारण उसका हाथ दिल पर जा पड़ा। उसका हाथ भी व्यथ हो गया।

उस दो बंद भी जान न रहा कि उसके व्याकुल प्राणों ने उसके अन्दर कैसा धोत उगा दिया है।

उसके प्रति लोद दिखाने वाला कोई न था। बंद बड़ी कठिनाई में पड़ गई।

उसने अपने आप को एक अन्तरे जगत में देखा जहाँ पहुँचने का कोई मार्ग ही नहीं दिखलाई पड़ता था।

चूँ नज़र घर शेख अक़ग़द आँ निगार ।
 अश्क भी वारीद चूँ अत्रे बहार ॥
 दीदा घर अहदो वफ़ाए ऊ किगन्द ।
 खेश रा घर दस्तो पाए ऊ किगन्द ॥
 गुल्ल अन्न तशवीरे तू जानम बेसोख़ ।
 वेश अर्जा दर पर्दा नतवानम बेसोख़ ॥
 घर किगन ई परदा ता आगह शवम ।
 अरजा कुन इस्लाम ता वारह शवम ॥
 शेख घर वै अरजाए इस्लाम दाद ।
 गुल्लगुला दर जुन्लए चारों फ़िताद ॥
 चूँ शुदाँ नहरूप अन्न अहे अर्चाँ ।
 अश्के चारों मौजजन शुद दर जमाँ ॥
 आख़िरुलन्न आँ सनम चूँ राहे याफ़ ।
 जौके ईमाँ दर दिलश नागाह याफ़ ॥
 शुद दिलश अन्न जौके ईमाँ बेकरार ।
 राम दर आमद गिर्दे आँ बे रामगुसार ॥

उसने अपने नेत्र खोज़ कर शेख को देखा और उसे बादल के समान आँसू गिराते हुए पाया ।

उस समय उसने शेख के सब्बे प्रेम और प्रतिज्ञा पर विचार किया । और जोश में आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी ।

फिर वह कइने लगी कि तुम्हारे शोक में मेरे प्राण जल गये हैं और अब अधिक समय तक पर्दे के भीतर छिपकर जलने को शक्ति मुझमें शेष नहीं रह गई है ।

आप इस पर्दे को दूर कर दीजिये ताकि मैं खुदा तक पहुँच सकूँ । मुझे अपने धर्म इस्लाम की दीक्षा दीजिये जिससे कि मैं उचित मार्ग पर आ जाऊँ ।

शेख ने उसे इस्लाम की दीक्षा दी और उसके निन्न आनन्द के नारे चिह्लाने लगे ।

वह सुन्दरी खुदा को चाहने वालों में से बन गई और उसके नेत्रों ने आसुओं की नदी बह चली ।

शेख को शिक्षा पाते ही उस प्रेमिका के हृदय में धर्म के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होगई ।

धर्म की श्रद्धा से उसका दिल बेचैन होगया । उस निर्दिष्ट अवस्था को परमात्मा के प्रेम ने चारों तरफ़ से घेर लिया !

हर चे मी गोई चु दर रह मुमकिनस्त ।
 रहमतो नौमीद गिर्दे ऐमनस्त ॥
 नफ़स ई असरार न तवानद शुनूद ।
 वे नसीवा गूए न तवानद रयूद ॥
 ई वगोशे जाँ जे दिल वायद शुनीद ।
 न जे नज़चे आबो गिल वायद शुनोद ॥
 जंग दिल वा नफ़स हरदम सख़ शुद ।
 नौहाए ददेह कि मातम सख़ शुद ॥
 दर चुनी रह चावुके वायद शिगर्क ।
 वू कि वेतवाँ रफ़ अर्ज़ी दरियाय शर्क ॥
 शेख़ रा अज़ रफ़तने ऊ जाँ वसोख़ ।
 दीदा अज़ वेरूए ऊ आलम बदोख़ ॥
 वा रफ़ीक़ाँ गुफ़ शेख़े गमज़दा ।
 ख़स्तओ सरग़स्तओ मातम ज़दा ॥
 कै रफ़ीक़ाँ हाले मारा विनिगरेद ।
 ई चुनी अहवाल मारा विनिगरेद ॥

जो कुछ भी तू कह रहा है वह इस मार्ग में सम्भव है । दया करना और निराश करना दोनों में किसी प्रकार का भय नहीं है ।

नफ़स इन बातों को नहीं सुन सकता है और भाग्य की सहायता के बिना सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है ।

यह बात प्राणों पर भली प्रकार विदित होनी चाहिये । पानी और भिट्टी के इस प्रकट शरीर की इच्छाओं का इसके साथ सम्बन्ध न होना चाहिये ।

मानवी इन्द्रियों और हृदय के साथ सदैव तुमुल युद्ध होता रहता है । इस शोक के विषय पर दुःख प्रकट कर ।

इस मार्ग पर चलने के लिये एक बहुत चालाक और चुस्त मनुष्य होना चाहिये । तब आशा की जा सकती है कि वह इस अथाह नदी के पार जा सकता है ।

शेख़ के प्राणों में उस प्रेमिका की मृत्यु से धकधक कर के अग्निजलने लगी और उस चन्द्रवदनी के न रहने से उसने भी संसार की तरफ़ से अपनी आँखें फेर लीं ।

शेख़ बहुत ही उदासीन और दुःखी था । वह परेशान, दुखी और दुर्बल हो गया था ।

उसने अपने साथियों से कहा कि मेरी इस अवस्था को देखो और विचार करो कि मुझ पर क्या होती है ।

वाशद ईं आगाज ईं अंजामे इश्क ।
 हरकि खाहद कू वरद दर दामे इश्क ॥
 मुर्ग दाम आमद गिरिफ्तम जेरे बाल ।
 मन नख्वाहम माँद वे ऊ देरे साल ॥
 अज जहाँ सूए जिनाँ ख्वाहम शुदन ।
 वज पए जानाँ रवाँ खाहम शुदन ॥
 वामदादाँ दिलवर अज आलम वेरफ़ ।
 शेख अज पै नीमरोजे हम वेरफ़ ॥
 कत्र शेखो कत्रे दुखतर साखतन्द ।
 हर दो रा पहलूए हम परदाखतन्द ॥
 पेशवाए इश्के जानाँ खुतवा खाँद ।
 आशिके माशूक रा वाहम निशाँद ॥
 चूँ दो आशिक दायमा मदहोश हम ।
 चूँ दो मौजूँ दस्त दर आगोश हम ॥
 जाँ दो कत्रे आँ दो यारे दर्दमंद ।
 दस्त अजाँ हसरत ज़दा सरवे वुलंद ॥
 बाँके आँजा ऐज़िद अज लुत्को कमाल ।
 कर्द पैदा चशमए आवे जुलाल ॥

प्रेम की शुद्धात् और सात्मा इसी प्रकार होता है । इश्क को कायूम में लाना बहुत ही मुश्किल बात है ।

चिड़िया जाल में फँस गई थी और मैंने उसे गोद में भी छिपा लिया । अब उसके बिना बहुत दिनों ज़िन्दा नहीं रह सकता ।

मैं इस दुनियाँ से बहिश्त को चला जाऊँगा और अपनी प्रेमिका के पीछे खाना हो जाऊँगा ।

प्रातःकाल उस प्रेमिका के प्राण निकले थे और दोपहर के समय शेख भी इस संसार को छोड़ कर उसके पीछे चल दिये ।

लोगों ने शेख और उस लड़की को समाधियाँ एक ही जगह बनाईं और उन दोनों को एक दूसरे की बगल में समाधिस्थ कर दिया ।

प्रेमिका के प्रेम ब्यापी क़ाज़ी ने विवाह का मन्त्रोच्चारण किया और प्रेमी और प्रेमिका को एक दूसरे से मिला दिया ।

बढ़ दो प्रेमी थे जो सदैव आनन्द में रहेंगे । दो मित्रों के समान एक दूसरे के गले मिलते रहेंगे ।

उन दोनों को समाधियों में दो ऊँचे-ऊँचे सगे के वृक्ष उपलब्ध हुये ।

और उनके अनिश्चित उन्हीं अपने प्रभाव से एक मोठे उल का स्रोत भी पैदा कर दिया ।

जवाव दादन हुदहुद ऊ रा

गुप्तए दर बन्द सूरत माँदा तू ।
 पाए ता सर दर कुदूरत माँदा तू ॥
 इश्के सूरत नेस्त इश्के मारफत ।
 इश्के शहवत वाजिए हैवाँ सिकत ॥
 हर जमाले रा कि मुकसाने बुवद ।
 मर्द रा अज इश्क तावाने बुवद ॥
 हर जमाले रा कि वाशद वा ज़वाल ।
 कुफ़ वाशद मस्त गश्तन जाँ जमाल ॥
 सूरते अज खलतो खूँ आरास्ता ।
 करदा नामे ऊ महे ना कासता ॥
 गर शवद आँ खलतो आँ खूँ कम अजो ।
 जिश्त तर न बुवद दरौँ आलम अजो ॥
 आँ कि हुस्ने ऊ जे खलतो खं बुवद ।
 दानी आखिर काँ नकूई चूँ बुवद ॥

हुद हुद का सांसारिक प्रेमी को समझाना

हुद हुद ने कहा कि तू इस संसार का सेवक होगया है । सांसारिक वस्तुओं के प्रति तेरे हृदय में मोह उत्पन्न हो गया है । इसलिये अब तू सिर से पैर तक अपवित्र होगया है ।

सांसारिक सौंदर्य पर मुग्ध हो जाना ईश्वर के प्रति प्रेम करना नहीं है वरन् जानवरों से सम्पर्क रखने के समान है । वासनामय प्रेम मनुष्य को ईश्वर से प्रेम करने से रोक देता है ।

नाशवान् सौन्दर्य पर मुग्ध होना ईश्वर को न मानने के समान है ।

जो वस्तु स्थायी नहीं है उस पर मर मिटना ठीक नहीं है ।

रक्त और माँस से बने हुए मुख को प्रियतमा की उपाधि से भूषित किया जाता है ।

उस रक्त और माँस के दूर होजाने पर तो संसार में उससे अधिक कुरूप वस्तु ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलेगी ।

फिर विचार करो, वह रूप कैसा है, जिसका वनना और विगड़ना केवल रक्त और माँस के ऊपर निर्भर है !

चूँ जहानम हन्कए मीमे चुवद ।
 कै चुनी जाए मरा बीने चुवद ॥
 हर्क रा जा अजदहाए हाक मर ।
 दर नमूज उतनाद दायम खावो खर ॥
 जी चुनी बाअश विमयार ओतद ।
 कमनरी चीअश सरं दर ओतद ॥

हिकायत मन्सूर

गुप्त चूँ दर आतरो अरुगेखना ।
 गश्न आँ हल्लाज कुझी सोखता ॥
 आशिके आमद मगर चौबे बदस्त ।
 वर सरं आँ मुश्ते चाकिस्तर नशस्त ॥
 पस चर्थाँ बकुशाद हमचूँ आतरो ।
 बाज भी शोरीद चाकस्तर खशे ॥
 बंगहे भी गुप्त वर गोएद रागत ।
 काँ के भी जद ऊ अनलहक ऊ कुजाल ॥
 उंचे गुफ्तम उंचे विशनीदी हमह ।
 उंचे दानिस्ती नूवो दीदी हमह ॥
 आँ हमह जुअ अव्वले अकसाना नेस्त ।
 मह शुद जानत दरी वीराना नेस्त ॥

मेरे प्रति तो सम्पूर्ण संसार ही संकीर्ण हो रहा है फिर ऐसी जगह मुझे
 भय क्यों मालूम होने लगा !

जिस मनुष्य का साथी गर्मी के मौसम और सोते जागते हर वक्त सात
 सिर वाला अजदहा हो।

और सर उठाना रहता हो उसे इस प्रकार के बहुत से खेज खिलाने पड़ते हैं
 और उसके लिये शूली की नोक बहुत छोटी-सी वस्तु है ।

मन्सूर की कहानी

जब थथ कनी हुई अग्नि में मन्सूर जलकर भस्म हो गया, एक प्रेमी आया।
 और उस राख के ढेर पर आकर बैठ गया । उसके हाथ में एक डंडा था ।
 उस भस्म को डंडे में कुरेदता हुआ वह बड़े क्रोध के साथ बोला,
 कि अब तो तनिक मन्य बोलो, वह अनलहक (अहं ब्रह्मास्मि) की
 पुकार मचाने वाला इस समय कहाँ है ?

मैंने जो कुछ कहा और तेरे कान में जो कुछ पड़ा वह सब और जो कुछ
 तूने जाना व देखा।

यह सब भी अर्था कथानक के प्रारम्भिक शब्द से बढ़कर नहीं है ।
 इसी में तेरा प्राण विलीन हो गया और इस उजड़ शरीर को छोड़ गया ।

हर निगमो ग कि नारे हर हर ।
 गर वसे हर हर वनी वज वै वे मूर ॥
 नू निगमसज जाण वेजाण रसोद ।
 नू वरजा वाज गुर गुद ना पेदीर ॥
 राहे बीना जी जहाँ ता आ जहाँ ।
 वेश गकदम नेस्त जागज दगनियाँ ॥
 अज जदनिन नू वर आगद जी इमे ।
 ई जदनिन आ जहाँ गरदद हमे ॥
 ई जहाँ ता आ जहाँ विमवार नेस्त ।
 जुज दमे अन्दर भियाँ दीवार नेस्त ॥
 नू वर आगद आ इमत अज जाने पाक ।
 पस निगू सारत वेगनदावत वधाक ॥
 मग रा वर सारक अजमे जाविमस्त ।
 जुन्ला रा वर साक स्रक्तन लाविमस्त ॥
 मग न अदमक न बुधरद रा गुजारत ।
 न यके नेको न यक वद रा गुजारत ॥

फिर उस बुझे हुए दीपक का पता तुम्हें संसार में कोई भी नहीं दे सकेगा । वह तुझे कहीं भी नहीं मिलेगा ।

जिस दीप को वायु का झोका उड़ा ले गया, उसके पाने के लिये लाख प्रयत्न कर तब भी न मिलेगा ।

जब वह अपने स्थान से हट गया तो तुम्हें समझ लेना चाहिये कि वह नष्ट-भ्रष्ट हो गया ।

इस संसार से वह संसार बुद्धिमान् मनुष्य के लिये बहुत दूर नहीं है । इस जग से जैसे ही तेरी साँस निकली वैसे ही यह जगत दूसरे जगत के रूप में परिणत हो जाता है ।

यह संसार उम दूसरे से अधिक दूर नहीं है । वस एक साँस रूपी दीवाल बीच में स्थित है ।

जब तेरी मृत्यु आती है, तुम्हें औंधे मुख पृथ्वी पर गिरा देती है ।

सांसारिक मनुष्यों पर मृत्यु अपना प्रभुत्व स्थापित किए हुए है और प्रत्येक को किसी न किसी दिन पृथ्वी पर सोना अवश्य ही होगा ।

मृत्यु ने न मूर्ख को छोड़ा और न बुद्धिमान् को । उसके लिये भले और बुरे समान हैं ।

गर तु जौं कौमी वगर जौं दीगरी ।
 हमचो ईशाँ बुगुजरी ता विनगरी ॥
 हर कि मुदो गश्त जेरे खाक पस्त ।
 हर कसश गोयद वेया सूदो वेरस्त ॥
 हर किरा अरजौं तेहमतन हस्त मर्ग ।
 देग रा सर वर गिरस्तन नेस्त वर्ग ॥
 अलहकृत दुनिया चु पुर वर्ग ओफताद ।
 कव्वली आसाइशो मर्ग ओफताद ॥
 खेज ता गामे वगरदूँ दर नेहेम ।
 पस सरे ईं मर्गे पुर खूँ वर नेहेम ॥
 मी खम गिरयाँ चो मेग अज आमदन ।
 आह अज रस्तन दरेग अज आमदन ॥

हिक्कायत गिरीसतन दीवाना दर दमे नज़ा

आँ यके दीवानए अज पहले राज ।
 गश्त वजते नजा जाँकन्दन दराज ॥
 अज सरे वेकूच्चतीयो इस्तैरार ।
 हमचो अत्रे खँ फ़िशाँ वेगिरीस्त जार ॥

तू चाहे मूर्ख हो अथवा ज्ञानी, जिस प्रकार और सब यहाँ से चले गये, तुझे भी जाना है ।

परन्तु जो मनुष्य पृथ्वी के अन्दर विलीन हो जाता है, लोग उसके विषय में कहते हैं कि चलो अब वह संसारिक भङ्गटों से छूटकर सुखी हो गया ।

जब रुस्तम ऐसे पहलवान की मृत्यु आ जाती है तो वह हाँडी का ढक्कन खोलने तक का अवकाश नहीं पाता है ।

सत्य तो यह है कि यदि इस संसार में तेरा घर पूरा भरा है तो मृत्यु तेरे आनन्द की प्रथम सीढ़ी है ।

उठ, आकाश के ऊपर अपना कदम रख । इस रक्त से परिपूर्ण संसार का विचार ही मस्तिष्क से निकाल बाहर कर ।

जब हम इस संसार में उत्पन्न होते हैं तो खूब रोते हैं । (जाने का हाल पहले ही कह चुके) दोनों ही अवस्थाएँ खेद जनक हैं ।

एक पागल का दुःखित अवस्था में रोना

एक पागल जिसके हृदय में पीड़ा थी, जब मरने लगा तो प्राण निकलने का उसे बहुत कष्ट हुआ ।

व्याकुल होकर और कमजोरी से तड़प कर अक्षुपात करने लगा,

दर सिफ़त वादिए इश्क़ गोयद

कस दरीं वादी वजुच्च आतश मवाद ।
 जाँ के आतश नेस्त इश्क़श ख़श मवाद ॥
 इश्क़ आँ वाशद कि चूँ आतश बुवद ।
 गर्म रौ सोब्ज़िदओ सरकश बुवद ॥
 आक़नत अंदेश नबुवद यक़ ज़माँ ।
 वर कुशद ख़ूनश वआतश सद जहाँ ॥
 लहज़ए न काफ़िरी दानद न दाँ ।
 लहज़ए न शक़ शिनासद न यक़ीं ॥
 नेको वद दर राहे ऊ यक़साँ बुवद ।
 खुद चो इश्क़ आमद न ईनो आँ बुवद ॥
 ऐ मुवाही ईं सख़ुन आँने तो नीस्त ।
 मुरतदी दाँ शौक़ दर जाने तो नीस्त ॥
 हरचे दारद जुमला दर वाजद व नज़द ।
 वज्र विसाले दोस्त मी नाजद व नज़द ॥

प्रेम की विशेषताएँ

इस घाटी में विना अग्नि के कोई प्रवेश न करे और जो आग के समान जलता न हो उससे उसका प्रेम ही प्रसन्न न हो ।

जिस मनुष्य में प्रणय की अग्नि दहकती हो वह कभी प्रसन्न चित्त न रहे । प्रेमी वही होता है जिसमें अग्नि की जलन हो और वह भी इतनी तीव्र कि दूसरों को जलादे ।

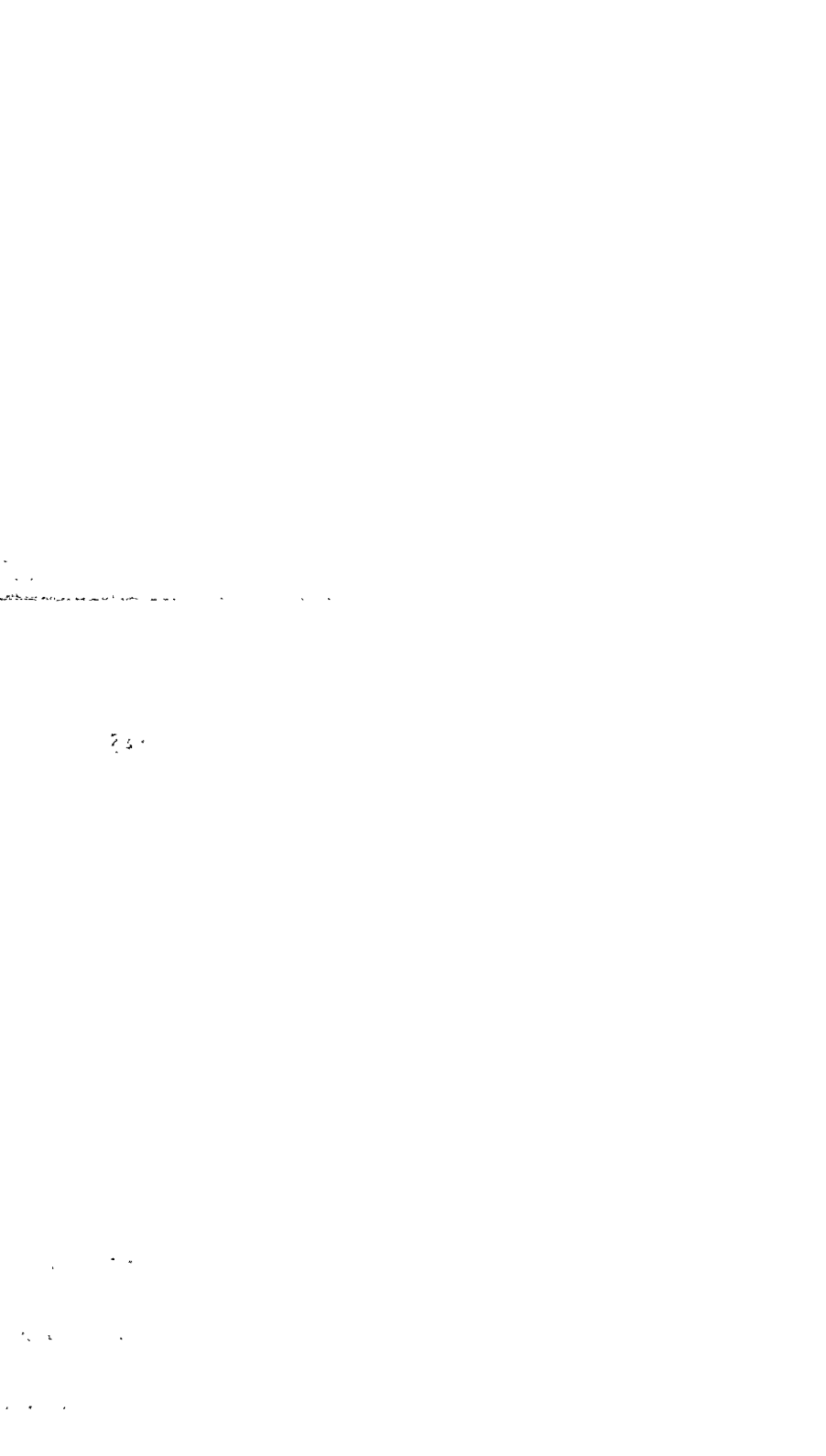
वह मस्त रहे । उसे अपना भी ज्ञान न रहे और क्षण भर के लिये भी फलाफल का विचार न करे ।

उसका रक्त सैकड़ों सांसारिक मानवों को अग्नि में डाल दे । उसको एक क्षण भर के लिये भी अपना अथवा अपने धर्म का ध्यान न आवे ।

अर्थात् उसके रक्त की गर्मी उन सब में आग लगा दे । इसी प्रकार विश्वास और सन्देह का भी उसे विचार न होना चाहिये और भलाई-बुराई उसकी दृष्टि में समान जचें ।

क्योंकि जब प्रणय का भूत उसके शिर पर सवार होता है तब उसे इन बातों की भिन्नता का ज्ञान ही नहीं रहता है ।

ऐ प्रत्येक वस्तु को उचित समझने वाले ! तब तू इन वस्तुओं के विषय में कुछ भी नहीं कह सकता है ।



यह एशिया माइनर में रूमी के निवासी थे और इसी कारण इनका पूरा नाम जलालुद्दीन रूमी था। यह मौलवी पन्थ के साधुओं में से थे, जो नाचा भी करते थे। इस पन्थ को इन्होंने अपने गुरु शम्शतवरेज की मृत्यु के उपरान्त चलाया था। वास्तव में ईरान के सूफ़ी कवियों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। बहुधा लोग इन्हें सर्वश्रेष्ठ भी कहते हैं। इनकी मसनवी में जो कुरानी पहलवी भी कहलाती है, २६३०० दो पदी छंद हैं। यह पुस्तक संसार की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में गिनी जाने योग्य है। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता के द्वारा हुई थी। इनके पिता तथा बादशाह का कुछ सम्बन्ध था। बादशाह के अत्याचारों के कारण उन्हें दूर दूर के सफ़र करने पड़े थे। इस कारण जलालुद्दीन का बचपन इधर उधर घूमने ही में व्यतीत हुआ। बग़दाद, मक्का, मलाविया लारिन्दा, कुनिया इत्यादि का भ्रमण इन्होंने किया था। किन्वदन्तो प्रचलित है कि नीशाँपुर में इनकी भेंट अत्तार से हुई, जिन्होंने बताया कि वस्त्र का भविष्य बहुत ही अच्छा होगा और इलाहीनामा की एक प्रति भी दी।

रूमी ने दो विवाह किये थे, जिनसे उसके दो लड़के और एक लड़की हुई थी। इन लड़कों में से एक के कारण रूमी के गुरु की मृत्यु हुई। जो निकल्सन का कहना है, “एक बहुत ही दुर्बल मनुष्य था। काले कपड़े से वह अपने शरीर को ढका रखता था। संसार के रगमंच पर आकर उसने कुछ दिनों तक दर्शकों को अपनी भूलक दिखलाई और फिर सबके हृदयों में कहण रस भरकर अन्तर्धान हो गया। उस समय उसका प्रभाव लोगों पर बहुत ही अधिक था। जिस प्रकार प्लेटो का अपने गुरु सोक्रेटीज के साथ शरीर तथा आत्मा का सम्बन्ध था, उसी प्रकार जलालुद्दीन रूमी का शम्शतवरेज के साथ, जिनके नाम पर उन्होंने अपनी पुस्तक की रचना की थी। शम्शतवरेज की मृत्यु के उपरान्त भी, मेरी समझ में, उन्हें मृत कहना भूल थी।”

विज्ञान के रूखेपन के कारण रूमी का चित्त रहस्यवाद की तरफ़ गया और इस विषय में उन्होंने आशातीत उन्नति की।

विनकील्ड के कथनानुसार रूमी की समानता रहस्यवाद में कोई भी नहीं कर सकता। किसी भी मनुष्य का इस विषय में सन्देह, केवल उनकी मसनवी, दीवान शम्शतवरेज के पढ़ने ही से, विश्वास में परिणत हो सकता है।

इन दोनों में कौनसी रचना अच्छी है, यह निश्चय करना कठिन है। इस विषय में निकल्सन के शब्दों को उद्धृत करता हूँ :—

“मसनवी में धार्मिक गीतों के सभी गुण वर्त्तमान हैं। पर्वत के गान गुलाब पुष्प के रंग तथा सुगन्ध, जंगल की हलचल इत्यादि से पद्यों में

प्रोत हो रहे हैं। ईश्वर की व्यापकता सभी में दिखलाई गई है। यही नहीं, वरन् इसमें और भी अनेक विशेषताएँ हैं। रंग, रूप और गन्ध प्रियतम के दर्पण के समान हैं। सांसारिक प्रेम, और उस स्थान की यात्रा जहाँ उपवन में खिले हुए गुलाब पुष्प कभी मुर्माते नहीं है, केवल उसी प्रियतम के लिये लिखे गये हैं।”

इसके उपरान्त :—

“एक बहुत बड़ी नदी है, जिसकी धार प्रशान्त है और जो बहुत ही गहरी है। भिन्न भिन्न और अनोखे प्राकृतिक सौन्दर्य से परिवेष्टित स्थानों से वहती हुई, यह अनन्त सागर की ओर अमसर होती है। दूसरी गम्भीर गर्जन के साथ फेन उगलती हुई और अठखेलियाँ करती हुई पहाड़ियों में विलीन होजाती है।”

रूमी की कविता के विषय में वह लिखते हैं, “उनकी कविता को पढ़ने से ऐसा ज्ञात होता है, मानो हम किसी स्वर्गीय वेगवती सरिता का गान सुन रहे हैं। शब्द योजना, हृदय को हिलानेवाली और आनन्द प्रदायिनी है।”

उनकी प्रमुख रचनाएँ यह हैं :—

मसनवी,

दीवान शम्शतबरेज़ ।

सवाल करदने खलीफा अज़ लैला व जवाबे ऊ

गुफ़ लैला रा खलीफा काँ तुई ।
 कज़ तो मजनुँ शुद परीशानां रावाँ ॥
 अज़ दिगर खुवाँ तो अफ़जूँ नेस्ती ।
 गुफ़ खामुश चूँ तो मजनुँ नेस्ती ॥
 दीदाण मजनुँ अगर वूदे तुरा ।
 हर दो आलम बेखतर वूदे तुग ॥
 बाखुदी तू लेक मजनुँ बेखुदस्त ।
 दर तरीके इश्क वंदारी बदस्त ।

सबब तर्क करदन इबराहीम अद्दम तख्तो ताज़ रा

खुपता वूद आँशह शवाना वर सरीर ।
 हारिसाँ वर वाम अन्दर दागे गौर ॥
 कस्दे शह अज़ हारिसाँ आँदन नवूद ।
 कि कुनद जाँ दक्षिण दुबधानाँ रनूद ॥

खलीफा का लैला से प्रश्न करना और उसका उत्तर

खलीफा ने लैला से प्रश्न किया, क्या तू ही वह छत्री है जिसके कारण मजनुँ दौरान और मारा मारा फिरता है ?

दूसरी सुन्दर युवा स्त्रियों से तो तू बड़कर (प्रेम) नहीं है। लैला ने उत्तर दिया बस आप शान्त रहिये।

आप मजनुँ तो हैं नहीं; यदि आप को मजनुँ की जैसा निराली तो दोस्रो लोको की प्रतिष्ठा आपकी हाँथ में न रहती।

आप होश में हैं और मजनुँ बेहोश है। फ़ैज के मार्ग में अतुलना बहुत सुरी बस्तु है।

इबराहीम अद्दम का अकारण राज्य मिहानन व सुदुद

का ग्यान करना

रात्रि में यह वादशाह मिहानन पर नौ गरीबों और एक बहिन को लोटे पर पहरा दे रहे थे।

वादशाह का यह बन्धन न था कि यह सबको नौ मनुक का लोटे और दुष्ट कुत्तों को दूर रखे।

मानो अश पिनदा व ऊ दर पेरो न्युक ।
 न्युक के वानन्द गैरे रीशो न्युक ॥
 नू ये चरमे गेश चनका दूर गुद ।
 हमचु अनजा दर जदी मशहूर गुद ॥

इनकार मजनुँ अज़ फ़स्ट

जिम्मे मजनुँ रा ये रंज दूरये ।
 अन्दर आमद नागदी रंजूरये ॥
 नू बजोश आमद ये शोले इशतियाक ।
 ना पर्दाद आमद बरौ मजनुँ कनाक ॥
 पम तधीव आमद बशारु कर्दनश ।
 गुफ्त चारा नेमन गैरख रग जनश ॥
 रग जदन वायद बराए दफ़ा नू ।
 रग जने आमद बद आजा जू फ़नुँ ।
 धाञ्जुवश वस्तो कुशादाँ नेश ऊ ।
 वाग वर जद वरवे थीं मागूक जू ॥
 मुन्दे नुद विसतानो तर्फे फ़स्ट कुन ।
 गर बेमारम गो बेरो जिम्मे कोहुन ।

उसका आन्तरिक गुण गुप्त था और उसकी सूरत लोगों के समन थी । लोग दाढ़ी और गुदड़ी के अतिरिक्त और क्या देखते हैं !

परन्तु जब वह अपनी प्रजा की आँखों से परे होगया तो इस संसार में उन्कः (एक विशेष पच्ची) की भाँति प्रसिद्ध होगया ।

मजनुँ का फ़स्ट खुलवाने (रग से खून निकलवाने) से मना करना

मजनुँ को वियोग के कष्ट से नहसा एक शारीरिक बोमारो उन्पन्न होगई, शाक की जलन से उसके खून में उवाल आगया जिसके कारण मजनुँ के वदन पर दाने पड़ गये ।

वैद्य उमका इलाज करने का आया और कहा कि रग से खून निकालने के अतिरिक्त इमका अन्य इलाज नहीं ।

खून को निकालने के लिये इमकी रग फाड़ देना चाहिये । इसको सुनने के पश्चात् एक चतुर फ़स्ट खोलने वाला आया ।

फ़स्ट खोलने वाले ने मजनुँ के हाथ बाँध दिये और अपना तश्तर (एक यन्त्र) निकाल लिया । मजनुँ ने उसको डाँट कर पूछा, यह क्या है ?

नू अपना बेतन ले ले और मेरे फ़स्ट न खोल । अगर मैं इस बीमारी में मृत्यु को प्राप्त भी हो जाऊँगा तो क्या होगा पुराना शरीर न रहेगा ।

अत्र मोहद्वय सिद्ध गुलशन नी शब्द ।
 ये मोहद्वय रोजा गिलदान नी शब्द ॥
 अत्र मोहद्वय नार नूरे नी शब्द ।
 अत्र मोहद्वय देव हूरे नी शब्द ॥
 अत्र मोहद्वय संग रौशन नी शब्द ।
 ये मोहद्वय मोम आहन नी शब्द ॥
 अत्र मोहद्वय हुज्ज शादी नी शब्द ।
 वत्र मोहद्वय गोल हादी नी शब्द ॥
 अत्र मोहद्वय नेश मोशे नी शब्द ।
 वत्र मोहद्वय शेर नूरी नी शब्द ॥
 अत्र मोहद्वय सुख सेहत नी शब्द ।
 वत्र मोहद्वय क़ुद रहमत नी शब्द ॥
 अत्र मोहद्वय नुदा चिन्दा नी शब्द ।
 वत्र मोहद्वय शाह बन्दा नी शब्द ॥
 ईं मोहद्वय हम नतीजे शानिशत ।
 कै गजाऊ दर चुनी तहवे नशित ॥
 शानिशे नाकिस कुजा ईं इस्क जाद ।
 इस्क जायद नाकिस अन्मा दर जमाद ॥

प्रेम से कारागृह उद्यान बन जाता है । प्रेम के दिना उद्यान भाड़ बन जाता है ।

प्रेम ही से अग्नि प्रकाश बन जाती है । प्रेम ही से कुल्प कुन्दर प्रतीत होता है ।

प्रेम हो तो पत्थर धूलकर तेल बन जाता है । प्रेम न हो तो मोन लोहा बन जाता है ।

प्रेम के कारण रज्ज व दुख प्रसन्नता के रूप में पलट जाते हैं और प्रेम ही से भूतप्रेत मार्गदर्शक बन जाते हैं ।

प्रेम से कष्ट आराम बन जाते हैं । प्रेम के ही प्रभाव से सिंह एक नूत्ता बन जाता है ।

प्रेम से रोग स्वास्थ्य बन जाता है । प्रेम ही से क्रोध दया बन जाता है ।

प्रेम से मृतक जीवित हो जाता है और प्रेम से बादशाह मुजान बन जाता है ।

यह प्रेम भी विद्या का फल है, वह व्यर्थ इस प्रकार के सिंहासन पर आहड़ नहीं हुआ ।

अधुरी विद्या ने ऐसा प्रेम कहाँ उत्पन्न किया ! प्रेम अधुरा पैदा होता है परन्तु धैर्य पर (जो अपने प्राणों को प्राण नहीं समझते) !

हिम्मतश वीनो दिलो जानो शिनाख्त ।
 कू कुजा बेगुञ्जीदो मसकनगाह साख्त ॥
 ऊ सगे फरहख रखे कहफे मनस्त ।
 बलके ऊ हम दर्दो हम लहके मनस्त ॥
 आँ सगे कै गश्त दर कूयश मुक़ीम ।
 खाके पायश बेह जे शेराने अञ्जीम ॥
 आँ सगे कै वाशद अन्दर कूर ऊ ।
 मन बशेराँ कैदेइम यकमूर ऊ ॥
 ऐ के शेर मर सगानश रा गुलाम ।
 गुफ़न इमकाँ नेस्त खामुश वस्तलाम ॥
 गर जे सूरत बगुञ्जरेद ऐ दोस्ताँ ।
 जन्नत अस्तो गुलसिताँ दर गुलनित्ताँ ॥

दीवान

(१)

चे तद्वीर ऐ मुसलमानाँ कि मन खूदरा नमी दानम् ।
 न तसाँ न यहूदम् न मन गवरम् न मुसलमानम् ॥
 न शर्कीयम् न गरीयम् न वरीयम् न बहरीयम् ।
 न अज काने तवीईयम न अज अकलाके गरदानम् ॥

इसके हृदय, इसके जिगर और इसकी पहिचान को तो देखो कि किस स्थान को चुनकर अपने रहने का स्थान नियत किया है ।

यह "कहफ़" वालों के कुत्ते के समान धन्यवाद का पात्र है, यह मेरे दुखों का साथी और मित्र है ।

जो कुत्ता प्रेमिका की गली में रहता है उसके पाँवों की धूज बड़े बड़े सिंहों से भी बढ़कर है ।

जो कुत्ता उस प्रेमिका की गली में रहता है, मैं उसके एक वान बगबर भी सिंहों को नहीं समझता ।

चूंकि आम आदमों की बोलों में सिंह उसके कुत्तों का गुलाम नहीं रह सकते इन लिये बस चुन रहो ।

मित्रो ! यदि तुम इस प्रपञ्च दुनियाँ से तन्बन्ध ब्याग हो तो फिर स्वर्ग और आनन्द के अतिरिक्त कुछ नहीं ।

दीवान

(१)

मुसलमानो ! मैं क्या कहूँ ? मैं तो यही नहीं समझता है कि मैं क्या समुहूँ । न तो मैं ईसाई हूँ, न यहूदी न सारती, और न मुसलमान ।

न तो मैं पूर्व का रहने वाला हूँ, न अशियम का । न स्वर्ग में रहता हूँ, न प्राकृतिक स्थान का जसादर हूँ और न तुमने बाने आसमा का मइय ।

न अज साकम् न अज आवम् न अज वादम् न अज आतिश ।
 न अज अरशम् न अज करशम् न अज कोनम् न अज कानम् ॥
 न अज हिन्दम् न अज चीनम् न अज बलगारो सकलीनम् ।
 न अज मुल्के इराकीनम् न अज खाके खुरासानम् ।
 न अज दुनिया न अज उक्त्वा न अज जन्नत न अज दोजस्त ।
 न अज आदम् न अज हवा न अज फिरदौसे रिजवानम् ॥
 मकानम् लामकाँ वाशद निशानम् बेनिशाँ वाशद ।
 न तन वाशद न जाँ वाशद के मन अज जाने जानानम् ॥
 दुई अज खुद वदर करदम् यके दीदम् दो आलम रा ।
 यके जोगम् यके दानम् यके वीनम् यके खानम् ॥
 होवत अजवत होवत आखिर होवत जाहिर होवत वातित ।
 कजुत याहू व यामनहू कसे दीगर नमी दानम् ॥
 जो जामे इशक सर मस्तम् दो आलम रफ़ा अज दस्तम् ।
 कजुत रिन्दी व कल्लाशी न वाशद हेच सामानम् ॥
 अगरे दर उम्र खुद रोजे दमे वे तो वर आवुर्दम् ।
 अजाँ बरगो अजाँ सायत जो उम्रे खुद पशेमानम् ॥

न तो मैं किसी ही से उत्पन्न हुआ हूँ और न वायु से । न तो जल से और न
 अग्नि से । मैं न तो आकाश से आया हूँ और न पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हूँ । न तो
 मे मन्वार का ही परिमाणु हूँ और न किसी खान ही से निकला हुआ जवाहर हूँ ।

न मैं मन्वीय हूँ और न चीनी । न तो मैं बलगेरिया का निवासी हूँ और
 न मुल्क-जानिना का । मैं ईराक देश का भी नहीं हूँ और न खुरासान का ।

न तो मैं मन्वार का ही हूँ और न आकाश का । न स्वर्ग का ही जीव हूँ
 और न तर्क का । न तो मुझे आदम से ही सम्बन्ध है और न ही श से । और
 न मैं फिरदौस से ही आया हूँ ।

मेरा न्यान नद है जो कोई न्यान ही नहीं है और मेरा पना, न फो में है ।
 व से समीर हूँ और न प्राण, अर्पितु प्राणों का प्राण हूँ ।

मैंने अपने जन्म-दिन का हृदय में दैन का विचार निकाल आता है । एक ही का
 देखा न अग्रे न परीजन हूँ, नहीं मेरे दृष्टि से है और उम्मा का नाम जना है ।

क्या आद है अर नदी यन्त । कही प्रकट है और कही नून । मेरा
 न्यान कही है नद नो नु ही है और नद नो नु ही है । उम के अर्थात्क और
 के कही का नद नानवा ।

मैंने एक ही नदीय यन्त का सम्बन्ध हो रहा है । दोन उदा के यान
 नून है । कही अर नानवा के अर्थात्क मेरे यान कोई नून नदी है ।

नद केत अर नानवा के नून नदीय यन्त का नाम है जो नदी के नदी यान
 और नदी यान के अर्थ अर नानवा है ।

अगर दस्तम देहद रोजे दमे बातो दरों खिलवत ।
 दो आलम जेरे पा आरम् हनी दस्ते बरकशानम् ॥
 इला ऐ "शन्से तवरेजी" चुनी मस्तम् दरों आलम् ।
 कि जुज मस्ती व कल्लाशी नवाशद् हेच दस्तानम् ॥

(२)

व रोजे नर्ग चु तोवूते मन खाँ वाशद् ।
 गुमाँ नवर के मरा दिल दरों जहाँ वाशद् ॥
 बराचे मन मगरी व मगो दरेरा दरेरा ।
 व दाने देय दर अपती दरेरा आँ वाशद् ॥
 जनाजाअम चु बनीनी मगो किराक किराक ।
 मरा विसालों मुलाक़ात आँ जमाँ वाशद् ।
 मरा व गोर लमारी मगो विदा विदा ।
 कि गोर परदर जमाँअन जिनाँ वाशद् ॥
 करो शुदन चु व दीदी बरामदन वितगर ।
 गहवे शन्शो कमर रा चेरा जियाँ वाशद् ॥

यदि इस अवस्था में तू मुझे ज़रा भर के लिये भाँ निज़ा जाये तो मैं दोनों लोकों को पाँव से कुचल डालूँ और उनसे अपना सारा सन्दन्ध छोड़कर पृथक हो जाऊँ ।

ए मेरे शन्य तवरेज़, तुझे स्मरण रहे कि मैं इस संसार में इन प्रकार मस्त हूँ कि मस्ती और बेकिकी के अनिश्चित मेरे कोई कार्य नहीं है । इसी में मेरी ख्याति है ।

(२)

मृत्यु के दिन जब लोग मुझे शमशान को ले चलेंगे वह मन सोचना कि मेरा हृदय इस संसार में होगा ।

मेरे मुख को मृत्यु की छात्र से विवर्ण देखकर शोक मन प्रकट करना । शोक की बात तो यह होगी कि तू शैतान के पंजे में आजायगा ।

मेरी अर्थाँ निरुदनी देखकर इन बात पर दुःख मन प्रकट करना कि मैं संसार से भिया हो रहा हूँ । नहीं, बही तो दिन होगा मेरे लिये त्रिरत्न में मिलने और उनके संसर्ग में बैठने का ।

मुझे मन्नाथिस्थ करके यह मन कहना, जाओ विदा हो, क्योंकि वह मन्नाथि तो मेरे हाथिक दिशवान के लिये दरों के मन्नाथ होगी ।

मृत्यु और सन्दर का रत्न होना देखकर इनका उदर भोज भी देख उनका अस्त होना उनके लिये हानिकारक क्यों है ?

तुम मुझ नुमायद न लेक शक्ति मुवद ।
लहद तु हन्स नुमायद खलासे जौ वाशद ॥

(३)

ऐ आशिकों ऐ आशिकों हंगामे कुनस्त अज जहाँ ।
दर गोश जानम मी रसद तबले रहील अज आस्मा ॥
निक सारेवों बरखास्ता कत्तारहा आरास्ता ।
अज मा हलाली खास्ता ने मुक़द ऐ कारवाँ ॥
ई बाँगदा अज पेशो पस बाँगे रहील अस्तो जरस ।
हर लहज़ए नपसो नफस सरमो कुनद दर लामकाँ ॥
जौ शम्मा हाये सरनगूँ जौ परदहाये नीतगूँ ।
खल्के अजव आमद बरूँ तागैबहा गरदद अर्यौ ॥
जौ चर्खें दौलात्री तोरा आमद गिरौँ छात्री तोरा ।
करियाद अर्जौँ उध्रे सुबुक जिन्हार अर्जौँ खवाये गरौँ ॥
ऐ दिल मुए दिलदार शौ ऐ यार मुये यार शौ ।
ऐ पासवों वेदार शौ मुफ़ा न शायद पासवाँ ॥

जब तू उसको डूबता हुआ देखता है तो वास्तव में वह उदय होता है। समाधि देखने में कारागार के समान ज्ञात होती है पर है वास्तव में वह प्राणों के मोक्ष का मार्ग ।

(३)

ओ प्रेमियों ! संसार से चल देने का समय निकट है। मेरे प्राणों को आकाश में बजने वाले कूच के नक्क़ारे का शब्द सुनाई पड़ रहा है।

यह देखो कारवाँ पंक्तियों में चलने के लिये तैयार खड़ा है। हमसे भी तय्यारी के लिये कह दिया है। उठो, काकले के साथ चलने वालों ! क्या तुम्हें नाँद आ रही है ?

यह जो आगे और पीछे से शब्द सुनाई पड़ रहे हैं वह और कुछ नहीं केवल चलने की और घराटे की आवाजें हैं। प्रतिक्षण प्राण और साँस स्थान रहित स्थान को जा रहे हैं।

इन औंधे दीपकों से और इन नीले रंग के पर्दों से नाना भाँति की विलक्षणताएँ इसलिये प्रकट हो रही हैं ताकि रहस्यों का पता लग जावे।

इस ढंग के और ऐसे आस्मान से मुझको घोर निद्रा आगई है। इस तीव्र-गामिनी अवस्था के हाथ से करियाद की जाती है और इस गम्भीर नाँद से दूर रहने का प्रयत्न किया जाता है।

ऐ दिल ! प्यारे की तरफ़ चल और हे मित्र ! प्रियतम के पास चज़। चौकीदार ! उठ जाग जा, तेरे लिये इस प्रकार सोना ठीक नहीं है।

हर सूए वाँगो मशाला हर कूए शम्मो मशाअला ।
 किम् शव जहाने हामिला चायद जहाने जावेदाँ ॥
 नू गिल बुदीओ दिल शुदी जाहिल बुदी आकिल शुदी ।
 आँ कू कशीदत ईँ चुनो आँनू कुशादत आँ चुनाँ ॥
 अन्दर कशाकशाहाये ऊ नौशुस्त ना खुशाहाये ऊ ।
 आवस्त आतिशाहाय ऊ वरवै मकुन हरा गिराँ ॥
 दर जाँ नशिस्तन कारे ऊ तौवा शक्तिस्तन कारे ऊ ।
 अत्र हीलए वित्यारे ऊ चूँ जर्गहा लर्जाँ दिलोँ ॥
 ऐ रेशखन्दे रचना जेहू यानो मनम सालारे देह ।
 ता कै जेही गरदन वेनेह वर नै कशन्दत चूँ कर्माँ ॥
 तुछमे दयाल मो काशती अफसोस हामी दाशती ।
 हकरा अदम् पिदाशती अरनू देवीँ ऐ किलतवाँ ॥
 ऐ खर्वागा औलातरी देगे सियाह औलातरी ।
 दर कारे चाह औलातरी ऐ नङ्ग खानो खानदाँ ॥

चागें तरफ़ से आनन्द और प्रसन्नता की आवाजें आ रही हैं। प्रत्येक गली में दीपकों और मशालों का उजाला फैला हुआ है। यह इसलिये कि यह नाशवान संसार आज एक अमर संसार का उत्पन्न करेगा और उमी के शुभागमन में आज इसने यह आनन्दित रूप धारण किया है।

नू मिट्टी था पर अब दिज के रूप में परिणत हो गया है। मूर्ख था परन्तु अब बुद्धिमान् हो गया है। जितने तुझे ऐसा बना दिया है वही तुझे उन प्रकार उधर भी ले जायगा।

उसकी इस खींचतान में जो कष्ट मिलें उन्हें नधु की मिट्टान मनन्दे। उसकी आग को पानी के समान शीतल समन्दे और उस पर क्रोध न करो।

इसके काम हैं प्राणों में बना जाना और शस्त्र को तोड़ डालना। अगणित कार्यों से उसके हृदय ऐसे काँपते हैं जैसे वायु में कण।

ए बेवशूक ! तू कहता है कि मैं गौब का नातिक हूँ। तू सब तरह बन्दु में इस तरह उचकता रहेगा ? अपना सर मुझा दे मरी तो समान की तरह तुम्हें समान पर चढ़ायेगे।

तू सदैव मझरी के पीज रोया करता था, और मूँज अकमान किया करता था; भगवान को तूने समन्दा था कि बह है ही मरी, अर, ए पायल ! अपनी करनी भोग।

ए धान के गरे और पर का नान हुअनेसाले ! अपना होना यदि तू एक सली होई के समान कुँरे तो तू में पड़ा रहता।

दरमन कसे दीगर वुवद कीं चरमहा अज वै जेहद ।
 गर आव सोजानी कुनद जातरा वुवद ईं रावेदाँ ॥
 दर कक न दारम संगे मन वाकस न दारम जंगे मन ।
 वर कस न गीरम तंगे मन जीरा खुशम चूँ गुलसिताँ ॥
 पस चरमे मन जाँ सर वुवद वजं आलमे दीगर वुवद ।
 ईं सू जहाँ आसूँ जहाँ बनशिस्ता मन वर आस्ताँ ॥
 वर आस्ताँ आँ कस वुवद कू नातिके अखरस वुवद ।
 ईं रम्जे गुफन वस वुवद दीगर मगो दर कश जवाँ ॥

(४)

वाँग जदम नीम शवाँ कोस्त दरिं खानए दिल ।
 गुफ मनम, कज रुखे मन, शुद महो खुरशीद खजिल ॥
 गुफ के ईं खानए दिल पुर हमाँ नक्शस्त चेरा ।
 गुफम कीं आफ्से तू अस्त ए रुखे तौ शमा चेगिल ॥
 गुफ कि ईं नक्शे दिगर चीस्त पुर अज खूने जिगर ।
 गुफम की नक्शे मने खस्ता दिलो पाये वगिल ॥
 बस्तामे मन गरदने जाँ बुरहम पेशश बनिसाँ ।
 मुजरिमे इशकस्त मकुन मुजरिमे खुदरा तु वहिल ॥

मेरे अंदर तो कोई और रहता है और यह सोते उसी से जागते हैं । अगर पानी जलने लगना है तो समझ ले कि यह (मेरी) आग की वजह से है ।

न मैं किसी से लड़ता हूँ, न किसी को दवाता हूँ । मैं तो सदैव इसी कारण आग के समान प्रसन्न रहता हूँ ।

यही कारण है कि मेरे नेत्र दूसरे के और दूसरे लोक के होते हैं । इस लोक और परलोक के बीच में चौखट की तरह बना बैठा हूँ ।

एक चौखट पर बड़ी चैठा रह जाता है जो गुंगा होता है । कम में इतना ही इशारा देना है तुम समझ जाओ (कि मेरा मतलब क्या है) और चुप साब लो ।

(४)

आपनी गत की मैंने उपाट कर पूछा, मेरे हृदय छपी घर में कौन है ? उस विचलन ने उत्तर दिया, मैं हूँ जिसके मुख की आभा में सूर्य और चन्द्र प्रकाशित हो रहे हैं ।

अने पूछा, उस घर में यह बहुत सी सूरतें क्यों दिखलाई पाई रही हैं ? मैंने उत्तर दिया, ये तुम न (चीन देश का एक प्रान्त जहाँ कि समुद्र बहुत बड़ा है) उस दीपक पर मेरे मुख का प्रतिबिम्ब पाई रहा है ।

अने पूछा, उसी घर में, जय में इतनी बड़ी यह दूमली सूरत कैसी है ? मैंने उत्तर दिया, यह आनन्द और विचलनयो में पाई हुए दिल का चित्र है ।

मैंने आकाश को गदत किया और उसके सम्मुख ने गया, "तब, यह तुमको प्रेम करने का अवसर है, इसको अपना न कर ।"

दाद सरे रिश्ता बमन रिश्ताए पुर कित्रा व फन ।
 गुफ़ वक़श ता वक़शम हम वकुशो हम मगसिल ॥
 ताफ़ अज़ाँ ख़रगए जाँ सूरते तुरकम वे अज़ाँ ।
 दस्त व बुरदम सूए ऊ दस्ते भरा ज़द के वहिल ॥
 गुफ़म तू हम चाँ फ़लाँ तुर्श शुदी गुफ़ वेदाँ ।
 मन तुरशो मसलहतम ना तुरशो कीनओ गिल ॥
 हर के दर आयद के मनम वर सरे शाख़श बेज़नम ।
 काँ हरमे इश्क़ बुवद ऐ हैबाँ नीस्त अग़ल ॥
 इस्त सलाहे दिलो दाँ सूरते आँ तर्के चक्राँ ।
 चश्मे फ़रोमालो बर्वाँ सूरते दिल सूरते दिल ॥

(५)

मन आँ रोज़ वूदम कि अस्माँ न वूद ।
 निशाँ अज़ वजूदे मुसन्मा न वूद ॥
 जोमाँ शुद मुसन्मा व अस्माँ पेदीद ।
 दराँ रोज़ काँजा मनो माँ न वूद ॥
 निशाँ ग़शत मज़हर सरे जुल्के चार ।
 हनोज़ाँ सरे जुल्क ज़ेबा न वूद ॥

उसने रस्ती का सिरा, जो कि चालाकियों और झूठाइयों से भरा था, मेरे हाथ में दे कर कहा कि इसे खींच जिससे मैं भी खिंचूँ, परन्तु इसे तोड़ना मत ।

उस प्राण के तन्वु से मेरे प्यारे का मुख और भी अधिक लावण्यमय प्रवीत हुआ । मैंने उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया । उसने हाथ हटाकर कहा, बस हाथ न लगाना ।

मैंने कहा कि अमुक पुरुष जिस प्रकार मुझसे रुष्ट हो गया था उसी प्रकार तू भी क्यों होने लगा है । वह बोला कि तुझे नहीं मालूम इन रूठने में भी एक खास भेद है । मैं शत्रुता और वैर से नहीं विगड़ता हूँ ।

जो यहाँ अहंकार के साथ आता है उसकी जड़ मैं काट (उसे मैं पंगु बना) देता हूँ । यह प्रेम का तीर्थस्थान है, वास्तना रहित पवित्र है । जानवरों के चरने का स्थान नहीं है ।

उस प्रियतम का मुख ही इस हृदय की कोठरी की सजावट है । तनिक आँखें मलकर देख कि तेरे दिल में ही दिल कितना चमकृत हो रहा है ।

(५)

मैं उस दिन, जबकि वस्तुओं का नामकरण नहीं हुआ था, प्रस्तुत था; तब न वह वस्तुएँ ही थीं जिनका नाम रक्खा गया है ।

मुन्नी से नाम रक्खी गई वस्तुएँ और सब नाम उत्पन्न हुए और वह भी उस दिन जब कि वहाँ "मैं" और "तू" का भेद भाव कुछ भी न था ।

चार की काली घुँघराली अलकों ने पथप्रदर्शक का कार्य किया पर अतक वह अलकों प्रकट नहीं हुई थीं ।

बजुज "शम्सतवरेज" पाकीजा जाँ ।
कसे मस्तो मखमूरो शैदा न वूद ॥

(६)

हर नश रा के दीदो जिनसश जे ला मकानस्त ।
गर नश रक़ गम नेस्त अत्तरा चु जावेदानस्त ॥
हर सूरते कि दीदी हर नुक्ता के शुनीदी ।
बद दिल मशो के रक्षाँ चीराना आँ चुनानस्त ॥
चूँ अत्ले चश्मा बाकीस्त करअश हमेशा साकीस्त ।
चूँ हर दो बे जवालन्द अज बे तुरा फुगानस्त ॥
जाँ रा चु चश्मये दां वीं सुनुअहा चु जू हा ।
ता चश्मा हस्त बाकी जू हा अजो खानस्त ॥
गम रा बहँ कुन अज सर वीं आवेजू हमी ख़र ।
अज कौते आव मन्देश कीं आवे बेकरानस्त ॥
जाँ दम के आनदस्ती अन्दर जहाने हस्ती ।
पेशव के ता बरस्ती बिनहादा नर्दानस्त ॥
अव्वल जमाद वूदी आखिर नवात गश्ती ।
आँ गह शुदी तो हैवाँ ईं वर तू चूँ निहानस्त ॥

नारांश यह कि शम्सतवरेज के अतिरिक्त कोई मस्त और मतवाला प्रेमिक न था ।

(६)

तुमको जो रूप दिखाई देता है उसकी वास्तविकता किसी विशेष स्थान में नहीं है ! रूप के मिट जाने का क्या शोक जब कि उसका तत्व स्थायी है ।

अतएव जो रूप आँखों के समझ है और उसके विषय में जो रहस्य सुनाई पड़ता है, उसके खो जाने अथवा विलुप्त हो जाने पर खेद मत करो ।

वास्तव में वह मिटती नहीं है । सोने में जब तक जलधारा प्रवाहित रहती है उसकी नालियाँ पानी देती रहती हैं और फिर जब कि सोता और उसकी नालियाँ चिररू भयो हैं तो तुम्हें चिल्लाने की क्या आवश्यकता है ?

परमेश्वर एक सोते के सदृश है और उसके निर्मित रूप नालियों के समान हैं । जब तक चश्मा रहेगा, नालियाँ उस समय तक उसमें से निकलती रहेंगी ।

तू चिन्ता न कर और इन नालियों का जल पान करना रह । यह विचार मतकर कि पानो न रहेगा । चश्मे में अथाह पानी भरा हुआ है ।

तू जब से इस संसार में आया है तैरी उन्पति के समय से ही तेरे सम्मुख उन्नति की सीढ़ी रखी हुई है ।

तू पहले पत्थर था; फिर पौधा हुआ और फिर पशु के रूप में परिणित हो गया । परन्तु तुक पर यह भेद प्रगट क्यों नहीं हुआ ?

गशती अजॉ पल इन्सां वाइल्मो अजलो ईमाँ ।
 विनगर चे गिल शुदाँ तन कू जुज्वे खाकदानस्त ॥
 जे इन्साँ चु सैर करदी वेशक करिस्ता गरदी ।
 वे ई जमी अजॉ पस जायत वर आस्मानस्त ॥
 आज अज करिस्तगी हम अगुजर वरो दरायम ।
 ता कतरये तो वहरे गरदद कि सद उमानस्त ॥
 अगुजर अजॉ वलद तू मीगो जे जाने अहदे तू ।
 गर पीर गशत जिस्मत चे गम चु जाँ जवानस्त ॥

(७)

गुफ़ा के कीस्त वर दर, गुफ़म कमी गुलामत ।
 गुफ़ा चे कारदारी, गुफ़म महा सलामत ॥
 गुफ़ा के चन्द रानी, गुफ़म के ता बखानी ।
 गुफ़ा के चन्द जोशी, गुफ़म के ता क्रयामत ॥
 दावाए इश्क करदम सौगन्द हा बखुर्दम ।
 कज इश्क या वा करदम मन मुल्कतो शहामत ॥

पशु से तुम्हें एक सत्यवादी और विद्वान् मनुष्य का रूप मिला । देख, मिट्टी का एक ढाँचा कितना सुन्दर सुमन बन गया है ।

मनुष्य की अवस्था से यदि आगे बढ़ा तो तू निस्सन्देह देवता हो जायगा और तेरा निवास आकाश में होगा । पृथ्वी छूट जायगी ।

फिर इस अवस्था को भी छोड़ कर उस समुद्र से जा मिल जो अत्यन्त विशाल है, ताकि एक बूंद के स्थान पर तू एक ऐसी नदी बन जावे जो सैकड़ों नदियों से बढ़कर है ।

अब इस जन्म के चक्कर में न पड़ कर प्राण से जाकर मिल जा और उससे कह कि तेरा शरीर वृद्ध हो गया है परन्तु तू इसकी चिन्ता मत कर । जीव तो तेरा अभी युवक ही है ।

(७)

प्यारे ने पूछा कि द्वार पर कौन हैं । मैंने उत्तर में कहा, “ तेरा एक तुच्छ सेवक । ” उसने पूछा कि यहाँ क्यों आया है । मैंने उत्तर दिया, “ मन-मोहन ! तेरी अभ्यर्थना करने । ”

उसने पूछा कब तक आवारा फिरता रहेगा । मैंने उत्तर दिया, “ जब तक तू न बुलायेगा । ” उसने पूछा तू कब तक अपना जोश दिखाता रहेगा । मैंने कहा, “ प्रलय तक । ”

मैंने उसके सम्मुख उसके प्रति अपने हृदय का प्रेम दर्शाया और बहुत सी शपथें उठाईं । कहा कि देख तेरे प्रणय में पड़कर मैंने अपनी प्रतिष्ठा और राज पद का परित्याग कर दिया है ।

गुफ़ा बराये दावा काज़ी गवाह खाहद ।
 गुफ़म गवाह अशकम चरदीए हख अलामत ॥
 गुफ़ा गवाह जरहस्त तर दामनस्त चश्मत ।
 गुफ़म बफ़रे अदलत अदलन्दो बेगरामत ॥
 गुफ़ा चे अज़मदारी गुफ़म वफ़ावो चारी ।
 गुफ़ा ज़े मन चे खाही गुफ़म के लुत्के आमत ॥
 गुफ़ा के वूद हमराह गुफ़म ख्यालत ए शाह ।
 गुफ़ा के खांदत ई जा गुफ़म के वूए जामत ॥
 गुफ़ा कुजास्त खुशतर गुफ़म के क़से कैसर ।
 गुफ़ा चे दीदी आँ जा गुफ़म के सद करामत ॥
 गुफ़ा चरास्त खाली गुफ़म ज़े वीम रहज़न ।
 गुफ़ा के कीस्त रहज़न गुफ़म के ई मलामत ॥
 गुफ़ा कुजास्त एमन गुफ़म वज़ोहदो तुक्वा ।
 गुफ़ा के ज़ोहद चे वूवद गुफ़म रहे सलामत ॥

प्रियतम ने कहा, “न्यायाधीश अभियोग के प्रमाण स्वरूप साक्षी चाहता है।” मैंने उत्तर दिया, “मेरे अश्रु विन्दु साक्षी हैं और मुख पर की जर्दी प्यार की निशानी है।”

उसने कहा, “साक्षी अविश्वासी है, तेरी आंख से ही अपराध, तेरे कथन की असत्यता प्रगट होती है।” मैंने उत्तर दिया, “तेरी न्याय-प्रियता से अश्रु वह विश्वासी हैं। उनमें किसी प्रकार की कालिमा नहीं है।”

उसने कहा, “फिर किस बात की चाह है। मैंने कहा कि तेरे साथ रहने और सच्चे दिल से सेवा करने की।” उसने पूछा, “यह सब कुछ है परन्तु मुझे किस बात की आशा रखता है।” मैंने कहा, “केवल तेरी उस कृपा की जो दूसरों के लिये भी है।”

उसने पूछा, “तेरे साथ में और कौन था ?” मैंने कहा, “हे सम्राट ! तेरा ध्यान।” उसने कहा, “तुझे यहाँ तक खींच कौन जाया है ?” मैंने कहा, “तेरे प्याले की कामना।”

उसने कहा, “सबसे अच्छा रमणीक न्याय कौन है ?” मैंने कहा, “सम्राट का भवन।” उसने पूछा, “तुझे यहाँ क्या प्राप्त हुआ है ?” मैंने उत्तर दिया, “सैकड़ों प्रतिष्ठानों।”

उसने पूछा, “तू खाली हाथ क्यों आया है ?” मैंने कहा, “घोर के भय से।” उसने कहा, “उस हाथ का नाम क्या कहते हो ?” मैंने उत्तर दिया, “उसका नाम है तेरे प्रथम से लोगों की बदनामी।”

उसने पूछा, “फिर यह न्याय कौन है जहाँ किसी प्रकार का भय नहीं है।” मैंने कहा, “परिव्रज और विदेह।” उसने पूछा, “विदेह क्या मनु है ?” मैंने कहा, “कुशांत्य का मार्ग।”

दराँ खुम्मे कि दिलरा रंग वच्छी ।
 कि वाशम , मन चे वाशद मेहरो कौनम् ॥
 नू वदी अब्वलो आखिर तू वाशी ।
 तु वह कुन आखिरम् अन्न अब्वलीनम् ॥
 चु तू पिनहा शवी अन्न अहे कुम्म् ।
 चु तू पैदा शवी अन्न अहे दीनम् ॥
 वजुन्न चीजे कि दादी मन चे दारम् ।
 चे मी जोई जे जेवो आस्तीनम् ॥

(१०)

वगीर दामने लुक्कश कि नागहॉ वगुरेजद ।
 वले मकश तु चूं तीरश कि अन्न कमाँ वगुरेजद ॥
 चे नन्नशहा के ववाजद चे हीलहा कि वसाजद ।
 वनन्नश हाजिरे वाशद जे राहें जॉ वगुरेजद ॥
 दर आसमाँश वजोई चो मेह दर आव वंतावद ।
 वर आव चंकि दर आई व आस्माँ व गुरेजद ॥

तू जिस रंग में चाहे मुझे रंग दे । मैं क्या वस्तु हूँ और मेरा धार क्या वैर क्या है ?

प्रथम तो मुझमें और तुझमें कोई भेद नहीं था । जो तू था वही मैं था । और अन्त में भी जो तू होगा वही मैं हूँगा । तू ही मेरे अन्त को मेरे धार से उत्तम बनादे ।

जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओझल हो जायगा उस समय मैं विदग्धा हो जाऊँगा । और जिस घड़ी तू मेरे सम्मुख आजायगा मैं दर्शाया हो जाऊँगा ।

जो कुछ तूने दिया है उसके आतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है । तू मेरा जेबें और आस्तीनों क्या उद्योल रहा है ?

(१०)

उसके कृपा-रूपी अचल को पकड़ ले । तबसे दर भइ वसावद बन आया है । परन्तु उसे एक जगह के समान अपने कलकरीय सेक करके उसे से बाण प्रसुप्त को छोड़ देता है ।

यह जैसे निराश, विधिय प्रणय के रंग द्विजलज है और हाथी काना है । धिय के रूप में लंबे समस्त में वर्तनस रहता है दर मरदो के लोके में अरव हो जाता है ।

बाद तू आनारा से जगरो खोजे करे से वह वस्तु प्रकार मेंके लोके में प्रविष्टिम्बु होकर है पर जैसे ही तू उसे काँ देलके काना है वह तू आनारा-बासो हो जाता है ।

आईना सादा खाही खुदरा दरु निगर ।
 कूरा जे रास्त गोई शरमो हज़ार नेस्त ॥
 चूँ रूप आहिनी जे तमीज़ ईं सका वयाफ़ ।
 ता रूप दिल चे यावदे कू रा गुवार नेस्त ॥
 लेकिन मियाने आहनो दिल ईं तफ़ावतसत ।
 कौं राज़ दार आमद व आँ राज़दार नेस्त ।

(९)

मन अज़ आलम तुरा तनहा गुज़ीनम ।
 रवादारी के मन गमगीं नशीनम् ॥
 दिले मन चूँ क़लम अन्दर कफ़े तुस्त ।
 जे तुस्त इरशाद मानम व रहज़ीनम् ॥
 वजुज़ आँचे तू खाही मन चे खाहम् ।
 वजुज़ आँचे नुमाई मन चे वीनम् ॥
 गहे अज़ मन खारे रू यानी गहे गुल ।
 गहे गुल वीयमो गह खार चीनम् ॥
 मरा गर तू चुनादारी चुनानम् ।
 मरा गर तू चुनी खाही चुनीनम् ॥

यदि दर्पण को स्वच्छ तथा सादा रखना चाहता है तो अपना वदन उसमें देख । यह समझ ले कि उसे सत्य प्रकट करने में न लज्जा ही है और न भय ।

जब लोहे के तन्त्रे का ऊपरी भाग बुद्धि द्वारा इतना स्वच्छ हो गया है तो ध्यान दे कि हृदय जिसमें कोई गन्दापन नहीं होता कितना निर्मल हो जायगा ।

परन्तु लोहे और हृदय में अन्तर है । हृदय रहस्यमय है और लोहे में कोई रहस्य नहीं है ।

(९)

इस सारे संसार में मैं केवल तुम्हीं से प्यार करता हूँ । तेरी इच्छा है कि मैं अकेला बैठा हुआ कालक्षेप करूँ ।

मेरा दिल कलम है और तेरे हाथ में है । मैं प्रसन्न हूँ अथवा दुखी, जो कुछ भी है, हूँ तेरी ही तरफ़ से ।

जो कुछ भी तेरी इच्छा है उसके अतिरिक्त और मेरी इच्छा हाँ ही क्या सकती है ? जो कुछ भी तू दिखाता है, मैं उसके सिवा और क्या देखूँ ?

तू कभी तो मुझ में कटि उपन्न करता है और कभी फूल । कभी मैं तुम्हें धी सुगन्ध लेता हूँ और कभी कटि चुनता हूँ ।

अगर तू वैसा रखे वैसा हूँ और ऐसा रखे ऐसा हूँ; जिस प्रकार तू मुझको रखना चाहता है मैं वैसा ही हूँ ।

दराँ खुम्मे कि दिलरा रंग वरुशी ।
 कि वाशम , मन चे वाशद मेहरो कीनम् ॥
 तू वदी अब्वलो आखिर तू वाशी ।
 तु वह कुन आखिरम् अज अब्वलीनम् ॥
 चु तू पिनहा शवी अज अहे कुफ़्म ।
 चु तू पैदा शवी अज अहे दीनम् ॥
 वजुज चीजे कि दादी मन चे दारम् ।
 चे भी जोई जे जेवो आस्तीनम् ॥

(१०)

वगीर दामने लुक्कश कि नागहो वगुरेजद ।
 वले मकश तु चूं तीरश कि अज कमा वगुरेजद ॥
 चे नज्जशहा के ववाजद चे हीलहा कि वसाजद ।
 वनज्जश हाजिरे वाशद जे राहे जाँ वगुरेजद ॥
 दर आसमाँश वजोई चो मेह दर आव वेतावद ।
 दर आव चंकि दर आई व आस्मां व गुरेजद ॥

तू जिस रंग में चाहे मुझे रंग दे । मैं क्या वस्तु हूँ और मेरी प्यार तथा वैर क्या है ?

प्रथम वो मुझमें और तुझमें कोई भेद नहीं था । जो तू था वही मैं था । और अन्त में भी जो तू होगा वही मैं हूँगा । तू ही मेरे अन्त को मेरे आदि से उत्तम बनादे ।

जिस समय तू मेरी दृष्टि से ओभल्ल हो जायगा उस समय मैं विधर्मी हो जाऊँगा । और जिस घड़ी तू मेरे सम्मुख आजायगा, मैं धर्मात्मा हो जाऊँगा ।

जो कुछ तूने दिया है उसके अतिरिक्त मेरे पास कुछ भी नहीं है । तू मेरी जेबें और आस्तीनें क्यों टटोल रहा है ?

(१०)

उसके कृपा-रूपी अञ्चल को पकड़ ले । स्मरण रख वह यकायक भाग जाता है । परन्तु उसे एक वाण के समान अपनी तरफ खींच मत । खींचने से वाण धनुष को छोड़ देता है ।

वह कैसे निराले, विविध प्रकार के रंग दिखलाता है और वशने करता है । चित्र के रूप में सदैव समस्त में वर्चमान रहता है पर प्राणों के मार्ग से अदृश्य हो जाता है ।

यदि तू आकाश में उसकी खोज करे तो वह चन्द्र बनकर नीचे, पानी में प्रतिबिम्बित होता है पर जैसे ही तू उसे वहाँ देखने आता है वह पुनः आकाश-चारी हो जाता है ।

जे लामकाँश व जोई निशाँ दहेद वमकानत ।
 चु दर मकाँश व जोई व लामकाँ वगुरेज्जद ॥
 चु तीर मीं वेरवद अज्ज कमाँ चु सुर्गे गुमानत ।
 यक्कीं वेदाँ के यक्कींदार अज्ज गुमाँ वगुरेज्जद ॥
 अज्ज ईनो आँ वगुरेज्जम जे तर्स नै जे मल्लुली ।
 के आँ निगारे लतीफम अज्जीनो आँ वगुरेज्जद ॥
 गुरेजे पाये चु वादम जे इरके गुल चु सवा अम ।
 गुले जे वीमे खिज्जाने जे वोस्ता वगुरेज्जद ॥
 चुनाँ गुरेजेदे नामश चु कस्द गुप्तने वीनद ।
 कि गुप्त नीज्ज न तावी कि आँ फलाँ वगुरेज्जद ॥
 चुना गुरेज्जद अज्ज तु कि गर नवीसी नक्कशश ।
 जे लौह नक्कश वपररद जे दिल निशाँ वगुरेज्जद ॥

(११)

सूरतगरे नक्काशम् हर लहजा बुते साज्जम् ।
 वाँगाह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगजाज्जम् ॥

तू जब उसकी खोज में वनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह वनों में भाग जाता है ।

यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है । विश्वास रख वह तुझसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है ।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ । यह नहीं कि घबड़ाकर शीघ्रगामी वाण के समान जा रहा हूँ । वात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इससे दूर भागता फिरता है ।

मैं वायु के समान भागता हूँ । उसी के समान सुमनो का प्राणयी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है) । मैं एक फूल के समान हूँ जो पतझड़ ऋतु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है ।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम । परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है ।

वह तुझसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तखती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी विलीन हो जाय ।

(११)

मैं एक शिल्पी हूँ और मूर्तियाँ बनाया करता हूँ । फिर उन अपनी सारी कृतिओं को तेरे मन्मुख पिचला डालता हूँ ।

भद नत्रशे चर अंगेचम वा रुद दरी मेचम ।
 चं नत्रशे नुरा यानम दर आभिशरा अंशचम ॥
 नू न्नाकिण न्मभारो या दुरमने हुशिवारी ।
 या अर्था कि कुनी योगेहर खाना किवर माचम ॥
 जा रेखा गुद वा नू आमैकना गुद वा नू ।
 चं वृण नु दारद जी जगि हला च नवाचम ॥
 हर भू के अमी रोचद वा आक तु मी गोचद ।
 या महरें नू एम रंगम वा इरकेनू अन्वाचम ॥
 दर खानण आयो गिल चं तुम्न अराव ई दिल ।
 या खाना दर आण जी, या खाना च परदाचम ॥

शिकवए नै

भिशनो अच नै चं द्विहायत मी कुनद ।
 अच जुदाईहा शिकायत मी कुनद ॥
 कच नेस्तो ता मरा वचुरीदाअन्द ।
 अच नकीरम मर्दे अन नालीदाअन्द ॥

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबों को अग्नि में डाल देता हूँ ।

तू मदिरा बनाने वाला साक्री है अथवा चतुरता का वैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है ।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है । तुझसे परिचित है । और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है ।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है । प्रियतम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ ।

वाँसुरी का शिकायत

सुनो वाँसुरी क्या कहती है । वह अपनी विशांगाम्था का शिकायत करती है ।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये है मेरे वीन
 खाँ पुरुष सब दुहाई करते हैं ।

जे लामकाँश व जोई निशाँ दहेद वमकानत ।
 चु दर मकाँश व जोई व लामकाँ वगुरेजद ॥
 चु तीर माँ वेरवद अज कमाँ चु मुर्गो गुमानत ।
 यर्की वेदों के यर्कीदार अज गुमाँ वगुरेजद ॥
 अज ईनो आँ वगुरेजम जे तर्स नै जे मल्लूली ।
 के आँ निगारे लतीकम अजीनो आँ वगुरेजद ॥
 गुरेजे पाये चु वादम जे इरके गुल चु सवा अम ।
 गुले जे वीमे खिजाने जे वोस्ताँ वगुरेजद ॥
 चुनाँ गुरेजादे नामश चु कस्द गुफ्तने वीनद ।
 कि गुफ्त नीज न तावी कि आँ फलाँ वगुरेजद ॥
 चुना गुरेजद अज तु कि गर नवीसी नन्नशश ।
 जे लौह नन्नश वपरद जे दिल निशाँ वगुरेजद ॥

(११)

सूरतगरे नक्काशम् हर लहजा बुते साजम् ।
 वाँगाह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगजाजम् ॥

तू जब उसकी खोज में वनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह वनों में भाग जाता है। यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुम्हसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि घबड़ाकर शीघ्रगामी वाए के समान जा रहा हूँ। बात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इससे दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनो का प्राणयी हूँ (जैसे कि वह उनकी सुगन्ध को चुराकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक फूल के समान हूँ जो पतझड़ ऋतु के डर से उपवन को छोड़कर भाग जाता है।

तू उसी के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि अमुक भाग रहा है।

वह तुम्हसे इस प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू तखती पर उसकी तस्वीर उतारे तो वह भी वहाँ से उड़ जाय और हृदय से उसका निशान भी विलीन हो जाय।

(११)

मैं एक शिल्पी हूँ और मूर्तियों बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी सारी कृतियों को तेरे मन्मुख पिघला डालता हूँ।

मद नशर वर अंगेजम् वा रुह दरं मेजम् ।
 चूं नशरो तुरा वीनम् दर आतिशर अंदाजम् ॥
 तू साक्रिए खून्मारो या दुश्मने हुशियारी ।
 या आँ कि कुनो वीरोहर खाना कियर साजम् ॥
 जा रेस्ता शुद वा तू आमिऊना शुद वा तू ।
 चूं वृण तु दारद जाँ जाँरा हला व नवाजम् ॥
 हर खूं के जनी रोयद वा खाक तु नी गोयद ।
 वा महेरे तू हम रंगम वा इश्केतू अन्वाजम् ॥
 दर खानए आबो गिल बे तुस्त खराव ई दिल ।
 या खाना दर आ ऐ जाँ, या खाना व परदाजम् ॥

शिकावए नै

धिरनो अज नै चूं हिकायत मी कुनद ।
 अज जुदाईहा शिकायत मी कुनद ॥
 कज नेत्वाँ ता मरा वधुरीदाअन्द ।
 अज नकीरम मदेँ जन नालीदाअन्द ॥

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ, परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सबों को अग्नि में डाल देता हूँ ।

तू मदिरा बनाने वाला साज़ी है अथवा चतुरता का वैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है ।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है । तुझसे परिचित है । और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है ।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझे पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है । प्रिय-तम या तो तू इन घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर प्रथक हो जाऊँ ।

वाँसुरी की शिकायत

मुनो वाँसुरी क्या कहती है । वह अपनी त्रियोगावन्धा को शिकायत करती है ।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल में काट कर लाये हैं मेरे वीन से लो पुरुष सब दुहाई करते हैं ।

जे लामकाँश व जोई निशाँ दहेद वमकानत ।
 चु दर मकाँश व जोई व लामकाँ वगुरेजद ॥
 चु तीर माँ वेरवद अज कमाँ चु सुर्यो गुमानत ।
 यकीं बेदोँ के यकींदार अज गुमाँ वगुरेजद ॥
 अज ईनो आँ वगुरेजम जे तर्स नै जे मल्लूली ।
 के आँ निगारे लतीफम अजीनो आँ वगुरेजद ॥
 गुरेजे पाये चु वादम जे इश्के गुल चु सवा अम ।
 गुले जे बीमे खिजाने जे बोस्तां वगुरेजद ॥
 चुनोँ गुरेजदे नामश चु कस्द गुप्तने बीनद ।
 कि गुप्त नीजा न तावी कि आँ फलाँ वगुरेजद ॥
 चुना गुरेजद अज तु कि गर नवीसी नकशश ।
 जे लौह नकश वपरद जे दिल निशाँ वगुरेजद ॥

(११)

सूरतगरे नककाशम् हर लहजा बुते साजम् ।
 वगिह हमा बुतहारा दर पेशे तू बुगजाजम् ॥

तू जब उसकी खोज में बनों में भटकता है तब वह घर में दिखलाई देता है और जब तू उसे पाने की आशा से घर में आता है तो वह बनों में भाग जाता है। यदि तेरी कल्पना बहुत ऊँची उड़ान भरने वाली है तो वह भी उससे कम शीघ्र गामी नहीं है। विश्वास रख वह तुम्हसे इस प्रकार भागता है जिस प्रकार कल्पना से विश्वास भागता है।

मैं इस सम्पूर्ण संसार से ही भय खाकर दूर दूर भागता फिर रहा हूँ। यह नहीं कि बचकान्तर शीघ्रगामी वायु के समान जा रहा हूँ। वात केवल यह है कि मेरा सुन्दर प्रियतम भी इससे दूर भागता फिरता है।

मैं वायु के समान भागता हूँ। उसी के समान सुमनो का प्राणवी हूँ (जैसे कि वह उन ही सुमन्य को चुगकर नौ दो ग्यारह हो जाती है)। मैं एक क्षण के समान हूँ जो पतकड़ अणु के उर में उपवन को छोड़कर भाग जाता है। तू उसा के समान भागने वाले को देखकर कहता है कि तू इस प्रकार भागता है जैसे मेरा प्रियतम। परन्तु तू यह भी नहीं बतला सकता कि असुख भाग रहा है।

यह तुम्हसे उन प्रकार भागता फिरता है कि यदि तू नखती पर उसकी चन्वीर उतार ता यह ना चढ़ी स उड़ जाय और हृदय में उसका निशान भी देखने हो जाय।

(११)

मैं एक क्षणसे हूँ और नूनियाँ बनाया करता हूँ। फिर उन अपनी मांगी दुनियाँ ही तू सम्मन्य विजला शकता है।

गद नजशे धर अंगेजम् वा रुद्द दर्रा मेजम् ।
 चं नजशे नुरा चीनम् दर आनिशरा अंदाजम् ॥
 नू स्नाक्तिण् स्रम्भारी या दुरमने हुशियारी ।
 या आँ कि कुनी योगेँदर खाना किवर साजम् ॥
 आ रेखना शुद्द वा नू आमिखना शुद्द वा तू ।
 थं वृण तु दारद जाँ जाँगा हला व नवाजम् ॥
 दर थं के चर्मी रोयद वा छाक तु मी गोयद ।
 या महरें तू हम रंगम वा इश्के नू अम्बाजम् ॥
 दर खानण आथाँ गिल थं तुस्त खराव ईँ दिल ।
 या खाना दर आ णे जाँ, या खाना व परदाजम् ॥

शिकावए नै

बिश्नो अज नै चं हिकायत मी कुनद ।
 अज जुदाईहा शिकायत मी कुनद ॥
 कज नेस्ताँ ता मरा वयुरीदाअन्द ।
 अज नफीरम मर्दे जन नालीदाअन्द ॥

सैकड़ों प्रतिमाएँ निर्माण करके उनमें प्राण डाल देता हूँ परन्तु तेरी प्रतिमा देखते ही उन सवों को अग्नि में डाल देता हूँ ।

तू मदिरा बनाने वाला साक्री है अथवा चतुरता का वैरी या और कुछ ? मैं जो घर अपने लिये बनाता हूँ तू उसको नष्ट कर देता है ।

मेरा जीवात्मा तुझसे बना है । तुझसे परिचित है । और चूँकि इस प्राण में तेरी सुगन्ध है, अतएव इसको प्रतिष्ठा के साथ रखना मेरा कर्त्तव्य है ।

पृथ्वी जिस पुष्प को उत्पन्न करती है वह तेरी राख से यही कहता है कि तेरे प्रेम का ही रंग मुझ पर चढ़ा हुआ है और मैं भी तेरा प्रेमी हूँ ।

मिट्टी और पानी के घर में यह हृदय तेरे बिना मिटा जा रहा है । प्रिय-तम या तो तू इस घर में आ जा या मैं ही इस घर को त्याग कर पृथक हो जाऊँ ।

वाँसुरी की शिकायत

सुनो वाँसुरी क्या कहती है । वह अपनी वियोगावस्था की शिकायत करती है ।

वह कहती है, जब से मुझे जंगल से काट कर लाये हैं मेरे वीन से स्त्री पुरुष सब दुहाई करते हैं ।

सीना साहम गुरह गुरह अज किराक ।
 ता बेगोयम शरह नंद इरितयाक ॥
 हर कसे कूर नूर मानद अज अस्ले खेश ।
 बाज जोगद रोजगारे वस्ले खेश ॥
 मन अहर जामीगते नालाँ शुदम ।
 जुत्ते बदहालाँ व खुरादालाँ शुदम ॥
 हर कसे अज जने खुदशुद यारे मन ।
 अज दरुने मन नजुस्त असरारे मन ॥
 सिरें मन अज नालए मन दूर नेस्त ।
 लेके चरमो गोश रा आँ नूर नेस्त ।
 तन जे जानो जाँ जे तन मस्तूर नेस्त ।
 लेके कसरा दीदे जाँ दस्तूर नेस्त ॥
 आतिशस्त ईँ बाँगे नायो नेस्त बाद ।
 हर के ईँ आतिश नदारद नेस्त बाद ॥
 आतिशो इश्कस्त कंदर नै फिताद ।
 जोशिशो इश्कस्त कंदर मै फिताद ॥

मेरा हृदय वियोग के शोक से विदीर्ण हो जाय तब मैं उसके दुकड़े दिखा कर अपने कष्टों को सुनाऊँ ।

जो पुरुष अपने मूल तत्व से विलग हो जाता है उसको पुनः उससे मिलने की चिन्ता रहती है ।

मैं प्रत्येक जलसे मैं अपना रुदन करती रही हूँ और अच्छे व बुरे पुरुषों से मेल भी रक्खा है ।

और प्रत्येक पुरुष ने भिन्न भिन्न प्रकार से सहायता की है परन्तु मेरे आंतरिक भेद को किसी ने भी नहीं टटोला ।

क्योंकि मेरा भेद मेरे रोने धोने से अलग नहीं है परन्तु आँख और कान में वह प्रकाश कहाँ जो उस भेद को जान सके ।

प्रत्येक पुरुष को इस बात का ज्ञान है कि शरीर और प्राण दो वस्तु हैं परन्तु कोई भी प्राण नहीं देखता ।

बाँसुरी का स्वर एक आग है हवा की फूँक नहीं है अगर किसी में यह भाग न हो तो वह मृत्यु को प्राप्त हो जाय ।

बाँसुरी में जिस अग्नि का प्रकाश है वह प्रेमाग्नि है शराव में (सुरा) जो जोश है (उमङ्ग) वह प्रेम का जोश है ।

नै हरीफे हर कि अज्र यारे बुरीद ।
 पर्दाहायश पर्दाहाये मा दरीद ॥
 हमचु नै जहे व तिर्याक़े कि दीद ।
 हमचु नै दमसाज्र व मुशुताक़े कि दीद ॥
 नै हदीसे राह पुरखू मी कुनद ।
 क़िरसाहाये इश्क़े मजनं मी कुनद ॥
 दोदहाँ दारेम गोया हमचो नै ।
 यक दहाँ पिनहाँस्त दर लवहाए वै ॥
 यक दहाँ नालाँ शुदा सूए शुमा ।
 हाए हूए दर क़िगन्दा दर समा ॥
 लेके दानद हर के ऊ रा मंज़रस्त ।
 कौ क़ुगाने ई सरी हमजौँ सर अस्त ॥
 दमदमा ई नाए अज्र दमहाय ओस्त ।
 हाए हूए रूहे अज्र हैहाय ओस्त ॥
 महरमे ई होरा जुज्र वेहोश नेस्त ।
 मर ज़वाँ रा मुशतरी जुज्र गोश नेस्त ॥

बाँसुरी उसकी सहायक है जिसका किसी मित्र से वियोग है ।

उसके पर्दों ने हमारे पर्दे विदीर्ण कर दिये हैं, सन् को प्रकट कर दिया है । बाँसुरी की तरह विप और जहरमोरा (एक प्रकार का विप) दोनों का स्वाद किसने लिया है और उसके समान दिल बहलाने वाला और प्रेमी दोनों को किसने देखा है ।

बाँसुरी एक शोक पूर्ण मार्ग की कहानी सुनाती है और प्रेम युक्त कहानियाँ मनुष्य को उन्मादी बना देती हैं (मजनं के प्रेम की कहानी कहती है ।)

हम भी बाँसुरी की तरह दो मुँह रखते हैं एक मुँह उसके ओष्ठों में लुप्त है ।

एक मुँह हमारे सन्मुख रुदन कर रहा है और उसने सन्मुख अकारा को हाय हाय के शोर से परिपूर्ण कर दिया है ।

परन्तु जिसकी दृष्टि है वह भली प्रकार से जानता है कि इस सिर की आवाज उस सिर की आवाज है ।

इस बाँसुरी का सुर उस इतरे मुँह की क़सो ने है और रू (जान) का विलाप करना उसी के विलाप के कारण है ।

इस चतुराई को केवल प्रेमीन्मादी ही जान सकता है, अन्य नहीं । जिज्ञासा का प्राहक केवल जान है ।

कूजा मी वीनीं व लेकिन आँ शराव ।
 रूप ननुमायद वचरमे ना सवाव ॥
 कासरातुत्तर्फ वाशद चौक्रे जाँ ।
 जुज वल्लस्में लेश ननुमायद निशाँ ॥
 कासरातुत्तर्फ वाशद आँ मुदाम ।
 वीं हिजावे जर्कहा हमचू खयाम ॥

सवाल करदन बाबत नमाज़

आँ यके पुर्साद अज मुफ़ी वराज ।
 गर कसे गिर्यद वनौहा दर नमाज ॥
 आँ नमाजे ऊ अजव वातिल शवद ।
 या नमाजश जायजो कामिल बुवद ॥
 गुरू आवेदीदा नामश वहे चीस्त ।
 विनगरी ता ऊ चे दीदस्तो गिरीस्त ॥
 आवे दीदा ता चे दीदा अस्त अज निहाँ ।
 ता वदाँ शुद ऊ जे चरमेद खुद रवाँ ॥

तुम लोग पात्र को देखते हो परन्तु वह सुरा तिरछी आँख में दिखाई नहीं देती।

नीची दृष्टि देखने वाली स्वर्ग की देवियों प्राणों का आनन्द प्राप्त करती हैं और वह केवल अपने ही आलैट पर दृष्टि रूपी बाण का प्रयोग करती हैं।

वह सुरा सदैव नीची दृष्टि रखने वाली है और प्यालों का आवरण तम्यु के समान है।

नमाज़ की बाबत सवाल करना

मुफ़ी (फ़तवा देने वाला) से एक पुरुष ने चुपके से पूछा कि यदि कोई पुरुष नमाज़ में दहाड़ें मार २ कर रोये,

तो क्या वह नमाज़ उसकी भंग हो जायगी या पूर्ण होगी ?

फ़तवा देने वाले ने कहा कि अश्रुओं का नाम नेत्र जल है। अब तुम देखो कि उस पुरुष ने क्या देखा जिसके कारण वह रो पड़ा।

नेत्र के जल को अन्दर (भीतर) से क्या देखा पड़ा जिसके कारण वह नेत्रपट से प्रकट हो प्रवाहित हुआ।

गर नग्न मन तो आरुम जाइत अपन ।
 मन बमानो नई नर अकारुम अपन ॥
 पस जे मन आइत एइ माना गिरर ।
 पस जे मेवा जाइ एइ माना शजर ॥

भरतनाथ राई साहितिक

हर शयने नन्दर आ करे कर ।
 जुम्बा मस्तोरा जुम्बा नर जो नृसद ॥
 देन मोदनाजे मए गुलमू नई ।
 तके कुन गुलमना तू गुलमू नई ॥
 जोहरस्त ईसाँव नली कर अपन ।
 जुमजा करी त सायन्दो नृसद ॥
 इत्म जोई अज कुतुहाए कसोस ।
 औक जोई तू खे दलामए सयोस ॥
 ए गुलामत अकलो तदवीराता दोस ।
 तू चराई सोस रा अरजा करोस ॥

प्रत्यक्ष में तो मैं मनुष्य से उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं वास्तव में दादा का वादा हूँ अर्थात् आदम से भी पूर्वज हूँ ।

और वास्तविकता का विश्वास रखते हुए आप मेरी संतान है और उसी के अनुसार वृक्ष मेरे से उत्पन्न होता है ।

सत्य का रास्ता

प्रत्येक सुरा उसी भाव और सूरत का दास है । तमाम मतवालों को तुम्हें पर ईर्ष्या है ।

तू कुछ भी गुलाबी सुरा का आश्रित नहीं है । गुलाबी पाउडर का प्रयोग त्याग दे तू स्वयं गुलाबी पाउडर है ।

मनुष्य जोहरी है और आकाश उसकी चौड़ाई है । वास्तविक वस्तु तू है और अन्य सब वस्तुयें डाली और परछाई के समान हैं ।

तू व्यर्थ पुस्तकों से विद्या हूँ ढ़ता है अर्थात् छिलकों के हलने में आनन्द हूँ ढ़ता है ।

बुद्धि, उपाय और ज्ञान यह सब तेरे दास हैं फिर तू स्वयं को इतने सस्ते मूल्य में क्यों बेचता है ।

पिदरने घर चुमना कर्मी मुहम्व ।
 जौहरे चू इवज वाग्द का अग्ध ॥
 वल इन्ने घर नमे पिन्दर्दा मुदा ।
 दर ने नञ मन आन्ने पिन्दर्दा मुदा ॥

एक हिकायन

धीदके दर पेरो नावने पिदर ।
 धार मो मालीशे घर भी कोतन मर ॥
 के पिदर आन्नेर कुजावन भी वरन्द ।
 ना मुरा दर डेर वाके वकशरन्द ॥
 भी वरन्दन खानए नंगो जहीर ।
 नै दरो काली व नै दर वै इसीर ॥
 नै चिरागे दर शधो व नै रोखे नान ।
 नै दरो धूए तथामो नै निशान ॥
 नै दरे भामूर नै दर चाम राह ।
 नै वके हमलाया कू वाशद पनाह ॥

सम्पूर्ण उपस्थित वस्तुओं की सेवा करना तेरा धर्म है। तू जौहरी होकर "अर्ज" के सामने क्यों सर झुकता है।

तू विशा रूपी सागर है जो कि एक वूँद में व्याप्त है और एक तीन हाथ के शरीर में सम्पूर्ण संसार छिपा हुआ है।

एक कहानी

एक वच्चा पिता के मृतक शरीर के समीप फूट फूट कर रुदन करता हुआ सर पीटता था।

और पूछता था पिता जी को कहाँ लिये जाते हो ? फिर कहता था मैं पिता तुमको मिट्टी के नीचे गाड़ आवेंगे।

एक कम चौड़े और अंधरे घर में तुमको डाल देंगे, न उसमें कालीन है न चटाई।

न रात्रि के समय प्रकाश है और न दिन में भोजन, वहाँ भोजन का लेशमात्र तक नहीं है।

न उस घर का कोई खुला हुआ पट है और न उसकी छत पर जाने का मार्ग। न कोई पड़ोसी है कि जिससे सहारा मिले।

गर वसूरत मन जे आदम जादा अम ।
मन वमानी जहे जद उफादा अम ॥
पस जे मन जाईदा दर माना पिदर ।
पस जे मेवा जाद दर माना राजर ॥

मरतवात राहे सादिक

हर शरावे वन्दए आँ कदो खद ।
जुम्ला मस्तारा बुवद वर तो हसद ॥
हेच मोहताजे मए गुलगूँ नई ।
तर्क कुन गुलगूना, तू गुलगूँ नई ॥
जौहरस्त इंसाँ व चर्ख ऊ रा अर्ज ।
जुमला फरा व सायन्दो तू गर्ज ॥
इल्म जोई अज कुतुवहाए फसोस ।
जौक जोई तू जे हलवाए सवोस ॥
ए गुलामत अजलो तदवीरातो होश ।
तू चराई खेश रा अरजाँ फरोश ॥

प्रत्यक्ष में तो मैं मनुष्य से उत्पन्न हुआ हूँ परन्तु मैं वास्तव में दादा का दादा हूँ अर्थात् आदम से भी पूर्वज हूँ ।

और वास्तविकता का विश्वास रखते हुए बाप मेरी संतान है और उसी के अनुसार वृक्ष मेवे से उत्पन्न होता है ।

सत्य का रास्ता

प्रत्येक सुरा उसी भाव और सूरत का दास है । तमाम मतवालों को तुफ़ पर ईर्ष्या है ।

तू कुछ भी गुलाबी सुरा का आश्रित नहीं है । गुलाबी पाउडर का प्रयोग त्याग दे तू स्वयं गुलाबी पाउडर है ।

मनुष्य जौहरी है और आकाश उसकी चौड़ाई है । वास्तविक वस्तु तू है और अन्य सब वस्तुयें डाली और परछाई के समान हैं ।

तू व्यर्थ पुस्तकों से विद्या हूँ डता है अर्थात् छिलकों के हलवे में आनन्द हूँ डता है ।

बुद्धि, उपाय और ज्ञान यह सब तेरे दास हैं फिर तू स्वयं को इतने सत्ते मूल्य में क्यों बेचता है ।

ईरान के सूफ़ी कवि

खिदमते वर जुमला हस्ती मुफ़र्रज ।
 जौहरे चूँ इफ़्ज ज़ारद वा अरज ॥
 वह इल्मे वर नमे पिनहाँ शुदा ।
 दर से गज तन आलमे पिनहाँ शुदा ॥

एक हिकायत

कौदके दर पेशे तावूते पिदर ।
 चार मी नालीशे वर मी कोषत सर ॥
 कै पिदर आखिर कुजायत मी वरन्द ।
 ता तुरा दर जेर जाके वक्रशरन्द ॥
 नौ वरन्दत खानए तंगो जहीर ।
 नै दरो काली व नै दर वै हसीर ॥
 नै चिरागो दर शयो व नै रोजे नान ।
 नै दराँ वूए तआमो नै निशान ॥
 नै दरे मानूर नै दर वाम राह ।
 नै यके हमनाया कू वाशद पनाह ॥

सम्पूर्ण उपस्थित वस्तुओं की सेवा करना तेरा धर्म है। तू जौहरी होकर
 "अर्ज" के सामने क्यों सर मुकाना है।
 तू विद्या रूपी नागर है जो कि एक बूँद में व्याप्त है और एक तीन हाथ
 के शरीर में सम्पूर्ण संसार लिखा हुआ है।

एक कहानी

एक दृष्टा पिता के समक शरण के समान पट फूट कर रुदन करता हुआ
 सर पीटता था
 और पृथ्वता था पिता जा का क्या जाने हो ? फिर कहता था ए
 पिता तुमको भिरी के नये मर जाय
 एक कम चौड़े और चौड़े धा न तुमको डाल देगे न उनमें कालोन
 है न पटाई ।
 न रात्रि के मनव पर हो और न दिन में भोजन, वहाँ भोजन का
 लेशनात्र तक नहीं है
 न उन पर का कोई गुण हुआ पडे है और न उनकी दन पर कोई
 का नागै । न कोई पकड़ना है, उनमें महारा जिये ।

उंचे ऊ नौशीदा नूद अन्न तन्मो दुर्द ।
 ऊ नतकसीलरा गकायक मो शमुर्द ॥
 नन्न वराये मिनते वल मो नमूद ।
 वर दुरस्तोण मोहन्वत सद शहूद ॥
 आकिलों रा यक इशारत वस नुवद ।
 आशिकों रा तिश्नगी जों कै राद ॥
 सद सखन मो गुफु जों दर्द कुहन ।
 दर शिक्कायत के न गुप्तम यक सखन ॥
 आतिशे वृक्ष नमीदानिस्त चीस्त ।
 लेके चू शमा अन्न तके ऊ मो गिरोस्त ॥
 वादे गिर्या गुफु ई हा रफु लेक ।
 ई जमों इरसाद कुन तू यार नेक ॥
 हरचे फरमाई वजाँ इस्तादाअम् ।
 वर सते तो पा व सर वनिहादा अम् ॥
 गर दर आतिश रफु वायद चू सलील ।
 वर चू येहिया मोकुनी खनम सधील ॥

तात्पर्य यह कि उस प्रेमी ने जो जो कठिनाइयाँ सहन की थीं उनको वार वार सुना रहा था ।

परन्तु इससे वह प्रेमिका पर किसो प्रकार का कृतज्ञता का भार नहीं प्रकट करता था बल्कि अपना प्रेम सच्चा होने पर सहस्रों चपक दे रहा था ।

यह तो बुद्धिमानों के लिये है कि उन्हें एक संकेत से ही तुष्टि हो जाती है परन्तु मदमस्त प्रेमियों की पिपासाग्नि इससे कब शान्त होती है ।

वह अपने भूतकाल के कष्टों को सहस्रों बातें कह रहा था पर अभी उसको शिकायत थी कि मैंने कुछ भी नहीं किया ।

उसके हृदय में अग्नि भभक रही थी परन्तु उसको यह पता न था कि क्या है ; इस पर भी उसको उष्णता से मोम सम घुल रहा था ।

रुदन करने के पश्चात् कहा कि सब बातें तो सम्पूर्ण हो चुकीं अब आप यह कहिये कि क्या आज्ञा है, मैं उसको पूर्ण करने के लिये जी जान से प्रस्तुत हूँ ।

जो आज्ञा हो उसको हार्दिक भाव से पूर्ण करूँगा । मैं सर से पैर तक अर्थात् पूर्णतया आपका दास हूँ ।

यदि "खलीलअझाह" की तरह अग्नि में प्रवेश करने की आज्ञा हो या "यूहा" पैगम्बर के समान मेरा रुधिर बहा दीजिये,

ईरान के सूफी कवि

वर जे गिर्या चूँ शोएव आमौँ शबम ।
 वर चूँ यूनुस दर फ़मे माही खम ॥
 वर चूँ यूसुफ़ चाहो जिन्दानम कुनी ।
 वर जे फ़करम ईसए मरयम कुनी ॥
 रुख न गरदानम नगरदम अज़ तो मन ।
 वहे फ़रमाँ तो दारम जानो तन ॥
 गुफ़ू माशूक ई हमा कर्दी वलेक ।
 गोश बकुशा पेहनो अन्दरयाव नेक ॥
 काँचे असल असले इक्कस्त व विलास्त ।
 आँ न कर्दी उंचे कर्दी फ़रआहस्त ॥
 गुफ़ूश आँ आशिक़ बगो काँ अस्त चीस्त ।
 गुफ़ू अस्तश मरदनस्तो नीस्तीस्त ॥
 तू हमा करदी न मुरदी जिन्दी ।
 हीं बेमीर अर चारे जाँ वाजिन्दी ॥
 गर बेमीरी जिन्दी यावी तमान ।
 नामे नीकूए तू मानद ता कयाम ॥
 चूँ शनूद आँ आशिक़े वे खेशतन ।
 आहो सदे वरकशीद अज़ जानो तन ॥

"शोयब" पैगम्बर के समान मैं अंधा होजाऊँ या "यूनिस" पैगम्बर की तरह मछली (मत्स) के मुँह में प्रवेश कर जाऊँ ।
 और या "यूसुफ़" की तरह मुझे कारागृह में डाल दे या "ईना" के समान मुझे फ़कीर बना दे ।

मैं कभी मुँह न फेरूंगा और तेरी आशा से कभी मुख्तार न होऊँगा । मेरा यह शरीर और प्राण दोनों तेरी आशा को परख करने के लिये प्रतिस्पर्धक बन चुके हैं । प्रेमिका ने उत्तर दिया कि श्रीमान आपने सब अपना परन्तु अब क्या खोलकर ध्यानपूर्वक धरना परो।
 कि प्रेम और प्यार का जो बाल्विक मूल है तुमने क्या का रखा है? और यह तो सब आउम्बर है।
 प्रेमी ने पूछा तो सुपया इस बाल्विक मूल को प्रकट करने का प्रयत्न करने लगा।
 उत्तर दिया कि यह बाल्विक मूल प्रेम का नाम है। प्रेम ही प्रेम का मूल है।
 तुमने करने को सब कुछ किया परन्तु मेरा प्रेम प्रकट नहीं हो पाया।
 यदि तुम सधे प्रेमी हो तो प्रेमी बन जाओ।
 तुम नर जाओगे तो तुमका प्रेम प्रकट हो पायेगा।
 प्रलय पर्यन्त तुम्हारा प्रेम प्रकट हो पायेगा।
 अन्तिम रूप से प्रेमी ने सब बातें सुनीं। प्रेम ही प्रेम का मूल है।

हमदराँ दम शुद दराजो जाँ वेदाद ।
 हमचो गुल दर वाख्त सर खन्दानो शाद ॥
 मानद आँ खन्दा वरो वक्क्रे अवद ।
 हमचो जानो अत्रलो आरिफ वेकवद ॥
 अरजई वेशुनीद नूरे आफतात्र ।
 सूए अस्ले खेश वाज आमद शतात्र ॥
 नूर दोदा सूए दीदा वाज गशत ।
 मानंद दर सौदाए ऊ सह्रा व दशत ॥

सिलसिलाए शहवत

खल्क देवानन्दो शहवत सिलसिला ।
 मेकशद शाँ सूए दुक्कानो गला ॥
 हस्त ईं जँजीर अज्र खौफो वला ।
 तू मत्रीं ईं खल्क रा वे सिलसिला ॥
 मी कशानद शाँ सूए किशतो शिकार ।
 मी कशद शाँ सूए काहाँ व विहार ॥
 मी कशानद शाँ वसूए नेको वद ।
 गुक्क हक्क फी जोदेहा हवलुम मसद ॥

और उसी समय लम्बा लम्बा लेट गया और मृत्यु को प्राप्त हो गया ।

फूल के समान हँसते खेलते मुरझा गया अर्थात् नष्ट हो गया ।

और बड़ी हँसी उसके ऊपर सदैव उपस्थित रही, हृदय रहित ईश्वर की जान और बुद्धि की तरह ।

सूर्य के प्रकाश ने "लौट आ" की आज्ञा सुनी और तुरन्त अपने वास्तविक स्थान को चली गई ।

आँखों का प्रकाश पुनः आँखों में आगया और मैदान और जंगल उसके पश्चात् अंधेरे में ही रह गये ।

अभिलापाएँ

लोग सब देव हैं और इन्द्रिय लोलुपता एक बंधन है जो उनको इच्छा के कारणों की ओर खींच ले जाता है ।

यह बंधन भय व आनन्द युक्त है । तू यह विचार न कर कि यह लोग कानून रहित हैं ।

यही अभिलापा का बंधन उनको खेती करने, आखेट करने, खानों को खोदने और नदियों में जाने की ओर खींच ले जाता है ।

यह उनको शुभ और अशुभ सत्र की ओर आकर्षित करता है । ईश्वर ने कह दिया है कि उसके गले में एक घास की बटी हुई रस्सी है ।

इश्क़े इलाही

हरचे रोईद अज पए मोहताज रस्त ।
 ता वयावद तालिबे चीजे कि जुस्त ॥
 हक़ तआला की सनावत आफ़रीद ।
 अज बराए रक़ए हाजात आफ़रीद ॥
 हरकि जोया शुद वयावद आक़वत ।
 नायए दर्दस्त अस्तो नरहमत ॥
 हर कुजा दरदे दवा आँजा रवद ।
 हर कुजा फ़क़रे नवा आँजा रवद ॥
 हर कुजा मुशक़िल जवाब आँजा रवद ।
 हर कुजा पस्ततीस्त आव आँजा रवद ॥
 जरए जाँरा क़िश जवाहिर मुज्जमरस्त ।
 अत्रे रहमत पुर जे आवे कौसरस्त ॥

वस्फ़े इश्क़

आशिक़ाँ रा हर नरुस्त सोजीद नीस्त ।
 बर देहे वीराँ ख़िरानो उश्र नीस्त ॥

ईश्वरीय प्रेम

जो कुछ उत्पन्न हुआ है वह दरिद्र ही के लिये उत्पन्न हुआ है ताकि याचने वाले को जिस वस्तु की इच्छा हो प्राप्त हो सके ।

ईश्वर ने इन वस्तुओं को उत्पन्न किया तो लोगों की आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिये उत्पन्न किया ।

जो पुरुष दुर्दृढ़ता है अंत में प्राप्त करता है अनुग्रह का वास्तविक मूल कष्ट सहन करने के कारण है ।

जहाँ कोई बीमारी प्रकट होती है वहाँ औषधि पहुँच जाती है । जिस स्थान पर दरिद्रता होती है उस जगह सामान पहुँच जाता है ।

जहाँ क़िस्ती कठिनता का सामना होता है वहाँ उसके पूर्ण होने का आसान (सरल) रूप भी उत्पन्न हो जाता है और जहाँ अधिक निचाई होती है वहाँ पानी पहुँचता है ।

जान (प्राण) रूपी क्षेत्र के लिये जिसमें जवाहरात गुप्त हैं कृपा रूपी वादल (मेघ) को बड़ी रूपी नेंह से परिपूर्ण है ।

प्रेम की ख़ुशियाँ

प्रेमी लोग प्रतिक्षण अग्नि में जला करते हैं । उजाड़ गाँवों पर लगान नहीं लगता ।

रा शहीदों से ते पाव ओला तर अस्त ।
 ई लता अज सद सवाव ओला तरस्त ॥
 दर दखने तावा रस्मे किञ्चला नीस्त ।
 ते राम अरसावास रा वा नगला नीस्त ॥
 इस्ते इरकज दमा दीदा जुरास्त ।
 आशिकों रा मजदुमो भिल्लत लुधुस्त ॥

जाकि आशिक दर दमे नादस्त मस्त ।
 लाजरम् अज कुम्तो ईमों वरतरस्त ॥
 कुम्तो ईमों दर दो छुद दरवाने उस्त ।
 कुस्त मरजो कुम्तो दो ऊ रा दो पोस्त ॥
 कुम्त किथे सुशक छु वर ताफता ।
 वाज ईमों किथे लज्जत याफता ॥
 किथहाए सुशक रा जा आतिशस्त ।
 किथहाए पैवस्ता मरजो जा सुशस्त ॥
 मरजो सुदज मरतवा सुश वरतरस्त ।
 वरतरस्त अज सुद हि लज्जत गुस्तरस्त ॥

शहीदों के लिये रक्त जल से श्रेष्ठतर है ; उनकी यह त्रुटि रात नेकियों से बढ़कर है ।

कुटुम्ब के अन्दर बड़े बूढ़े का कोई कायदा नहीं है । यदि डुवकी लगाने वालों के पास तंवर नहीं है तो क्या चिंता है ।

प्रेम का रोग समस्त मतों से निराला है । प्रेमियों का धर्म और मत ईश्वर है ।

चूँकि प्रेमी नकद माल में मतवाला है इस कारण अकृतज्ञता और धर्म दोनों से छुटकारा पागया ।

नास्तिकता और धर्म दोनों उसी नकद के ड्योढ़ीवान हैं क्योंकि वास्तविक गूदा (वस्तु) वही नकद है और नास्तिकता और मत उसके दो छिलके हैं ।

नास्तिकता शुष्क छिलका है जो ऊपर से विलग होगया तो उसके नीचे धर्म नर्म और स्वादिष्ट छिलका पाया गया ।

शुष्क छिलकों का स्थान अग्नि है और गूदे से मिले हुये छिलके दिव को पसन्द है ।

और गूदा उस छिलके के स्वाद से अवश्य बढ़कर है उसमें स्वयं श्रेष्ठगुण है क्योंकि वही स्वाद देने वाला है ।

खू शहीदों रा जे आव औला तर अस्त ।
 ई खता अज सद सवाव औला तरस्त ॥
 दर दरुने कावा रस्मे कित्ला नीस्त ।
 चे गम अरगावास रा वा चपला नीस्त ॥
 इल्लते इश्कज हमा दीहा जुदास्त ।
 आशिकों रा मजहबो मिल्लत खुदास्त ॥

जाँके आशिक दर दमे नकदस्त मस्त ।
 लाजरम् अज कुफ़ो ईमाँ वरतरस्त ॥
 कुफ़ो ईमाँ हर दो खुद दरवाने ऊस्त ।
 कूस्त मरजो कुफ़ो दाँ ऊ रा दो पोस्त ॥
 कुफ़ किश्रे खुशक रु वर ताफ़ता ।
 वाज ईमाँ किश्रे लज्जत याफ़ता ॥
 किश्रहाए खुशक रा जा आतिशस्त ।
 किश्रहाए पैवस्ता मरजे जाँ खुशस्त ॥
 मरजे खुदज मर्तवा खुश वरतरस्त ।
 वरतरस्त अज खुद कि लज्जत गुस्तरस्त ॥

शहीदों के लिये रक्त जल से श्रेष्ठतर है ; उनकी यह त्रुटि शत नेकियों से बढ़कर है ।

कुटुम्ब के अन्दर बड़े बूढ़े का कोई कायदा नहीं है । यदि डुबकी लगाने वालों के पास तूँवरा नहीं है तो क्या चिंता है ।

प्रेम का रोग समस्त मतों से निराला है । प्रेमियों का धर्म और मत ईश्वर है ।

चूँकि प्रेमी नकद माल में मतवाला है इस कारण अकृतज्ञता और धर्म दोनों से छुटकारा पागया ।

नास्तिकता और धर्म दोनों उसी नकद के ड्योढ़ोवान हैं क्योंकि वास्तविक गूदा (वस्तु) वही नकद है और नास्तिकता और मत उसके दो छिलके हैं ।

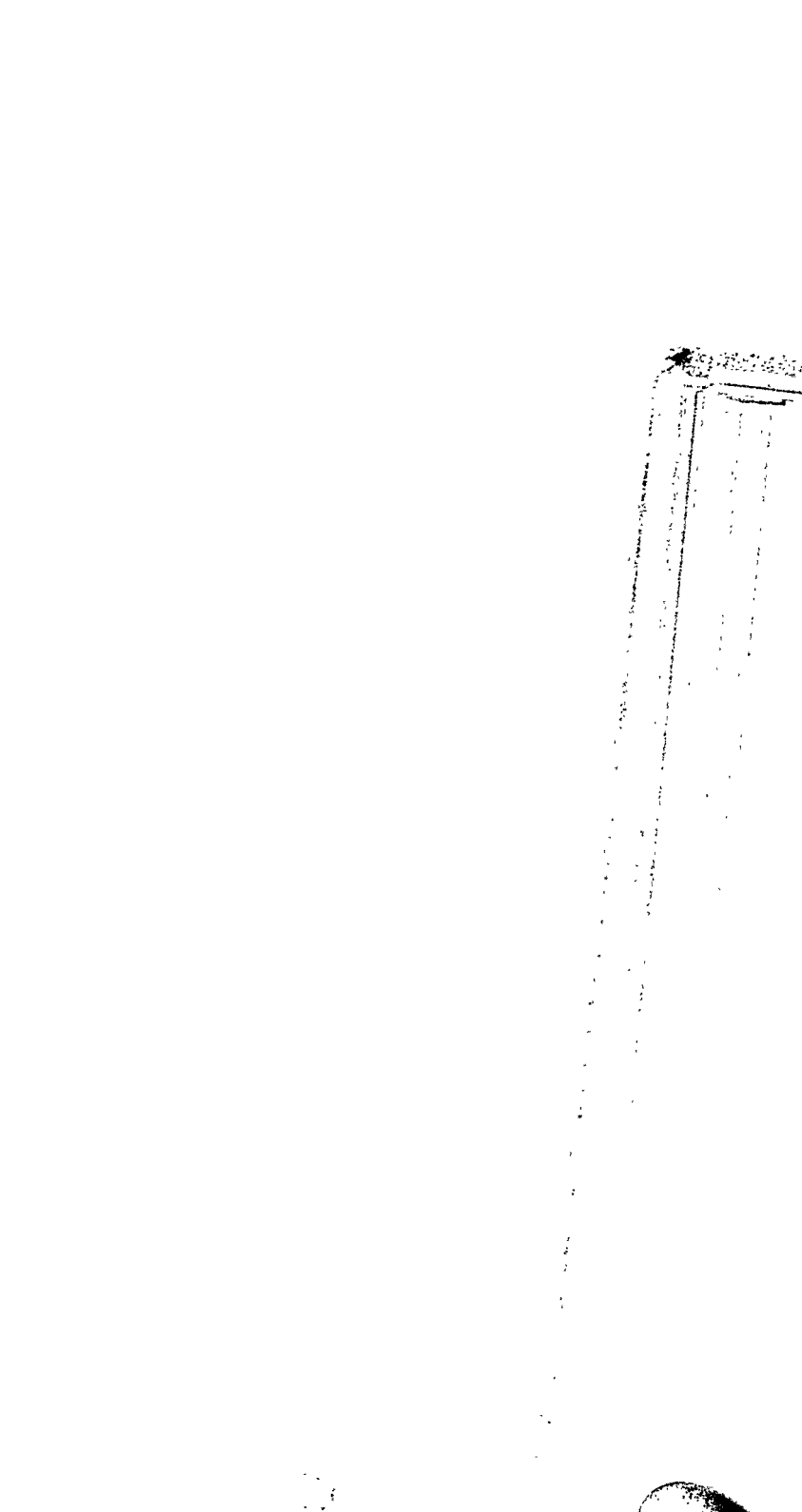
नास्तिकता शुष्क छिलका है जो ऊपर से विलग होगया तो उसके नीचे धर्म नर्म और स्वादिष्ट छिलका पाया गया ।

शुष्क छिलकों का स्थान अग्नि है और गूदे से मिले हुये छिलके दिव को पसन्द है ।

और गूदा उस छिलके के स्वाद से अवश्य बढ़कर है उसमें स्वयं श्रेष्ठगुण है क्योंकि वही स्वाद देने वाला है ।

शेख सादी

(जन्म ११८४ ई० : मृत्यु १२६१ ई०)





सादी
(ब्रिटिश म्यूज़ियम में सुरक्षित एक प्राचीन चित्र से)

इनका पूरा नाम था मशरकउद्दीन बिन मसीहउद्दीन अबदुल्ला। इनका जन्म शीराज़ में सन् ११८४ ई० में हुआ था और शरीरान्त सन् १२९१ ई० में। इन्होंने रहस्यवाद पर अधिक न लिखकर धर्म सम्बन्धी विषयों पर अपनी कलम चलाई थी। इनकी रचनाएँ भी कर्त्तव्याकर्त्तव्य से ही सम्बन्ध रखती हैं।

इन्होंने भी कई एक स्थानों तथा देशों में भ्रमण किया था, जिनमें से अरब, अबसीनियाँ, सीरिया, दमिश्क, उत्तरी अफ्रीका, एशिया माइनर, जेरू सलम और भारतवर्ष के नाम विशेषकर उल्लेखनीय हैं। सिन्ध प्रान्त में, इन्हें कई एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी मिले थे। बग़दाद में इनकी भेंट सूफ़ी शेख़ शहाबुद्दीन से हुई थी। इन्होंने बहुत कुछ लिखा है, परन्तु इनकी ख्याति गुलिस्ताँ तथा दोस्ताँ से अधिक है। गुलिस्ताँ में इन्होंने धार्मिक सिद्धान्तों का वर्णन करके अपने अनुभवों को दर्शाया है। दोस्ताँ में (जिसमें के कई एक पद मैंने इस पुस्तक में उद्धृत किये हैं) ईश्वरवाद की झलक है, जिससे यह प्रकट होता है कि वह रहस्यवादी थे और आध्यात्मिक विद्या से भी कुछ जानकारी रखते थे। भाषा की सरलता से इनको कविता में एक अनोखापन आ जाता है। इन्होंने कई विषयों पर कविताएँ लिखी हैं जो कि बहुत ही सुन्दर हैं और जिनके कारण उनका स्थान कवियों में ऊँचा हो गया है। सादी ने कविता लिखना बृद्धावस्था में आरम्भ किया था। उन्होंने कई बार अपने समय के राजाओं के यहाँ राजकवि के रूप में रहने का प्रयत्न किया। परन्तु स्वीकार नहीं हुआ।

इनके विचार बहुत ही पवित्र थे। इन्होंने कई एक नवीन विषयों पर लिखने का प्रयत्न किया था, जिनमें से शृङ्गार रस तथा भारतीय ढंग पर कविता लिखना भी थे। ग़ज़ल लिखने में वह हाफ़ीज़ से कुछ ही कम होंगे। ब्राउन ने उनके विषय में लिखा है, “इनकी रचानाओं में पूर्वीय झलक पूर्णतयः वर्तमान है। सुन्दर से सुन्दर और रही से रही रचानाओं में भी यही बात जाती है। और फिर यह बात भी साधारण नहीं है कि जहाँ कहीं भी फ़ारसी भाषा का अध्ययन किया जाता है, पढ़ने वाले के हाथ में पहले इनकी ही पुस्तक आती है। यह बात लगभग डेढ़ सौ वर्ष से चली आ रही है।”

(लि० हि० ३० पर० जिल्द २ पृष्ठ ५३२)

प्रमुख रचनाएँ:—

गुलिस्ताँ।

दोस्ताँ।

दीवान।

अखलाकी नासोन।

ज़िजी सेखानी।

मलामत फशानन्द मस्ताने यार ।
 सवुकतर वरद उशतुरे मस्त वार ॥
 वसर वके शौं सलक कै रह वरन्द ।
 कि चूँ आवे देवाँ वज्रामत दरन्द ॥
 चूँ वैजुलमुकदस वरुँ पुजोँ ताव ।
 रिहा करवा दीवारे वरुँ साराव ॥
 तु परवाना आतश वरुद दर अनन्द ।
 न चूँ किम पीला वरुद दर तनन्द ॥
 दिलाराम दरवर दिलाराम जूय ।
 लज्ज तिश्तगी सुशक वर वरुँ जूय ॥
 समोयम कि वर आव कादिर नयन्द ।
 कि र सादिले नील मुसतसकी अन्द ॥

गुफ्तार अन्दर राबूत इश्कै हकौकी बदलीले मजाजाँ ।

गुरा इश्क दमनं सुदे जावो मिल ।
 क्यायद दम रात्राँ आरामे दिल ॥

वयेदारेश फिःना वर खतो खाल ।
 वखावन्दरश पाए वन्दे खवाल ॥
 वत्तिदकश चुनों सर नेही वर कदम ।
 कि वीनी जहां वावजूदश अदम ॥
 चो दर चश्मे शाहिद नुआयद खरत ।
 खरो खाक यकसां नुमायद वरत ॥
 िगर वा कसत दर न आयद नकत ।
 कि वा ऊ नमानद दिगर जाए कस ॥
 तू गोई वचश्म अन्दरश मंखिलस्त ।
 बगर चश्म वरहम निही दर दिलस्त ॥
 न अन्देशा अज कस कि रुसवा शवी ।
 न कवूत कि यकदम शिकेवा शवी ॥
 गरत जां बेखाहद वकफ वर निही ।
 वरत तेग वर सर नेहद सर निही ॥
 चु इश्क़े कि बुनियादे ऊ वर हवास्त ।
 चुनी फिःना अंगेडो फरनां रवास्त ॥

जब तक जागते हैं, उसके कपोलों और मुख पर के तिल का ध्यान बँधा रहता है और सोते हुए भी उसी के स्वप्न दिखलाई देते हैं ।

तुम्हको उसके चरणों पर अपना सिर इस प्रकार रख देना उचित है कि इस संसार का होना भी न होने के समान जँचे ।

जब तेरी प्रियतना तेरी स्वर्ण मुद्राओं की तरफ आँख उठाकर देखती भी नहीं है तब तू सोने और मिट्टी को समान रूप से देख ।

फिर किसी दूसरे की तरफ तेरा हृदय आकर्षित न हो और उसके स्थान पर किसी दूसरे का वास न हो ।

उसके प्रणय में इस प्रकार रँग जा कि वह तेरी आँख में ही सर्वदा विश्राम रहे और आँख मुँह लेने पर हृदय में दिखलाई दे ।

तू सदैव उसके लिये व्यग्र रह और कभी भी उसके विरह की चिन्ता न कर । कारण कि जब वह सर्वज्ञ तुम्हो में है तब तुम्हसे पृथक किस प्रकार हो सकता है ! उसके प्रेम में अपने को नतवाला बना डाल ।

यदि वह तेरे प्राण चाहता है तो हथेली पर रखकर उसके सामने कर दे । यदि वह तलवार तेरी गर्दन पर रखता है तो अपना सिर ही उसे दे डाल ।

जब वासनाओं से परिपूर्ण प्रेम में, प्रणयों की यह अवस्था हो जाती है तो उन प्रेमियों पर ज्यों आश्चर्य होता है, जो ईश्वर से मिलने के लिये नतवाले हो रहे हैं ।

मलामल कशानन्द मलाने गार ।
 समुच्चर वरद प्रचुरे मन्त्र गार ॥
 वक्षर वक्ते शौं वल्लक के रत्न वरन्द ।
 कि नू आगे हेमो वल्लका वरन्द ॥
 नू वैतुलमुकदस वक्ते पुर्वे वान ।
 रिहा करदा वीमारे वक्ते वारा ॥
 चु परवाना आतश वक्षुद वर जमन्द ।
 न नू किम पीला वक्षुद वर तनन्द ॥
 विलासम वरवर विलासम जूय ।
 लवज विरजगी वक्षुद वर वक्ते जूय ॥
 नगोयम कि वर आन काविर नयन्द ।
 कि वर सादिले नोल मुषनसकी अन्द ॥

गुक्तार अन्दर सबूत इरके हकीकी बदलीले मजाज़ो ।

तुरा इरक हमचे खदि जानो गिला ।
 कथायद हमे सत्रो आरामे दिला ॥

हम उसके प्रणयी हैं जो सहन शील है और मतवाले ऊँट के समान शीघ्र अपनी लादी ले जाते हैं ।

संसार को उनकी ओर आकर्षित होने से क्या प्राप्त होगा जब कि अमृत के समान वह अन्धकार में छिपे हुए हैं ।

वैतुलमुकदस के समान उनका हृदय प्रकाश से परिपूर्ण हो रहा है । उन्होंने इस ढाँचे को दुरावस्था में छोड़ रक्खा है । शरीर की तनिक भी चिन्ता नहीं है ।

पतंगे के समान प्रणय की अग्नि में अपने आप को जला रहे हैं । जिस प्रकार रेशम का क्रीड़ा अपने ही ऊपर ताना-बाना तान देता है, उसी प्रकार उन्होंने भी अपने को भुला रक्खा है ।

उनका प्यारा गोद में है, परन्तु उसी की खोज में व्यस्त हैं । सामने पानी से भरा हुआ तालाब है परन्तु ओंठ वहाँ तक पहुँचना नहीं चाहते ।

यह नहीं कि वह जान वृष्ण कर ऐसा कर रहे हैं । परन्तु उन्हें प्यास का रोग है । नीज नदी के तट पर बैठे हुए हैं परन्तु ओंठ अब भी सूख रहे हैं ।

सांसारिक प्रेम के उदाहरण देकर, सच्ची लगन का वर्णन

जल और मिट्टी के संयोग से बने हुए, अपने ही समान मनुष्य का प्रेम व्याकुल कर देता है । जीवन की शान्ति और आनन्द दोनों विलुप्त हो जाते हैं ।

ववेदारेश फिल्ला वर जत्तो खाल ।
 वखावन्दरश पाए वन्दे ख्याल ॥
 वासिदकश चुनों सर नेही वर कदम ।
 कि चीनी जहाँ वावजूदश अदम ॥
 चो दर चश्मे शाहिद मुआयद जरत ।
 चरो खाक यकसां मुमायद वरत ॥
 िगर वा फसत दर न आयद नकस ।
 कि वा ऊ नमानद दिगर जाए कस ॥
 तू गोई वचश्म अन्दरश मंजिलस्त ।
 वगर चश्म वरहम निही दर दिलस्त ॥
 न अन्देशा अज कस कि रुसवा शवी ।
 न कवत कि यकदम शिकेवा शवी ॥
 गरत जां बेखाहद वकफ वर निही ।
 वरत तेग वर सर नेहद सर निही ॥
 चु इश्के कि बुनियादे ऊ वर हवास्त ।
 चुनी फिल्ला अंगेजो फरमां रवास्त ॥

जब तक जागते हैं, उसके कपोलों और सुख पर के तिल का ध्यान बँधा रहता है और सोते हुए भी उसी के त्वन्न दिखलाई देते हैं ।

तुम्हको उसके चरणों पर अपना सिर इस प्रकार रख देना उचित है कि इस संसार का होना भी न होने के समान जैचे ।

जब तेरी प्रियतमा तेरी स्वर्ण सुत्राओं की तरफ आँख उठाकर देखती भी नहीं है तब तू सोने और निर्दोषी को समान रूप से देख ।

फिर किसी दूसरे की तरफ तेरा हृदय आकर्षित न हो और उनके स्थान पर किसी दूसरे का वास न हो ।

उसके प्रणय में इस प्रकार रोग जा कि वह तेरी आँख में ही सर्वदा विश्राम रहे और जहाँ मुँह केने पर हृदय में दिखलाई दे ।

तू सर्वत्र उसको अपने स्वप्न रह और कभी भी उसके विरह की चिन्ता न करे । कि जब तू स्वप्न में तब तब तुममें पृथक किस प्रकार हो रहा है । उनके शिब में समान का समान का वला है । यदि वह तेरा प्रियतमा है तो तू उसे प्रियतमा ही माने ।

जब वह तलवार तब मदन का शयन है तो प्रियतमा तब हा उसे दे डाले । जब कामनाओं में समान का समान का वला है तो प्रियतमा तब हा उसे दे डाले ।

उस प्रियतमा पर क्या आशय है कि वह प्रियतमा ही जाती है । कि हा रहे है ।

सहरहा बेगिर्यद चंदोंकि आव ।
 फ़ेरोशोयद अज दीदा शां कोहले खाव ॥
 फ़रस कुशता अज वसके शव रौंदा अन्द ।
 सहर गह खरोस्तां कि वा माँदा अन्द ॥
 शवो रोज दर वहरे सूदो व सोज ।
 नदानन्द अज आशुफ़ुगी शवज रोज ॥
 चुनाँ फ़िन्ना वर हुस्ने सूरत निगार ।
 कि वा हुस्ने सूरत नदारन्द कार ॥
 नदादन्द साहबदिलाँ दिल बभोस्त ।
 बगर अबलहे दाद बेमरजो गोस्त ॥
 मए सिर्फ़े वहदत कसे नोश कर्द ।
 कि दुनिया व उक़वा फ़रामोश कर्द ॥

हिकायत गदाज़ादा वा पादशाहज़ादा

शुनीदम कि वक्ते गदा चादए ।
 नजर दास्त वा पादशा चादए ॥

प्रभात होते ही उसके नेत्रों से आँसुओं की वह धारा प्रवाहित होती है कि सुर्मा बिल्कुल धुल जाता है ।

अर्हानशा उसकी स्मृति रूपी पीड़ा में अपने आपको जलाया करता है । उसकी याद में पागल बना रहता है ।

यह भी ध्यान नहीं है कि कब दिन समाप्त होता है, रात कब आरम्भ होती है ।

ईश्वर के मुखारविन्द ने कुछ ऐसा जादू डाला है कि उसे संसार के किसी अन्य मुख से किसी प्रकार का सम्बन्ध ही नहीं रह गया है ।

उसने अपने आप को सांसारिक प्रेम में नहीं डाल रक्खा है । यदि किसी ने अपने आपको मानवी प्रेम में फँसा दिया तो वह बहुत बड़ा मूर्ख तथा मन्द बुद्धि है ।

ईश्वर के प्रेम में मग्न वास्तव में उसी को समझना चाहिये जिन्होंने अपने अस्तित्व तथा संसार दोनों को सुला दिया हो ।

फ़कीर के लड़के का शाहज़ादे पर आसक्त होना

मैंने सुना है कि किसी समय एक भिखारी एक शाहज़ादे पर आसक्त हो गया ।

कभी मुझसे शोक हीनता नग ॥
 अजब सबसंगे ए तू जोते संग ॥
 वगुफर ई जता पर मन त इसे जोते ॥
 न शक्ति नालो इत अत इसे जोते ॥
 मन ईनक रमे होली मो जनम ॥
 गर न होला तारत तार इरमनम ॥
 जो मन सन वे न तवको मदार ॥
 कि ना न हम् इमको नदारत करार ॥
 न नैला सपथ न जाए शिवेव ॥
 न इकाने वदन न जाए गुरेव ॥
 मगो जो इरेनारमाद नर वेताव ॥
 वगर सर नु मेलात कश इरतनाव ॥
 न पराना जीहा इर जाए होला ॥
 वेद अज विनदा इर कुजे लागे के ओला ॥
 वगुफर खरी वलो नोमाने का ॥
 वेगुफरा वगपरा वर अकम नो पू ॥

किसी ने उससे कहा, "ये मूर्ख! इतना पागल क्यों हो गया है कि कोड़ों और डण्डों की मार खाकर भी सन्तुष्ट दिखलाई पड़ा है! मुला से आवाज नहीं निकलती है!"

उसने उत्तर दिया कि यह कठोरता मेरे प्यारे की तरफ से है और प्यारे के मारने पर मुला से आवाज निकालना उचित नहीं है।

मैं अभी तक उसका प्रेमी होने का दावा करता हूँ। वह चाहे मुझे अपना मित्र समझे अथवा शत्रु।

उसके बिना मुझे कल नहीं पड़ सकती अथवा उसके साथ भी धैर्य न होगा। न तो मुझे चैन ही मिलता है और न लड़ाई ही करने की इच्छा होती है।

न तो एक स्थान पर स्थिर होकर बैठा ही जाता है और न भागने ही के लिये पैर आगे बढ़ते हैं।

मुझे उसके दर्वार से—उसके सम्मुख से हट जाने के लिये मत कहो। यदि मेरा शिर भी मेख (खूटे) की तरह रस्सी में खिंचे तब भी मैं वहाँ से नहीं हट सकता।

मैं तो अब अपने प्यारे के पास से हट नहीं सकता हूँ। क्या पतंगे ने अपने प्यारे के चरणों पर निज को न्योझावर नहीं कर दिया? वह जीवन से बढ़कर उस अँधेरे कोने में है।

यदि उसके चौगान से तू घायल होकर, उसके चरणों पर रेंद के समान जा कर गिर पड़े,

वसुफ़ा सरत गर वेवुरद वतेग ।
 वसुफ़ ई क़दर न वूवद अज वै दरोग ।
 वके रा कि माशूक़ वाशद वके ।
 नयाचारद अज वै वहर अन्दके ॥
 मरा खुद जे सर नेस्त चन्दौं खवर ।
 कि ताजस्त वर तारक़म या तवर ॥
 मकुन वा मने नाशिकेवा इतेव ।
 कि दर इश्क़ सूरत न वन्दद शिकेव ॥
 चु याक़वम अर वीदा गर्द सुपीद ।
 नवुरम जे दीदारे वूसुक़ उमीद ॥

और यदि तलवार से वह तेरे शिर को काट डाले तो भी उसके प्रति तनिक भी बेरुखी प्रकट मत कर ।

यदि किसी का कोई प्यारा हो तो उसे प्रत्येक बात सहने के लिये सदैव उद्यत् रहना चाहिये । मुझे अपनी तनिक भी सुध नहीं है ।

मुझे क्या दर्द मिल रहा है ? यह भी नहीं ज्ञात हो रहा है । न मालूम मेरे शिर पर छत्र रक्त्वा हुआ है अथवा कुल्हाड़ी ।

मैं व्याकुल हूँ ; मुझ पर क्रोध मत कर । इस आसक्ति में मैंने अपनी शान्ति खो दी है ।

यदि हज़रत याक़ूब के समान मैं अन्धा हो जाऊँ तब भी वूसुक़ के दर्शनों की अभिलाषा हृदय में बनाए रखूँ ।

शक्सतरो

(जन्म १२५० ई०: मृत्यु १३२० ई०)

शब्दतरो

(जन्म १२५० ई०: मृत्यु १३२० ई०)

इनका नाम सईदुद्दीन महमूद था। आपका जन्म स्थान शक्सतर जो तवरेज के निकट स्थित है, बतलाया जाता है। आपका जन्म लगभग १२५० ईस्वी में और मृत्यु १३२० ई० में हुई थी। आप एक ऊँचे दर्जे के सूफ़ी थे। इन्होंने लिखा कम है, परन्तु जो कुछ भी लिखा है बहुत ही उत्तम है। आपको पुस्तक “गुल्शन राज” के विषय में प्रोफ़ेसर ब्राउन का कहना है :—

“सूफ़ी धर्म ग्रन्थों में इसका स्थान बहुत ही ऊँचा है।”

(लि० हि० आ० पर० जिल्द ३ पृष्ठ १४८)

यह पुस्तक खुरासान के अमीर हुसेनी के पन्द्रह प्रश्नों के उत्तर में लिखी गई है। लेवी इसके विषय में लिखते हैं :—

“प्रश्नों के उत्तर जो कि छोटे छोटे उदाहरणों तथा गूढ़ बातों में दिये गये हैं इस प्रकार के रहस्यवाद को और भी उत्तम बना देते हैं। सुन्दर भावों को यह एक नवीन आभा प्रदान करते हैं।”

(प० लि० लेवी० पृष्ठ ३३)

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस पुस्तक का अनुवाद जर्मन तथा अंग्रेज़ी भाषा में हो गया था। और वहाँ पर इसकी प्रशंसा भी बहुत हुई। इसकी सहायता से गुणों की उल्लंघन पूर्णतयः समझ में आ जाती हैं। जामी ने इस पुस्तक के विषय में कई बार लिखा है। अपनी लवायह नामी पुस्तक में उन्होंने बड़ी तारीफ़ की है। आपके जीवन में कोई घटना नहीं हुई। इतने वर्ष बड़ी शान्ति के साथ व्यतीत हो गये।

प्रमुख रचनाएँ :—

गुल्शन राज

एकक. २ चकीन

‘रमाल’ ११२’३

1. The first part of the document is a list of names and addresses, which appears to be a directory or a list of contacts. The names are written in a cursive script, and the addresses are listed below them. The list is organized in a columnar format, with names in the first column and addresses in the second column.

खिरद रा नेस्त तावे नूरे आँ रूए ।
 वरै अज वहे ऊ चशुमे दिगर जूए ॥
 दो चश्मे फलसती चू वूद अहवल ।
 जे वहदत दीदने हक़ शुद मोअत्तल ॥
 खि नावीनाई आमद राए तशवीह ।
 जे यक चश्मीस्त इदराक़ाते तंजीह ॥
 तनासुख जाँ सवव शुद कुफ़ो यातिल ।
 कि आँ अज तंग चश्मी गश्त हासिल ॥
 अगर त्वाही यीनी चशमए खुर ।
 तुरा हाजत फ़ितद वा जिस्मे दिगर ॥
 चु चश्मे सर न दारद ताक़तो ताव ।
 तवाँ ख़रशीदे तावाँ दीद दर आव ॥
 अजो चू रोशनी कमतर नुनायद ।
 दर इदराके तो हाली ने फ़िजायद ॥
 अदम आईनाए हस्तीस्त मुतलक़ ।
 अजो पैदास्त अक्से ताविशे हक़ ॥



संभार

कि वाशम मन मग अज मन वापर कुन ।
ने मानो शरर अन्दर कुन वापर कुन ?

जवाब

दिगर कररो सवाल अज मन कि मन नीख ?
मरा अज मन वापर कुन ता कि मन नीख ॥
यो हस्तो मूलतक आमर दर इशाख ।
बलापते मन कुनवर अज ने इशाख ॥
हकीकत कत ता आपुन मुद मोअबान ।
तो ऊ रा दर इशाख मुकुई मन ॥
मनो तू आरिते जाने वजूईम ।
मुशान कदाग मिरा हाते वजूईम ॥
हमा यह नूर दा अखादा अखाद ।
गद अज आईना पैरा गद जे मिसाद ॥
तु गोई लपजे मन दर दर इशाख ।
असूए रुद मो वाशद इशाख ॥

प्रश्न

मैं कौन हूँ ? मुझे अपने आप पर प्रगट कर दे । “तू स्वयम् अपने अन्दर यात्रा कर” इसका क्या आशय है ?

उत्तर

तूने फिर यही प्रश्न किया कि “मैं” क्या वस्तु है ? मुझको बता दे कि यह “मैं” कौन है ?

जब इस जीवन की तरफ स्वाभाविक ढंग से इशारा किया जाता है तब “मैं” शब्द के साथ उसका वर्णन करते हैं ।

जो रहस्य वास्तविकता के रूप में परिणित हो गया है तूने शब्दों में उसको “मैं” कहा है ।

“मैं” और “तू” सब उसी अस्तित्व से सम्बन्ध रखते हैं और अस्तित्व के दीपक की जालियाँ हैं ।

यह सारी सूरतें और रूहें एक ही प्रकाश से प्रकाशित हो रही हैं, जो कभी दर्पण से प्रगट होती हैं और कभी दीपक से ।

तू जिस प्रकार से भी “मैं” शब्द को कहेगा, उससे केवल आत्मा की ओर संकेत होगा ।

ईरान के सूफ़ी कवि

चो कर्दी पेशवाए खुद ख़िरद रा ।
 नमी दानी जे जुब्बे खेश खुद रा ॥
 वेरौ ऐ ख़ाजा खुद रा नेक वेशनास ।
 कि न खुबद फ़रविशी मानिन्दे आमद ॥
 मनो तू वरतरज जानो तन आमद ।
 कि ई हर दो जे अजप्पाए मन आमद ॥
 बलप्रजे मन न इनसानरत मख़त्सूस ।
 कि ता गोई वदो जानस्त मख़त्सूस ॥
 यके रह वरतर अज कौनो मकाँ शौ ।
 जहाँ वेगुजारो खुद दर खुद जहाँ शौ ॥
 जे जत्ते वशमिए हाए हुनीयत ।
 हु चश्मी मी शवद दर वक्ते रोयत ॥
 न मानद दरमियाना रहरवे राह ।
 चो हाए हू शवद मुलहक़ व अल्लाह ॥
 खुबद हस्ती वहिस्त इनकाँ चो दोजख़ ।
 मनो तू दरमियाँ मानिन्दे वरजख़ ॥

जब तू बुद्धि को अपना पथ प्रदर्शक मानता है, उस समय तू यह नहीं
 विचार करता कि तुझ में और बुद्धि में अन्तर है—दोनों एक दूसरे से
 भिन्न हैं।

अपने आपको अच्छी तरह पहचान ले। सृजन और मुटापा एक ही वस्तु
 को नहीं कहते हैं।

“मैं” और “तू” दोनों प्राण और शरीर से बहुत बड़े बड़े हैं, क्योंकि
 यह दोनों अहम् अंश हैं।

अहं के शब्द से केवल मनुष्य का बोध नहीं होता है जिससे तू यह समझ
 ले कि केवल प्राणों के कारण यह शब्द आता है।

एक वार तू इन जलिक जगत् से ऊपर चला जा और अपने अन्दर एक
 दूसरे ही जग का निर्माण कर।

इस जीवन में अद्वैत के ध्रम से जो अपने आपको बृथक कर ले। देवने
 के समय मन दो आँख वाले बन्दु बन जाता है।

उस समय पथिक बीच से विदुष्यन हो जाता है और वह हवा के समान
 ईश्वर से जा मिलता है

अल्लिख स्वर्ग के समान है और यह संसार नरक के तुल्य है। इन
 दोनों के मध्य में मैं और तू के निदिष्ट नाना के समान पड़े
 हुए हैं।

जो परकेतर जीव ई परत पर पेया ।
 न मानइ नीज दुम्मे मज्जाते केय ॥
 इमा दुम्मे शरीरना अज मनो पुन ।
 कि अँ पर वस्तर जानी तने पुन ॥
 मनो तू तूँ न मानइ इगियाना ।
 चे मसजिद वे कनिश वे देवाना ॥
 ताअणुन तुलाए नइमील हर ऐन ।
 जो सातो मरत ऐनत गोन तुए ऐन ॥
 जो सुतना पेश न पुनइ रादे सालिक ।
 अमरचे दारत क नई मद्दालक ॥
 यक अज दाए हुगत दर गुजश्तन ।
 दोम सदएए हस्ती दर नवश्तन ॥
 दरी मराइद यके शुद जम्नो अहराद ।
 जो वादिद सारी अन्दर ऐने आराद ॥
 तु अँ जमइ कि ऐने बइदत आमद ।
 तु अँ वादिद कि ऐने कसरत आमद ॥

जब यह भेद भाव मिट जायगा उस समय धर्म और शून की आशाएँ भी शेष न रहेंगी ।

धर्म ग्रन्थों की सारी बातें केवल तेरे अहंकार पर निर्भर हैं । तू समझता है कि अहं तेरे प्राणों और शरीर के साथ बंधा हुआ है ।

जब “ मैं ” और “ तू ” तेरे बीच में न रह जायेंगे उस समय मन्दिर, मस्जिद और गिरजा सब तेरे लिये समान हो जायेंगे ।

तेरे मन में केवल यही भ्रम “ मैं ” और “ तू ” घुसा हुआ है । जिस समय यह भ्रम मिट जायगा, तू निर्मल हो जायगा ।

पथिक को बहुत दूर नहीं चलना है । हां, उसके मार्ग में विघ्न बाधाएँ अवश्य बहुत हैं ।

तुम्हें केवल दो बातों का स्मरण रखना उचित है । एक तो यह कि तू ममत्व की बाधा को दूर कर दे और दूसरी अस्तित्व के मैदान को पार कर जा ।

इस स्थान में मूल और शाखाएँ सब एक ही दिखलाई पड़ रही हैं । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि इकाई के अंक में सभी सम्मिलित हैं ।

तू मूल है अथवा इकाई । तू ही मुख्य वस्तु है । तुम्हीं में से सब की उत्पत्ति है ।

ईरान के सूफ़ी कवि

जे अफ़आले निकोहीदा शवद पाक ।
 चो इदरीसे नवी दर चारुम अफ़लाक ॥
 चो यावद अज सिकाते वद नजाते ।
 शवद चूँ नूह अजौँ साहव हयाते ॥
 नमानद कुदते जुजवीश दर कुल ।
 खलील आता शवद साहव तवरकुल ॥
 इरादत वा रजाए हक़ शवद ज़म ।
 रवद चूँ मूसा अन्दर वावे आज़म ॥
 जे इल्मे ख़ेशतन यावद रिहाई ।
 चु ईसिये नवी गरदद समाई ॥
 देहद यक वारा हस्ती रा वताराज ।
 दर आयद अज पए अहमद वमोराज ॥
 रसद चूँ नुक्तए आख़िर बअज्वल ।
 दराँजा ना नलक गुंचद न नुरसल ॥
 कसे मईँ तनामत्त कच तमानी ।
 कुनद वा जाजगी कारे गुलामी ॥

वह अपकर्मों को छोड़कर, नवी के समान चौथे आकाश पर पहुँच जाता है।

जब वह कुभावनाओं और कुकर्मों से छुटकारा पा जाता है तब उसका जीवन नूह से भी अधिक हो जाता है।

उस समय सुकर्मों के प्रभाव से उसका बुरा स्वभाव मिट जाता है और वह खलील पैग़म्बर के समान ईश्वर पर विश्वास करने वाला हो जाता है।

उसको इच्छायें बिलकुल ईश्वर के रँग में रँग जायेंगी और वह हज़रत मूसा के समान नदी के बड़े दर्वाजे में प्रविष्ट हो जायगा।

उनमें जो अहंकार वर्तमान रहता है उसे भूलकर वह ईसा नवी के समान आकाशवन् हो जाता है।

वह अपने अन्तित्व को बिलकुल भिटा देता है और अहमद के पीछे पीछे चलकर स्वर्गीय मोदियों तक पहुँच जाता है।

वह वहाँ इन प्रकार पहुँच जाता है किम प्रकार कुच का अन्तिम बिन्दु सबसे पहले बिन्दु तक पहुँच जाता है।

पूरा मनुष्य वही है जो मरू होने पर और बड़ा होने पर भी नश्व रहता है और सेवा में निमग्न रहता है।

चो शुद्ध वर दायरह सालिक मुक्तमल ।
 रसद हस नुक्तए आतिर वषय्यल ॥
 दिगर वारह शवद मानिन्दे परकार ।
 वराँ कारे कि अन्वल वूद वरकार ॥
 चो कर्द ऊ कतआ यक वारा मसाकत ।
 नेहद हक वर सरश ताजे सिलाकत ॥
 तनासुख न बुवद ईँ कज रूप माना ।
 जहूरा तस्त वर गेने तजल्ला ॥
 "वक्रद सालू व कालू मन निहायद" ।
 "ककीला हियर रुजूओ इलल विदादा" ॥

सवाल

कि शुद्ध वर सिरेँ वहदत वाकिक आखिर ?
 शिनासाए चे आमद आरिक आखिर ?

जवाब

कसे वर सिरेँ वहदत गश्त वाकिक ।
 के ऊ वाकिक न शुद्ध अन्दर मवाकिक ॥

जब पथिक ने वृत्त के अन्दर अपना मार्ग पूर्णकर लिया तो फिर वह वहीं चला जायगा जहाँ से उसकी उत्पत्ति हुई थी ।

उस समय वह पुनः परकार की भाँति वही कार्य करने लगेगा जो पहले करता था ।

जिस समय वह एक बार अपना पथ पार कर चुकता है उस समय ईश्वर उसके शिर पर साम्राज्य का मुकुट रख देता है ।

वह आवागमन से मुक्त हो जाता है । क्योंकि अर्थानुसार यह बहुत से प्रकाश हैं जो उसी के प्रकाश से प्रकाशित रहते हैं ।

लोगों ने प्रश्न किया कि अन्त क्या है ? उनको उत्तर दिया गया कि आदि को लौटना ही अन्त का नाम है ।

प्रश्न

अद्वैत का रहस्य कौन जानता है ? ज्ञानी ने किस गुप्त भेद को पहचाना है ?

उत्तर

अद्वैत के रहस्य को वही मनुष्य जान सका है, जो अपने मार्ग में कहीं ठहरा नहीं है । जो अविश्रान्त रूप से आगे ही बढ़ता गया है ।

ममाने ता न मरना न मरुत ॥
 इति नानादि विन नापद न ॥
 ममाने नृणां आत्म नमस्तथा ॥
 अदात्त कर्मन अत्र नै इम ननुत्तम ॥
 न स्वस्ती पाको अत्र यदात्तमो यनजाय ॥
 होयम अत्र भासित्त वत्र शरे वसमान ॥
 सेयम पाको अत्र अयत्तमके जमानन्त ॥
 कि वा नै आरमो ह्यम नृ वरीमस्त ॥
 नदात्म पाकिर सिरेस्व अत्र यैर ॥
 कि ईं जा युन्वहो मो मरररा येर ॥
 दरि कृ करे हासिल ईं उदात्त ॥
 शरद वेशक सजावारे युनाजाव ॥
 नृ वा स्वर् रा वकुली वर न वाजी ॥
 नमाजद के शरद दरगिज नमाजी ॥
 नो जातव पाक मररद अत्र हर्मा शेन ॥
 नमाजद मररद अंगद करुनुलायेन ॥

जब तक तू सांसारिक प्राणियों को दूर न करेगा तब तक तेरे श्रेय में प्रकाश न आवेगा ।

इस संसार में कक्षाष्ट अजने वाली चार वस्तुएँ हैं और उनसे पृथक होने के भी चार उपाय हैं ।

सत्र से पृथक गन्धी और हानि पहुँचाने वाली वस्तुओं से बचना है ।
दूसरा—अपकर्मों और बुरी इच्छाओं के जाल से पृथक रहना है ।

तीसरा—ऐसी बुरी आदतों से अपने आपको बचाना है, जिनके कारण मनुष्य पशु हो जाता है ।

चौथा—अपने रहस्य को दूसरों के हस्ताक्षेप से विल्कुल पवित्र रखना है । यहाँ पर उसकी चाल समाप्त हो जाती है ।

जिस मनुष्य ने उपर्युक्त ढङ्ग से कार्य करके अपने आपको पवित्र बना लिया है, वह निस्सन्देह ईश्वर से वार्त्तालाप करने योग्य हो जायगा ।

ऐ प्रार्थी ! तेरी प्रार्थना उस समय तक प्रार्थना न होगी, जिस समय तक अहङ्कार तेरे हृदय से विल्कुल न मिट जायगा ।

जब तू सब प्रकार की मलीनता से रहित हो जायगा, तब तेरी प्रार्थना सुनी जायगी ।

नमानद दरमियाना हेच तमीज्ज।
 शवद मारुफो आरिफ जुमला चक चीज्ज ॥
 वराए अकल तौरे दारद इन्ताँ।
 कि विश्नासद वदाँ असरारे पिन्हाँ ॥
 वसाने आतश अन्दर संगो आहन।
 निहादस्त ऐ चिद अन्दर जानो दर तन ॥
 चो वरहम ओफ्तादो संगो आहन।
 जे नूरश हर दो आलम गरत रोशन ॥
 अजाँ मजमू पैदा गरदद ईं राज्ज।
 चो वे शुनीदी वेरौ वाख्द वा परदाज्ज ॥
 तुई तू नुस्खए नक्शो इलाही।
 वेजो अज्ज खेश हर चीजे के खाही ॥

सवाल

कुदामी नुक्तता रा नुक्तस्त अनलहक़।
 चे गोई हर जए वूद' आँ मुज्जन्वक़ ॥

उस समय मार्ग में कोई रोड़ा न रह जायगा। उपासक तथा उपास्य में कोई अन्तर न रहेगा।

बुद्धि के अतिरिक्त मनुष्य के पास एक ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा वह रहस्यों का उद्घाटन करता है।

जिस प्रकार ईश्वर ने पत्थर और लोहे के भीतर अग्नि को छिपाकर रक्खा है, उसी प्रकार उस शक्ति को भी मनुष्य के अन्दर छिपा दिया है।

जब वह पाषाण और लोहा दोनों आपन में टकराए तब उनसे अग्नि उत्पन्न हुई, जिसके प्रकाश ने दोनों जहान प्रकाशित हो गये।

उन दोनों के टकराने में (मिलाप में) रहस्य प्रगट होता है, जिस प्रकार अग्नि प्रगट हो जाती है।

जब तूने यह समझ लिया तब अब जाकर अपना विचार कर, ईश्वर के भेद सब तुझी में गुप्त हैं, जो कुद नु चहे श्वयम अपने ही भीतर खोज कर देख ले।

जवाब

अनलङ्क करते असदारता मुनलक ।
 गजुज हक कीस्त ता गोयइ अनलङ्क ॥
 हमां जरीते आजम दम जो मंसूर ।
 तु लाही मस्तगीरो खाइ मदाभूर ॥
 ररीं तसगीहो तहलीलन्द तागम ।
 नरीं मानो हमीं पाशन्द कागम ॥
 अगर लाही कि नर तो मरुद आसा ।
 व इभिन्न री अरा गक रह कैरोला ॥
 जो करवी खोरातन रा पंचा कारी ।
 तु हम हलाज नार ईं दम वरारी ॥
 बरावर पंचण पिंदारत अज मोरा ।
 निदाण वादेदुल कदआरे वे न्योरा ॥
 निदा मी आयद अज हक वर वधामत ।
 चेरा मरती तु मौकूके क्यामत ॥
 दरादर वादिण ऐमन कि नागाह ।
 दरखते गेपदत इमी अनलाह ॥

उत्तर

अहं ब्रह्मास्मि (मैं सत्य हूँ) यह कहना, सारे रहस्यों को बिल्कुल खोल देना है। ईश्वर के अतिरिक्त यह शब्द किसके मुख से निकल सकते हैं ?

इस संसार के सम्पूर्ण कण मन्सूर ही के समान हैं। उन्हें चाहे मतवाला समझ ले अथवा नशे में चूर।

वे सदैव इन्हीं शब्दों का उच्चारण करते हैं और इन्हीं शब्दों पर उनका जीवन निर्भर है।

यदि तू यह चाहता है कि इस बात का समझना तेरे लिये सरल हो जावे, तो उनमें लिखे हुए इन वाक्यों का अध्ययन कर डाल।

जब तू अपने आप को रुई के समान धुन डालेगा तब धुना के समान यही शब्द जोर जोर से तुझ में से निकलेंगे।

अभिमान की रुई को अपने कान से निकाल डाल और अद्वैत की आवाज को सुन।

ईश्वर की ओर से तेरे लिये सदैव यही आवाज आ रही है कि तू प्रलय को बाट क्यों जोह रहा है।

तू ऐमन की घाटी में चला आ। वहाँ प्रत्येक वृत्त तुझसे यही कहेगा कि "ईश्वर मैं ही हूँ।"

ईरान के सूफ़ी कवि

रवा वाशद अनल्लाह अज्र दरखते ।
 चिरा न जुवद रवा अज्र नेक वजते ॥
 हर औ कस रा कि अन्दर दिल शके नेस्त ।
 यकौ दानद के हस्ती जुज्र यके नेस्त ॥
 अनानीयत जुवद हक़ रा सज़ावार ।
 के हूँ ग़ैवस्तो ग़ायब वख़ो पिन्दार ॥
 जनावे हज़रते हक़ रा दुई नेस्त ।
 दरौ हज़रत मनो माओ तुई नेस्त ॥
 मनो माओ तुओ ऊ हस्त यक चीज़ ।
 कि दर वहदत न वाशद हेच तमीज़ ॥
 हराँ कू ख़ाली अज्र चूनो चेरा शुद ।
 अनलहक़ अंदरो सौती सदा शुद ॥
 शवद वा वच्चे वाकी ग़ैर हालिक ।
 यके गर्दद सुलोको सैरो सालिक ॥
 हुलोलो इत्तेहाद अज्र ग़ैर ख़ेज़द ।
 वले वहदत हमाँ अज्र सैर ख़ेज़द ॥

एक वृत्त का जब यह कहना कि "ईश्वर मैं ही हूँ," ठीक है तब एक पवित्रात्मा का कथन क्यों न सत्य हो ।

जिस मनुष्य के हृदय में कोई सन्देह नहीं है वह यह बात पूर्ण रूप से समझ लेगा कि सन् वास्तव में एक ही है ।

अपने आप को 'आप' कहना ईश्वर को ही शोभा देता है । इनके भीतर 'वह' का शब्द गुप्त है । परन्तु सन्देह और घमंड का चिह्न भी नहीं दिखलाई पड़ता ।

ईश्वर के नामने द्वैत का चिह्न भी नहीं पाया जाता । उनका मकार में, मैं 'हम' और 'तू' इत्यादि कुछ भी नहीं है ।

मैं और तू इत्यादि में कोई भेद नहीं है । इकताई में 'कर्म' प्रकार का अन्तर होता ही नहीं है ।

जिस मनुष्य के हृदय में यह जाने दूर हो गइ, उसका अन्तरात्मा से 'अहम ब्रह्मास्मि' की आवाज़ निकलने लगती है ।

वह सदैव रहने वाली सृजन से सम्बन्ध स्थापन कर लेता है और उसके प्रति अपने तथा परमात्मा से एक ही हो जाने है ।

उससे मिल जाने अथवा अन्तर्निहित हो जाने का अर्थ यह है जव हृदय में अहंकार रहता है ।

नाशयन्तु नृप जय हस्तो नृप जय ।
 न हृत्त पन्था न पन्था ना नृप नृप ॥
 नृपलो नृप इनेदार इना मोहात्मनः ।
 किं नृप नृपन नृपे ऐने नृपानन्द ॥
 वज्रुदे गस्तो नृपान इर नृपान्ना ।
 न नृप नृप नृपान्ना ऐने नृपान्ना ॥

तमसील

नेन्द आइना अन्दर नृपान्ना ।
 नृपे नेनिगर ने नृपे आ शयसे नृपान्ना ॥
 नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥
 न नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥
 नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥
 नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥
 नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥
 नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥
 नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥
 नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे नृपे ॥

परन्तु अहंकार को त्याग देने से विरहूल ईश्वर से साक्षात् होता है। एक मनुष्य था जो जीवन से पृथक् हो गया। न तो ईश्वर ही मनुष्य बना और न मनुष्य ही ईश्वर में मिला।

यहाँ पर उसमें लीन हो जाने का विचार करना ही पथ से विचलित होना है। क्योंकि इकताई में दूसरी बात सोचना अनुचित है।

सांसारिक मनुष्यों और जीवों का अस्तित्व दिखावे में है। यह सोचना कि जो वस्तु दिखलाई पड़ती है वही जीवन है, ठीक नहीं है।

उदाहरण

तू अपने सम्मुख दर्पण रख ले और उसमें अपने को निरख, तुझे एक दूसरा ही मनुष्य दिखलाई पड़ेगा।

पुनः एक बार ध्यान से देख और विचार कि यह प्रतिबिम्ब क्या वस्तु है। न यह है और न वह है।

फिर यह प्रतिबिम्ब है क्या? जब मैं अपने आप में मिला हूँ, मुझे नहीं ज्ञात होता कि मेरी छाया कैसी होगी।

मृत्यु, जीवन के साथ मिलकर एक कैसे हो जावे। प्रकाश और अन्धकार कभी साथ साथ नहीं रहते।

जब भूत काल नहीं है तब भविष्य के महीने और वर्ष क्या होंगे? जो कुछ है सो यही वर्तमान है।

ईरान के सूफ़ी कवि

चके मुक्तस्त वहमी गशता सारी ।
 तु ऊ रा नाम कर्दा महेरे जारी ॥
 जुज अज मन अन्दरों सहरा दिगर नीस्त ।
 वेगो वा मन कि ता सौतो सदा चीस्त ॥
 अरज फानोस्त चो हर जो नुरकव ।
 वेगो कै वूद या खुद हू नुरकव ॥
 जे तूलो अर्ज वज उमकस्त अजत्तम ।
 वजूदे चँ पिरीद आवद जे ऐदाम ॥
 अर्जो जिन्सस्त अल्ले जुन्ला आलम ।
 चो दानिस्ती वे चार ईना फअलजम ॥
 जुज अज हक नेस्त दीगर हस्ती अलहक ।
 हुवलहक गोयो गर जाही अनलहक ॥
 नमूदे वहमी अज हस्ती जुदा हुन ।
 न वेगाना खूद रा आशना हुन ॥

सवाल

चैरा मखलक रा गोवन्द वासिल ।
 सुलोको सैरे ऊ चँ गशत हासिल ॥

एक सन्देह ही तेरे साथ बराबर लगा हुआ है। तूने उता का नाम बदल
 हुई नदी रक्खा है।
 मेरे अतिरिक्त इस वन में कोई दूसरा नहीं है। फिर यह आसउ और
 ध्वनि क्या है ?

इच्छा एक भिट जाने वालो वस्तु है और कार्य उनी ने निजकर बना है।
 फिर यह बतला कि वह इच्छा कहाँ थी और यह उभय किस प्रकार हुई ?
 जितने भी शरीर हैं जितने भी आकार हैं, वह सब खन्दा, पीड़ित और
 नाटाई से मिलकर बने हैं
 इनके मिटा देने से किना प्रकार के आनन्द या काम किन प्रकार होय ?
 सारे संसार से वेवल यह एक मात्र वस्तु है
 जब न हमें ...

जवाव

विसाले हक जे खल्कीयत जुदाईस्त ।
 जे खुद वेगाना गश्तन आशनाईस्त ॥
 चो मुमकिन गरदे इमकाँ वर फिशानद ।
 वजुजा वाजिव दिगर चीजो नमानद ॥
 वजूदे हर दो आलम चू खयालस्त ।
 कि दर वक्ते, वक्ता ऐने जवालस्त ॥
 न मखलूकस्त आँ कू गश्त वासिल ।
 न गोयद ईं सखुन रा मर्दे कामिल ॥
 अदम कै राह यावद अन्दरीं वाव ।
 चे निस्वत खाक रा वा रञ्जे अरवाव ॥
 अदम चे नुवद कि वा हक वासिल आयद ।
 वजो सैरो सुलूके हासिल आयद ॥
 अगर जानत शवद जीं माथानी आगाह ।
 वेगोई दर ज्रमाँ असतशफरउझाह ॥
 तु मादूमो अदम पैवस्ता साकिन ।
 व वाजिव कै रसद मादूमे मुमकिन ॥

उत्तर

ईश्वर से मिलना संसार से पृथक् हो जाना है और अपने आप से कोई दूसरा ही हो जाना, यह उसकी पहचान है ।

जब सम्भव इस संसार को गर्द को भाड़ देता है तो सत् के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता है ।

दोनों लोक और परलोक का अस्तित्व एक विचार मात्र है, जो कि मृत्यु के समय पूर्ण रूप से नष्ट हो जाता है ।

जिसने ईश्वर को पा लिया वह सांसारिक मनुष्यों में नहीं रह जाता है । पूर्ण इस बात को कभी भी नहीं कहेगा कि मैं मनुष्य हूँ ।

मनुष्य को इस दर्वाजे से उस पार निकल जाने का मार्ग कब मिलेगा ? उस महान् परमेश्वर के साथ मिट्टी का क्या सम्बन्ध है ?

मनुष्य क्या वस्तु है जो वह ब्रह्म के साथ जा मिले और उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध प्रकट करे ।

यदि यह बात तेरी समझ में आजावे, तो निस्सन्देह उसी क्षण तू यह कहेगा कि मैं ईश्वर हूँ ।

तू नाशवान् है और तू इसी रूप में सदैव एक स्थान पर ठहरा हुआ है । यह नाशवान् कब सत् तक पहुँच सकेगा ।

न दारद हेच जौहर वे अरज़ ऐन ।
 अरज़ चे बुवद कि ला यवक़ी ज़मानेन ॥
 हकीमे कंदरी रह कर्द तसनीफ़ ।
 वतूलो अर्जो उमक़श कर्द तारीफ़ ॥
 हयूला चीस्त जुज़ मादूम मुतलक़ ।
 कि मी गर्दद वदो सूरत मोहक़क़ ॥
 चे सूरत वे हयूला जुज़ अदम नेस्त ।
 हयूला नीज़ वे ऊ जुज़ अदम नेस्त ॥
 शुदा अजसामे आलम जी दो मादूम ।
 कि जुज़ मादूम अजीशाँ नेस्त मालूम ॥
 वेर्षो माहीघते रा वे कमो वेश ।
 न मादूमो न मौजूदस्त दर जेश ॥
 नज़र कुन दर हकीक़त सूए इमकाँ ।
 कि वे ऊ हस्ती आमद ऐने नुक़साँ ॥
 वजूद अन्दर कमाले खेश सारीस्त ।
 ताआयुनहा उमूरे एतवारीस्त ॥
 उमूरे एतवारी नेस्त मौजूद ।
 अदद विसयारो यक चीज़स्त मादूद ॥

कोई जवाहर बिना परीक्षा के सच्चा (पूर्ण) नहीं कहा जा सकता है ।
 और सत् है क्या वस्तु ? वह, जो दो ज़मानों तक शेष न रहे ।

जिस विद्वान ने इस विषय में कोई पुस्तक लिखी है उसने त्रिष्टिक की
 परिभाषा लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई से की है ।

जिस अस्तित्व के द्वारा आकार सूरत उत्पन्न होती है वह क्षणभंगुरता के
 अतिरिक्त और क्या वस्तु है ? जब आकार बिना पंचभूतों के कुछ भी नहीं है
 तो वह भी आकार विहीन कुछ भी नहीं है ।

इस संसार के जितने भी मान पिराड हैं वे इन्हीं दो वस्तुओं से बने हैं ।

उनके विषय में नाश के अतिरिक्त और कोई बात ज्ञात नहीं है ।

एक अद्वैत को देखो जिसमें भाव अभाव तथा उपात्त और लय कुछ
 भी नहीं है ।

देखो इस क्षणभंगुर संसार का तर्क ध्यान में, कारण, कि उसके बिना
 यह जीवन विल्कुल अपूर्ण है

अस्तित्व अपनी विशेषताओं के वृत्त के भीतर चकर रहा है ।
 वास्तविकताएँ जितनी भी हैं वह सब विश्वासा बाते हैं

विश्वासी बाते यहाँ पर नहीं हैं गिनतों बहुत हैं परन्तु गिनतों का

जहाँरा नेस्त हस्ती जुञ्ज मजाजी ।
सरासर हाले ऊ लह वस्तो बाजी ॥

तमसोल दर अतवारे वजूद

बुखारे मुर्तका गर्दद जे दरिया ।
व अमरे हक कियो आयद वसेहरा ॥
शुआये आफताव अन्न चर्खे चारुम ।
फेरो वारद शवद तरकीव बाहम ॥
कुनद गरमी दिगर रह अदमे वाला ।
दरावेजद वदो आँ आवे दरिया ॥
चु वाईशौ शवद खाको हवाजिम ।
वरुँ आयद नवाते सञ्जो खुरम ॥
गिजाये जानवर गरदद तवदील ।
खुर्द इनसाँ व यावद वाञ्च तहलील ॥
शवद यक नुञ्जता वगरदद दर अतवार ।
वञ्जाँ इन्साँ शवद पैदा दिगर वार ॥
चु नूरे नस गोया दर तन आमद ।
यके जिस्मे लतीको रौशान आमद ॥

इस संसार में जीवन स्थायी नहीं है। उसकी तमाम बातें खेल कूद के समान हैं।

जीवन में उलटफेर

ईश्वर की आज्ञा से एक वाष्प नदी में उठती है और समतल भूमि में आकर नीचे गिर पड़ती है।

चौथे आकाश खण्ड से सूर्य की किरणें उस मैदान में आकर पड़ती हैं और फिर आपस में गुथ जाती हैं।

धूप पड़ने पर ताप उत्पन्न होता है और फिर वह गर्मी ऊपर को जाना चाहती है। उस समय नदी का जल उसमें सम्मिलित हो जाता है और उससे लिपट जाता है।

जब उस ताप और जल के साथ मिट्टी और वायु भी मिल जाती हैं तब वह एक हरी-भरी घास के रूप में परिणत हो जाती है।

वही पशुओं की आशा हो जाती है। मनुष्य खाता है और फिर वह पच जाता है।

वही एक बिन्दु के रूप में परिणत हो जाता है और जन्म मरण के चक्र में पड़कर पुनः मनुष्य के रूप में उत्पन्न होता है।

जब बोलने वाला मनुष्य के अन्दर एक चिनगारी के समान प्रवेश करता है तब शरीर के अन्दर से एक सुन्दर प्रभा प्रस्फुटित होती है।

ईरान के सूफ़ी कवि

शब्द तिम्रलो जवानो कोहो कम पीर ।
 वदानद डल्मो राये फइमो तदवीर ॥
 रसद अंगह अजल अज हचरते पाक ।
 खद पाकी बेवाको खाक वा खाक ॥
 हमा अजजाए आलम चो नवातन्द ।
 कि एक कत्रा जे दरयाये हयातन्द ॥
 जमाँ चूबगुजरद बरुये शब्द वाज ।
 हमह अंजाम ईशाँ हमचु आशाज ॥
 खद हर एक अजी शौँ सूर मरकज ।
 कि न गुजारद तवीयत जूर मरकज ॥
 चु दरियायस्त वहदत लेक पुर लूँ ।
 कजो खेजद हचाराँ मौजे मजनुँ ॥
 नगर ता कत्रए वारों जे दरिया ।
 चगूना याकू चन्दों शक्लो अस्मा ॥
 बुजारो आवो वारों व नमो गिल ।
 नदातो जानवरो इनसाने कामिल ॥

वह बालक, युवा और वृद्ध होता है और विद्या, ज्ञान और प्रयत्न के मूल्य को समझने लगता है ।

उस समय ईश्वर के द्वार से मृत्यु का आगमन होता है । पवित्रता, पवित्रात्मा के पास चली जाती है और मिट्टी, मिट्टी में मिल जाती है । संसार के जितने भी परमाणु हैं वह सब इसी जीवन रूरी सरिता को बूँदों के समान हैं ।

जब उसपर मंनार का भार आ पड़ता है तब उसका समस्त फल, उसका अन्न आदि के समान लुप्त जाता है ।

उन बिन्दुओं में से प्रत्येक अपने मूल्य को तर्क आकषिप्त होने लगता है कारण कि मानवों इन्का उसकी तरफ मन्त्रेय नहीं रहती है

अद्वैत एक नहीं के समान है परन्तु वह नदी में से से बने हुए हैं । उसमें से सहायों नहीं मजदूरी के समान निकलते हैं यह तो देखो कि अप के एक बिन्दु के उस नहीं से से तरकब का किनारे पाव और किनारे रूप धरता है

वाए, जल वषा नहीं और पाव मिट्टी और इनके समान

र और पूर्ण मनुष्य

हमा गक कजा तूद आभिर दर अजल ।
 कजो गुर्गी हमा अरागा मुमस्मिल ॥
 जहो अज अजलो नासो गखो अतराम ।
 चु अँगक कजा ही आ आशाजो अंजाम ॥
 अजल तू दर रसद दर चको अजजम ।
 शवद हस्ती हमद दर नेस्ती गुम ॥
 चु मौजे अर अनद गर्दद जदने नमम ।
 यकी गरदद कि ई लाम लयान वाला लमस ॥
 लयाल अज पेश अर खेजद अयक गार ।
 नमानद गौर हक दर दारे द्यार ॥
 तुरा कुरवे शवद अँ लख्या हासिल ।
 शवे भ तूतूई आ दोस्त वाभिल ॥
 विसाल ईजायगद रका खयालस्त ।
 चु दौरख पेश अर खेजद विसालस्त ॥
 मगो मुमकिन जे हदे खेश अगुजरत ।
 न ऊ वाजिव शुदो न वाजिव ऊ गशत ॥

यह सब प्रारम्भ में एक ही बिन्दु थे, परन्तु फिर उसी बिन्दु ने इतने रूप धारण कर लिये ।

बुद्धि, इच्छा, आकाश, शरीर इत्यादि संसार को यह समस्त वस्तुएँ आदि से लेकर अन्त तक सब उसी बिन्दु के समान हैं ।

जब आकाश और तारों को मृत्यु आ उपस्थित होगी तब इनका अस्तित्व नाश रूपी गहरे गर्त में विलीन हो जायगा ।

जब एक लहर आक्रमण करती है तब सारा संसार मिट जाता है और यह विश्वास हो जाता है कि जो कुछ भी था वह स्वप्न था ।

ऐसे विश्वास के उपरान्त समस्त विचार यकायक सामने से विलीन हो जाते हैं और फिर इस सूने घर में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह जायगा ।

तुम्हको उस समय ऐसा सुयोग प्राप्त होगा कि तू बिना ही किसी साधना के अपने मित्र से जा मिलेगा ।

इस स्थान पर एक दूसरे के बीच में आजाने के कारण मिलने और अलग होने का विचार हृदय से जाता रहता है ।

जब यह अटकान मिट जाता है, मिलन सहज हो जाता है ।

ईरान के सूफी कवि

- हराँको दर मझानी गश्त कायक ।
निगोयद की बुवद कल्बे हक्रायक ॥
- हजारों निशाहे दारी खाजा दर पेश ।
बरो आमद खुद खुद रा चीनदेश ॥
- जे बहसे जुचो कुल व निरश इन्साँ ।
वगोयम यकवयक पैदा व पिन्हाँ ॥

सवाल

विस्वाल वाजिवो मुमकिन वहम चीस्त ।
हदोसे कुर्वो वादो वेशो कम चीस्त ॥

जवाब

जे मन विशानो हदीसे वे कम वेश ।
जे नचदीकी तो दूर उक्तादी अज जेश ॥
जु हस्ती रा जहूरे दर अदन खुद ।
अजांजा कुर्वो वादो वेशो कम खुद ॥

तू यह न समझ कि मनुष्य अपनी सीमा से आगे बढ़ जायगा । न तो वह सन् हुआ ही है और न होवेगा ही ।
जो मनुष्य आत्मज्ञान से पूर्ण हो गया है, वह यह बात नहीं कहेगा कि ऐसा होना सन् का उलट जाना है ।

मित्र ! तुम्हारे ही सन्मुख सहस्रों जीवधारो उत्पन्न हुए हैं और मृत्यु के प्राप्त बने हैं । इस बात को छोड़ कर तनिक अपने ही आवागमन पर विचार करो ।
मनुष्य के जीवन-मरण के इन रहस्यों को एक एक करके न्योचकर तथा छिपा कर दोगो । उसका वर्णन करेगा

प्रश्न

ईश्वर और मनुष्य का सम्बन्ध में 'मनुष्य' शब्द का अर्थ क्या है ? 'निकट, दूर, अधिक और कम' में क्या अन्तर है ?

उत्तर

मैं बिना किसी प्रकार के प... स्वयं निकट होने के... जब इस सन्दर्भ में 'कम' शब्द का अर्थ... अधिकता और कम का अन्तर...

करीब आनस्त हूरा रश नूरस्त ।
 गर्दी नेस्ती कज हस्त दूरस्त ॥
 अगर नूरे जे नूर हरे तो रसानद ।
 तुरा अज हस्तिण सुद वा रदानद ॥
 चे हासिल मर तुरा चीं पूरे नानुद ।
 कबो गाहत लीको गद रिजा सुद ॥
 नतरसंद नू कसे हूरा शानसद ।
 कि तिलज सागण सुद मी हूरसद ॥
 नमानद लीक अगर गरदी खाना ।
 नकाहद अणे तारी ताजयाना ॥
 तुरा अज आतिशो दोजस्त चे बाकस्त ।
 कि अज हस्तीण तनो जाँ तो पाकस्त ॥
 जे आतिशो चर सालिस बर करोजद ।
 चु शैरी ने चुवद अन्दर वै चे सोजद ॥
 तोरा मेरज तो चीजे नेस्त दर पेश ।
 वलेकिन अज वजूदे सुद वीन्देश ॥

निकट वह है जिस पर प्रकाश की वर्षा होती रहती है। और दूर वह वस्तु है जो ईश्वर से बहुत दूर नाशवान् जगत् के एक कोने में पड़ी हुई है।

यदि उस प्रकाश की कुछ किरणें तुम्ह तक पहुँच जायें तो तू अपने जीवन के बन्धनों से मुक्त हो जावे।

तुम्हको अपने इस अस्तित्व से क्या प्राप्त होता है? केवल भय और निराशा।

जो मनुष्य उसके भेद को जानता है, वह उससे कभी भय नहीं खाता। अपनी छाया से बच्चे ही डरा करते हैं।

यदि तू अपने मार्ग पर चल खड़ा हो तो फिर तुम्हें किसी प्रकार का भय नहीं रहेगा। तू अरव-अश्व के समान शीघ्र गामी है। तुझे कोड़े की क्या आवश्यकता है।

तुझे नर्क की अग्नि से विल्कुल ही डरना न चाहिये। तेरा शरीर और तेरे प्राण संसार की मलिनता से स्वयं पवित्र हैं।

अग्नि में पड़ने से स्वर्ण निखर जाता है। परन्तु जिस सोने में किसी प्रकार की मिलावट अथवा खराबी न हो उसे अग्नि में डाला ही क्यों जावे? वह जलेगा ही नहीं।

तेरे सम्मुख तुम्हें छोड़कर और कोई भी वस्तु नहीं है, किन्तु तू आप ही सोच कि वास्तव में तू है कैसा।

ईरान के सूफ़ी कवि

अगर दर खैरतन गर्दी गिरफ़ार ।
 हिजाबे तो शवद आलम वयक वार ॥
 उई दर दौरै हम्ती जुच्चे असफल ।
 उई वा नुक्तए वहदत मुक्ताविल ॥
 ताअय्युनहाय आलम वर तो तारीस्त ।
 अचाँ गोई चो शैताँ हमचो मन कीस्त ॥
 अचाँ गोई मरा खुद इख्तयारस्त ।
 तने मन मुरफ़वो जानम सवारस्त ॥
 जमामे तन वदस्ते जाँ निहादंद ।
 हमाँ तकलीफ़ वर मन चाँ निहादंद ॥
 न दानी कीँ हमाँ आतिशपरस्तीस्त ।
 हमाँ ईँ आफ़तो शोखी जे हस्तीस्त ॥
 कुदामी इख्तियार ऐ मर्दे आफ़किल ।
 कसे रा कू बुवद विज्ञात वातिल ॥
 चो वूदे तुस्त यकसर हम चो नावूद ।
 वेगोई कैख्तियारत अज कुजा वूद ॥
 कसे कूरा वजूद अज खुद न वाशद ।
 वजाते खेश नेको वद न वाशद ॥

तुझमें यदि किसी प्रकार का पर्दा है, तो वह केवल तेरा अभिमान है ।
 इस जन्म मरण के चक्र में—इस मर्त्य-लोक में तू सब से नीचा है ।
 और अद्वैत प्राप्त करने का अधिकारी भी तू ही है ।

तू इस संसार के बंधनों में विश्वास रखता है, इसी कारण तू शैतान के
 समान कहा करता है कि यह मेरा निवास स्थान है ।
 और मैं स्वतंत्र हूँ । मेरा शरीर अश्व है और मेरी आत्मा इसका
 सवार है ।

शरीर को लगाम आत्मा के हाथ में दे दी है । इसी कारण मुक्त पर यह
 सब बन्धन डाले गये हैं ।

तू नहीं जानता कि यह सब कुछ अग्नि की पूजा करने के समान है यह
 सारी विपत्तियाँ और टिटाइयाँ केवल इसी जीवन के कारण हैं

हे ज्ञानवान तेरा जीवन कालक है इन पर भी तू अपने अधिकार
 प्रकट करता है

बता, तेरे वह अधिकार कन कन के हैं और उनका अन्त-व भी क्या
 है ? और वह तुझे कहीं प्राप्त होकर

जिन मनुष्य का कोई अन्त-व नहीं होता उसे अपने से भलाई अधवा
 पुराई किन प्रकार ज्ञान हो सकता है

के रा वीदो तू अन्दर दर दो आलम ।
 कि यकदम सादमानी याता वेसाम ॥
 कि रा शुद हासिल आखिर जुन्ला उन्मीद ।
 कि माँद अन्दर कमाले ता बजावीद ॥
 मरातिव वाकिओ अहले मरातिव ।
 बजरे अने हक बजाओ गालिव ॥
 मो अस्सिर हक शनास अन्दर हमा जाय ।
 जे हदे खैशतन वेहूँ मनेह पाय ॥
 जे हाले खैशतन पुरेसीं कदर चीस्त ।
 बजाँ जा वाजदाँ कहले कदर कीस्त ॥
 हरों कस रा कि मजाहद गैरे जत्रस्त ।
 नवी फरमूद कु मानिन्दे गत्रस्त ॥
 चुनों काँ गत्र यजदाँ अरुमन गुफ़ ।
 हमाँ नादाने अहमक मा व मन गुफ़ ॥
 वमा अकआल रा निस्वत मजाजीस्त ।
 निसव खुद दर हकीकत लहओ वाजीस्त ॥

इन दोनों जहानों में तूने कभी किसी को चण भर के लिये भी सुखी होते देखा है ?

किस मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हुई हैं ? और कौन सदैव एक ही समान रहा है ?

ईश्वरीय आज्ञा के अनुसार चलने वाले ही लोग शेष हैं और उसका भय सभी को लगता है ।

सभी स्थानों में ईश्वर को ही प्रत्येक कार्य का कर्त्ता-धर्त्ता मान और निर्धारित सीमा से आगे मत बढ़ ।

तू अपना हाल देख ले और फिर अपने हृदय से पूछ कि प्रतिष्ठा क्या वस्तु है ।

फिर यह सोच कि प्रतिष्ठा किसे प्राप्त होनी चाहिये ।

और कौन ऐसे मनुष्य हैं जो प्रतिष्ठित होने योग्य हैं । जिस मनुष्य का धर्म बल प्रयोग के अतिरिक्त कोई और वस्तु है, नबी के कथनानुसार वह अग्नि पूजक है ।

इसी प्रकार मूर्ख ने "मैं" और "हम" को समझ लिया है । कार्यों के सम्बन्ध में हमारे यहाँ कह दिया गया है ।

ईरान के सूफी कवि

निवृद्धी तू कि फ़ैलत आकरीदन्द ।
 तुरा अज़ वहे कारे वरगुज़ीदन्द ॥
 बकुदरत बेसवव दानाए वर हक़ ।
 वइल्मे ख़ेश हुक्मे करदा मुतलक़ ॥
 मुक़द्दर ग़श्ता पेश अज़ जानो अज़ तन ।
 वराए हर यके कारे मोअय्यन ॥
 यके हफ़सद हज़ारों साल ताअत ।
 बजा आवुदों गरदन तौक़े लानत ॥
 दिगर अज़ मासियत नूरो सफ़ादीद ।
 चो तोवह कर्द नामे इरिफ़ा दीद ॥
 अजयतर आँके ई अज़ तर्के मामूर ।
 शुदज़ अलताफ़े हक़ मरहूमो मराफूर ॥
 मरां दीगर ज़े मनहा ग़श्ता मज़ऊँ ।
 च़ेहे फ़ेले तोवे चन्दो चे वो चूँ ॥
 जनावे कित्रेआई ला उवालीस्त ।
 मुनज्ज़ह अज़ क़यासाते ख़ियालीस्त ॥

और वास्तव में मनुष्य के सभी प्रयत्न सारहीन खिलवाड़ के समान हैं ।
 जिस समय तू नहीं था उसी समय तेरे कार्यों को उत्पन्न कर दिया था
 और तुझे एक विशेष काम के लिये चुन लिया था ।

बिना किसी कारण के परमेश्वर ने अपने आप एक आज्ञा दे डाली ।
 शरीर और प्राणों से पहले ही प्रत्येक मनुष्य के लिये एक न एक कार्य
 निर्धारित कर दिया जाता है ।
 एक मनुष्य ने सात लाख वर्ष तपस्या की पर उस पर भी उसके गले में
 धर्महीनता का तौक़ पड़ गया ।

दूनरे ने पाप और अपकर्म करके भी पवित्रता और ईश्वरीय प्रकाश को
 प्राप्त किया ।
 जब उसने अपने इन कर्मों के त्याग देने की प्रतिज्ञा की तब उसने
 ईश्वर के प्रिय मनुष्यों की सूची में अपना नाम पाया ।
 तबसे बड़े आश्चर्य की बात यह हुई कि यह दुसरा, ईश्वरीय आज्ञा को
 न मानने पर भी ज़मा कर दिया गया परन्तु वह पाहला केवल मना कर देने
 ही के कारण ज़मा नहीं किया गया ।
 तेरे कार्यों का कहना हा उवा है, जो न तो बग़ान ही में आ सकते है
 और न उनकी गणना हा की जा सकता है । ईश्वर दिव्यकुल जापवात है वह
 वचारा की बुराईया में परे है

ने वृद्ध चन्द्र अज्ञान में भई जा चुक ।
 कि ई गस्ता मोहम्मद व आँ अज्ञान ॥
 कसे कू वा सुदा नूरो चरा सुक ।
 जो गुरारिक हजरतश रा ना मया सुक ॥
 वरा चेद के पुरसद अज्ञ ने व नू ।
 न वाशद एनराच अज्ञ चन्द्र मौज ॥
 सुदानन्दी हर्मा दर किनयाईन ।
 ने इन्लत लायके किले सुदाईन ॥
 सजावारे सुदाई सुफो कहुस ।
 बलेकिन चन्द्रगी दर सुतो सजल ॥
 करामत आदमी रा जे इज्जतारीस्त ।
 न आँ कूरा नसीबे इज्जतारीस्त ॥
 न वृदा हेन सौरश हरगिच अज्ञ सुद ।
 पसंगाह पुरसदरा अज्ञ नेको अज्ञ वद ॥
 नदारद इज्जतारी गस्ता मामूर ।
 जहे मिसकीं कि सुद सुखतारो मजबूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सन्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे घुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य की भलाई केवल धैर्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा घुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

ईरान के सूफ़ी कवि

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त ।
न जौरस्ती कि महज्जे लुल्को फज़लस्त ॥
य शरअत ज़ाँ सनय तकलीफ़ करइन्द ।
कि अज़ ज़ाते खुदत तारीफ़ करइन्द ॥
चो अज़ तक़ोफ़े हक़ आजिज़ शर्ही तू ।
वयक़नार अज़ मियाँ वहँ रवी तू ॥
यकुल्लीयत रेहार्इ यावी अज़ ख़ेश ।
गनी गर्नी वहक़ ऐ मर्दे दुरवेश ॥
बेरो जाने पिदर तन दर क़च्चा देह ।
वतक़दीराते यज़दानी रज़ा देह ॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्तौ ।
सदत वाला ख़वद अज़ वहे अन्मौ ॥
जे शोबे क़ार वह आयद वरक़राञ्च ।
वरुए वह वनशीन्द वहन बाञ्च ॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़रूरती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुम्हारे इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तुम्हारे अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तु ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगोगा, उन समय बीच में से निकल जायगा।

और अदकार को विन्दुक छोड़ देना है। उन समय तु ईश्वर को ग़ौर माल माल हो जायगा।

मिय मुसलमान का हक़ है। सलामतुम्हारे काय करत। यरुम्न कर दे।
अनार मरत उनको यरुम्न कर दे। यरुम्न कर दे। उनमें
यरुम्न कर

उदाहरण

मैं न समझता हूँ कि स्वयं को न्यायिनी अज्ञान के अज्ञान में रखने का उद्देश्य क्या है।
मैं न समझता हूँ कि स्वयं को न्यायिनी अज्ञान के अज्ञान में रखने का उद्देश्य क्या है।
मैं न समझता हूँ कि स्वयं को न्यायिनी अज्ञान के अज्ञान में रखने का उद्देश्य क्या है।

मैं न समझता हूँ कि स्वयं को न्यायिनी अज्ञान के अज्ञान में रखने का उद्देश्य क्या है।

चे वृद्ध अन्दर अजल ऐ मर्द ना अह ।
 कि ई गश्ता मोहम्मद व आँ अवूजेह ॥
 कसे कू वा खुदा चूनो चरा गुफ़ ।
 जो मुशरिक हजरतश रा ना सज्जा गुफ़ ॥
 वरा जेवद के पुरसद अज्र चे व चुँ ।
 न वाराद एतराज्र अज्र वन्दो मौजू ॥
 खुदावन्दो हमाँ दर कित्रयाईस्त ।
 न इल्लत लायके केले खुदाईस्त ॥
 सज्जावारे खुदाई लुत्को कहस्त ।
 वलेकिन वन्दगी दर शुक्रो सत्रस्त ॥
 करामत आदमी रा जे इज्जतरारीस्त ।
 न आँ कूरा नसीवे इख्तयारीस्त ॥
 न वृद्धा हेच खैरश हरगिज्र अज्र खुद ।
 पसंगाह पुर्सदश अज्र नेको अज्र वद ॥
 नदारद इख्तयारो गश्ता मामूर ।
 जहे मिसकीं कि शुद मुखतारो मजवूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के प्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह स्वसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य को भलाई केवल धैर्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उसका यश पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अर्जाव हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

ईरान के सूफ़ी कवि

न जुल्मस्ती कि एने इल्मो अदलस्त ।
न जौरस्ती कि महजे लुल्को फज़लस्त ॥
व शरअत ज़ाँ सवय तकलीफ़ करदन्द ।
कि अज़ ज़ाते खुदत तारीफ़ करदन्द ॥
चो अज़ तक़ीके हक़ आजिज़ शर्वा नू ।
वयक़द्वार अज़ मिथाँ वहँ रवी नू ॥
वकुल्लीयत रेहाई यात्री अज़ ख़ेश ।
ग़नी ग़नी वहक़ ऐ मर्दे दुरवेश ॥
बेरो जाने पिदर तन दर क़चा देह ।
वतक़दीराने यज़दानी रज़ा देह ॥

तमसोल

शुनीदम मन कि अन्दर गाहे नेस्तों ।
सदक़ वाला ख़द अज़ वहँ धम्माँ ॥
जे शीवे कार वह़ आयद वरकरात्र ।
वरूप वह वनशीनद दहन दात्र ॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और जान
कह सकते हैं। यह अवर्द्धनी नहीं कहा जा सकती है। इसके विरुद्ध इस
इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।
तुम्हें इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने को आजा हो गई है कि
तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आशानुसार चलने लगेगा, तब तबत तीर में से निकल
जायगा।

और अहंकार को त्रिभुज छोड़ देगा। हे तू कहे! तब तबत [

ईश्वर को पाकर सालानाल हो जायगा।
प्रिय पुत्र! जो ईश्वर की आशानुसार चले तबत तबत तबत [

सपना शरीर उलझे धर्मेश्वर के चरणों में तबत तबत तबत [

मान रह।
उदाहरण
मैंने तुला है कि तबत तबत तबत तबत तबत तबत तबत [

चे वृद्ध अन्दर अञ्जल ऐ मर्द ना अह ।
 कि ई गश्ता मोहम्मद व आँ अचूजेद ॥
 कसे कू वा खुदा चूनो चरा गुफ़ ।
 जो मुशरिक हज़रतश रा ना सजा गुफ़ ॥
 वरा जेवद के पुरसद अज्ज चे व चू ।
 न वाशद एतराज्ज अज्ज वन्दो मौजू ॥
 खुदाचन्दी हर्मा दर कित्रयाईस्त ।
 न इल्लत लायके केले खुदाईस्त ॥
 सजावारे खुदाई खुफ़ो कहस्त ।
 वलेकिन वन्दगी दर शुको सत्रस्त ॥
 करामत आदमी रा जे इज्जतरारीस्त ।
 न आँ कूरा नसीवे इत्तयारीस्त ॥
 न वृदा हेच खैरश हरगिज्ज अज्ज खुद ।
 पसंगाह पुर्सदश अज्ज नेको अज्ज वद ॥
 नदारद इस्तयारो गश्ता मामूर ।
 जहे मिसकी कि शुद मुखतारो मज्जूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण हो ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य की भलाई केवल धैर्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

ईरान के सूफी कवि

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त ।
न जौरस्ती कि महजे लुल्मो फजलस्त ॥
व शरअत जौँ सवव तकलीफ करइन्द ।
कि अज ज्ञाते खुदत तारीफ करइन्द ॥
चो अज तकौफे हक आजिज शर्वा नू ।
वयकरार अज मियाँ वहँ रवो नू ॥
वकुल्लीवत रेहई चाचो अज खेश ।
गनी गर्दी वहक पे मर्दे दुरवेश ॥
बेरो जाने पिदर तन दर कजा देह ।
वतकदोराने वज्रदानी रजा देह ॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर गाहे नेम्नाँ ।
मदक वाला स्वद अज वहे धम्नाँ ॥
जे शीवे कार वह आवद वरकराव ।
वरुए वह बनशीनद दहन बाव ॥

इनको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् हमें न्याय और मान
कह सकते हैं। यह ज़ुल्मस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम
इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुम्हें इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने को कहा जा रहा है कि
तुम्हें अपने सामाजिक रूप को पहचान ले।

अब तुम्हें ईश्वरीय आशानुसार चलने लगेंगे। उन सब वस्तुओं से दूर रहें
जिनसे तुम्हें अज्ञानता है।

चे वूद अन्दर अजल ऐ मर्दे ना अह ।
 कि ई गश्ता मोहम्मद व आँ अवूजेह ॥
 कसे कू वा खुदा चूनो चरा गुफ़ ।
 जो मुशरिक हज़रतश रा ना सज़ा गुफ़ ॥
 वरा ज़ेवद के पुरसद अज़ चे व चू ।
 न वाशद एतराज़ अज़ वन्दे मौज़ ॥
 खुदावन्दी हमाँ दर कित्रयाईस्त ।
 न इल्लत लायके फ़ेले खुदाईस्त ॥
 सज़ावारे खुदाई लुत्फो कहस्त ।
 वलेकिन वन्दगी दर शुक्रो सत्रस्त ॥
 करामत आदमी रा ज़े इज़तरारीस्त ।
 न आँ कूरा नसीवे इख्तयारीस्त ॥
 न वूदा हेच खैरश हरगिज़ अज़ खुद ।
 पसंगाह पुर्सदश अज़ नेको अज़ वद ॥
 नदारद इख्तयारो गश्ता मामूर ।
 ज़हे मिसकीं कि शुद मुखतारो मजवूर ॥

ऐ मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में कौन सी ऐसी बात होगई थी जिसके कारण एक मुहम्मद बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की दलील पेश की उसकी आज्ञा के ग्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण ही नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य की भलाई केवल धैर्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उमका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र दोनों ही है ।

ईरान के सूफी कवि

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त ।
 न जौरस्ती कि महजे लुत्को फजलस्त ॥
 व शरअत जौं सवव तकलीफ करइन्द ।
 कि अज्र जाते खुदत तारीफ करइन्द ॥
 चो अज्र तकौफे हक आजिअ शवी तू ।
 वचकवार अज्र मियाँ वहाँ रवी तू ॥
 वकुल्लीयत रेहाई चावी अज्र खेश ।
 गनी गर्दी वहक ऐ मर्दे दुरवेश ॥
 बेरो जाने पिदर तन दर कजा देह ।
 वतकदौराते यज्रदानी रजा देह ॥

तमसील

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्तौं ।
 सदक वाला खद अज्र वहे अन्माँ ॥
 जे शीये क़ार वह आयद वरकराव ।
 वरुए वह वनशीन्द देहन वाव ॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़बर्दस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुम्हको इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तू अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उस समय बीच में से निकल जानगा।

और अहंकार को विल्कुल छोड़ देगा। हे त्वागी! उस समय तू ईश्वर को पाकर मालामाल हो जायगा।

प्रिय पुत्र! जा ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करना आरम्भ कर दे। अपना शरीर उसको अर्पण कर दे और यह जो उल्ट करता है उसमें प्रसन्न रह।

उदाहरण

मैंने सुना है कि स्वामी में जीवियों जनों के अन्दर में त्यों के गन्धीर गर्भ में से निकल कर उसकी सतत पर जा जाती हैं।

इसके उपरान्त मुँह खोलकर फिर पानी के ऊपर बैठ जाती हैं।

ने पूरे पन्धर अक्षरों में लिखा था ।
 कि ईश्वर ने मोक्षदाता की प्रशंसा में
 कहे हुए वाक्यों में जो शक्ति
 जो मुझसे अधिक शक्ति है वह मुझसे
 परमेश्वर के पुत्रों परमेश्वर के पुत्रों
 न परमेश्वर परमेश्वर परमेश्वर मोक्षदाता
 मुझसे अधिक शक्ति है कि प्रशंसा में ।
 न इन्द्रियों के लिये कहे हुए शक्ति में
 मुझसे अधिक शक्ति है कि प्रशंसा में ।
 परमेश्वर परमेश्वर परमेश्वर मोक्षदाता
 मुझसे अधिक शक्ति है कि प्रशंसा में ।
 परमेश्वर परमेश्वर परमेश्वर मोक्षदाता
 मुझसे अधिक शक्ति है कि प्रशंसा में ।
 परमेश्वर परमेश्वर परमेश्वर मोक्षदाता
 मुझसे अधिक शक्ति है कि प्रशंसा में ।
 परमेश्वर परमेश्वर परमेश्वर मोक्षदाता
 मुझसे अधिक शक्ति है कि प्रशंसा में ।

हे मूर्ख ! मनुष्य के आरम्भ में हीन ही ऐसी बात हो गई थी जिसके
 कारण एक मुझदाता बन गया और दूसरा शैतान ।

जिस मनुष्य ने ईश्वर के सम्मुख किसी प्रकार की वृत्तिलिपि की उसकी
 आज्ञा के प्रहण करने में आनाकानी की ,

उसने गोया कई देवताओं के पूजक के समान उसे बुरा कहा । तुमसे
 किसी बात का उत्तर मांगना उसी को शोभा देता है ।

सेवकों का किसी प्रकार की आनाकानी करना अनुचित है ? ईश्वर की
 ईश्वरता इसी में है कि वह सबसे बड़ा है । उसके कार्यों के कारण ही
 नहीं सकते ।

दया अथवा क्रोध परमात्मा को ही शोभा देता है । मनुष्य को भलाई
 केवल धैर्य धारण करने और ईश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकाश करने ही में है ।

मनुष्य को प्रतिष्ठा केवल इसीलिये नहीं प्राप्त होती है कि वह अधिकारी
 बनता है । परन्तु वह मनुष्य प्रतिष्ठित हो जाता है जिसका अधिकार में कोई
 भाग नहीं है ।

मनुष्य स्वयम् अपने प्रति किसी प्रकार की भलाई नहीं कर सकता और
 फिर ईश्वर उससे भलाई अथवा बुराई के विषय में प्रश्न करेगा ।

उसका यहाँ पर अपना कोई अधिकार नहीं है । उसे केवल कार्य करने की
 आज्ञा मिली है । बेचारे मनुष्य का अजीब हाल है । वह स्वतन्त्र और परतंत्र
 दोनों ही है ।

ईरान के सूफ़ी कवि

न जुल्मस्ती कि ऐने इल्मो अदलस्त ।
 न जौरस्ती कि महजे लुल्को फ़जलस्त ॥
 व शरअत जाँ सबव तकलीफ़ करदन्द ।
 कि अज़ ज़ाते खुदत तारीफ़ करदन्द ॥
 चो अज़ तक़ीके हक़ आजिज़ शर्वा तू ।
 वयक़वार अज़ मियाँ वहँ रवा तू ॥
 वकुल्लीयत रेहाई यावो अज़ ख़ेश ।
 गनी गर्नी वहक़ ऐ मर्दे दुरवेश ॥
 बेरो जाने पिदर तन दर क़ज़ा देह ।
 वतक़दीराने यज़दानी रज़ा देह ॥

तमसीत

शुनीदम मन कि अन्दर माहे नेस्ताँ ।
 सदक़ वाला रवद अज़ वहै अन्माँ ॥
 ज़े शीचे क़ार वह आयद वरक़राज़ ।
 वरूप वह वनशीनद दहन वाज़ ॥

इसको अत्याचार कदापि नहीं कह सकते। वरन् इसे न्याय और ज्ञान कह सकते हैं। यह ज़रूरस्ती नहीं कही जा सकती है। इसके विपरीत हम इसे दया और भलाई के नाम से पुकार सकते हैं।

तुम्हें इसीलिये धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है कि तुम्हें अपने वास्तविक रूप को पहचान ले।

जब तू ईश्वरीय आज्ञानुसार चलने लगेगा, उन समय बीच में से निकल जायगा।

और अन्कार को विन्यस्त छोड़ देगा। हे 'अमी' ! उन समय तू ईश्वर को पाकर मालमाल हो जायगा।

किये हुए...
 प्रभु...

बुन्दारे गुरनका गरुद ते दरिया ।
 करो वारु वा गेहे हक नत्राजा ॥
 चकद अन्दर दहानश कवण वन्द ।
 शवद वस्ता वहाँ ऊ वसद वन्द ॥
 खद वा कारे दरिया वापले पुर ।
 शवद आँ कवण वारो यके दर ॥
 वकार अन्दर खद गव्यास दरिया ।
 वजो वारु वरु लुळ लद लाला ॥
 तने नू सादिलो हस्ती चु दरियास्त ।
 बुदारश कैजो वारो इस्मे इस्मास्त ॥
 सारु गव्यासे ईं वहे अजीमस्त ।
 कि ऊरा सद जवाहिर दर गलीमस्त ॥
 दिल आमद इस्म रा मानिन्द यक जर्क ।
 सदक वर इस्मे दिल सोतस्त व हर्क ॥
 नकस गर्दद रवो चू वरु लामा ।
 रसद जू हरकहा वरगोरो सामा ॥

नदी से भाप ऊपर उठती है और फिर नीचे ही बरस जाती है। ईश्वर की कृपा से सीप के मुख में कुछ बूँदें टपक जाती हैं।

बस उसका मुख फिर इस प्रकार बन्द हो जाता है जैसे उसमें सैकड़ों ताले डाल दिये गये हों।

प्रसन्नता के साथ सीप पुनः नदी की तह में चली जाती है और वह बूँदें एक बड़े मोती के रूप में परिणित हो जाती हैं।

पनडुव्या—डुवकी लगाकर तह में पहुँचता है और उस उज्ज्वल मोती को बाहर ले आता है।

तेरा शरीर तट है और जीवन सरिता के समान है। उस सरिता की भाप ईश्वर है और उसके नामों का ज्ञान वर्षा है।

बुद्धि इस बड़ी नदी में डुवकी लगाने वाली है। सहस्रों मोती उसकी भोली में आ जाते हैं।

हृदय, ज्ञान के लिये एक वर्तन के समान है। शब्द और अक्षर, हृदय की ज्ञान शक्ति के सीप हैं।

श्वास इस प्रकार चलती है, जैसे चपला—चपल गति से। और उससे बातें सुनने वाले के कानों तक पहुँचती हैं।

वले कारी कि अज आत्रो गिल आमद ।
 न चूँ इल्मस्त काँ करे दिल आमद ॥
 मियाने जिस्मो जाँ वनिगर चे फर्कस्त ।
 कि ईं रा गर्व गीरो आँ चु शरकीयत ॥
 अर्जीजा वाजदाँ अहवाले आमाल ।
 वनिस्वत वा उल्मे कालो वामा हाल ॥
 न इल्मस्त आँके दारद मेले दुनयई ।
 कि सूरत दारद आला नीस्त मानयई ॥
 नगरदद जमा हरगिज इल्म वा आज ।
 मलक खाही सगज खुद दूर आँजाज ॥
 उल्मे दीं जे इखलाक करिस्तत ।
 नवाशद दर दिले कू सग सरिस्तत ॥
 हदीसे मुसतफा आखिर हर्मानस्त ।
 नेको वशुना कि अलवत्ता चुनीनस्त ॥
 दुहँ सानग चूँ हस्त सूरत ।
 करिस्ता नयावद अन्दरुग ऊरत ॥

परन्तु यह मिट्टी और जल के मिश्रण का कार्य उस ज्ञान के समान नहीं है जो हृदय से प्राप्त होना है ।

बौद्धिक ध्यान में देख कि शरीर और प्राण में कितना अन्तर है । यदि एक पूर्ण है तो दूसरा परिचय ।

यही में तू इस ज्ञान की पहचान कर कि कौन सा कार्य तुझे किस ओर लिये जा रहा है । बौद्धिक ज्ञान और अनुभवजन्य ज्ञान के अन्तर पर दृष्टि डाल ।

जो ज्ञान संसार की ओर ले जाता है उसे ज्ञान के नाम से कदापि मन्वी-भिन नहीं कर सकते हैं । कारण कि उसका अस्तित्व अवरय है, परन्तु उसमें किसी प्रकार का आशय नहीं पाया जाता ।

ज्ञान वाक्य और उच्छ्वा में परे है । यदि तू देवता बनना चाहता है तो तुने का (उच्छ्वाओं को) अपने पास से दृष्टा है ।

आग्नि-ज्ञान—देवताओं का ज्ञान है । यह उस मनुष्य को प्राप्त नहीं हो सकता है, जो तुने के अज्ञान स्वभाव रखता है ।

वन्दे वा वही भाव है । आग्नि-ज्ञान प्रथम की अग्निम शिवा यही है । इच्छा-ज्ञान में मृत कर सकते हैं कि निम्नन्दे देवता ही है ।

चित्तों पर नै—जहाँ इस ज्ञान का अभाव है, देवता आ ही नहीं सकते ।

निकाहे मानवी उपताद दर दीं ।
 जहाँरा नप्रसे कुल्ली दाद कारीं ॥
 अजीशाँ मे पिदीद आयद फसाहत ।
 उत्तमो नुक्को एखलासो सवाहत ॥
 मलाहत अज्र जहाने वेमिसाली ।
 दर आमद हमचो रिन्दे ला उवाली ॥
 वशहीरस्तानेश नेकोई अलम जद ।
 हमह तरतीव आलम रा वहमजद ॥
 गहे वर रखश हुस्न ऊ शहसवारस्त ।
 गहे वा तैरो नुक्के आवदारस्त ॥
 चु दर शखसस्त खानन्दश मलाहत ।
 चु दर नुक्कस्त गोयन्दश फसाहत ॥
 वलीओ शाहो दुरवेशो पयम्बर ।
 हमह दर तहते हुक्मे ऊ मसखखर ॥
 दरूने हुस्न रूप नीकू आँ चीस्त ।
 न आँ हुस्नस्त तनहाई गो आँ चीस्त ॥
 जुज्र अज्र हक़ मी न आयद दिलरुवाई ।
 कि शिरकत नेस्त कस रा दर खुदाई ॥

उनका सम्बन्ध आन्तरिक रूप से धर्मानुसार हो गया और इन्द्रियों ने सारे संसार को मेहर में दे दिया ।

उन्हीं से आनन्द प्रदायिनी बातें, सुन्दर स्वभाव तथा गुण उत्पन्न होते हैं । इसके उपरान्त इस विलक्षण संसार से लावण्य एक मस्त और मतवाले के समान प्रकट हुआ ।

उसने सौन्दर्य-प्रदेश में अपनी विजय-पताका फहरा दी और संसार के सम्पूर्ण ज्ञान को भुला दिया ।

कभी तो वह घोड़े पर आसन जमाए हुए दिखलाई देता है और कभी सुन्दर और मनोमोहक वार्त्तालाप की तीक्ष्ण तलवार हाथ में लिए हुए दृष्टिगोचर होता है ।

यदि वह किसी मनुष्य में है तो उसे मधुरता कहते हैं ।

सिद्ध, सम्राट साधु और सन्यासी सब उसी की अज्ञानुसार चलते हैं ।

सुन्दर मुख में कौनसी बात है ? यदि वह केवल सौन्दर्य ही नहीं है तो और क्या वस्तु है ?

ईश्वर के पास से यदि वह नहीं आया है तो उसमें मादकता कहीं से आती है । वह केवल उसी की देन है । उसकी सम्पत्ति में कोई हिस्सेदार नहीं है ।

दिगर चारा शवद पैदा जहाने ।
 वहर लहजा जमीनो आसमाने ॥
 वहर लहजा जवाँ ईं कोहना पीरस्त ।
 वहरदम अन्दरो व हशरो वशीरस्त ॥
 दरो चीजे दो सायत मनीआयद ।
 दराँ लहजा कि मी मीरद वे जायद ॥
 वलेकिन तामुतुलकुवरा न ईनस्त ।
 कि ईं वूमे अमल वाँ योम हीनस्त ॥
 अजाँ ताईं वसे फुरकत जीनहार ।
 वनादानो मकुन खुद राजे कुषहार ॥
 नजर वकुशाय दर तकसीलो जमाल ।
 निगर दर सायतो रोजो महो साल ॥

तमसील

अगर खाही कि ईं मानी वेदानी ।
 तोरा हम हस्त मरकव जिन्दगानी ॥
 जे हर चे अन्दर जहाँ अज शेत्रो वाला अस्त ।
 मिसालश दर तनो जाने तो पैदास्त ॥

इसके उपरान्त, दूसरी बार फिर एक संसार उत्पन्न हो जाता है और प्रत्येक क्षण में एक पृथ्वी और एक आकाश उत्पन्न होता है ।

क्षण भर में यह वृद्ध युवक हो जाता है । और प्रतिक्षण उसमें नवीनता की लहर दौड़ती रहती है ।

एक ही वस्तु अधिक समय तक उसमें नहीं रह सकती । जैसे ही उसकी मृत्यु होती है, वैसे ही उत्पत्ति भी हो जाती है ।

परन्तु इसको प्रलय नहीं कह सकते । इस दिन सर्कार के सम्मुख अपने कार्यों का विवरण नहीं देना पड़ता है ।

वरन् यह वह समय है जब कि कार्य किया जाता है । उस प्रलय में और इस संसार के जीवन तथा मरण में बहुत अन्तर है ।

सावधान्, मूर्खता में पड़कर ईश्वर से विमुख मत होना । तू थोड़े समय में बहुत करने पर अपनी दृष्टि लगाले और घन्टों, महीनों और वर्षों की अवस्था को देख ।

उदाहरण

यदि तू इस जन्म-मृत्यु सम्बन्धी रहस्य को समझना चाहता है तो अपने ही मृत्यु और जन्म को देख ।

इस संसार में ऊपर और नीचे की जो वस्तु है, उसका उदाहरण तेरे ही शरीर में वर्तमान है ।

जहाँ चूँ तुस्त यक शख्से मोअय्यन ।
 तू ऊ रा गश्ता चूँ जाँ ऊ तुरा तन ॥
 सेगूना नौये इन्साँ रा ममातस्त ।
 यके हर लहजा वाँ वर हत्वे ज्ञातस्त ॥
 दो दीगर दाँ ममाते इच्छियारीस्त ।
 शियुम मुरदन मरु रा इज्जीरारीस्त ॥
 चु मगोँ जिन्दगी वाशद मुक्काविल ।
 से नौ आमद हयातश दर सेह मंजिल ॥
 जहाँ रा नेस्त मगोँ इच्छियारी ।
 कि ईँ रा अज हना आलम तो दारी ॥
 वले हर लहजा मी गर्दद मुवदल ।
 दर आखिर हम शवद मानिन्दे अव्यल ॥
 हरआँचे आँ गर्दद अन्दर हथ पैदा ।
 चे तो दर नजआ नी हवेदा ॥
 तने तो चूँ जनीँ सर आसमानस्त ।
 हवास्त अंजुमो खुरशीद जानस्त ॥

संसार तेरे ही समान एक शरीर धारी मनुष्य है । तू ही उसका प्राण है और तू ही शरीर ।

मनुष्यों की मृत्यु तीन प्रकार की होती है । पहली यह है जो प्रतिक्षण होती रहती है और वह है उसकी जाति के अनुसार ।

दूसरी मृत्यु वह है जो अपने अधिकार की कही जा सकती है । परन्तु तीसरी मृत्यु लाचारी की मृत्यु है ।

जब मृत्यु और जीवन एक दूसरे के सम्मुख आते हैं, उस समय मनुष्य का जीवन तीन भागों में विभाजित हो जाता है ।

संसार स्वयम् अपनी इच्छा से ही मृत्यु का आवाहन नहीं करता है । यह अधिकार केवल तुम्हें ही प्राप्त है ।

परन्तु संसार प्रति क्षण बदला करता है और अन्तिम क्षण में भी पहले ही के समान रहता है ।

जो वस्तु जन्म लेने समय तुम्हमें अल्प हो जाती है, वह प्राण निकलने की अवस्था में तुम्हसे पृथक हो जाती है ।

तेरा शरीर पृथ्वी के समान है और शिर आकाश ही तरह । तेरी इन्द्रियों और इच्छायें तारागणों के समान हैं और तेरी आत्मा सूर्य के समान है ।

चु कोहस्त उस्तुखाँहाये कि सख्तस्त ।
 नवातस्त मूयो अतराकत दरख्तस्त ॥
 तनत दर वक्त मुर्दन अज नदामत ।
 वेलर्जद चू जर्मी रोजे क्रयामत ॥
 दिमारा आशुफाओ जॉ तीरा गर्दद ।
 ह्वासत हमचो अंजुम खीरा गर्दद ॥
 मसामत गर्दद अज खवै हमचो दरिया ।
 तू दरवै गार्का गश्ता वे सरोपा ॥
 शवद अज जॉ कनिश ऐ मर्द मिसर्की ।
 जे सुस्ती उस्तखाँहा चू पश्मे रंगी ॥
 वहम पेचीदा गर्दद साक़ वा साक़ ।
 हमा जुक़ शवद अज जुक़े खुद ताक़ ॥
 चो रूह अज तन वकुलीयत जुदा शुद ।
 जर्मीनत क़ाए सरूसक़ ला तुरा शुद ॥
 वदाँ मिनवाल वाशद कारे आलम ।
 कि तू दर खेश मे वीनी दरानाँदम ॥

तेरी मजबूत हड्डियाँ पर्वत के समान हैं और तेरे बाल बास हैं। यही नहीं, तेरे हाथ पैर भी वृक्ष के समान हैं।

मृत्यु के समय तेरा शरीर इस प्रकार काँपता है, जिस प्रकार प्रलय के दिन यह पृथ्वी काँपेगी।

इस समय तेरा मस्तिष्क बबड़ा उठता है और तेरे प्राणों के आगे अंधेरा छा जाता है। तेरी ज्ञानेन्द्रियाँ तारागणों के समान झिलमिलाने लगती हैं।

और तेरे शरीर के छिद्रों से पसीना बहने लगता है—भय के कारण। और तू संज्ञाशून्य होकर उसमें डूब जाता है।

हे दीन मनुष्य ! प्राण निकलते समय तेरी हड्डियाँ रंगे हुए ऊन के समान नर्म हो जाती हैं और तेरी पिंडलियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं।

तेरे शरीर के सब जोड़—सब बन्धन ढीले पड़ जाते हैं।

जिस समय प्राण शरीर से निकल जाते हैं उस समय तेरी हरी भरी पृथ्वी बंजर हो जाती है।

इस संसार का कार्य भी इसी ढंग से चलता है। जैसा कि तू मृत्यु के समय अपने अन्दर देखता है।

ईरान के सूफ़ी कवि

बका हक़स्तो वाकी जुन्ला कानीस्त ।
 वधानश जुन्ला दर सबज़ल नसानीस्त ॥
 चु कुल्लो मन अलौहा काँ वयाँ कर्दे ।
 लती खल्क इन जदीद हम अयाँ कर्दे ॥
 खुवद ईजादो एदामे दो आलम ।
 चु खल्को दासे नस्ते इन्ने आदन ॥
 हमेशा खल्के दर खल्के जदीदहन ।
 अगर्चे सुदते उमरश मदीदन्त ॥
 हमेशा कैजे कजल हक़ तआला ।
 खुवद दर शाने खुद अन्दर तजद्दा ॥
 अजाँ जानिव खुवद ईजादो तकनील ।
 वज्री जानिव खुवद हर लहज़ा तवदील ॥
 वलेकिन चँ गुज़रते ई तौर दुनिया ।
 बकाए कुल खुवद दर रोज़े उक़या ॥
 कि हर चीज़े कि थीनी विदज़्ज़करत ।
 दो आलम दारद अत्र मानी व नूरन ॥
 विनाले अव्वली एने शिराक़त्त ।
 मराँ दीगर जे इन्दज़ाद वाक़्तन ॥

तु कोदस्त उस्तुत्तौगिणे कि सत्त्वम् ।
 नवातस्त मूयो अतराक्त दरकास ॥
 तनन दर वक्त गुर्दन अज नशमन ।
 वेलाज्जि चू जमी रोजे कयामन ॥
 दिमाग आशुक्तायो जो नीरा गर्दद ।
 हवास्त हमनो अंजुम योरा गर्दद ॥
 मसामत गर्दद अज सबै हमनो दरिया ।
 तू दरवै शक्ति गस्ता वे सरोपा ॥
 शवद अज जो कनिश ऐ गर्द भिसती ।
 जे सुस्ती उस्तसांदा चू परमे रंगी ॥
 वहम पेचीदा गर्दद साक वा साक ।
 हमा जुक्त शवद अज जुक्ते सुद ताक ॥
 चो रुद अज तन बहुक्षीयत जुदा शुद ।
 जमीनत काण सत्सक्त ला तुरा शुद ॥
 वदो मिनवाल वाशद कारे आलम ।
 कि तू दर लेश मे बीनी दरानांदिम ॥

तेरी मजबूत हड्डियाँ पर्वत के समान हैं और तेरे बाल घास हैं। यही नहीं, तेरे हाथ पैर भी वृक्ष के समान हैं।

मृत्यु के समय तेरा शरीर इस प्रकार काँपता है, जिस प्रकार प्रलय के दिन यह पृथ्वी काँपेगी।

इस समय तेरा मस्तिष्क बचड़ा उठता है और तेरे प्राणों के आगे अँधेरा छा जाता है। तेरी ज्ञानेन्द्रियाँ तारागणों के समान भिलभिलाने लगती हैं।

और तेरे शरीर के छिद्रों से पसीना बहने लगता है—भय के कारण। और तू संज्ञाशून्य होकर उसमें डूब जाता है।

हे दीन मनुष्य! प्राण निकलते समय तेरी हड्डियाँ रंगे हुए ऊन के समान नर्म हो जाती हैं और तेरी पिंडलियाँ शक्तिहीन हो जाती हैं।

तेरे शरीर के सब जोड़—सब बन्धन ढीले पड़ जाते हैं।

जिस समय प्राण शरीर से निकल जाते हैं उस समय तेरी हरी भरी पृथ्वी बंजर हो जाती है।

इस संसार का कार्य भी इसी ढंग से चलता है। जैसा कि तू मृत्यु के समय अपने अन्दर देखता है।

ईरान के सूफ़ी कवि

वक्ला हक़स्तो वाक्की जुम्ला फ़ानीस्त ।
 वयानश जुम्ला दर सबउल मसानीस्त ॥
 चु कुह्लो मन अलैहा फ़ाँ वयाँ कर्द ।
 लती खल्क इन जदोद हम अयाँ कर्द ॥
 बुवद ईजादो एदामे दो आलम ।
 चु खल्को वासे नस्से इन्ने आदम ॥
 हमेशा खल्के दर खल्के जदीदस्त ।
 अगर्चे मुद्दते उमरश मदीदस्त ॥
 हमेशा फ़ैजे फ़जल हक़ तआला ।
 बुवद दर शाने खुद अन्दर तजह्ला ॥
 अजाँ जानिव बुवद ईजादो तकमील ।
 वर्जी जानिव बुवद हर लहज़ा तवदील ॥
 वलेफ़िन चू गुज़रते ई तौरे दुनिया ।
 वक्लाए कुल बुवद दर रोज़े उक़वा ॥
 कि हर चीज़े कि वीनी विफ़्ज़हरत ।
 दो आलम दारद अज़ मानी व सूरत ॥
 विसाले अव्वली एने फ़िराक़स्त ।
 मराँ दीगर ज़े इन्दलाह वाक़स्त ॥

इस संसार में सब के अतिरिक्त सभी वस्तुएँ नाशवान हैं। कुरआन में यही
 दिखलाया गया है।

संसार की सभी वस्तुयें क्षणिक हैं। परन्तु उन सबका सम्बन्ध नवीन
 जीवन से है।

दोनों ज़हानों का उत्पन्न करना और नाश करना, एक मनुष्य के चित्र
 बनाने और उसको मिटा देने के समान है।

मनुष्य ज्ञान में जो लाभ हो करेगा दे। परन्तु यह ज्ञान में नहीं किन्तु प्रहार का स्थान पर नहीं होगा है परिश्रम का नाम भी नहीं दे।

वहाँ पर प्रयोग कर्म आदि में भी ऐसा ही दिखलाई देता है, जैसी अन्त तक रहती है।

और वहाँ पर ईश्वर ही महिमा प्रकट रूप से शक्तिमान्तर होती है। वह ऐसा स्थान है, जहाँ पर संसार ही सम्पूर्ण गुण-वस्तुएँ प्रकट दिखलाई पड़ती है।

कायदा

जिस कार्य को तू पहले करता है वह कुछ कठिन-सा श्राव होता है। परन्तु बार बार करने से वही कार्य सरल हो जाता है।

उस कार्य के बार बार करने में लाभ ही अथवा हानि परन्तु तेरे मस्तिष्क में एक वस्तु पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी हो जाती है। अर्थात् उस कार्य के करने में जितनी भी वस्तुओं को तुझे आवश्यकता पड़ती है वे सब ज्ञान में आ जाती हैं।

यहाँ तक कि जिस प्रकार समय व्यतीत होने पर फलों में सुगन्ध आने लगती है उसी प्रकार उस कार्य के करने का स्वभाव पड़ जाता है।

ईरान के सूफ़ी कवि

अज्राँ आमोख्त ईसाँ पेशहारा ।
 वडाँ तरकीब कर्द अन्देशहारा ॥
 हमा अफ़आलो अक़नाले मुदख़्ख़र ।
 हवेदा गर्दद अन्दर रोचे महशर ॥
 चु उरियाँ गरदी अज्र पैराहने तन ।
 शवद ऐवो हुनर यक़वारा रौशन ॥
 तनत वाशद व लेकिन वे कुदूरत ।
 कि विनुभावद अज्रो चूँ आव सूरत ॥
 हमा पैदा शवद अँजा ज़मायर ।
 फ़ेरो रवाँ आयते तुवलसरायर ॥
 दिगर वारा ववफ़के आलमे ज़ास ।
 शवद अज़लाकेतो अजसामो अशज़ास ॥
 चुनाँ कज़ कुन्वते उनसुर दुराँजा ।
 मवालीदे से गाना गश्त पैदा ॥
 हमा अज़लाके तो दर आलमे जाँ ।
 गहे अनवार गरदद गाहे नीराँ ॥

इसी ढंग से मनुष्यों ने पेशों को लीखा है और इसी प्रकार उनकी गुलियों को सुलनाया है—उनकी बारीकियों को निकाला है। यह सब बातें जो तुम्हें इकट्ठी हो रही हैं नृत्य के समय सामने आ जावेंगी।

जब नू इस शरीर रूपी बख को पृथक करके नग्न हो जावेगा उस समय सम्पूर्ण भलाइयाँ और दुःखाइयाँ प्रकट हो जावेंगी। तैरा शरीर तो रहेगा परन्तु उसमें मज़ानता न होगी। उमने जच के समान सुरत दिखलाई देगी।

वही समय के भीतर किसी हुई मनी जाने प्रकट हो जावेंगी। पड़ी दर कर किना जावेंगी। इस परम स्तर को पद-

इसका बार तैरा अन्तराशरी के शरीर और मनुष्य के रूप में प्रकट हो जावेंगी। इस समय के अन्तराशरी के रूप में प्रकट हो जावेंगी।

इस समय के अन्तराशरी के रूप में प्रकट हो जावेंगी। इस समय के अन्तराशरी के रूप में प्रकट हो जावेंगी।

तत्रायुन मुरतफा गरदद जे हस्ती ।
 नमानद दर नजर वाला व पस्ती ॥
 नमानद मर्ग तन दर दारे हैवाँ ।
 वयक रँगी वरायद कालियो जाँ ॥
 बुवद पा व सरे तो जुमला चूँ दिल ।
 शवद साफी जे जुल्मत सूरते गिल ॥
 वे वीनी वे जहत हक़ रा तआला ।
 कुनद अज़ नूर हक़ वर तो तजल्ला ॥
 नदानम ता चे मस्तीहा कुनी तू ।
 दो आलम रा हमा वरहम जनी तू ॥
 सक़ाहुम ज़वोहुम चे बुवद वेअन्देश ।
 तहूरन चीस्त साफी गश्तन अज़ खेश ॥
 जेहे लज़ज़त जेहे दौलत जेहे जौक़ ।
 जेहे हैरत जेहे हालत जेहे शौक़ ॥
 खुशाआँदम कि मा वेखेश वाशेम ।
 शानीएँ मुतलक़ो दुर्वेश वाशेम ॥

उस समय वर्तमान संसार से तेरा विश्वास उठ जायगा । बड़ाई और छुटाई का विचार जाता रहेगा ।

उस लोक में शरीर की मृत्यु न होगी और शरीर तथा आत्मा दोनों का एक ही रंग हो जायगा ।

तू शिर से लेकर पैर तक दिल के ही समान हो जायगा और इस मिट्टी की मूर्ति के सामने का अन्धकार मिट जायगा ।

उस समय तुझे बड़ी सरलता के साथ उस महान् परमेश्वर के दर्शन होंगे । वह अपने प्रकार से तुझे प्रकाशित कर देगा ।

मैं नहीं कह सकता उस समय तुझे कैसी प्रसन्नता होगी और कैसे कैसे विचार तेरे हृदय में उठेंगे । उस समय तुझमें दोनों जहानों को उलट डालने की शक्ति विद्यमान होगी ।

उस समय तू यही सोचेगा आह ! ईश्वर ने कैसा अमृत पिला दिया । इस प्रकार पवित्रता प्रदान करने वाली क्या वस्तु है ? इस अहंकार को छोड़ देने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है ।

अहा ! किस मुख से उस आनन्द का और उस वैभव का वर्णन करूँ ?

वह कौनसी आश्चर्यमय घड़ी होगी, वह कौन सी सुखद अवस्था होगी जब हम विल्कुल अपने को भूल जायेंगे, चिन्ता से रहित होकर मतवाले बन जायेंगे ।

ईरान के सूफ़ी कवि

न दीं न अक़ल न तक्वा न इदराक ।
कितादा मस्तो हैरौ वर सरे खाक ॥
वहिश्तो खुल्दो हूर आँजा चे संजद ।
कि वेगाना दरौ खिलवत न गुंजद ॥
चु ख्यत दीदमो खुरदम अजाँ मै ।
नदानम ता चे जाहद शुद पस अजवै ॥
पए हर मस्तिए वाशद खुमारे ।
दरौ अन्देशा दिल खूँ गश्तनारे ॥

सवाल

क़दीमो मोहदिस अज्र हम चूँ जुदा शुद ।
कि ईं आलम शुद आँदीगर खुदा शुद ॥

जवाब

क़दीमो मोहदिस अज्र हम खुद जुदा नेस्त ।
कि अज्र हस्तस्त वाक़ी दायमानेस्त ॥
हमा आनस्तो ईं मानिन्दे अनकास्त ।
जुअ्र अज्र हक़ जुन्ला इस्मे वे मुसन्मास्त ॥

वह कौन सी शुभ घड़ी होगी जब हमारे पास धर्म, परहेजगारी और ज्ञान के नाम से कुछ भी न होगा और हम इस पृथ्वी पर मस्त पड़े हुए लोटते होंगे ?

स्वर्ग—वह सदैव आनन्द देने वाला जगत और अप्सराओं की वहाँ क्या गणना होगी ? उस स्थान पर किसी दूसरे का जाना हो ही नहीं सकता । जब मैंने तेरा मुखड़ा देख लिया और उस मदिरा का घूँट ले लिया तब मैं नहीं कह सकता कि आगे क्या होगा ।
मदिरा में मस्ती होती है, वह मतवाला बना देती है, परन्तु उसके उपरान्त नशा उतरता भी है और खुमार आता है । मेरे हृदय में नदैव यही चिन्ता व्याप्त है कि कहीं इस मस्ती के उपरान्त भी खुमार न आ जावे ।

प्रश्न

शाश्वत और नाशवान नश्वरों में प्रश्न क्यों हुआ और वह संसार तथा वह ईश्वर क्या होगा ?

उत्तर

शाश्वत तथा नाशवान दोनों नश्वरों में ही उपलब्ध हैं । प्रश्न उन्हीं में उपलब्ध नहीं है क्योंकि नश्वरों में ही शाश्वत भव कुछ है और वह नाशवान सदैव नष्ट होने वाला वस्तु है । आतारक किन्तु नाशवान सदैव नष्ट होने वाला वस्तु है ।

अदम मौजूद गर्द ई मुदास्ता ।
 वजूद अज रूप हस्ती लाग्नालास्त ॥
 ज आ ई गर्दो न ई शब्द आँ ।
 हमा इश्काल गर्द वर तो आगोँ ॥
 जहाँ खुद जुम्ना अमरे एनारीस्त ।
 ने आँ गफ जुम्ना कंदर दौर सारीस्त ॥
 बेरो बयक जुम्ना आतश बेगर्दी ।
 कि चीनी दागरा अज सुरअत आँ ॥
 यके गर्दद शुमार आयद बनानार ।
 नगर्दद वाहिद अज आदाद विसयार ॥
 हदीसे मा से वल्लादारा रदा कुन ।
 वअत्रले खेश आँरा ची जुदा कुन ॥
 चु शकदारी दरों कीँ चू खयालास्त ।
 कि या वहदत दुई गेने जलालस्त ॥
 अदम मानिन्दे हस्ती वृवद यकता ।
 हमा कसरत जे निस्वत गश्त पैदा ॥
 जहरे इखितलाफो कसरते शौँ ।
 शुदो पैदा जे वू कल्मूने इमकाँ ॥

सृष्टि की उत्पत्ति से सत् में किसी प्रकार का विकार नहीं आता । सत् से यह जगत उत्पन्न होता है, परन्तु इसमें और उसमें अन्तर है ।

सारी कठिनाइयाँ तेरे सम्मुख सरल हो जाती हैं । एक विन्दु के समान जो घुमाने पर बराबर घूमता रहता है यह संसार भी एक विश्वास के योग्य विषय है ।

एक आग की चिनगारी को लेकर घुमा । उसकी तीव्रता से एक वृत्त बन जायगा ।

यदि एक गणना में आजाए तो फिर यह न हो सकेगा कि उसको बहुत सी संख्याओं में से निकाल दिया जावे ।

ईश्वर के अतिरिक्त और जितनी वस्तुएँ हैं, उन सबको पृथक कर दे । अपनी बुद्धि द्वारा उसे अलग कर ।

यदि तुझे उसमें सन्देह है, तो यही तेरे मार्ग का रोड़ा है । अद्वैत में दो का विचार करना ही पथ से विचलित हो जाना है ।

मृत्यु भी जीवन के समान एक ही है और यह सारे भेद भाव केवल एक दूसरे का मिलान करने ही से उत्पन्न हुए हैं ।

मनुष्य रंग विरंगे संसार में आकर चौकड़ी भूल जाता है । इसी से यह सम्पूर्ण भिन्नता उत्पन्न होती है ।

ईरान के सूफ़ी कवि

वजूदे हर चके चू वूद वाहिद ।
व नहदानीयते हक गस्त साहिद ॥

सवाल

चे खाहद मर्द मअानी जाँ इवारत ।
कि वारद नूग चरमो लव इशारत ॥
चे जोयद अज रखो ज़ल्को खतो खाल ।
कसे कंदर नक़ानातलो अहवात ॥

जवाब

हर आँ चीजे कि दर आलम अयानल ।
चु अकसे जाकतविआँ जहानल ॥
जहाँ चू ज़ल्को खतो खालो अदखल ।
कि हर चीजे वजाये खेश नेदखल ॥
तजल्ली गह जनालो गह जलादल ।
रखो ज़ल्कआँ मअानी रा निजालल ॥
सिफ़ाते हक तआला लुको कदल ।
रखो ज़ल्के युताँरा जाँ दो बहरगल ॥

जय कि प्रत्येक का अस्तित्व समान था तो फिर ईश्वर के एक निम्न हा
साक्षी और कौन हो सकता है ?

चु महसूस आमरीं पलकाजे नसाम् ।
 नदुस्तज करे महसूसन्द मौजू ॥
 नदरद आलमे माना निदयाम् ।
 कुजा वोनद मरुता लाम् गायाम् ॥
 हरीं मानी कि शुद्ध वर चौक पैदा ।
 कुजा तानीरे लाम्नी या वद ऊरा ॥
 चु अहले दिल कुन्द तकसीरे मानी ।
 वमानिन्दे कुन्द तानीरे मानी ॥
 कि महसूसत अजाँ आलम चु सायस ।
 कि ईं चु तिल्लो जाँ मनिन्दे दायस ॥
 वनन्दे मन सुद्ध अलकाजे मो प्रव्यस ।
 वरीं मअनी किताद अज वजेर अबल ॥
 वमहसूसत सासु प्रज उर्के आमसत ।
 चे दानए आम कदाँ मानी कुदासत ॥
 नजर चुँ दर जहाँ अतम करदन्द ।
 अजाँजा लफजहारा नाल करदन्द ॥

यही शब्द सौन्दर्य में भी सम्मिलित हैं और उसके साथ ही साथ इनका भी प्रशंसा की जाती है ।

अध्यात्मिक जगत की कोई निर्धारित सीमा नहीं है । कोरी बातों से निर्बल प्रतिज्ञाओं से वहाँ तक किस प्रकार पहुँच हो सकती है !

उस संसार के गुप्त रहस्यों का वर्णन शब्दों द्वारा किस प्रकार किया जा सकता है !

जब कोई साधु उन रहस्यों का वर्णन करता है तो उदाहरण द्वारा उनको समझाने का प्रयत्न करता है ।

उस संसार की वे वस्तुएँ, जिनका हम अपनी इन्द्रियों द्वारा अनुभव करते हैं, छाया के समान हैं । कारण कि उसकी उपमा यदि हम छाया से देते हैं तो यह बच्चे के समान हैं और वही बच्चे को पालने वाली दाई है ।

मैं विश्वास करता हूँ कि, उस जगत को विवेचना करने वाले शब्द पहले ही से निर्धारित कर लिये गये होंगे ।

जिससे कि उनके द्वारा रहस्यों का उद्घाटन किया जा सके । जो शब्द साधारणतया वाद में निर्धारित किये गए हैं, उनसे रहस्यों की विवेचना उचित रूप से नहीं की जा सकती ।

साधारण शब्द भला वहाँ तक किस प्रकार पहुँच सकते हैं ? और साधारण लोग उन बातों की व्याख्या किस प्रकार कर सकते हैं ।

गजाक ऐ दोस्त नायद जहले तहकीक ।
 मरीरों कश्क यावद या कि तसदीक ॥
 वेगुफतम वजए अलफाजो मानी ।
 तुरा सरवस्ता गर दारी वदानी ॥
 नजर कुन दर मय्यानी सूए गायत ।
 लवाजिम रा यकायक कुन रियायत ॥
 ववज्हे खास अजाँ तशवीह मी कुन ।
 जे दीगर वज्हा तनजीह मीकुन ॥
 चु शुदई कायदा यकसर मुकर्रर ।
 नुमायम जाँ मिसाले चन्द दीगर ॥

इशारत बचश्मो लव

निगर कज चश्मे शाहिद चीन्त पैदा ।
 रियायत कुन लवाजिम रा वदाँजा ॥
 जे चश्मश खास्त वीमारी व मस्ती ।
 जे लालश गश्त पैदा ऐने हस्ती ॥
 जे चश्मे ऊ हमा दिलहा जिगर खार ।
 लवे लालश शफाए जाने वीमार ॥

ऐ मित्र ! खोज करने वालों से व्यर्थ की बातें नहीं आती, इन बातों को समझने के लिए पूरी जांच या अनुभव की आवश्यकता है ।

मैंने तुम्हें शब्दों और उनके अर्थों का भेद बतला दिया है । अब यदि तुम्हें बुद्धि होगी तो सब बातों को समझ जायगा ।

तू अर्थ के भीतर छिपी हुई उसकी असलियत को देख और फिर जिस असलियत के वास्ते जिस वस्तु की आवश्यकता पड़े उसका ध्यान रख ।

किसी एक खास ढंग से तू उन अर्थों की व्याख्या करता जा और दूसरे ढंगों से उन व्याख्याओं की काट-छाँट करता जा ।

जब इस ढंग को तू विल्कुल समझ गया है, अतएव मैं थोड़े से उदाहरण और भी तेरे सम्मुख रखता हूँ ।

नेत्रों और ओठों के प्रति

ध्यान से देख, प्रियतमा की आँख से कौनसी वस्तु प्रकट हो रही है । और उस वस्तु की आवश्यक बातों का विचार कर ।

उसके नेत्र से पीड़ा और मस्ती उत्पन्न हुई और उसके होठ से जीवन-प्रद धारा प्रकट हुई ।

उसकी आँख के कारण सभी अपने हृदयों को थामे हुए बैठे हैं और होठों के कारण सब जानें मस्त हैं ।

जे चश्मे उस्त दिलहा मस्तो मसूमूर ।
 जे लाले उस्त जौहा जुन्ला मसूमूर ॥
 वचश्मश गर जे आलम दर नवाचद ।
 लवश हर सायते लुके नुमाचद ॥
 दमे अज नरदुमी दिलहा नवाचद ।
 दमे बेचारगों रा चारा साचद ॥
 वशोली जाँ देहद दर आयो दर खाक ।
 वदम दादन जनद आतिश वर अकलाक ॥
 अजो हर गन्जा दामो दानए शुद ।
 वजो हर गोशाए मैखानए शुद ॥
 जे गन्जा मी देहद हस्ती वगारत ।
 वयोस्ता मी कुनद वाचश इमारत ॥
 जे चश्मश खूने मा दर जोश दायम ।
 जे लालश जाने मा वेहोश दायम ॥
 वगन्जा चश्मे ऊ दिल नी खवाचद ।
 वअशाना लाले ऊ जाँ मी खवाचद ॥

उनमें एक पीड़ा का अनुभव कर रहे हैं और उसके अरुणारे अधर
 पीड़ित हृदय के लिये, प्रेम-रोगी के लिये अमृत हो रहे हैं।

उन अधरों से सभी के प्राण प्रसन्न हो रहे हैं। उसकी दृष्टि में क्यापि
 संसार सनाता नहीं है, परन्तु उसका होंठ सदैव आनन्द प्रदान किया
 करता है।

किसी समय प्रेम से व्यक्ति हृदयों को सान्त्वना प्रदान किया करता है,
 और कभी दीनों की सुध लिया करता है। भटकता को मार्ग बनसाया
 करता है।

वह अपनी चुलचुलाहट से बेजान में भी जान डालता है और कूँठ
 मारकर आकाश में अग्नि उत्पन्न कर देता है।

उस आँख का प्रत्येक कटाक्ष, एक जाल और एक दाने के रूप में परिवर्तन
 हो गया और उस होंठ से प्रत्येक कोना एक नदिरा-गूँह बन गया।

शोखी और मान से वह जीवन को वर्नाद कर देता है, परन्तु चुन्मन
 देकर पुनः उसे जीवन प्रदान करता है।

हमारा रक्त उसकी आँख के कारण सदैव खौलता रहता है जौंग हमारा
 प्राण उसके होंठ के कारण सदैव संशोधीन रहता है।

उसकी आँख, शोखी से हृदय को सुड़ी में कर लेती है जौंग हमारा गीठ
 दिल करके प्राण को आरुपित कर लेता है।

जो अज चरमो लवश साही कनारे ।
 मरौ गोगद न अई गोगद कि चारे ॥
 जो गम्वा आलम रा नार साजद ।
 बजोसा उर जमौ जौ भी नाजद ॥
 अजो एक गम्वाजो जौ दादन अज मा ।
 बजो एक जोसजो इसवादन अज मा ॥
 कलमहिन तिलवसर गुद दजे आलम ।
 जो नफदे रूद पैदा मस्त आवम ॥
 चु अज चरमो लवश अन्देशा करदन्द ।
 जहाने मै परस्ती पेशा करदन्द ॥
 नयागदु दर्दा चरमश जुम्ला दस्ती ।
 दरो धू आगद आदिर आवे मस्ती ॥
 वजूदे मा हमा मस्तीस्त या खान ।
 चे निस्वत साक रा वा रवे अरवात्र ॥
 दारद दारद अजी सद गुना आशुक ।
 कि वलतसना अला ऐनी चरा गुक ॥

यदि तू एक वार उस आँख से और उस ओठ से मिलने की इच्छा प्रकट करेगा तो आँख कहेगी 'न' और ओठ कहेगा 'हाँ' ।

शोखी दिखला कर आँख संसार की भलाई करती है और ओठ प्राणों को प्रसन्न रखता है ।

उस आँख की एक तिरछी चितवन ऐसी है जिससे हमारे प्राण निकलने लगते हैं और उसका एक चुम्बन हमें प्राण दान देकर, जीवित कर देता है ।

इस संसार का अन्त उस आँख के एक पलक मारने में हो जायगा जैसे आत्मा की फूँक से आदम उत्पन्न हो गया ।

उसकी उस आँख और उस रसीले ओठ का विचार करके सारे संसार ने मदिरा पान करना स्वीकार कर लिया ।

जब सम्पूर्ण जगत उसके दोनों नेत्रों में नहीं आता तो फिर मस्ती की निद्रा उसे किस प्रकार प्राप्त हो ।

हमारा यह अस्तित्व या तो मस्ती है अथवा स्वप्न । मिट्टी को ईश्वर से क्या सम्बन्ध है ?

उसने मेरी आँखों में बैठ कर क्या कहा ? इस बात को सोचने में बुद्धि के सम्मुख सैकड़ों कठिनाइयाँ उपस्थित हैं ।

सवाल

शरावो शमओ शाहिद रा चे मानीस्त ।
खरावाती शुदन आखिर चे दावीस्त ॥

जवाब

शरावो शमओ शाहिद ऐन मानीस्त ।
कि दर हर सूखते ऊ रा तजल्लीस्त ॥
शरावो शमा नूरो जौके इरफाँ ।
वे वौ शाहिद कि अज कस नेस्त पिनहाँ ॥
शराव ईजा जुजाजह शमा मिसवाह ।
बुवद शाहिद फुल्लो नूरे अरवाह ॥
चे शाहिद वर दिले मूसा शरर शुद ।
शरावश आतिशो शमश शजर शुद ॥
शरावो शमा जाँ आँ नूरे असरास्त ।
वले शाहिद हमा आयाते कुवरास्त ॥

प्रश्न

मदिरा, दीपक, और प्रियतमा से क्या आशय है ? मतवाला हो जाना किस प्रकार के अधिकार का द्योतक है ?

उत्तर

मदिरा, दीपक और प्रियतमा, ये सब मुख्य अंतरङ्ग वस्तुएं हैं, जिन्की कल्पना इन सभी नूरानों ने दिव्यताई पड़ती है ।

ए देखने वाले ! देख, मदिरा, दीपक और प्रियतमा में कौनसा आनन्द छिपा हुआ है । यह एक ऐसा रहस्य है जिन्की सभी जानते हैं ।

इस स्थान में मदिरा कानून के समान है और शमअ दीपक है । और नाची क्या है ? आत्माओं के प्रकाश की चमक ।

उनी प्रियतमा की तरफ से हजरत नूसा के हृदय पर एक चिनगारो उड़कर पहुँची, जिसके कारण वह उनकी चाह में लवलीन हो गये ।

मुहम्मद साहब, इन प्राणों के लिये दीपक और मतवाला बना देने वाली मदिरा है । और वह बड़े बड़े चिन्ह ही नाची है ।

शरावे शमयो शाहिद तुम्हा ताविर ।
 मशो शाहिद जे शाहिद ताजी आविर ॥
 शरावे वेस्तुती दर कथा वमाने ।
 मगर अज दस्ते सुद पाणे वसाने ॥
 वेस्तुर मे ता जे तेशान व रिहानद ।
 वजुदे कतरा दर दरिया रसानद ॥
 शरावे सुद कि जागया रूप यास्ता ।
 पियाला अरमे मस्ते वादा सारस्त ॥
 शरावे रा तलन जे मायरो जाम ।
 शरावे वादा सारो साकी आसाम ॥
 शरावे सुद जे जामे वजे साकी ।
 सकाहुम रवहुम क रास्त साकी ॥
 तहूरन भी बुवद कथा लीसे दस्ती ।
 तुरा पाकी देहद दर वके मस्ती ॥
 वस्तुर मे वारेहों सुद रा जे सर्दी ।
 कि वदमस्ती वेदस्त अज नेक मर्दी ॥

मदिरा, दीपक और साक्षी सभी वस्तुएँ तेरे सम्मुख प्रस्तुत हैं। इस अवस्था में तुझे प्रणय-मार्ग में बढ़ते रहना उचित है।

कुछ समय के लिये तू वह मदिरा पी ले जिससे तू अपने आप को भूल जावे। कदाचित् तू अपने आप ही अपनी शरण पाजावे।

तू वह मदिरा पान कर, जिससे अहंकार को भूल जावे और समझने लग कि एक बूंद का अस्तित्व उस महासागर के अस्तित्व से सम्बन्ध रखता है।

तू वह मदिरा पी, जिसका बड़ा प्याला तेरे प्यारे का मुख है और छोटा प्याला शराव पीने वालों के मतवाले नेत्र हैं।

उस मदिरा की खोज कर, जो छोटे और बड़े प्याले के बिना ही पी जाती हो। वह ऐसी मदिरा है जो साक्षी भी है और अपने आपको स्वयम् पी जाती है।

तू उस अमर मुख के प्याले से शराव पी, जिसका साक्षी ईश्वर है। और वह लोगों को पिलाया करता है।

वह अत्यन्त पवित्र और जीवन की बुराइयों को दूर करने वाली है। वह मस्ती के समय तुझे पवित्र बना देगी।

मदिरा पान कर, निज को इस शीत से वचाने का प्रयत्न कर। मतवाला होना, धार्मिक मनुष्य बनने से बढ़कर है।

तिरद मस्तो मलायक मस्तो जां मस्त ।
 हवा मस्तो जामीं मस्त आस्मां मस्त ॥
 कलक सरगस्ता अत्र ते दर वगापूर ।
 हवा दर दिला व उमीदे यके एए ॥
 मलायक सुर्दी साक अत्र कूत्तए पाक ।
 बजुरआ रस्तता दुर्दी वरीं साक ॥
 अनासिर गरता जाँ गक जुरआ सरगशा ।
 कित्तादा गद दरआनी गद दर आतरा ॥
 पोवूर जुरए कुकाद वर साक ।
 वरामद आदमीं ता शुद वर अकलाक ॥
 जो अन्से ऊतने पञ्चमुर्दी जाँ गस्त ।
 जो तावशा जाने अकमुर्दी खाँ गस्त ॥
 जहाने खलक अजो सरगस्ता दायम ।
 जो खानो माने सुद वरगस्ता दायम ॥
 यके अत्र वूप दुर्दशा आकिल आमद ।
 यके अत्र रंगे साकशा नाकिल आमद ॥

बुद्धि, स्वर्गीय दूत, और प्राण सभी उसके कारण मतवाले हो रहे हैं ।
 यही नहीं वरन् वायु, पृथ्वी और आकाश तक सब उसी मस्ती का राग अलाप
 रहे हैं ।

आकाश उसी के कारण चक्कर लगा रहा है और वायु उसकी सुगन्ध
 की एक लहर पाने के लिये उत्सुक हो रही है ।

स्वर्गीय दूतों ने पवित्र घट में से स्वच्छ मदिरा के घूँट ले लिये हैं और
 इस मिट्टी पर एक चुल्लू तलछट डाल दिया है ।

उसी एक चुल्लू से सब के सब मस्त हो गये और कभी पानी और कभी
 अग्नि में जा पड़े ।

जो घंट (चुल्लू) पृथ्वी पर गिरा, उसकी सुगन्ध से मनुष्य उत्पन्न हुआ
 और वह आकाश तक जा पहुँचा ।

उसकी आभा से कुम्हलाए हुए शरीर में प्राण आगये और उसकी मस्ती
 की लहर से सुस्त आत्मा में एक नवीन जीवन का संचार हुआ ।

उससे संसार भर के लोग मतवाले हो रहे हैं और सदैव अपने घर और
 कुटुम्ब से पृथक उदासीन फिरा करते हैं ।

एक मनुष्य उसकी तलछट की सुगन्ध से ही बुद्धिमान हो गया और
 दूसरा उसके साफ रंग का वर्णन करने में व्यस्त होगया ।

ईरान के सूफ़ी कवि

यके अज्ज नीम जुआ गश्ता सादिक् ।
 यके अज्ज यक सुराही गश्ता आशिक ।
 यके दीगर फ़रो बुदी वयकवार ।
 खुमो खुमखानओ साकीओ मैखार ॥
 कशीदा जुम्लओ माँदा दहन वाज ।
 जेहे दरिया दिले रिन्दे सरफ़राज ॥
 दरा शम्मीदा हस्ती रा वयकवार ।
 फ़रायात याफ़ा जे इकरारो इन्कार ॥
 शुदा फ़ारिया जे जोहदे खुशको तामात ।
 गिरिका दामने पीरे खरावात ॥

इशारत व खरावातियान

खरावाती शुदन अज्ज खुद रिहाँईस्त ।
 खुदी कुफ़स्त अग़र खुद पारसाईस्त ॥
 निशाने दादा अन्दत अज्ज खरावात ।
 कि अत्तोहीदो इस्कातुल इच्चाक़ात ॥
 खरावात अज्ज जहाने वेमिसालीस्त ।
 मुक़ामे आशिकाने ला उवालीस्त ॥

कोई केवल आधे ही घूँट के पीने से उसकी लगन में मतवाला हो गया
 और दूसरे ने एक सुराही पीली तब उसके प्रेम में पड़ा ।
 एक और भी मनुष्य है । उसने एक ही वार में मदिरा के मटके, मदिरा-
 गृह, साकी और पीने वाले को अपने मुख में रख लिया ।
 परन्तु फिर भी उसकी पिपासा शान्ति नहीं हुई है । वाह ! वह कितना
 विशाल हृदय साहसी और मतवाला है ।
 जो जीवन को ही एक वार में निगल गया है वह मानने और न मानने
 दोनों से छुटकारा पा गया है, कर्म और अकर्म के बन्धनों में निकल गया है ।
 दोनों में किनारा कर बैठा और मदिरागृह के पुजारी का कामन पकड़े
 हुए उपस्थित है ।

मदिरापान करने वालों के प्रति

मदिरापान करने वाले अपने आप में छुटकारा पाने के समान थे अर्थात्
 चाहे कितना ही पवित्र वस्तु न हो परन्तु पर भी नाशिकता ही का
 रूप है ।
 मदिरागृह का तुमको एक पना बतला दिया है वह है अपने मन्धन्य
 के सम्पूर्ण बन्धनों का नाश होना । मदिरागृह एक ऐसा वस्तु है जहाँ किस्म
 प्रकार के बन्धन नहीं हैं ।
 मदिरागृह एक विशुद्ध स्थान है और मन्धन्य के स्थान है

सरावान आरागाने मुझे जानना ।
 सरावान आरागाने जाम जानना ॥
 सरावानो सराव यन्दर आरागाने ।
 कि दर सद्गुरु के पालन सुगाने ॥
 सरावानिस्त वे तूने निदाने ।
 न आशात्ररा कसे रीदा न सापने ॥
 अगर मद्र साल दर वे भी शिनाती ।
 न रुद्र रा ओ न कम रा वाजगानी ॥
 गरोदे अन्दरो वे पाओ वे शिर ।
 हमा ना भोगिनो ना नीज काकिर ॥
 शरावे वंसुदी दर सर गिरिका ।
 वतके जुम्ला सीगे शर गिरिका ॥
 शरावे सूरद दर यक वे लयो काम ।
 करारात याकता अज नंगो अज नाम ॥
 हदोसे माजराये शतदो सामात ।
 छायाले खिलवतो नूरो करामान ॥

मदिरागृह प्राण रूपी पत्नी के लिये एक धोसले के समान है और इस संसार के दर्वाजे की चौखट के समान है ।

पीने वाला मतवाला है, खराब है और उससे भी बढ़कर मदिरा है । उसके सम्मुख यह सम्पूर्ण संसार एक मदिरागृह है ।

उसकी खराबी की कोई सीमा नहीं है और न किसी ने उसके आदि और अन्त को ही देखा है ।

यदि तू सैकड़ों वर्ष उसकी खोज में रहेगा तब भी अपने आपको या किसी दूसरे को न पा सकेगा ।

इस विस्तृत क्षेत्र में कुछ ऐसे मनुष्य निवास करते हैं जिनके शिर और पैर कुछ भी नहीं हैं । उन्हें न तो निरीश्वरवादी ही कह सकते हैं और न ईश्वरवादी ।

उनके मस्तिष्क में उस मदिरा का धुआँ छाया हुआ है जो मतवाला बना देती है । संसार की समस्त अच्छाइयों और बुराइयों से वह बहुत परे हैं ।

उनमें से प्रत्येक ने उस मादक मदिरा का खूब ही सेवन किया है । अब उन्हें न तो अपने नाम का ही ध्यान है और न प्रतिष्ठा का ।

छल-कपट की बातों का ध्यान, संसार और ईश्वरीय प्रकाश का विचार सब कुछ उन्होंने,

खरावात आशयाने मुर्गे जानस्त ।
 खरावात आसताने लामकानस्त ॥
 खरावाती खराव अन्दर खरावस्त ।
 कि दर सहराए ऊ आलम सुरावस्त ॥
 खरावातिस्त वे हदो निहायत ।
 न आगाज्जश कसे दीदा न गायत ॥
 अगर सद साल दर वै मी शितावी ।
 न खुद रा ओ न कस रा वाज्यावी ॥
 गरोहे अन्दरो वे पाओ वे सिर ।
 हमा ना मोमिनो ना नीज काफिर ॥
 शरावे वेखुदी दर सर गिरिफ़ा ।
 वतके जुम्ला खैरो शर गिरिफ़ा ॥
 शरावे खुरद हर यक वे लवो काम ।
 फरागत याफ़ता अज नंगो अज नाम ॥
 हदोसे माजराये शतहो तामात ।
 खयाले खिलवतो नूरो करामात ॥

मदिरागृह प्राण रूपी पत्नी के लिये एक धोंसले के समान है और इस संसार के दर्वाजे की चौखट के समान है ।

पीने वाला मतवाला है, खराव है और उससे भी बढ़कर मदिरा है । उसके सम्मुख यह सम्पूर्ण संसार एक मदिरागृह है ।

उसकी खराबी की कोई सीमा नहीं है और न किसी ने उसके आदि और अन्त को ही देखा है ।

यदि तू सैकड़ों वर्ष उसकी खोज में रहेगा तब भी अपने आपको या किसी दूसरे को न पा सकेगा ।

इस विस्तृत क्षेत्र में कुछ ऐसे मनुष्य निवास करते हैं जिनके शिर और पैर कुछ भी नहीं हैं । उन्हें न तो निरीश्वरवादी ही कह सकते हैं और न ईश्वरवादी ।

उनके मस्तिष्क में उस मदिरा का धुआँ छाया हुआ है जो मतवाला बना देती है । संसार की समस्त अच्छाइयों और बुराइयों से वह बहुत परे हैं ।

उनमें से प्रत्येक ने उस मादक मदिरा का खूब ही सेवन किया है । अब उन्हें न तो अपने नाम का ही ध्यान है और न प्रतिष्ठा का ।

द्वल-कपट की बातों का ध्यान, संसार और ईश्वरीय प्रकाश का विचार सब कुछ उन्होंने,

जे सर वेहूँ कशीदा दल्के दह तूय ।
 मुजरद गश्ता अज हर रंगो हर वूय ॥
 फरोशुस्ता वदाँ साफे मुरव्वक ।
 हमा रंगे सियाहो सञ्जो अजरक ॥
 यके पैमाना खुर्दा अज मए साफ ।
 शुदा चाँ सूफिए साफी जे औसाफ ॥
 वजाँ खाके मजाविल पाक रुकता ।
 जे हरचाँ दीदा अज सद यक न गुफा ॥
 गिरफ्ता दामने रिन्दाने खम्मार ।
 जे शेखीओ मुरीदी गश्ता वेज्जार ॥
 चे जाए जोहदो तकवा ईं चे कैदस्त ।
 चे शैखीयो मुरीदे ईं चे शैदस्त ॥
 अगर रूए तू वाशद वर केहो मेह ।
 बुतो जुन्नारो तरसाई तुरा वेह ॥

सवाल

बुतो जुन्नारो तरसाई दरिं कूए ।
 हमा कुफ्त वगर न चीस्त वर गूए ॥

इन लोगों ने दस पर्व की गुदड़ी को सर पर से उतार डाला है और उनके हृदय से सभी तरह के रंग-रहस्य और सर्व प्रकार के आनन्द किनारा कर बैठे हैं ।

उन्होंने आनन्दोपभोग की सभी लालसाओं को मिटा डाला है । उस स्वच्छ, छनी हुई मदिरा से उन्होंने सब काले, हरे और नीले रंगों के धब्बों को धोकर साफ कर दिया है ।

एक मनुष्य उस छनी हुई मदिरा का केवल एक ही प्याला पीकर ऐसा हो गया है कि उसमें किसी प्रकार का भी विकार शेष नहीं रह गया है ।

इच्छाओं की धूल को उसने धोकर साफ कर दिया है और अपनी देखी हुई सभी बातों को उसने हृदय में छिपा रक्खा है ।

वह अब मतवाले मदिरा सेवियों की शरण में जा पड़ा है । साधु बनने और चेला होने की इच्छाओं को हृदय से निकाल कर फेंक दिया है ।

परहेजगारी और ईश्वर से भय खाने की बातों से क्या तात्पर्य है ? साधु और चेला होने का डक़ोसला कैसा है ?

यदि तू केवल दिखाने के लिये कुछ करना चाहता है, तो मूर्तिपूजक बन । जनेऊ धारण करके धूनी रमा ले ।

प्रश्न

मूर्तिपूजा, जनेऊ, और धूनी (अग्निपूजा) यह सब नास्तिकता के चिन्ह नहीं तो और क्या हैं ?

जे सर वैल्ल कशीदा दल्के दह तूय ।
 मुजर्रद गश्ता अज्र हर रंगो हर वूय ॥
 फरोशुस्ता वदो साफे मुरव्वक ।
 हमा रंगे सियाहो सञ्जो अज्ररक ॥
 यके पैमाना खुर्दा अज्र मए साफ ।
 शुदा जौ सूकिए साफी जे औसाफ ॥
 वजौ खाके मजाविल पाक रुकता ।
 जे हरचाँ दीदा अज्र सद यक न गुफा ॥
 गिरफा दामने रिन्दाने खन्मार ।
 जे शेखीओ मुरीदी गश्ता वेजोर ॥
 चे जाए जोहदो तक्रवा ईं चे कैदस्त ।
 चे शैखीयो मुरीदे ईं चे शैदस्त ॥
 अगर रूप तू वाशद वर केहो मेह ।
 वुतो जुन्नारो तरसाई तुरा वेह ॥

सवात्त

वुतो जुन्नारो तरसाई दरि कूए ।
 हमा कुफ़स्त वगर न चीस्त वर गूए ॥

इन लोगों ने दस पर्त की गुदड़ी को सर पर से उतार डाला है और उनके हृदय से सभी तरह के रंग-रहस्य और सर्व प्रकार के आनन्द किनारा कर बैठे हैं।

उन्होंने आनन्दोपभोग की सभी लालसाओं को मिटा डाला है। उस स्वच्छ, छनी हुई मदिरा से उन्होंने सब काले, हरे और नीले रंगों के धव्वों को धोकर साफ कर दिया है।

एक मनुष्य उस छनी हुई मदिरा का केवल एक ही प्याला पीकर ऐसा हो गया है कि उसमें किसी प्रकार का भी विकार शेष नहीं रह गया है।

इच्छाओं की धूल को उसने धोकर साफ कर दिया है और अपनी देखी हुई सभी बातों को उसने हृदय में छिपा रक्खा है।

वह अब मतवाले मदिरा सेवियों की शरण में जा पड़ा है। साधु बनने और चेला होने की इच्छाओं को हृदय से निकाल कर फेंक दिया है।

परहेजगारी और ईश्वर से भय खाने की बातों से क्या तात्पर्य है? साधु और चेला होने का ढकोसला कैसा है?

यदि तू केवल दिखाने के लिये कुछ करना चाहता है, तो मूर्तिपूजक बन। जनेऊ धारण करके धूनी रमा ले।

प्रश्न

मूर्ति-पूजा, जनेऊ, और धूनी (अग्निपूजा) यह सब नास्तिकता के चिन्ह नहीं तो और क्या हैं?

नदीद ऊ दर बुत इला खल्के जाहिर ।
 वदों इल्लत शुद अन्दर शर्रा काफिर ॥
 तो हम गर जो न बीनी हत्के पिनहाँ ।
 वशर्रा अन्दर न खानन्दत मुसलमाँ ॥
 व तसवीहो नमाजो सात्मे कुरआँ ।
 नगर्दद हरगिज ई काफिर मुसलमाँ ॥
 जो इसलामे मजाजी गश्ता बेजार ।
 किरा कुफ़े हकीकी शुद पिदीदार ॥
 दरूने हर तने जानेस्त पिन्हाँ ।
 वजोरे कुफ़ ईमानेस्त पिन्हाँ ॥
 हमेशा कुफ़ अजा तसवीहे हत्कस्त ।
 “ व इमामिन शै ” गुफ़ ईजा चे दक्कस्त ॥
 ये मी गोयम कि दूर उफ़ादम अज राह ।
 फज़रहुम वअदमाजाअत कुला इलाह ॥
 वदों खूवी खुले बुत रा कि आरास्त ।
 कि गश्ते पुतपरस्त अर हक़ नमीलास्त ॥

माने मूर्ति के केवल काय-दृष्टि को उसके प्रकट आकार को ही देला है ।
 इसी कारण धर्म ग्रन्थों के अनुसार वह विधर्मी बन गया ।

वृत्ति, यदि मूर्ति के द्विगे हुए रहस्य को न समझेगा तो वृत्ति धर्म ग्रन्थ
 में मन्वा धर्म वाला न कहलायेगा ।

नाला केले, पूजा करते और धर्म ग्रन्थों का अध्ययन कर लेने ही में
 एक विधर्मी बनोया नहीं हो सकता है ।

जिस मनुष्य ने नालिकवा के आस्तिक रूप को समझ लिया है वह
 उस धर्म से विन्दुल पृथक हो गया है ।

हम् कर्दा हम् गुफ़ो हम् वृद ।
 निको कर्दा निको गुफ़ो निको वृद ॥
 यके वीनो यके गोयो यके दाँ ।
 वर्दी ज़त्म आमद अत्लो फ़रे ईमाँ ॥
 न मन भीगोवम ई विश्नो जे कुरआँ ।
 तकाउत नेस्त अन्दर खल्के रहमाँ ॥

इशारत वजुन्नार

निशाने जिदमत आमद अत्रदे जुन्नार ।
 नज़र करदम वदीदम अत्ले हरकार ॥
 नवाशद अहे दानिश रा मुअव्वल ।
 जे हर चीजे मगर दर वजए अव्वल ॥
 मियाँ दर वन्द चू मरदाँ बमरदी ।
 दरआ दर जुमरण औफ़ू वे अहदी ॥
 वरख़ो इल्मो चौगाने इवादत ।
 जेनेदाँ दर रुवा गूए सआदत ॥

वही कहने वाला और वही करने वाला था। उसके अतिरिक्त किसी दूसरे का हाथ इसमें नहीं था। वह अच्छा है। उसने कहा, तो भी अच्छा है और किया वह भी बुरा नहीं है।

एक ही को सदैव अपनी दृष्टि के सम्मुख रख एक ही से बोल और एक ही को अपने हृदय में धारण कर। धर्म की सब शिक्षाओं का मूल यही है।

मैं ही इस बात को नहीं कह रहा हूँ, अपितु धार्मिक ग्रन्थ भी यही शिक्षा दे रहे हैं कि ईश्वर के रूपों में किसी प्रकार का अधिक अन्तर नहीं है।

जनेऊ के विषय में

मैंने ध्यान पूर्वक प्रत्येक बात के तत्व को समझ लिया है। जनेऊ पहन लेना धर्म का चिन्ह धारण कर लेना, सेवा करने की निशानी है।

ज्ञानी पुरुष इस बात पर सभी जगह विश्वास करते हैं। क्योंकि इन बात से प्रकट होता है कि तू सेवा के लिए कतर बांधे हुए उद्यत है।

बौर मनुष्यों के समान साहसी होकर फेंट बाँध ले और उसके बन्दों में, जो अपने बचन के सच्चे हैं, सम्मिलित हो जा।

तूने विद्या प्रदान की है और तू ईश-प्रार्थना का मूल्य समझता है। इन्हीं दोनों की सहायता लेकर रणक्षेत्र में आगे बढ़ और उसकी कृपा पर उनके समीप रहने का अधिकार जमा ले।

तुरा अज बहरकार आकरीदन्द ।
 अगार चें दालक विस्वार आकरीदन्द ॥
 पिदर चें इल्मो मादर हस्त आमाल ।
 विसाने कुरतुलपेनस्त अहवाल ॥
 नवाशद वे पिदर इन्सों शके नेस्त ।
 मसीह अन्दर जहाँ वेश अज यके नेस्त ॥
 रिहा कुन तरहानो शतहो तामात ।
 लयाले नूरो असवावे करामात ॥
 करामाते तो अन्दर हक परस्तीस्त ।
 जुजाँ कित्रो रियाओ उज्वे हस्तीस्त ॥
 दर्राँ हर चीज कानजे वावे फकस्त ।
 हमा असवावे इस्तिदराजो मकस्त ॥
 जे इवलीसे लानते वेशहादत ।
 शवद सादिर हजारों खर्के आदत ॥
 गह अज दीवारत आयद गाह अज वाम ।
 गह दर दिल नशीन्द गाह दरन्दाम ॥
 हमी दानद जे तो अहवाले पिनहाँ ।
 दर आरद दर तोकिरको कुफ्रो इसयाँ ॥

तुम्हें इस संसार में इसी कार्य के लिए उत्पन्न किया गया है। और तू ही क्या, बहुतों का जन्म इसी लिये हुआ है।

तेरा पिता विद्या और माँ तेरे कार्य हैं। यह सब तुम्हें प्रिय होने चाहियें।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बिना पिता के मनुष्य उत्पन्न नहीं हो सकता। भगवान् ईसा मसीह के भी पिता थे।

और वह भी एक से बढ़कर नहीं थे। छल-कपट, मिथ्या और बनावटी बातों से मुख मोड़ ले। चमत्कारों का विचार हृदय से निकाल दे।

तेरा बड़प्पन तो ईश्वर के भजन में है, वस यही एक बात तत्वमय है। इसके अतिरिक्त सभी बातें छल-कपट और जीवन के अहङ्कार से परिपूर्ण हैं।

यह बातें साधुओं के योग्य नहीं हैं और इसी कारण छल-छद्म से शून्य नहीं हैं।

तू देख नहीं सकेगा परन्तु शैतान तेरे सम्मुख सैकड़ों बातें ऐसी उपस्थित करेगा जो इन उपयुक्त-भावनाओं के नितान्त विरुद्ध होंगी।

वह चारों तरफ से तेरे सम्मुख साँसारिक प्रलोभन लेकर उपस्थित होगा। कभी वह तेरे हृदय में घुस जायगा और कभी शरीर में प्रविष्ट हो जायगा।

तेरी गुप्त बातों को, तेरे छिपे हुए कार्यों को वह जान जाता है और तेरे हृदय में बुरे और पापमय विचारों को उत्पन्न कर देता है।

खुद इवलीसत इमामो दर पसां तू ।
 वदो लेकिन वर्दीहा कै रसी तू ॥
 करामाते तो गर दर खुद नुमाईस्त ।
 तू फिरअौनी व ई दावा खुदाईस्त ॥
 कसे कू रास्त वा हक आशनाई ।
 नआयद हरगिज्र अज्रवै खुद नुमाई ॥
 हमा रूप तो दर खलकस्त जिन्हार ।
 मकुन खुद रा दरौ इस्तल गिरिफ्तार ॥
 चू वा आमा नशीनी मस्ख गर्दी ।
 चे जाये मस्ख यक रह कस्ख गर्दी ॥
 मवादत हेच वाआमत सरोकार ।
 कि अज्र कितरत शर्वा नागाह निगूसार ॥
 तलक कर्दी बहरजा नाजनी उम्र ।
 नगोई दर चे कारस्त ई चुनी उम्र ॥
 वजमईयत लकव करदन्द तशवीश ।
 खरेरा पेशवा कर्दा जेहे रीश ॥

फितादा सरवरी अकनू वजुहाल ।
 अर्जा गशतन्द मरदुम जुम्ला वद हाल ॥
 निगर दज्जाले आवर ता चे गूना ।
 फिरस्तादस्त दर आलम नमूना ॥
 नमूना वाज्रवीं ऐ मर्दे हस्तास ।
 खर ऊरा दाँ कि नामश हस्त जस्तास ॥
 खरारों ईं हमा हम नंग आँ खर ।
 शुदा अज जेह पेश आहँग आँ खर ॥
 चु ख्वाजा क्रिस्सए आखिर जमा कर्द ।
 वचंदों जाँ अर्जा मानी निशा कर्द ॥
 वेवीं अकनू कि कोरो कर शवाँ शुद ।
 उल्लमे दाँ हमा वर आसमाँ शुद ॥
 नमानंद अन्दर मियाना रिफ्तको आजर्म ।
 नमीदारद कसे अज जाहिली शर्म ॥
 हमा अहवाले आलम वाज्रगूनस्त ।
 अगर तू आक्रिली वेनिगर कि चूँ नस्त ॥

इस काल में मूर्खों को ही सर्दारी मिल गई है और इसी कारण सभी मनुष्यों की दशा बुरी हो गई है ।

यह देख कि मक्कार ने अपना किस प्रकार का एक नमूना संसार में भेजा है ।

तुम्हें संसार का अधिक अनुभव है । तू वस्तुओं के अवगुणों और गुणों को अति शीघ्र समझ जाता है । तू ही उस गधे को देख और गधा उसे समझ जिसका नाम है ।

वह मूर्ख उन सभी मूर्खों के लिये अपयश का कारण है और नादानों के कारण सब के आगे चल रहा है ।

जब पैगम्बर साहब ने अन्तिम काल का इतिहास सुनाया तो कई स्थानों पर यह भी कहा,

कि इसी काल में मूर्खाधिराजों ने लोगों के गुरुओं की पदवी धारण की और जितनी भी धार्मिक विद्यायें थीं, संसार से किनारा कर गईं,

नम्रता, दया और लज्जा विलुप्त हो गई और किसी भी मनुष्य को निरुद्योगी अथवा मूर्ख होने के कारण लज्जा नहीं आती । संसार की सभी बातें, पलट गई हैं ।

पहले जो होता था अब उसके नितान्त विपरीत कार्य होने लगे हैं । तुम्हें यदि बुद्धि है तो उन्हें देख और समझ ।

ईरान के सूफी कवि

कसे कज वावे लानो तर्दी मज्जतस्त ।
पिदर नीको बुद अकनू शैखे वक्तस्त ॥

खिजिर मीकुशत आं फरजन्दे तालेह ।
कि जरा बुद पिदर वा जद साजेह ॥

कनू वा शेखे खुद कर्दी तु ऐ खर ।
खरे रा कज खरी हस्त अज तो खरतर ॥

चु ऊला यारुफलहरम मिनलउविर ।
चेगूना पाक गरदानद पुरा सिर ॥

अगर दारुद निशाने वावे खुद पूरा ।
चेगोयम चू बुवद नूरन अला नूर ॥

पितर कू नेक रायो नेक वज्जतस्त ।
चु मेवा ज़ु वदए सिरें दरख्तस्त ॥

वलेकिन शेखे दीं कै गर्दद आंकू ।
नदानद नेक अज वद, वद अज नीकू ॥

मुरीदी इल्मे दीं आमोज्तन वूद ।
चिरागे दीं जे नूर अकरोख्तन वूद ॥

कसे अज मुर्दा इल्म आमोखत हरगिज ।
 जे खाकिस्तर चिराग अफरोखत हरगिज ॥
 मरा दर दिल हमी गर्दद वर्दी कार ।
 ववन्दम दरमियाने खेश जुन्नार ॥
 न जाँ मानी कि मन शोहरत नदारम ।
 वले दारम वले जाँ हस्त आरम ॥
 शरीकम चू खसीस आमद दरि कार ।
 खमूलम बेहतर अज शोहरत विस्तार ॥
 दिगर वारा रसीद इल्हामे अज हक ।
 कि वर हिकमत मगीर अज अवलही दक ॥
 अगर कनास नवूवद दर मुमालिक ।
 हमा खल्क ओफतन्द अन्दर महालिक ॥
 बुवद जिनसियत आखिर इल्लते जम ।
 चुनी आमद जहाँ वल्लाहो आलम ॥
 वलेक अज सोहवते ना अह वगुरेज ।
 इवादत खाही अज आदत वेपरहेज ॥
 नगर्दद जमा आदत वा इवादत ।
 इवादत मी कुनी वेगुजर जे आदत ॥

परन्तु एक मृतक से विद्या कौन प्राप्त कर सकता है ? राख से दीपक कौन जला सकता है ?

इस कार्य के कारण मेरे हृदय में वार वार यही विचार उठता है कि मैं अपनी कमर जनेऊ से कस लूँ । धर्म की दीक्षा लेकर उसमें आगे बढ़ चली । यह विचार अपने आपको विख्यात करने के लिये नहीं उठता है । मैं विख्यात तो हूँ, परन्तु यह विचार इसलिये होता है कि इस भूठी ख्याति से मैं लज्जित हूँ ।

मेरा साथी जब इस काम में निष्फल रहा, उसने अपना ओछापन प्रकट किया, तो मेरा गुप्त रहना ही उत्तम है ।

तदुपरान्त ईश्वर की ओर से एक दूसरी ही बात सुनाई दी कि तू अपनी मूर्खता के कारण ईश्वरीय कार्यों में मीन-मेष न निकाल ।

यदि इस संसार में, कूड़ा कर्कट साफ करने वाले न हों तो सभी घातक रोगों के शिकार बन जायँ ।

एक भौति का होना ही, एक जाति का होना ही आपस में मिलने का कारण है । संसार को यही दशा है । आगे ईश्वरेच्छा ।

परन्तु तू दुष्टों की संगति से अपने आपको बचाए रख । यदि तुम्हें ईश्वर-भजन में निमग्न रहना है तो अपने स्वभाव से बच ।

भक्ति और आदत एक साथ नहीं रह सकती हैं । यदि तू भक्ति करता है तो आदत का त्याग कर दे ।

तु गश्त ऊ बालिशो मर्दे साकर शुद्ध ।
 अगर मर्दस्त हमराहे पिदर शुद्ध ॥
 अनासिर मर तुरा नू उम्मे सिक्तलीस्त ।
 तू करजन्दो पिदर आवाए उलवीस्त ॥
 अजाँ गुप्तस्त ईसा गाहे असरा ।
 कि आहंगे पिदर दारम बवाला ॥
 तो हम जाने पिदर सूप पिदर शौ ।
 पिदर रक्तन्द हमराहाँ पिदर शौ ।
 अगर खाही कि गर्दी मुर्गे परवाज ।
 जहाने जीका पेशे करगस अन्दाज ॥
 वदूना देह मरई दुनियाए गहार ।
 कि जुज सग रा नशायद दाद मुर्दार ॥
 निसव चे बुवद मुनासिव रा तलव कुन ।
 वहकू रू आवरो तर्के निसव कुन ॥
 बवहे नेस्ती हर कू किरोशुद ।
 फला अनसावा नकदे वक्ते ऊ शुद्ध ॥
 हराँ निस्वत कि पैदा शुद्ध जे शहवत ।
 नदारद हासिले जुज कित्रो निखवत ॥

जब वह तनिक बड़ा हो जाता है और चलने लगता है, तब यदि वह लड़का है तो पिता के साथ जाने लगता है ।

तेरे शरीर के यह भाग, अंग-प्रत्यंग, तेरे लिये पवित्र प्राणों के समान हैं । तू वह शिशु है, जिसका पिता ऊपर आकाश में निवास करने वाला है ।

इसीलिये ईसा ने पवित्र रात में यह कहा था कि मैं ऊपर इसलिये आया हूँ कि मैं अपने पिता के पास पहुँचने का इच्छुक हूँ ।

तू भी, ऐ पिता के प्राण, अपने पिता के पास चल । तेरे सब साथी पिता के चले गये, तू भी, उन्हीं की तरह चल ।

यदि तू यह चाहता है कि उड़ान भरने वाला पक्षी बन जाये, तो इस जीवन से वंचित जगत को गिद्ध के सम्मुख फेंक कर उड़ जा !

यह संसार छल-छिद्र से परिपूर्ण है । इसमें वही स्वार्थी जीव रहने योग्य हैं जो कपटी हैं । अतएव इसका त्याग कर देना ही उचित है ।

जीवन क्या वस्तु है ? उस जीवनदाता को ढूँढ़ । ईश्वर की ओर मुख कर और सांसारिक भ्रमों से अपना हाथ खींच ले ।

जो मनुष्य मृत्यु-सागर में डूब गया, उसका समय व्यर्थ ही गया ।

इच्छाओं के सम्पर्क से उसे अभिमान और अहंकार के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं हुआ ।

वमर्दी चारहाँ खुद रा चो मर्दी ।
 वलेकिन हक्के कस जाये मर्दी ॥
 जे शरओ अरयक दक्कीका माँद मोहमल ।
 शवी दर हर दो कौन अज दीँ मोअत्तल ॥
 हक्के शरआरा जिनहार मगुजार ।
 वलेकिन खेशतन रा हम निगहदार ॥
 जे सोजन नेस्त इल्ला मायए गम ।
 वजा वेगुजार चूं ईसाए मरयम ॥
 हनीकी शौ जे हर क़ैदे मजाहिव ।
 दर आ दर दैरे दीँ मानिन्द राहिव ॥
 तुरा ता दर नजर अगयारो गैरस्त ।
 अगर दर मसजिदी आँ ऐने दैरस्त ॥
 चु वरखेजद जे पेशत किश्वते गैर ।
 शवद वहे तो मसजिद सूरते दैर ॥
 नमीदानम वहर हाले कि हस्ती ।
 खिलाफे नफ़स वेरुँ कुन कि रस्ती ॥

मनुष्य के समान वीरता और साहस से अपने आपको इन फन्दों से छुटा ले । परन्तु यह स्मरण रहे कि किसी के अधिकार में हस्ताक्षेप न होने पावे ।

यदि धर्म से सम्बन्ध रखने वाली यह तनिक सी बात छूट गई तो दोनों जहानों में तू विधर्मी बन जायगा ।

तू धर्म का पालन कर परन्तु साथ ही अपने स्वरूप को न भूल ।

सुई से दुःख के अतिरिक्त और कुछ भी प्राप्त न होगा । अतएव मरियम के पुत्र ईसा के समान उसे जहाँ का तहाँ छोड़ दे ।

समस्त धार्मिक बन्धनों से सम्बन्ध छोड़ दे । और एक उदासीन के समान धर्म-मन्दिर में आ जा ।

जब तक तेरे सामने गैर लोग रहेंगे, तब तक तुझमें समानता के भाव उदय नहीं होंगे; तब तक मस्जिद भी तेरे लिए मूर्ति-गृह के समान है ।

जब तेरे हृदय में समानता के भाव अपना अस्तित्व जमा लेंगे तब मन्दिर (मूर्तिस्थान) भी तेरे लिये मस्जिद बन जायगा ।

मैं केवल यही जानता हूँ कि जिस दशा में भी तू है, तेरा उद्धार हो जायगा, यदि तू इन्द्रियों के विरोध को मिटा दे ।

इशारत ववुतो तरसा वच्चा

वुतो तरसा वच्चा नूरेस्त जाहिर ।
 कि अज रूप वुताँ दारद मजाहिर ॥
 कुनद ऊ जुम्ला दिलहा रा व साक्की ।
 गहे गदंद मुगनी गाह साक्की ॥
 जेहे मुतरिव कि ऊ अज नगमए खस ।
 जनद दर खिरमने सद जाहिद आतश ॥
 जेहे साक्की कि ऊ अज यक पियाला ।
 कुनद वेखुद दोसदहफताद साला ॥
 अगर दर मसजिद आयद दर सहरगाह ।
 न वेगुजारद दरो यक मरदे आगाह ॥
 रवद दर खानकाह मस्ते शब्दाना ।
 कुनद अफजू सूकी रा किसाना ॥
 शवद दर मदरसा चूँ मस्त मस्तूर ।
 फकीह अज वै शवद वेचारा मखमूर ॥
 जे इश्कश जाहिदाँ वेचारा गश्ता ।
 जे खानो माने खुद आवारा गश्ता ॥

मूर्ति और अग्नि-पूजक के प्रति

मूर्ति और अग्नि से उत्पन्न हुई आभा एक ऐसी दिखावटी आभा है जो प्रेमिकाओं के मुख से अपना जलवा दिखलाती है ।

वह आभा सभी दिलों को अपने प्रेम-जाल में फँसा लेती है । कभी वह एक गायक का रूप धारण कर लेती है और कभी मदिरा-वाहक का ।

वह गायक कैसा है ? ऐसा जो एक ही राग से सहस्रों परहेजगारों के दिलों में आग उत्पन्न कर देता है ।

वह साक्की कैसा है ? ऐसा जो एक ही प्याले में दो सौ सत्तर वर्ष के वृद्ध को मतवाला बना देता है ।

यदि प्रातःकाल उठकर वह साक्की मस्जिद में चला जाय, तो वहाँ के सभी लोग खुदा को भूल जावें ।

यदि वही साक्की रात्रि के समय किसी साधु की कुटी में चला जावे, तो साधु का जप-तप सब हवा हो जावे ।

जब वह मतवाला, पाठशाला में पहुँचता है, तो शिक्षक, शिक्षा देना भूल कर नशे में चूर हो जाता है ।

जो मनुष्य परहेजगार थे, वह उससे प्रेम करने के लिये वाध्य होकर अपने घरों से बाहर निकल आए हैं ।

वरीं ता इल्मो जोहदो कित्रो पिन्दाश्त ।
 तुरा ऐ ना रसीदा अज के वादाश्त ॥
 नजर कर्दम वरुयम नीम सायत ।
 हमी अरजद हजाराँ साला ताअत ॥
 अलल जुम्ला रुखे आँ आलम आराए ।
 मरा वामन नमूद अन्दर सरो पाए ॥
 सियह शुद रूप जानम अज खिजालत ।
 जे कौते उम्रो ऐयामे वतालत ॥
 चु दीदौ माह कज रूप चु खुर्शीद ।
 कि वेवुरीदम मन अज जाने खुद उम्मीद ॥
 यके पैमानां पुर कर्दो वमन दाद ।
 कि अज आवे वै आतश दर मन उक्ताद ॥
 कनू गुफ अज मए वेरंगो वे वूए ।
 नकूशे तगसए हस्ती केरो शोए ॥
 चु अशामीदम आँ पैमाना रा पाक ।
 दर उपतादम जे मस्ती वर सरे खाक ॥

मुझे, ध्यान से देख कि तेरी इसी विद्या और घमंड ने तथा परहेजगारी ने मुझे तेरे अभीष्ट स्थान तक पहुँचाने से रोक दिया ।

आधी घड़ी के लिये मेरे मुख पर दृष्टि डाल ले, वह हजारों वर्षों की पूजा और भजन के समान है ।

मारांश कि परलोक काँ सँभाल देने वाले बार के मुखड़े ने मुझे यह दिखा दिया कि मैं क्या था ।

यह समझ कर कि मेरे जीवन के इतने दिन व्यर्थ की बातों ही में चले गये, मेरा मुख लज्जा से नीचा हो गया ।

उस बार ने यह समझ कर कि उसके मूर्ख के समान मुख को अप्राप्त समझ कर मैं अपने जीवन में निराश हो गया हूँ,

वह अपना नर के मुँह दे दिया । उस पीते ही मेरे शरीर में बिजली सी दौड़ पड़े ।

वचरमे मुनकरी मनिगर दरो खार ।
 कि गुलहा गरदद अन्दर चरमे तो खार ॥
 निशाने नाशानासी ना सिपासीस्त ।
 शिनासाईए हक़ दर हक़ शिनासीस्त ॥
 गरज जी जुम्ला आँ ता गर कुनद याद ।
 अजीजे गीयदम रहमत वरो वाद ॥
 वनामे खेश करदम खत्मो पायाँ ।
 इलाही आक़वत महमूद गर्दाँ ॥

पर उनकी तरफ़ सन्देहात्मक दृष्टि से न देख । इन रहस्यों में टीका टिप्पणी करने का विचार न कर । नहीं तो जितने भी पुष्प हैं सब तेरी दृष्टि में शूल हो जायेंगे ।

यह कहना कि मैं इन्हें जानता नहीं हूँ, कृतघ्नता प्रकट करना है । कृतज्ञता दर्शाने से ईश्वर भी प्रसन्न होता है ।

इस सब का आशय यह है कि यदि कोई महाशय किसी समय मुझे स्मरण करें, तो उनके मुख से यही निकले कि ईश्वर उस पर कृपा करे ।

मैंने अपने नाम पर ही इसे समाप्त कर दिया है । हे ईश्वर मुझ “महमूद” को फल अच्छा देना ।



दासकृष्ण । वाडे श्याम ।
'प्रत्यय-मृत्तयम' न मुद्रित एव प्राचीन चित्र मे ।

इनके जन्मकाल के विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता। हाँ, इनकी मृत्यु सन् १३९० ईस्वी में हुई थी। इनका नाम शम्शुद्दीन मुहम्मद था। इन्हें लोग बहुधा लिसातुलगौव (अदृश्य की तलवार) तथा तर्जुमानुल असरार (रहस्य के अनुवादक) भी कहा करते थे। ब्राउन ने इनका जीवन-वृत्तान्त लगभग पचास पृष्ठों में लिखा है। उसके कथनानुसार शिवली की लिखी हुई पुस्तक इस विषय में सर्वोत्तम तथा विश्वसनीय और प्रमाणिक इतिहास है। फारस के उन कवियों में जिन्होंने गान संबंधी पद लिखा है, हाफिज सर्वश्रेष्ठ हैं, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। लेवी का कथन है कि भाषा, भाव और कल्पना के अनुसार, फारस के कवियों में इनका स्थान सबसे ऊँचा है (Persian Literature P. 77)।

वह तो सभी मानते हैं कि हाफिज रहस्यवादी थे। प्रकट रूप में यह कहा जा सकता है कि हाफिज ने मदिरा तथा स्त्रियों की प्रशंसा में अधिक लिखा है। परन्तु इनके अन्दर छिपी हुई “गूढ़ रहस्यवाद की बातों” को सभी मानते हैं। जिन बातों को उन्होंने प्रकट करने का प्रयत्न किया है, जिस रहस्य को उद्घाटन करने का विचार किया है, वह सभी पूर्णतया उचित रूप में लोगों के सम्मुख रखी गई हैं। इस विषय में उन्हें सदैव सफलता प्राप्त हुई है। “हाफिज की मदिरा आन्तरिक प्रसन्नता, सराय पूजा गूढ़ और फारस का पुराना पुजारी आत्मिक गुरु है।” मुसलमानों में हाफिज के दीवान से शकुन उठाने की प्रथा प्रचलित है। यहाँ तक की भारतवर्ष के बादशाह भी उससे शकुन उठाया करते थे। जहाँगीर के विषय में ऐसा ही कहा जाता है।

हाफिज को मदिरा बहुत प्रिय थी। कुछ समय उपरान्त वह उसी मदिरा से आन्तरिक प्रसन्नता का आशय निकालने लगे। हाफिज की इच्छा इस प्रकार थी :—

“यदि अधिक मदिरापान से ही मेरी मृत्यु हो तो मुझे मेरी सनाधि तक एक शराबी के ही भेष में लाना। ऐसे स्थान पर जहाँ चारों ओर अंगूर की वेलें हों, और जो किसी सराय की बगल में हो, मेरी कन्न बनाना। मेरी लाश को उसी सराय के पानी से स्नान कराना और शराबियों के कन्धों पर ही मेरी अर्धों भी ले जाई जावे। मेरी मिट्टी भी लाल मदिरा से नम की जावे और मेरा शोक मनाने के लिये वही तीन तारों वाली सितार बजायी जावे। यही मेरी अन्तिम इच्छा है—वसीयत है। मेरी मृत्यु का शोक मनाने वालों में केवल फारस के अभिनेता तथा गानेवाले हों। हाफिज को मदिरा से प्रथक मत करना। शराबियों के साथ बादशाहों को भी सत्नी नहीं करनी चाहिये।”

मिस गार्ड्रेड जेज ने भी कुछ पंक्तियाँ हाफिज के सन्दन्ध में लिखी हैं। कदाचित् यह हाफिज का अनुभव हो :—

“हाफिज़ ने बहुत से राजाओं—महाराजाओं को देखा। उन्होंने शक्ति-सम्पन्न की—ख्याति प्राप्त की। और फिर एक एक करके मरुभूमि की सतह पर जमी हुई बर्फ के समान विलीन हो गये।”

अपने जीवन-काल में ही हाफिज़ को पूर्ण ख्याति प्राप्त हो गई थी। जिसके कारण उनके पास खुरासान, तुर्किस्तान और मैसेपोटामियाँ से निमंत्रण आये थे। मुहम्मद शाह बहमनी ने भी उन्हें दक्षिण भारत में, निमंत्रण देकर बुलाया था। हाफिज़ ने चलने की तय्यारी भी कर ली थी। परन्तु दुर्भाग्य से जहाज़ पर चढ़ने से पहले ही एक ऐसी दुर्घटना होगई, जिससे उन्हें रुक जाना पड़ा। घर पर भी हाफिज़ को शाही दरवार से बहुत कुछ मिलता था।

इनकी रचनाओं के अगणित अनुवाद हो चुके हैं। केवल इंग्लैण्ड में ही छः अनुवाद हो चुके हैं, जिनमें से मिस वेल तथा मिस्टर ओन्सले के सर्वोत्तम समझे जाते हैं। मिस्टर ओन्सले ने उनके विषय में लिखा है :—

“इनकी भाषा मुहाविरदार, सुन्दर तथा वनावट से रहित है। शैली को देखने से ही पता चल जाता है कि लेखक उच्च कोटि का विद्वान है और उसे प्रकट तथा अप्रकट वस्तुओं का पर्याप्त ज्ञान है। इसके अतिरिक्त भाषा में एक ऐसा आकर्षण है जो अन्य कवियों की रचनाओं में नहीं पाया जाता।”

जन साधारण में तैमूर लंग और हाफिज़ की कहानी अधिक प्रसिद्ध है। तैमूर लंग ने जब हाफिज़ के मुख से यह शब्द सुने :

“अगर थाँ तुर्के शीराज़ी बदस्त आरद दिले मारा।

बखाले हिंदवशा बख़श्म समरक़ंदो बुखारा ॥”

तब वह बहुत क्रोधित हुआ और उसने उन्हें बुलाकर पूछा कि तुम इन मुल्कों के विषय में ऐसी मामूली बातें क्यों कहते हो जिनके जीतने के लिये मुझे इतना खून बहाना पड़ा। हाफिज़ का उत्तर बड़ा ही विलक्षण था :

“हे शाहनशाह ! अपने इन्हीं उच्च विचारों के कारण मैं आजकल इतना कंगाल हूँ।”

रचनायें :—

दीवान ।

(२)

ऐ नसीमे सहर आराम गहे यार कुजाअस्त ।
 मंजिले आँ महे आशिके कुशे अय्यार कुजाअस्त ॥
 शत्रे तारस्तो रहे वादिए ऐमन दर पेश ।
 आतिशे तूर कुजा मौअदे दीदार कुजाअस्त ॥
 हर कि आमद व जहां नकशे खरावी दारद ।
 दर खरावात मपुरसेद कि हुशयार कुजाअस्त ॥
 आँ कसस्त अहे वशारत कि इशारत दानद ।
 नुकताहाहस्त वसे महरमे असरार कुजाअस्त ॥
 हर सरे मूए मरा वा तू हजाराँ कारस्त ।
 मा कुजाएमो मलामत गरे बेकार कुजाअस्त ॥
 अकल दीवाना शुद आं सिलसिले मिशकीं कू ।
 दिल जे मा गोशा गिरिके अत्रुए दिलदार कुजाअस्त ॥
 आशिके खस्ता जे दर्दगमे हिअे तो व सोख्त ।
 खुद न पुरसी तु कि आँ आशिके गमखार कुजाअस्त ॥

(२)

ऐ प्रभात के शीतल पवन ! प्यारे के शयन करने का स्थान कौनसा है और उस प्रणयी को बध करने वाले उस दगावाज चन्द्रमा का घर कहाँ है ।

रात अँधेरी है और ऐमन घाटी का मार्ग सामने ही है (वह स्थान जहाँ मृसा को खुदाई जलवा दिखाई दिया था) नूर की अग्नि कहाँ चली गई है और मिलन-मन्दिर किधर है ?

संसार में जो मनुष्य आया है, वह नष्ट कर देने वाले चित्रों को लेकर आया है । इसलिये मदिरा-गृह में जाकर यह न पूछो कि कहाँ है ।

शुभ समाचारों वाला वही मनुष्य है जिसे अन्य लोगों की तरफ से इशारा मिल गया है कि भीतर चले आओ । टीका-टिप्पणी करने के लिये तो बहुत स्थान हैं परन्तु रहस्य का जानने वाला कौन है ? उसका होना भी आवश्यक है ।

तेरे एक एक बाल में हमारे अगणित स्वार्थ छिपे हुए हैं । हम कहाँ आ पड़े हैं और व्यर्थ में खरी-खोटी कहने वाला कहाँ हैं ?

हमारी सनभ में पागलपन समा गया है । वह मुखी रंग की अलकें न नाट्यम किधर छिप गई हैं । हमारा दिल एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ है । प्रियतमा को वह भौंके कहाँ है ।

बेचारा प्रेमी तर प्रेम और विरद में जल रहा है और तू यद भी नहीं पूछता है कि वह दुखिया कहाँ है ।

(४)

नमो इस्के तू रिज सुखिलाए खेरातनस्त ॥
 तफुश मरान्जा कि ईमरा सजाए खेरातनस्त ॥
 गरस्त जो दस्त नर आगर मुसारे खानिरे मा ॥
 बदस्त नारा कि खेरे नजाए खेरातनस्त ॥
 वजानन ऐ नुते शीरीने मन कि हुमनु शमा ॥
 शवाने तोरा मरा न्दमे फनाए खेरातनस्त ॥
 चुराए इस्क जन्दी पावू मुकम ऐ पुलपुल ॥
 महुन कि आँ गुले खुद री नराए खेरातनस्त ॥
 नमिरके नीनो निगिल नेस्त पूए गुल मोद्लाज ॥
 कि नाकदारा खे रंदि कनाए खेरातनस्त ॥
 मरो व खानाए अखान वे-मुरखते दस्त ॥
 कि हुंजे आकियतन् दर सराए खेरातनस्त ॥
 वसोखत हाफिजो देर शर्त इस्को जन्बायो ॥
 हुनोजा नर सरे अददो बफाए खेरातनस्त ॥

(४)

तेरी काली अलकों के जाल में यह हृदय अपने आप ही जाकर फँस गया है। अपनी तिरछी चितवन से तू उसे मार डाल। उसका यही दण्ड है।

यदि मेरी इच्छाएँ—हृदय की आकाँक्षाएँ तेरे द्वारा पूर्ण हो जायँ तो तेरा बोलवाला हो। यह अपने साथ भलाई करने के समान है।

ऐ सुन्दरी, प्रियतमा, तेरे प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रत्येक अंधेरी रात को मैं इसी विचार में रहता हूँ कि तेरे दीपक के समान रूप पर, पतंगा बनकर मैं अपने आप को न्यौछावर कर दूँ।

जब तूने प्रणय का उपदेश लिया था, मैंने तभी कह दिया था कि ऐ बुलबुल तू प्रेम न कर। वह पुष्प जो अपने आप उत्पन्न हुआ है वह स्वयम् अपने ही लिये उगा है।

फूल अपनी सुगन्धि किसी दूसरे से उधार नहीं लेता है वह स्वयं सुगन्धि का भंडार है। और उसके पर्दों के अन्दर कस्तूरी के बहुत से टुकड़े छिपे हैं।

जो लोग रखे स्वभाव के हैं, जिन्हें दूसरों से स्नेह नहीं है उनके पास मत जाओ। तुम्हारे निजी घर में ही विश्राम करने के लिये कोना मौजूद है।

हाफिज, जल कर मर गया परन्तु उसने जो प्रेम और प्राणों पर खेल जाने की प्रतिज्ञा की थी उस पर अब तक दृढ़ है।

(६)

वरौ वकारे खुद ऐ वाइज़ ईं चे कर्यादस्त ।
 मरा कितादा दिल अज़ कफ तुरा चे उक्तादस्त ॥
 वक़ाम ता न रसानद मरा लवश चूनाय ।
 नसीहतें हमा आलम वगोशे मन वादस्त ॥
 गदाए कूए तु अज़ हश्त खुल्द मुस्तगानास्त ।
 असीरे वंद तू अज़ हर दो आलम आज्ञादस्त ॥
 मियाने ऊ कि खुदा आकरीदास्त हेचस्त ।
 दक्कीका एस्त कि हेच आकरीदर न कुशादस्त ॥
 अगर्चे मस्तिए इश्क ख़राव कर्द बले ।
 असास हस्तिए मन ज़ाँ ख़राव आवादस्त ॥
 दिला मनाल जे वेदादो जौरे यार के यार ।
 तुरा नसीव हर्मी करदास्त व ईँ दादस्त ॥
 वरौ फिसाना मख़ानो किसँ मद्म "हाफिज़" ।
 कर्ज़ी फिसान अफ़सू मरा वसे वादस्त ॥

(६)

ऐ उपदेशक ! क्या तेरे लिये और कोई काम नहीं रह गया है । मुझे इस शिक्षा की आवश्यकता नहीं है । मेरा तो दिल चला गया है, तेरा क्या बिगड़ गया है ।

जब तक उस प्रेमिका के ओठ मुझे वीणा के समान अपने बीच में नहीं ले लेंगे तब तक सारे संसार की शिक्षा मुझपर कोई असर नहीं कर सकती ।

जो तेरी गली में धूनी रमाये बैठा है उसके लिये आठों स्वर्ग भी कोई चीज़ नहीं है और जिसके तेरी वेड़ियाँ पड़ी हुई हैं वह दोनों जहानों से स्वतंत्र है ।

जिसे ईश्वर ने उत्पन्न किया है वह नाशवान है । यह एक ऐसी उलझन है जिसे किसी मनुष्य ने आज तक सुलझा नहीं पाया है ।

यद्यपि मैं प्रणय की मदिरा से मतवाला हो रहा हूँ परन्तु यह मैं भली प्रकार समझता हूँ कि मेरे जीवन की नाँव उसी वीहड़ स्थान से है ।

तेरा यार अगर तेरे ऊपर अत्याचार करे और अपनी प्रतिज्ञा को पूरा न करे तो उसके विषय में किसी से शिकायत न कर । उस यार ने तेरे भाग्य का निर्णय इसी प्रकार किया है और इसी को न्याय भी समझो ।

ऐ "हाफिज़," जा । मुझसे यह वनावटी बातें न कर । ऐसी भुलावा देने वाली बहुत सी बातें मुझे मालूम हैं ।

बलद मतेत्रा शाही कि न चाके सिपहर ।
 नमूनए रुखम ताके वारगह दानिस्त ॥
 हदीसे हाकिजो सार कि मी जनद पिनहाँ ।
 चे जाए मोहतिसियो रहना पादशाह दानिस्त ॥

(८)

बया के कन्ने अमल सग्त सुस्त बुनियादस्त ।
 बयार वादा के बुनियाद उत्र बर्वादस्त ॥
 इलाम हिम्मत आनम कि जेर चखे कबूद ।
 जे हचे रंग तअल्लुक पजौरद आजादस्त ॥
 चे गोएमत कि बमैखाना दोश मस्तो खराव ।
 सरोशे आलमे शैवम चे मुज्जदहा दादस्त ॥
 के ऐ बुलन्दे नजर शाहवाजे सिद्र नशी ।
 नशमने तू न ई कुंजे मेहनत आवादस्त ॥
 तुरा जे कंगुरए अशी मी जनन्द सकीर ।
 नदानमत कि दर्रा दामगहे चे उक्तादस्त ॥
 नसीहते कुन्मत यादगीरे व दर अमल आर ।
 कि ई हदीस जे पीरे तरीकतम यादस्त ॥

वह सम्राट कितना महान् है। वह आकाशों को अपने मन्दिर के महाराजों के समान समझता है।

(८)

हाकिज झिपकर मदिरा पान करता है। यह बात अब गुप्त नहीं है। इसे ऊँच और नीचे सभी जान गये हैं।

आशाओं के भवन की नींव बहुत कमजोर है। उसकी दीवारें चण-भर में गिर सकती हैं। और मदिरा ला। जीवन का कोई भरोसा नहीं है।

मैं उस मनुष्य के साहस का कायल हूँ जो गीले आकाश के नीचे प्राप्त होने वाली वस्तुओं में से किसी से भी सम्बन्ध नहीं रखता और न किसी की चिन्ता रखता है।

कल रात को जब मैं शराव खाने में, मदिरा के नशे में मतवाला हो रहा था, उस समय आकाशवाणी ने मुझे बहुत से शुभ समाचार दिये थे। वह इतने आनन्द दायक हैं कि उनका वर्णन करना मेरी शक्ति से परे है।

ऐ स्वर्गीय वृत्तों (कल्प वृत्त) पर भ्रमण करने वाले जीव यह संसार तेरे रहने योग्य स्थान नहीं है। यहाँ अध्यवसाय की आवश्यकता है।

तेरे लिये आकाश से बुलावा आ रहा है, फिर न मालूम किस लिये इन बन्धनों में यहाँ बँधा हुआ पड़ा है।

मैं भी तुम्हें एक उपदेश दे रहा हूँ। इसे स्मरण रखकर काम में लाना। बुद्धिमानों की एक बात मैंने भी याद रखी है।

मिन्नते सिद्रा व तूत्रा ज पये साया मकश ।
 के चो खुश विनगरी ऐ सरवेरवाँ ईं हमा नेस्त ॥
 अज तहतुक मकुन अन्देशा वचूँ गुल खुशवाश ।
 जाँ कि तमकीने जहाने गुजरा ईं हमा नेस्त ॥
 दौलत आनस्त कि वे खूने दिल उफ़द वकिनार ।
 वरना वासइये अमल वागे जिनाँ ईं हमा नेस्त ॥
 जाहिद ऐ मन मशौ अज वाजिये गैरत जिनहार ।
 कि रह अज सौमत्रा ता दैरे मुगाँ ईं हमा नेस्त ॥
 पंज रोजे कि दर्रीं मरहला मोहलतदारी ।
 खुश वे आसाए जमाने कि जमाँ ईं हमा नेस्त ॥
 वर लवे वहे फना मुंतजिरेम ऐ साक्की ।
 फुरसते दाँ कि जे लव ताव दहाँ ईं हमा नेस्त ॥
 दर्दमंदोए मने सोखतए जारो निजार ।
 जाहिरा हाजते तक्ररीरो वयाँ ईं हमा नेस्त ॥
 नमे हाकिज रकमे नेक पजीरक वले ।
 पेशे रिदाँ रत्रमे सूदो जियाँ ईं हमा नेस्त ॥

केवल छाया के लिये इन स्वर्गीय वृत्तों का अहसान अपने सर पर न लो । यदि तुम भले प्रकार विचार करोगे तो इन वस्तुओं को नाशवान् पाओगे ।

रहस्य प्रकट हो जाने का कोई शोक न करो और पुष्प के समान सदैव आनन्द से खिले रहो । इस बहुरूपिणी दुनियाँ में पद और प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सभी कुछ मिटने वाले हैं ।

वैभव और सम्पत्ति उसी को कहना चाहिये जो बिना परिश्रम के, बिना हृदय का रक्त बहाए हुए प्राप्त हो जावे । अन्यथा प्रयास और प्रयत्न से तो स्वर्ग का उपवन भी प्राप्त किया जा सकता है ।

ऐ पेवित्र मनुष्य, विघाता के खेलों को सदैव अपने ध्यान में रख । पूजा-गृह से, मदिरा-गृह कुछ अधिक दूरी पर नहीं है ।

इस मार्ग में तुम्हें केवल पाँच दिवस का अवकाश प्राप्त हुआ है । यदि रख यह बहुत कम है । इसलिये यदि विश्राम करना चाहता है तो शीघ्रता कर ।

हम इस सर्वभक्तक दरिया के तट पर साक्की की प्रतीक्षा में खड़े हुए हैं । तनिक अवसर का भी विचार रख । पीने के लिये कुछ प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है । और जीवन भी स्थायी नहीं है ।

मुक्त दुखिया और प्रणय-प्रसित की अवस्था प्रकट में थोड़े ही शब्दों में कही जा सकती है । इसके लिये अधिक शब्दों की और वर्णन की आवश्यकता नहीं है ।

हाकिज की ख्याति दूर दूर तक फैल गई है परन्तु जीवनमुक्त पुरुषों के निकट इसका कुछ भी मूल्य नहीं है ।

(११)

दिल सरा पर्दे मुहव्यते ओस्त ।
 दीदा आईना दार तलअते ओस्त ॥
 मन कि सर दर नयावरम वद व कोन ।
 गरदनम् जेर वार मिन्नते ओस्त ॥
 गर मन आलूदा दामनम् चे अजव ।
 हमा आलम गवाहे असमते ओस्त ॥
 मन कि वाशम् दराँ हरम कि सवा ।
 परदादारे हरीमे हुरमते ओस्त ॥
 मुलकते आशिकी व गंजे तरव ।
 हर्चे दारम जे चमन दौलते ओस्त ॥
 वे खयालशा मवाद मंजरे चरम ।
 जाँ कि ई गोशा खासे खिलकते ओस्त ॥
 दौरे मजनूँ गुञ्जस्तो नौवते मास्त ।
 हर कसे पंज रोज़ नौवते ओस्त ॥
 मन व दिल गर फ़िदा शुदेम चे शुद ।
 गरज़ अन्दर मियौँ सलामते ओस्त ॥

(११)

हृदय उसके प्रेम का स्थान है और नेत्र उसकी सूरत का दर्पण है ।
 मैं दोनों जहानों में किसी को सर नहीं झुकाता हूँ । परन्तु उसके
 एहसान के भार से यह सर झुक जाता है ।

मैं पापी हूँ तो इसमें अश्चर्य ही क्या है । परन्तु उसकी पवित्रता का तो
 सारा संसार साक्षी है ।

मैं उस रँगमहल में कुछ भी अस्तित्व नहीं रखता हूँ जहाँ की वायु
 उसकी प्रतिष्ठा की रक्षक है ।

प्रणय की जागीर और आनन्द का कोष जितना भी मेरे पास है वह
 सब उसी की अनुकम्पा और विशाल हृदयता का फल है ।

मैं यह चाहता हूँ कि मेरे नेत्रों में उसकी शोभा के अतिरिक्त और किसी
 वस्तु के लिये स्थान न रहे । यही एक ऐसा कोना है जो कि उत्तम पूजागृह
 कहा जा सकता है ।

मजनूँ का ज़माना बीत गया अब उसके स्थान पर मैं हूँ । प्रत्येक मनुष्य
 की बारी केवल पाँच दिन की होती है ।

मैं यदि अपने हृदय के साथ न्योछावर हो गया तो क्या हुआ । उसका
 प्रसन्न और सकुशल रहना आवश्यक है ।

कलंदरी न वरेशस्तो मूए या अवरू ।
 हिसावे राहे कलंदर वदीं के मूए वमूस्त ॥
 गुजश्तन अज सरे मू दर कलंदरी सहलस्त ।
 चो हाकिज आँ के जे सर वगुजारद कलंदरुस्त ॥

(१३)

राहेस्त राहे इश्क कि हेचश किनारा नेस्त ।
 आँजा जुज अंगह जाँ वसिपारंद चारा नेस्त ॥
 हरगह कि दिल वइश्क दिही खुश दमे बुवद ।
 दर कारे खैर हाजते हेच इस्तराारा नेस्त ॥
 मारा वमने अकल मतरसाँ दमे वयार ।
 काँ राहना दर विलायते मा हेचकारा नेस्त ॥
 अज चश्मे खुद वे पुस कि मारा कि मी कुशद ।
 जानाँ गुनाहे तालओ जुमें सितारा नेस्त ॥
 फुरसत शुमर तरीकये रिन्दी कि ई तरीक ।
 चू राहे गंज वरहमा कस आशकारा नेस्त ॥
 ऊरा वचश्मे पाक तवाँदीद चू हिलाल ।
 हर दीदा जाए जत्वये आँ माहपारा नेस्त ॥

शिर मुड़ाने अथवा दाढ़ी रखाने से ही कोई सन्यासी नहीं हो जाता । इस मार्ग पर जो कि बाल के समान पतला है, चलना बहुत ही कठिन है ।

बालों का विचार करना तो इस मार्ग में एक बहुत ही साधारण बात है । परन्तु वास्तव में उदासी वही है जो इन बातों का विचार छोड़ कर भी “हाकिज” के समान अपने आप को मिटा डाले ।

(१३)

प्रणय मार्ग अनन्त है । उस मार्ग में अपने आपको मिटा डालने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है ।

जिस समय किसी के प्रेम में तू अपने हृदय को खो बैठे तो उस समय को बहुत ही शुभ समझना चाहिये । भले काम में किसी प्रकार के सोचने विचारने की आवश्यकता नहीं है ।

ज्ञान के उपदेश करने की धमकी मुझे मत दे और मेरे लिये मदिरा ला । क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ मदिरा के ऊपर निगरानी रखना व्यर्थ है ।

प्रियतमे ! इसमें मेरे भाग्य अथवा ग्रहों को दोष देना व्यर्थ है । अपनी ही आंखों से क्यों नहीं पूछती कि मुझपर अत्याचार का पहाड़ क्यों ढारही हैं ?

यह भो ठीक है कि फकीरी का मार्ग कोप के मार्ग के समान किसी पर विदित नहीं है ।

इस प्रियतमा को पहिली रात के चन्द्रमा के समान पवित्र और वासना-रहित दृष्टि से ही देखना उचित है । और इसीलिये प्रत्येक आँख इस कार्य के लिये अनुचित है ।

नगिरक़ दरतो गिरियए "हाफ़िज़" वहेच रूप ।
 हैराने आँ दिलम कि कमअज़ संगेज़ारा नेस्त ॥

(१४)

रोज़गारेस्त कि सौदाये बुताँ दीने मन अस्त ।
 रामे ईं कार निशाते दिले रामगीने मन अस्त ॥
 दीदने रूपे तुरा दीदये जाँ वो वायद ।
 वो कुजा भरतवए चरमे जहाँ वीनेमन अस्त ॥
 ता मरा इश्क़े तू तालीमे सुखन गुफ़ुन दाद ।
 जलक़ रा विदेँ जुवाँ मदहतो तहसीने मन अस्त ॥
 दौलते फ़क़ जुदाया वमन अरज़ानीदार ।
 काँ करामत सववे हरमतो तमक़ीने मन अस्त ॥
 यारे मन वाश कि ज़ेवे फ़लक़ो जीनते वह ।
 अज़ महे रूपे तूओ अरक़ चो परवीने मन अस्त ॥
 वाइजे शहना शनास ईं अज़मत गो भफ़रोश ।
 जाँ के मंज़िल गहे सुस्ताने दिले मिसक़ीने मनस्त ॥
 यारव ईं कावए मक़तूदो तमाशा गहे कीस्त ।
 के मुगीलीँ तरीक़श गुलो नख़ीने मनस्त ॥

"हाफ़िज़" के रोने का कोई भी अस्तर तेरे हृदय पर नहीं हुआ । मैं ऐसे हृदय से हैरान हो गया हूँ जो कि कठोर पत्थर से भी कठोर है ।

(१४)

बहुत समय से प्रियतमाओं से प्रेम करना ही मेरा धर्म हो गया है । और यह काम मेरे दुखी हृदय को आनन्द प्रदान करता है ।

तेरा मुख देखने के लिये प्राणों के अस्तित्व को समझने वाली आँख चाहिये । मेरी आँख जो कि संसार की वास्तविकता को समझने में अनमर्ग है, यह पद किस प्रकार प्राप्त कर सकती है ।

जब से तेरे प्रणय ने मुझे कविता लिखना सिखाया है, तभी लगे मेरी बड़ाई करते हैं और मुझे प्रतिष्ठा की लक्ष्मि से देखते हैं ।

भगवान कृपा करके मुझे मन्यासा बना के बना से मेरा प्रतिष्ठा और ख्याति है । मेरी इच्छा है कि तुम मेरे साथ ही साथ चले ।

कारण, कि आकाश और पृथ्वी दोनों का शान्त तुम्हारे अन्दरना से सुव और मेरे प्रवीन ने आसुओं से है ।

यह जो नाना प्रकार के उर्वरक उरता है, उस से जहाँ से वह उरता है अधिक शान्त न दिखते । पर मेरा शान्त शान्त उरता है, उस से वह उरता है । नम्राट का निवास स्थान है । इह ।

यह लोगो का तीरेक्षण काय प्रकृति से उरता है, उरता है । इसके माग के काटे मेरे लिये तुम्हारे और उरता है, उरता है ।

“हाफिज” अज हश्मते परवेज दिगर किस्सा मखी ।
कि लवशा जुरी कशे सुम्नवे शीरीने मनस्त ॥

(१५)

रौशन अज परतवे रूयत नजरे नेस्त कि नेस्त ।
मिन्नते खाके दरत वर वसरे नेस्त कि नेस्त ॥
नाजिरे रूप तु साहव नजरानंद आरे ।
सिरे गेसूए तु दर हेच सरे नेस्त कि नेस्त ॥
अशके गम्माजे मन अर सुर्ख वर आमद चे अजव ।
खजिल अज कर्दए खुद परदा दरे नेस्त कि नेस्त ॥
मन अजीं तालए शोरीदा वरंजम वरना ।
वहरसंद अज सरे कूयत दिगरे नेस्त कि नेस्त ॥
तू खुद ऐ शोलए रछिशदा चे दारी दर सर ।
के कवाव अज हरकातत जिगरे नेस्त कि नेस्त ॥
ता दम अज शामे सरे जुल्के तू हर जा न ज़नद ।
वा सवा गुफ़ो शुनीदम सहरे नेस्त कि नेस्त ॥

ऐ “ हाफिज ” परवेज बादशाह के ठाट वाट का वर्णन न करो, क्योंकि उसकी ख्याति भी तो मेरे खुसरू और शीरी के प्याले को ओठों से लगाने ही से थी ।

(१५)

तेरे मुख के प्रकाश से सभी निगाहें प्रकाशित हो रही हैं और तेरे दर्वाजे की धूल का अहसान सभी के ऊपर है ।

तेरे मुख को बड़े बड़े नजर लड़ाने वाले लोग देखते हैं और कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है जिसका दिल तेरी काली अलकों में न उलझा हो ।

मेरे यह चुगली खाने वाले अश्रुविन्दु यदि लाल रंग के होकर निकल रहे हैं तो उसमें आश्चर्य की कौन सी बात है । क्योंकि रहस्य को खोलने वाला कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने इस कार्य से लज्जित न हो ।

मैं अपने इस दुर्भाग्य से ही विपत्तियों में आ पड़ा हूँ, नहीं तो संसार के सारे वैभव केवल तेरी गली में ही प्राप्त हो सकते हैं ।

ऐ चमकीली अग्नि-शिखा तेरे मस्तिष्क में क्या क्या विचार उत्पन्न हो रहे हैं ! तेरी शरारतों से कोई भी कलेजा खाली नहीं है ।

सभी तेरी इन शरारतों से आरी आ रहे हैं । मैं प्रभात-वायु से प्रत्येक दिन यही बातचीत करता रहता हूँ कि वह तेरी लटों का कहीं दूसरी जगह चर्चा न कर बैठे ।

अज हयाये लवे शीरीने तू ऐ चश्मए नोश ।
 राक़े आयो अरक़ अकनूँ शक़रे नेस्त कि नेस्त ॥
 मसलेहत नेस्त कि अज पर्दा वरूँ उफ़तद राज ।
 वरना दर मजलिसे रिंदाँ ख़वरे नेस्त कि नेस्त ॥
 अज वजूदी क़दरम् नामो निशां हस्त कि हस्त ।
 वरना अज जोफ़ दर आँजा असरे नेस्त कि नेस्त ॥
 शेर दर वादियए इश्के तू रुवाह शवद ।
 आह अर्जी राह कि दर ये ख़तरे नेस्त कि नेस्त ॥
 नाज़ुकारा सकरे इश्क़ हरामस्त हराम ।
 कि बहरगाम दर्री रह ख़तरे नेस्त कि नेस्त ॥
 आवे चश्मम कि वरू मिन्नते खाके दरे तुस्त ।
 च़रे सद मिन्नते ऊ खाके दरे नेस्त कि नेस्त ॥
 ता बदामन न नशानद ज़े नसीमत गर्दे ।
 सैले अश्क़ज मिज़ाअम वर गुज़रे नेस्त कि नेस्त ॥
 न मने दिल शुदा अज दस्ते तु ख़ूनी ज़िगरम् ।
 क़च़ ग़मे इश्के तु पुर ख़ू ज़िगरे नेस्त कि नेस्त ॥

ऐ मिठास के सोते, तेरे भीठे ओठों की स्पर्धा में सभी प्रकार की शक़रे पानी में डूब चुकी हैं अर्थात् लज्जित हो चुकी हैं ।

यह ठीक नहीं है कि किसी प्रकार रहस्य प्रकट हो जावे अन्यथा साधुओं के जमाव में सभी प्रकार के आनन्द उपस्थित हैं ।

मुझे अपने जीवन का केवल इतना ही पता है कि यह है । ग़ोकि उसमें सभी प्रकार की दुर्बलताएँ पाई जाती हैं ।

तेरे प्रणय के वन में सिंह भी लोमड़ी बन जाता है । बड़े बड़े साहसी हृदय भी हिम्मत खो देते हैं ।

यह मार्ग ही इतना कठिन है कि इसमें सभी प्रकार के ख़तरे उपस्थित हैं ।

मेरा वह आँसू जो तेरे दर्वाजे की स्तुति में गिरा है और जिसपर उमदी धूल का अहसान है, सभी दर्वाजों की धूल से अधिक पवित्र और मूय्यवान है ।

इसलिये कि तेरे अख़्तल पर किसी प्रकार की पूरा कथना कृपा न रह जावे मैं रास्तों पर अपने आँसुओं का डिङ्काव कर देता हूँ ।

अकेला मैं ही एक दुखिया ऐसा नहीं हूँ जिसपर कि विरक्ति नहीं है, पत्थर तेरे प्रणय में सभी हृदय रक्त के आँसू बना रहे हैं ।

कमरे काँ वमने खस्ता चे वंदी कि जे मेह ।
 वर मियाने दिलो जानम् कमरे नेस्त कि नेस्त ॥
 अज सरे कूए तु रफतम् न तवानम् गामे ।
 वरना अन्दर दिले वेदिल सफरे नेस्त कि नेस्त ॥
 ग़ैर अर्जी नुक्ता कि “हाफिज़” जे तु नाख़ुशानूदस्त ।
 दर सरापाए वजूदत हुनरे नेस्त कि नेस्त ॥

(१६)

रोज़ए खुल्दे वरीं खिलवते दरवेशानस्त ।
 मायए मोहतशमी खिदमते दरवेशानस्त ॥
 गंजे इज्जत कि तिलिस्माते अजायब दारद ।
 फतहे आँ दर नज़रे रहमते दरवेशानस्त ॥
 क़स्बे फिर्दौस कि रिज़वाँश व दरवानी रफ़ ।
 मंज़रे अज चमने नुज़हतते दरवेशानस्त ॥
 उंचे ज़र मी शवद अज परतवे आँ क़त्व सियाह ।
 कीमयाएस्त कि दर सोहवते दरवेशानस्त ॥
 उंचे पेशश नेहद ताज तकवुर खुर्शीद ।
 कित्रिआएस्त कि दर हश्मते दरवेशानस्त ॥

तेरे प्रेम में, मैं अपने दिल और जान से लग रहा हूँ । क्या इसीलिये तूने मुझसे शत्रुता कर रखी है ?

तेरी गली से बाहर मैं अपना क़दम कभी हटा ही नहीं सकता गोकि इस धे दिल के दिल में भी अन्यान्य सैकड़ों प्रकार की इच्छाएँ हैं ।

एक छोटी सी बात को छोड़कर कि “हाफिज़” तुझसे अपसन्न है और तुझमें सभी अच्छाइयाँ हैं ।

मयसे ऊँचे स्वर्ग-स्थान का उपवन साधुओं का एकान्तवास है और साधुओं की सेवा से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है ।

प्रतिष्ठा के कोप पर विलक्षण तिलस्म बंधे होते हैं । उनपर अधिकार प्राप्त करना साधुगणों की कृपा-दृष्टि पर ही अवलम्बित है ।

स्वर्ग का वह भवन जिसका रचक ही उसका दर्शन है, साधुओं के धूमने का केवल एक धारा है ।

वह विलक्षण वस्तु, जिसकी ध्याया मात्र से ही अंधरे हृदय में प्रकाश हो जाता है, साधुओं की सम्मंगति में ही प्राप्त होती है ।

वह प्रतिष्ठा जो मूर्ख से भी उठव दे, साधुओं की संविदा है ।

(१७)

रूप तु कस नदीदो हज़ारत रकीव हस्त ।
 दर पर्देई हुनोज़ो सदद अंदलीव हस्त ॥
 गर आमदम् वकूए तु चंदौ गरीव नेस्त ।
 चूं मन दरौ दयार फ़रावाँ गरीव हस्त ॥
 हर चंद दौरम अज़ तु कि दूर अज़ तु कस मवाद ।
 लेकिन उमीदे वस्ले तू अम अनकरीव हस्त ॥
 दर इश्के खानकाहो खरावात फ़र्क़ नेस्त ।
 हर जा के हस्त परतवे रूप हवीव हस्त ॥
 आँजा के कारे सोमा रा जलवा मी देहंद ।
 नामूसे दैरे राहिवो नामे सलीव हस्त ॥
 आशिक़ कि शुद के यार वहालश नज़र न कर्द ।
 ऐ खाजा दर्द नेस्त वगरना तवीव हस्त ॥
 फ़रयादे "हाकिज़ी" हम़ा आख़िर वहर्जे नेस्त ।
 हम़ किस्सए गरीवो हदीसे अजीव हस्त ॥

(१७)

तेरा मुख किसी ने भी नहीं देखा पर सहस्रों के दिलों में उसके देखने की लालसा लगी हुई है। तू अभी तक बाहर भी नहीं निकला है, इस पर भी सैकड़ों तेरे प्रेमी हो रहे हैं।

यदि मैं तेरी गली में आ गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मेरे ही समान बहुत से दीन इस देश के निवासी हैं।

किसी को तुझ से दूर रहना उचित नहीं है। मैं तुझसे बहुत दूर पड़ा हुआ हूँ। पर उस पर भी मुझे तुझसे शीघ्र ही मिलने की आशा है।

साधुओं के निवास स्थान और शराबखाने के प्रेम में तनिक सा भी अन्तर नहीं है। किसी भी जगह पर क्यों न हो यार के मुख का उज्वल प्रतिबिम्ब सदैव दृष्टि के सम्मुख रहता है।

जहाँ पूजा-गृह है, जहाँ ईश की अभ्यर्थना की जाती है वहाँ मन्दिर और उसके पुजारी तथा पुजारिनी के नाम की भी इज्जत की जाती है।

कोई ऐसा भी प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया-दृष्टि न की हो। हृदय तो यहाँ भी उपस्थित है, परन्तु उसमें लगने के लिये कोई रोग ही नहीं है।

हाकिज व्यर्थ में ही यह ऊधम नहीं मचा रहा है, कोई न कोई अनोखी बात अवश्य होगी।

(१८)

जाँ यारे दिलनवाजम शुकेस्त या शिकायत ।
 गर नुकतादाने इश्की खुश विश्नो ई' हिकायत ॥
 वे मुज्द बूदो भिन्नत हर त्तिदमते कि कद्म ।
 यारव मवाद कसरा मखदूमे वे इनायत ॥
 रिंदाने तिश्ना लव रा आवे नमी देहद कस ।
 गोई बली शनासां रफ़ंद जीं विलायत ॥
 दर ज़ुल्क चूँ कमंदश ऐ दिल सपेच काँजा ।
 सरहा बुरीद वीनी वे जुर्मो वे जनायत ॥
 चश्मत व गन्जा मारा खूँ रेल्न मी पसंदी ।
 जाना रवा न वाशद खूँरेज रा हिमायत ॥
 दरों शवे सियाहम गुमगश्त राहे मक़मुद् ।
 अज गोशए बुरु आ ऐ कोकवे हिदायत ॥
 अज हर तरफ़ के रफ़म जुज वहशतम नयफ़ज़्द ।
 जिनहार अजी वयावों वीं राहे वे निहायत ॥

(१८)

मैं अपने उस मित्र को, जो इस हृदय को प्रसन्न करने वाला है, धन्यवाद देता हूँ, परन्तु शिकायत के साथ । यदि तू प्रणय के भेदों का ज्ञाता है तो इस कथा को आनन्द से सुन ।

मैंने जो सेवा की थी उसका न तो कुछ अहसान ही था और न उसके प्रति कोई कृतज्ञता ही प्रकट की गई थी । भगवान् किसी का स्वामी कठोर न हो ।

प्यासे उदासियों को पीने के लिये कोई थोड़ा पानी भी नहीं देता है । मानो उन सिद्ध पुरुषों को परखने वाले इम देश में है ही नहीं ।

ऐ हृदय 'देख मेमल जा और इसकी काली पत्रों के जान मे मन फंस । वहाँ पर मैं कहे' निरपराधियों के पत्र पत्रे का मोन्द है

तेरी आँख ने कसत मारा जल तिन्नाह र. परकी मार हा गरी परन्तु तू इस काय को हर जग मरकरा है । मे कस के मार का मराना करना उचित नहीं ।

इम कहेरी राव है । काले ल. परकी मार हा गरी परन्तु तू इस काय को हर जग मरकरा है । मे कस के मार का मराना करना उचित नहीं ।

मैं चारों तरफ़ से घेरा हुआ हूँ । मैंने जो सेवा की थी उसका न तो कुछ अहसान ही था और न उसके प्रति कोई कृतज्ञता ही प्रकट की गई थी । भगवान् किसी का स्वामी कठोर न हो ।

(१७)

रूप तु कस नदीदो हज्जारन सलीव हस्त ।
 दर पर्देई हुनोजो सदद अंदलीव हस्त ॥
 गर आमदम् बकूप तु चंदो गरीव नेस्त ।
 चूं मन दरी दयार करावो गरीव हस्त ॥
 हर चंद दोरम अज तु कि दूर अज तु कस मवाद ।
 लेकिन उमीदे वस्ते तू अम अनकरीव हस्त ॥
 दर इशके खानकाहो खरावात कर्त नेस्त ।
 हर जा के हस्त परतवे रूप हवीव हस्त ॥
 आँजा के करे सोमा रा जलवा भी देहंद ।
 नामूसे देरे राहिवो नामे सलीव हस्त ॥
 आशिक कि शुद के यार बहालश नजर न कर्द ।
 ऐ खाजा दर्द नेस्त बगरना तवीव हस्त ॥
 फरयादे "हाकिजी" हमा आखिर बहजे नेस्त ।
 हम किस्ताई गरीवो हदीसे अजीव हस्त ॥

(१७)

तेरा मुख किसी ने भी नहीं देखा पर सहजों के दिलों में उसके देखने की लालसा लगी हुई है। तू अभी तक बाहर भी नहीं निकला है, इस पर भी सैकड़ों तेरे प्रेमी हो रहे हैं।

यदि मैं तेरी गलों में आ गया तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मेरे ही समान बहुत से दीन इस देश के निवासी हैं।

किसी को तुझ से दूर रहना उचित नहीं है। मैं तुझसे बहुत दूर पड़ा हुआ हूँ। पर उस पर भी मुझे तुझसे शीघ्र ही मिलने की आशा है।

साधुओं के निवास स्थान और शराबखाने के प्रेम में तनिक सा भी अन्तर नहीं है। किसी भी जगह पर क्यों न हो यार के मुख का उज्वल प्रतिबिम्ब सदैव दृष्टि के सन्मुख रहता है।

जहाँ पूजा-गृह है, जहाँ ईश की अभ्यर्थना की जाती है वहाँ मन्दिर और उसके पुजारी तथा पुजारिनी के नाम की भी इज्जत की जाती है।

कोई ऐसा भी प्रेमी हुआ है जिसके हाल पर यार ने दया-दृष्टि न की हो। हृदय तो यहाँ भी उपस्थित है, परन्तु उसमें लगने के लिये कोई रोग ही नहीं है।

हाकिज व्यर्थ में ही यह ऊधम नहीं मचा रहा है, कोई न कोई अनोखी बात अवश्य होगी।

(१८)

जाँ यारे दिलनवाज्जम शुकेस्त वा शिकायत ।
 गर नुक़लादाने इश्की खुश विश्नो ईं हिकायत ॥
 वे मुज्द वूदो भिन्नत हर त्तिदमते कि कसदम ।
 यारव भवाद कसरा मख़दूमे वे इनायत ॥
 रिंदाने तिश्ना लव रा आवे नमी देहद कस ।
 गोई वली शनासां रफ़ंद जीं विलायत ॥
 दर जुल्क चूँ कमंदश ऐ दिल सपेच काँजा ।
 सरहा वुरीद वीनी वे जुर्मो वे जनायत ॥
 चश्मत व गम्ज़ा मारा ख़ं रेख़न मी पसंदी ।
 जाना रवा न वाशद ख़रेज़ रा हिमायत ॥
 दरीं शये सियाहम गुमग़श्त राहे मक़मूद ।
 अज़ गोशए वुरू आ ऐ कोक़वे हिदायत ॥
 अज़ हर तरफ़ के रफ़म जुज़ वदशानम नयक़ज़द ।
 ज़िनहार अज़ीं वयावाँ वीं राहे वे निदायत ॥

ई राह रा निहायत सूरत कुजा तवाँ वस्त ।
 कश सद हजार मंजिल वेशस्त दर वदायत ॥
 ऐ आकावे खूवाँ मी जोशद अंदरूनम ।
 यक साअतम वगुंजाँ दर सायए हिमायत ॥
 हर चंद वरूए आवम रु अज दरत न तावम ।
 जौर अज हवीवो खुशतर कज मुदई रियायत ॥
 इशकत रसद व फरयाद गर खुद वसाने "हाकिज" ।
 कुरआँ जे वर बखानी दर चार दह रवायत ॥

(१९)

जाहिदे जाहिर परस्त अज हाले मा आगाह नेस्त ।
 दर हक्के मा हर चे गोयद जाय हेच इकराह नेस्त ॥
 दर तरीकत हर चे पेशे सालिक आयद खैरे उस्त ।
 वर सिराते मुस्तकीम ऐ दिल कसे गुमराह नेस्त ॥
 ता चे वाजी रुस नुमायद बैजके खाहम रौद ।
 अर्साए शतरंज रिदौँ रा मजाले शाह नेस्त ॥

जिस मार्ग के आदि में ही सैकड़ों मंजिलें पार करने को हैं, उसके अन्त के विषय में भला क्या कहा जा सकता है !

ऐ सुन्दरियों के सूर्य ! मेरा हृदय उवाल खा रहा है । उसे एक क्षण भर के लिये अपने साथ लेकर शान्त कर दो ।

तू चाहें जितने अत्याचार मेरे साथ कर और मेरी प्रतिष्ठा में बट्टा लगा परन्तु मैं तेरे दरवाजे से मुख न मोड़ूंगा, क्योंकि मित्र का अत्याचार शत्रु की कृपा से बढ़कर होता है ।

प्रेम तेरी सहायता उसी अवस्था में करेगा जबकि तू कुरआन पढ़नेवालों के समान कुरआन को चौदह रवायतों के साथ जुवानी पढ़ेगा ।

(१९)

वह पवित्र मनुष्य जिसे केवल प्रकट बातों का ही ज्ञान है हमारी अवस्था नहीं जानता है । अतएव वह हमारे विषय में जो कुछ भी कह रहा है, उसमें दुग न मानना चाहिये ।

जो कुछ भी ईश्वर के मार्ग के पथिक पर धीन रहा है, वह सब उसकी भलाई के लिए है । ऐ हृदय ! कोई मनुष्य सीधे मार्ग में भटक नहीं जाना है ।

कलीमें की शतरंज में बादशाह के बढ़ने के लिये खान ही नहीं है । इस्लामिये आरी को मनजले के लिये हम अपना केवल एक ही प्यादा आम नैदान से बढ़ायेंगे ।

ईरान के सूफ़ी कवि

३४१

चीस्त ईं सकुफ़े बलंद सादए वित्यार नज़श ।
 जीं मुअम्मा हेच दाना दर जहाँ आगाह नेस्त ॥
 ईं चे इसतिगनास्त यारव वीं चे कादिर हिकमतस्त ।
 कीं हम़ा ज़ख़मे निहानस्तो मजाले आह नेस्त ॥
 साइवे दीवाने मा गोई नमी दानद हिसाव ।
 कंदरीं तुगरा निशाने हस्यतन लिस्लाह नेस्त ॥
 हर के खाहद गो बेयाओ हर चे खाहद गो वगो ।
 गीरो दारे हाजिवो दरवाँ दरीं दरगाह नेस्त ॥
 हर चे हस्त अज़ क़ामते ना साज़ वे अंदामे मस्त ।
 वर्ना तशरीफ़े तू वर वालाए कस कोताह नेस्त ॥
 वर दरे मैख़ाना रफ़न कारे यकरंगौं चुवद ।
 ख़ुद फ़रोशांरा व क़ूए मै फ़रोशां राह नेस्त ॥
 बंदए पीरे ख़रावातम के लुक्क़श दावमस्त ।
 वर्ना लुके शेख़ो जाहिद गाह हस्तो गाह नेस्त ॥

यह ऊँची और गहरी

‘हाकिम’ घर घर सड़ ग नरसीनद के आगे मथ गीला ।
आशिको दलकश चंदर दे गालो जाद नेम ॥

(२०)

सीना प्रम के आशो दिल दर रामे जानाना वसोक्त ।
प्रतिशो नूद र्गी खाना कि हाशाना वसोक्त ॥
तनमज गल्लण दूरिण दिलार वगुदाक्त ।
जानमज आतशे इशके कथे जानाना वसोक्त ॥
हर कि अंजारे मरे नूदके परीक्षण रोद ।
दिल सौदा अदाअश वर मने रीवाना वसोक्त ॥
सोज दिल बी कि जे नस आतशे अशकम दिले समा ।
दोश वर मन के सारे मेह जु परवाना वसोक्त ॥
लिकण आदिद मरा आवे सरावात वबुर्द ।
खानण अकले मरा आतशे खमखाना वसोक्त ॥
आशानायां न शरीरमन कि दिल सोजे मगंद ।
चूं मन अच सोश विरकम दिले बेगाना वसोक्त ॥
माजरा कम कुनो आच आ कि मरा मरदुमे चश्म ।
लिरकता अच सर बदर आवर्दे वशुकाना वसोक्त ॥

हाकिम अपने उच्च विचारों के ही कारण कोई ऊँचा स्थान प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योंकि तल झट पीने वाला प्रेमी किसी प्रकार की पदवी अथवा ऊँचे और नीचे स्थान की चिन्ता ही नहीं करता है।

(२०)

हृदय की अग्नि से मेरा सीना बार की जुदाई में जल गया है। इस घर की आग ने सारे घर को जलाकर भस्म कर डाला है।

प्यारे के विरह में मेरा शरीर घुल गया और उसके प्रणय ने मेरे प्राणों में ही आग लगा दी।

जिस मनुष्य ने किसी प्रियतमा की काली अलकों को देखा है, उसका आकुल हृदय मुझ पागल पर जलने लगा है।

मेरे हृदय की तपन को तो देखो कि मेरे आँसुओं की गर्मी के होते हुए भी दीपक का दिल पतंगे के समान, मुझ पर तरस खा के रात समय जल कर भस्म हो गया।

मेरी पवित्रता के लिंगास को मदिरा-गृह के पानी ने डुबा दिया और वहाँ की अग्नि ने मेरी बुद्धि के घर को जला दिया।

मुझे पागल देखकर दूसरों का हृदय भी पिघल गया है, फिर यदि मेरे मित्र मेरे ऊपर दयालु हैं तो इसमें आश्चर्य करने की कौनसी बात है।

वहुत बातें बनाना उचित नहीं है। आओ, अब लौट आओ। मेरे शरीर ने तुम्हारे आगमन की प्रसन्नता में अपने वस्त्रों को भी जला डाला है।

ईरान के सूफी कवि

३४३

चूँ प्याला दिलम अज्र तोवा कि करदम विशकस्त ।
 हम चो लाला जिगरम वे मयो पैमाना वसोरत ॥
 तकेँ अफसाना दगो हाफिजो मैं नोश दमे ।
 कि न लुक्केम शवो शमां व अफसाना वसोरत ॥

(२१)

शगुनता शुद गुले हमरा ओ गश्त तुलतुल मस्त ।
 सलाए सर लुशी ऐ आशिकाने वादा परस्त ॥
 असात्ते तौवा कि दर मोहकमी चु संग नमूद ।
 वर्वी कि जाम जे जाजे चे तुर्काअश विशकस्त ॥
 वे आर वादा कि दरवारगाहे इसतिगना ।
 चे पासवानो चे सुल्ताँ चे होशयारो चे मस्त ॥
 दर्री रवाते दो दर चूँ मुकर्ररस्त रहील ।
 रवाके ताके मईशत चे सर वलंदो चे पस्त ॥
 मकामे ऐश मयस्तर नमी शवद व रंज ।
 वजे बहुक्मे वला दस्ताअंद अहदे अलस्त ॥

व हस्तो नेश्च मरुजां तमीरो गुश भी तश ।
 कि नेस्तीस्व मरुजामे हर कमाल के वृत्त ॥
 शिहोदे आसतोओ अमे वादे मंत्रिके नेर ।
 ववाद एभो अर्वा छात्रा देन तक न वस्व ॥
 वमालो पर मरो अज रद् के तोरे पर नाते ।
 ह्वा गिरिक जमाने जले वराक निशस्व ॥
 तवाने किरके तु "हाकिज" ने गुहरा गोपद ।
 कि गुपए सखुनत भी वरंद इस्व न इस्व ॥

(२२)

सुवद इम मुसे वमन वा गुले नौधास्वा मुक ।
 नाथ कम कुन कि दरो वाश वसे न तु रागुक ॥
 गुल व सन्दीद कि अज रास्व न खिम बले ।
 हेन आशिक रुसुने तस्व वमाशुक न मुक ॥
 गर तमा दारी अथां जामे मुरस्वा मै लाल ।
 गौदरे अरक वनो के भिआअत वायद मुक ॥
 ता अवद धूप मोद्वत व मशामश न रसद ।
 हर कि छाके दरे मैदाना वरुघसार नरक ॥

परन्तु धनी और विधेन होने का कोई सोच मत कर और प्रत्येक अवस्था में प्रसन्नचित्त रह । उद्यान के वाद पतन अवश्यम्भावी है ।

अवसक का रोव, हवा का घोड़ा और चिड़ियों की बोलो यह सब वस्तुयें मिट गईं । और छात्रा भी इस पृथ्वी से अरने साथ कुछ भी न ले जा सका ।

यदि तू उन्नति कर के बड़ा आदमी हो जावे तो भी अपने मार्ग से विचलित न हो । तू एक धनुष से छोड़े हुये बाण के समान है जो थोड़ी देर हवा में उड़ कर जमीन पर गिर जाता है ।

ऐ "हाकिज" ! तेरी लेखनी इस बात का धन्यवाद किस प्रकार दे कि तेरी कविता सर्वप्रिय हो रही है ।

प्रभात-काल में बुलबुल ने नये खिले हुये पुष्प से कहा कि वमंड में बहुत ऐँठिये मत । इस उपवन में आप के समान बहुत से खिल चुके हैं ।

फूल हँस कर बोला कि मैं सच्ची बात पर खेद नहीं करता । बात वास्तव में यह है कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से कठोर बात नहीं कहा करता ।

यदि तुम्हें इस सुन्दर सजे हुए प्याले से लाल मदिरा की इच्छा है तो तुम्हें अपनी पलकों को नोक से आँसुओं के मोती पिराने चाहिये ।

जिस मनुष्य ने मदिरा-गृह के दरवाजे की धूल अपने गालों से नहीं झाड़ी उसके मस्तिष्क में प्रणय की सुगन्धि कभी भी नहीं पहुँचेगी ।

दर गुलिस्ताने हरम दोश चो अज लुके हवा ।
 लुके सुखुल जे नसीम सहरी मी आशुफ़ ॥
 गुफ़म ऐ पसन्दे जम जामे जहां वीनत कू ।
 गुफ़ अफ़सोस कि आँ दौलते वेदार न छुफ़ ॥
 सखुने इश्क न आनस्त कि आयद बजवाँ ।
 साकिया मै देहो कोताह कुनी गुफ़ शुफ़ ॥
 अरके "हाकिम" खिरदो सत्र बदरिया अंदाख्त ।
 चे कुनद सिर रामे इश्के न्यारस्त ने नेहुफ़ ॥

(२३)

नारा जे आरज़ए तू परवाए जाव नेस्त ।
 बेरुए दिलकरेवे तु वूदन सबाव नेस्त ॥
 दर दौरे चश्मे मस्ते तु हुशियार कस न दीद ।
 कू दीदा कब तसन्नुरे चश्मत खराव नेस्त ॥
 दर हर कि विनगरी वगामे अज तु मुवतिलास्त ।
 यक दिल नदीदा अम कि जी इश्कत कवाव नेस्त ॥
 हर कू व तेरो इश्के तु शुद कुरता वर दरद ।
 ऊ रा दरौ हिसावे सवालो जवाव नेस्त ॥

गत रात्रि को स्वर्ग के उपवन में जब वायु की उत्तमता से सन्धुल को
 अलकें प्रभात-कालीन वायु के साथ उलझ रही थीं,

तब मैंने कहा कि ऐ जमरोद के सिंहासन ! तेरा प्याला वह कहाँ है जिसमें
 संसार का सारा दृश्य दिखलाई देता था ?

उसने कहा कि शोक है । वह जानता हुआ सो गया है । प्रेम वार्त्तालाप
 ऐसा नहीं है कि उनका वर्णन किया जावे । ऐ साको ! मदिरा ला । इस बात-
 चीत को समाप्त कर ।

"हाकिम" के आसुओ ने ज्ञान और धैर्य को नदी में बहा दिया बत
 करता ही क्या अपने प्रणय-पीड़ा के रहस्य को गुप्त न रख सका

तेरे 'मिलन को इन्कार में मैंने सोते ही भी चिन्ता छोड़ दी है और तेरो
 मोहक छवि के विन' अज अकेले रहना अन्धा नहीं लगता है

तेरी मतवाली चिनवन सभी को मोह लेता है । तेनी कोई भी अन्य नहीं
 है जो उनके चित्त को कुल न हो रही हो

सभी मनुष्य तेरे कारण शोकित हो रहे हैं मैंने ऐसा एक भी दृश्य नहीं
 देखा जो तेरे प्रणय की अग्नि में जला न जा रहा हो ।

जो कोई मनुष्य तेरे इशारे पर प्रेम तथा तलाश के पाठ उपास गया
 है, उसने मरने के वरनाम पिसा प्रहार के प्रश्न नहीं करे जायेंगे

हाकिजा चु जर बचूता दर उफादो ताव याक ।
आशिक न वाशद ओँ कि चु जर ऊ बतान नेस्त ॥

(२४)

दर अजल परतवे हुसनत जे तजल्ली दम जद ।
इशक पैदा शुदो आतिश बहमा आलमजद ॥
जल्वाए कर्द रुसत दीद मुल्के इशक न दास्त ।
गेन आतिश शुद अर्जाँ गैरतो वर आदम जद ॥
अतल मीं रुवास्त कर्जाँ शोला चराग अकरोजद ।
वर्क गैरत बदरखशीदो जहाँ बरहम जद ॥
मुहई रुवास्त कि आयद बतमाशा गहे राग ।
दस्ते गैव आमदो वर सीनये ना महरम जद ॥
दीगराँ कुर्रए किस्मत हमा वर ऐश जदन्द ।
दिले गम दीदए मा बूद कि हम वर गम जद ॥
जाने अलवी हवसे चाह जनखदी तो दास्त ।
दस्त दर हल्कए ओँ जुल्क सम अन्दर खामजद ॥

प्रेमी सोने के समान घरिया में पड़कर ताव खा गया । वह प्रेमी जो सोने के समान तपाया गया हो वास्तविक प्रेमी नहीं कहा जा सकता है ।

(२४)

सृष्टि के आदि में तेरे प्रतिविम्ब ने चमत्कार का विकास किया, अर्थात् तेरा जलवा प्रगट हुआ । उससे वह प्रेम उत्पन्न हुआ जिसने सारे संसार में आग लगा दी ।

तेरे मुख ने अपनी प्रभा दिखला कर देखा कि स्वर्गीय दूतों में प्रेम था ही नहीं । इस पर उसे क्रोध आगया और इसी से दुःखी तथा लज्जित होकर वह आदम के ऊपर जा पड़ा ।

बुद्धि यह चाहती थी कि उस प्रेम की लपट से अपना दीपक जला ले परन्तु लज्जा की विजली ने चमक कर सम्पूर्ण संसार को परेशान कर दिया ।

प्रणय का भूठा दावा करने वाले ने यह चाहा कि वह उस रहस्यों से भरे हुए उपवन की सैर करे, परन्तु अदृष्ट से एक ऐसा हाथ निकला जिसने उसे धक्का देकर पीछे लौटा दिया ।

अन्यान्य सभी लोगों ने भोग विलास और आनन्दोपभोग को पसन्द किया परन्तु तेरे दुःखित हृदय ने पुनः उसी पीड़ा को पसन्द किया ।

ऐ साहसी प्राण ! तेरा साहस बहुत ही बढ़ा-बढ़ा था । इसी लिये उसने उन घुँघराली अलकों तक अपना हाथ बढ़ा दिया ।

“हाफिज” आँ रोच तरवनामये इश्क़े तो नविश्त ।
कि कलम वर सरे असवाव दिले खुर्रम चद ॥

(२५)

दर हर हवा कि जुच्च वरुँ अन्दर तलव न वाशद ।
गर खिरमने व सोजद चन्दौँ अजव न वाशद ॥
मुर्गे कि वागमे दिल शुद उल्कतेश हासिल ।
वर शाखसार उग्रश वर्गे तरव न वाशद ॥
दर कारखानये इश्क़ अच्च कुफ़ ना गुच्चीर अस्त ।
आतश करा व सोजद गर वूलहव न वाशद ॥
दर महफिले कि खुरशेद अन्दर शुमारो चह अस्त ।
खुद रा बुजुर्ग दीदन शतेँ अदव न वाशद ॥
दर केश जाँ फ़रोशां फ़जलो अदव न वाशद ।
ईजा नसव न गुंजद आँ जा हसव न वाशद ॥
मै खुर के उम्रे सरमद गर दर जहाँ तवाँ यापत ।
जुच्च वादये वहिश्ती हेचश सवव न वाशद ॥

हाफिज ने प्रेम और आनन्द से परिपूर्ण पत्र उसी दिन लिखा जिस दिन उसने आनन्दोपभोग की सभी सामग्रियों को दूर कर दिया ।

(२५)

उस वायुमंडल में, जहाँ प्रेमी को विद्युत् के अतिरिक्त कोई अन्य वस्तु नहीं मिलती है, उस स्थान में यदि कोई खलियान जल जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

वह जीव, जिसने प्रणय-पीड़ा से अपनी लगन लगा ली है, कभी फलता फूलता हुआ नहीं दिखलाई देगा ।

प्रणय-मन्दिर में ईश्वर के नाम का उच्चारण न करना ही उचित है । जब वहाँ नास्तिकता का निवास होगा तो फिर भय किस वस्तु का रह जायगा । अगर वूलहव (रसून) चबा न हो तो आग किसको जला देगी ।

जिस भवन में सूर्य एक कण के समान समझा जाता है वहाँ अपनी प्रतिष्ठा का विचार भी करना अनुचित है ।

जो लोग प्राणों पर खेद जाने के लिये उद्यत हैं उनके धर्म में वाद और ज्ञान के लिये कोई स्थान नहीं है । प्रतिष्ठा, पद और मान का भी कोई काम वहाँ नहीं है ।

स्वर्ग यदि प्राप्त किया जा सकता है तो मदिगा द्वारा समझ में जीवन यदि अमर बनाया जा सकता है तो उसी के द्वारा । इसलिये मदिगा फन कर ।

“दाफिज” विमान जाना जा चुके थे।
 मैंने शब्द कि या आँ पेंदर शब्द न मया म

(२३)

इस अत्र न अत्र न हरम तो कामे मन म भावना
 या मन रक्षक व जाना या जिते मन पर आपद म
 जा पर लव अन्वो दक्षर्य हर दिल कि अत्र नवानश म
 नगिरता हेव कामे जा अत्र नवन पर आपद म
 अत्र दक्षर्ये इमानश आमद कामे जानम म
 सार कामे जंगरुसा कि जा इदन पर आपद म
 व नुमाने रुख कि सके जाना शरमे हेरा म
 व कुशाये लव कि कदयाद अत्र मदी नवन पर आपद म
 मुक्तम व शेष कत्र ने पर सार दिल दिलम मुक्त म
 कार कोला ई कू वा शेषानन पर आपद म
 व कुशाये तुरवतम् स गद अत्र फकतो नवन म
 कत्र आलिसो दक्षम दूरे ककन पर आपद म
 पर वूये आँ कि दर वाग या तुद गुजे नो क्यन म
 आयद नसोम दक्षरम मिरे वमन पर आपद म

ऐ-कंजूस “दाफिज” ! यदि तुझे तेरी प्रियतमा मिलेगी भी तो मृत्यु के दिन ।

(२६)

मैं अपनी लगन से हाथ तब तक न खींचूँगा जब तक कि मेरी इच्छा पूर्ण न हो जायगी या तो यह शरीर प्रियतमा तक पहुँच जावेगा या इसमें से प्राण ही निकल जायेंगे ।

प्राण निकलना चाहते हैं पर हृदय में अभी यह लालसा शेष है प्रियतमा के ओठों का स्वाद चख लिया जावे ।

उसका मुख देखने को इच्छा से मेरे प्राण आकुल हो रहे हैं । मेरे समान बेचारों का यह अभीष्ट कैसे सिद्ध हो सकता है ।

अपने मुख पर से बूँद हटा ले जिससे तेरी रूप-सुधा का पान कर संसार चकित हो जावे और प्रेम में मतवाला हो जावे ।

और अपने ओठ खोल दे ताकि सब कोई चिह्नाने लगे । मैंने अपने हृदय से कहा कि अब उसका ध्यान छोड़ दे ।

उत्तर मिला कि यह कार्य वही कर सकता है, जिसे अपने ऊपर अधिकार हो ।

मृत्यु के उपरान्त मेरी समाधि खोलकर देखना कि मेरे हृदय की अग्नि के कारण मेरे कफन से धुआँ निकलता हुआ दिखलाई देगा ।

हर एक शिकन जे जुल्फत पंजाए शस्त दारद ।
 चं ई' दिजे शकिस्ता या आँ शिकन वर आयद ॥
 वरखेज ता चमन रा अज क्लामतो क्लयामत ।
 हम सर्व दर वर आयद हम नारवन वर आयद ॥
 हरदम चु वेवताया न तवाँ गिरफ्त यारे ।
 मायेमो जाके क्लयश ता जाँ जे तन दर आयद ॥
 गोयंद जिक खैरश दर जैले इश्कनाजां ।
 हर जा कि नामे "हाफिज" दर अंजुमन वर आयद ॥

(२७)

दिला वसोज कि सोजे तु कारहा बकुन्द ।
 निवाजे नीम शबी दफए सद बला बकुन्द ॥
 अताये यारे परी चेहरा आशिकाना बकुश ।
 कि चक करिरमा तलाफी सद जफा बकुन्द ॥
 जे मुल्क ता मलकूतश हिजाव वर दारद ।
 हर आँ कि खिदमते जामे जहांनुमा बकुन्द ॥

तुम्हारे मुख के समान फूल देखने की आशा से वायु दिन भर वायु के चकर काटा करती है। तुम्हारी प्रत्येक लट में पचास पचास फंदे पड़े हुए हैं। भला यह दृष्टा हुआ हृदय उनसे कित्त प्रकार जोत सकता है।

तू उठकर चल जिससे कि उपवन में सरो और नारून के वृक्ष उत्पन्न हों। और वह भी तेरे क्रद और तेरे चलने की शोभा से।

हर समय हृदय-हीन मनुष्यों के समान नये २ निव्रों को बनाना उचित नहीं है। हम उसकी गली की धूल के समान रहेंगे जब तक कि शरीर में प्राण हैं।

प्रेमियों के जमाव में उसकी कुशलता के समाचार क्यों सुनाये जाते हैं उसमें तो हाफिज का भी नाम आ जाता है।

(२८)

ऐ हृदय तू जल। तेरी जलन में अनेक कार्य दुर्लभ होने और अर्द्धगति की प्रार्थना सहस्रों विरक्तियों को टाल देती है।

उस अपमग के समान सुन्दर प्रेमिका के लक्षण को प्रेमियों के समान सहन कर यदि इनमें तेरी तरफ एक भी कुश-बदान के कण्डवा तो नैहड़ों निडकियों का बदला मिल जायगा।

वह मनुष्य जो अपने हृदय का सेवा न करे वह नैहड़ है अन्धा है। उसके लिये पुर्वी से लेकर आशान तक के सारे परदे उड़ा दिये जायेंगे।

तबीये इस्के मसोदा दमन्ने मुशफिक लेक ।
 तु दर्दे दर ती न चीनद कियत दमा न कुनद ॥
 तु वा सुदाए सुददाए तारए ओ दिल धरादार ।
 कि रवा अगर न कुनद मुदई सुदा न कुनद ॥
 जे बखते सुदा मन्नुनम कुनद कि बेदारे ।
 वनके फातदा सनद यह कुवा न कुनद ॥
 वसोएत हाकिमो वृए जइके यार ननुद ।
 मगर इलालते ई दीलतश सवा न कुनद ॥

(२८)

बले कि गैव नुगायन जामे जम दारद ।
 जे सामे कि दमे गुम शुद ने राम दारद ॥
 वसातो साल मदार्या मदेह सजोनए दिल ।
 वदस्ते शाहो री देह कि महतरम दारद ॥
 दिलम् कि लाक तजरुदबदी कने सद शरल ।
 वत्रुए बलक तो वा वादे मुबहदम दारद ॥

प्रणय का वैरा प्रभु मसोद के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुम्हें औपधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुम्हें पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता !

“हाकिम” प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको वह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के क्रोध को मत लुटा बैठ। यदि तुम्हें अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान यार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख्त तहम्मुल कुनद जफ़ाए ख़िज़ाँ ।
 गुलाम हिम्मते सर्दम कि ई क़दम दारद ॥
 रसीद मौसमे आँ कज़ तरब चु नरगिस मस्त ।
 नेहद वपाए क़दह हर कि शश दरम दारद ॥
 ज़े राज़े वहाए मी अकनू चु गिल दरेग न दार ।
 कि अज़ले कुल वसदते ऐव मुत्तहम दारद ॥
 मुराद दिलज़ कि जोयम कि नेस्त दिलदारी ।
 कि ज़त्वए नज़रो शेवए करम दारद ॥
 ज़े सिरें रौब कस आगाह नेस्त ऐव मजोए ।
 कदाम महरमे दिल रह दरिं हरम दारद ॥
 ज़े जेबे ख़िर्क़ए “हाफ़िज़” चे तफ़्फ़ी व तवां वस्त ।
 कि मा समद तलबीदम् व ऊ सनम दारद ॥

(२९)

दमे वा राम वसर जहाँ चकसर नमी अरज़द ।
 वमै वफ़रोश दिलज़े मा कज़ीं बेहतर नमी अरज़द ॥

तबीचे इश्क़े मसीहा दमस्ते मुशफ़िक़ लोक ।
 चु दर्द दर तौ न वीनद कियत दवा वकुनद ॥
 तु वा खुदाए खुदंदाज कारए ओ दिल खशदार ।
 कि रक्ष अगर न कुनद मुद्ई खुदा वकुनद ॥
 जे वख्ते खुफ़ा मल्लम वुनद कि वेदारे ।
 वक्के फ़ातहा सवह यक दुवा वकुनद ॥
 वसोग्त हाकिञ्जो वूप जुल्के चार नवुर्द ।
 मगर दलालते ई दीलतश सवा वकुनद ॥

(२८)

बले कि ग़ैब नुगायस्त जामे जम दारद ।
 जे खामे कि दमे गुम शुद चे गम दारद ॥
 वख्तो खाल गदायाँ मदेह खजोनए दिल ।
 वदस्ते शाहो शौ देह कि महतरम दारद ॥
 दिलम् कि लाफ़ तजरुदअदी कन्नू सद शरल ।
 ववूप जुल्क तो वा वादे सुवहदम दारद ॥

प्रणय का वैद्य प्रभु मसीह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुम्हें औपधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुम्हें पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता !

“हाकिञ्ज” प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको चार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के क्रोध को मत लुटा बैठ। यदि तुम्हें अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान चार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख्त तहनुल कुन्द जकाय खिजाँ ।
 गुलाम हिम्मत सईम कि ई कदम दारद ॥
 रसाद मौसमे आँ कजा तरव चु नरगिस मस्त ।
 नेहद बपाए कदह हर कि शश दरम दारद ॥
 जे राचे बहाए मी अकनू चु गिल दरेग न दार ।
 कि अजले कुल बसदते ऐव मुत्तहम दारद ॥
 मुराद दिलख कि जोयम कि नेस्त दिलदारी ।
 कि जत्वए नजरो शेवए करम दारद ॥
 जे सिरें गैव कस आगाह नेस्त ऐव मजोए ।
 कदाम महरमे दिल रह दरौ हरम दारद ॥
 जे जेवे खिर्कए "हाकिज" चे तकौ व तवां वस्त ।
 कि मा समद तलवीदम् व ऊ सनम दारद ॥

(२९)

दमे वा राम बसर जहाँ यकसर नमी अरखद ।
 वमै बफरोश दिलके मा कर्जी बेहतर नमी अरखद ॥

प्रत्येक वृत्त पतझड़ के अत्याचार को सहन नहीं कर सकता । मैं सरो के वृत्त के साहस का कायल हूँ । उसी में इतनी सहनशीलता वर्तमान है ।

अब वह चतु आ गई है कि लोग मतवाले हो कर मदिरा के पैरों पर अपना सर्वस्व लुटा दें । इस समय मदिरा का मूल्य देने में आगा पीछा न कर ।

यह वह प्याला है जो कि गुलाब के समान अपने कोप को छिपाये हुये है । यदि तू ऐसा करेगा तो स्वर्गीय दूत सैकड़ों शेष तेरे मध्ये मड़ देगा ।

मैं किससे कहूँ कि मेरे हृदय की अभिरक्षा को प्राण कर दे । एक भी पार ऐसा नहीं है जो मेरी तृष्टि के सम्मुख मुझे समाने के लिए आवे और दया दृष्टि दिखलावे ।

अच्छ के रहस्यों को जोड़े नहीं जानना है और न उनके समझने का प्रयत्न करो । हृदय के रहस्यों में परिवर्तन का कोई लक्षण ऐसा नहीं है जो वहाँ तक पहुँच सके ।

"हाकिज" को मुदरी का लेश से दया प्राप्त कराना या समझाना है । हम तो ईश्वर का हृदय का प्रयत्न कर रहे हैं और हमने मूर्खि समझाते हैं ।

(३०)

हृदय में एक चरण का स्थान बनना सम्भव है मनुष्य मनुष्य से बड़ा बड़कर है । हमारे मुदरी को मदिरा में डबल के मुदरी का मूल्य समझ बंदकर नहीं है ।

तमीचे इशके मसोहा समने मुयाकिक लेक ।
 तु दुई दर ती न गिनद कियत द्या वकुन्द ॥
 तु ना सुदाए सुयंदाए कारण ओ दिल काशदार ।
 कि राज अमर न कुन्द मुदई सुदा वकुन्द ॥
 जो वरते सुदा मल्लम तुन्द कि वेसारे ।
 वचके फालहा सनाह यक तुभा वकुन्द ॥
 अमास हाकिमो वूप अलके यार ननुदे ।
 मगर दलालते ई रीलनरा सना वकुन्द ॥

(२८)

वले कि तीव तुगायस्त जामे अम दारद ।
 जो सामे कि दमे गुम शुद ने मम दारद ॥
 नसातो खाल मयायाँ मदेद खोजीए दिल ।
 वदस्ते शाओ शै देह कि महतरम दारद ॥
 दिलाम् कि लाक तजकंदखदी कनु सद शरल ।
 वचूप अलक तो था वादे सुवददम दारद ॥

प्रणय का वैश प्रभु मसोह के समान दयालु है और उसकी फूँक में बहुत बड़ा असर है। परन्तु जब तेरे अन्दर उसे किसी प्रकार की पीड़ा ही न दिखाई दे तो वह तुझे औपधि दे तो किस प्रकार की दे।

यदि शत्रु तुझ पर दया न दिखलायगा तो ईश्वर अवश्य ही ऐसा करेगा। इसलिये तू अपने कार्य उसी के भरोसे पर छोड़ दे और आनन्द से रह। मैं अपने सोये हुये भाग्य से तँग आ गया हूँ।

क्या ही अच्छा होता कि कोई प्रातःकाल का उठने वाला प्रभात काल में पौ फटते समय मेरे लिये ईश्वर से प्रार्थना कर देता !

“हाकिम” प्रणय की अग्नि में जल मरा परन्तु उसको यार की काली अलकों की सुगन्धि भी प्राप्त न हुई। कदाचित् उसको यह सौभाग्य वायु द्वारा प्राप्त हो जाय।

(२८)

जो हृदय की पीड़ा को समझने वाला है उसी के पास अभीष्ट सिद्धि करने वाला प्याला भी है। अगर कोई अँगूठी थोड़े समय के लिए उसके पास से खो जाय तो उसे क्या दुःख होगा।

उदासियों की दुखित अवस्था पर अपने हृदय के कोप को मत लुटा बैठ। यदि तुझे अपना दिल देना है तो किसी ऐसे सम्राट के समान यार को दे जो उसका मूल्य भी समझे।

मेरा हृदय जो कि इस नाशवान जगत के अहँकारों से परिपूर्ण था अब तेरी काली अलकों के ध्यान में प्रभात कालीन वायु के साथ सैकड़ों प्रकार की प्रतीक्षा में बैठा रहता है।

न हर दरख्त तहम्मुल कुनद जफ़ाए खिज़ाँ ।
 गुलाम हिम्मते सर्दम कि ई क़दम दारद ॥
 रसीद मौसमे आँ कज़ तरव चु नरगिस मस्त ।
 नेहद वपाए क़दह हर कि शश दरम दारद ॥
 ज़े राज़े वहाए मी अकनू चु गिल दरेग़ा न दार ।
 कि अज़ले कुल वसदते ऐव मुत्तहम दारद ॥
 मुराद दिलज़ कि जोयम कि नेस्त दिलदारी ।
 कि ज़त्वए नज़रो शेवए करम दारद ॥
 ज़े सिरें शैव कस आगाह नेस्त ऐव मजोए ।
 कदाम महरमे दिल रह दरीं हरम दारद ॥
 ज़े जेवे खिज़ाँ “हाफ़िज़” ज़े तर्की व तवां वस्त ।
 कि मा समद तलवीदम् व ऊ सनम दारद ॥

(२९)

दमे वा ग़म वसर जहाँ चक़सर नमी अरज़द ।
 वमै वफ़रोश दिलके मा क़र्ज़ी बेहतर नमी अरज़द ॥

वकूए मी करोशानश वजामे वर नमी गोरंद ।
 जहे सज्जादए तकवा कि यक सागिर नमी अरजद ॥
 रकीवम् सरजनशहा कर्द कर्जी वावे रुखे वर ताव ।
 चे उक्ताद ईं सरे मारा कि खाके दर नमी अरजद ॥
 तुरा आँ वेह कि रूप खुद जे मुश्ताक़ाँ वपोशानी ।
 कि शादीए जहाँगीरी-गमे लशकर नमी अरजद ॥
 दयारो यार मरदम रा मुक्कीदे मी कुन्द वर्ना ।
 चे जाए फ़ारसे कौं मेहनत जहाँ यकसर नमी अरजद ॥
 विशो ईं नज़रो दिल तंगी कि दर वाज़ारे यकरंगी ।
 मुख़ाहाये गूनागूं मए अहमद नमी अरजद ॥
 शिकोहे ताजे सुलतानी कि वीमे जाँ व राँ रह अस्त ।
 कुलाहे दिलकशस्त अम्मा तवरुक सर नमी अरजद ॥
 वस आसाँ मीं नमूद अव्वल गमे दरिया ववोए सूद ।
 गलत करदम कि एक मौजश वसद गौहर नमी अरजद ॥

मदिरा बेचने वालों की गली में तो उसका मूल्य एक प्याला भी नहीं समझा जाता। आखिर यह पवित्रता है क्या वस्तु जो एक प्याले के बराबर भी नहीं है।

मेरे प्रतिद्वन्द्वी ने मुझसे बहुत सी तीखी बातें कहकर उस दरवाजे को छोड़ देने को आज्ञा दी। न मालूम मेरे इस सर को क्या हो गया है कि वह उस द्वार की धूल होने योग्य भी नहीं है।

ऐ प्रियतमा ! तेरे लिये अपने प्रेमियों से मुँह छिपा लेना उत्तम होगा। संसार-विजय से जो प्रसन्नता होती है वह उस चिन्ता की समानता नहीं कर सकती जो सेना के प्रति होती है।

देश और मित्रों ने मुझे बाँध रक्खा है अन्यथा फ़ारस क्या एक संसार भी फ़िकर करने योग्य नहीं है।

इस हृदय के धन्वों को धोकर साफ़ कर डाल। विश्वास की हाट में यह साफ़ गुदड़ी लाल मदिरा के ही भाव में ली जाती है।

बादशाही ताज एक सुन्दर और मनोहर वस्तु है। एक बहुत बड़ी शान की चीज़ है। उसमें प्राण जाने का भय भी है। परन्तु वह सर दर्द के सम्मुख कुछ भी मूल्य नहीं रखता।

पड़ले पड़ल नदी को देखकर जो भय उत्पन्न होता है वह लाभ की आशा में बहुत ही सरल ज्ञान होता है। परन्तु मैंने भूल को। उसकी एक लहर सी मोतियों से भी बढ़कर है।

वरो गंजे क़नायत जो वक़्जे आफ़ियत विनशीं ।
 कि यक़दम तंग दिल यूदन व यहो वर नमी अरज़द ॥
 चु "हाफ़िज़" दर क़नाअत कोश अज़ दुनियाए दू वगुज़र ।
 कि यक़ जौ मिन्नते दोना दो सद मन ज़र नमी अरज़द ॥

(३०)

राहे वे ज़न कि आहे वर साजे आँ तवाँज़द ।
 शेरे वख़वाँ कि वा आँ रतले गिराँ तवाँज़द ।
 वर आसताने जानाँ गर सर तवाँ निहादन ।
 गुलवाँगे सर वलन्दी वर आत्माँ तवाँज़द ॥
 क़हे ख़मीदए भा सहलत नुमायद अनाँ ।
 वर चश्मे दुश्मनाँ तीर अर्ज़ी क़माँ तवाँज़द ॥
 दर ख़ानक़ह न गुंजद इतरारे इश्क़शाही ।
 जामे मचे सुशाना हम वा मुशाँ तवाँज़द ॥
 दरवेश रा न वाशद नुज्जे सराये सुस्ताँ ।
 मायेम व कोहना दलक़े कातश दराँ तवाँज़द ॥

जाकर किसी धैर्य के कोने को ढुंढ़ और उसने बैठकर कुछ देर विभ्रम कर ले । थोड़ी सी पीड़ा की घराबरी समस्त संसार की तरी और लुश्की भी नहीं कर सकती ।

अहे नजर दो आलम दर एक नजर पे नाजद ।
 इरकस्तो दारे अजल वर नादे जी नाजद ॥
 गर दीलते विखालत गाहद दरी कशरुम ।
 सरहा कहीं तवशुज वर आस्तो तवाजद ॥
 वा अजो कहमो दानिश दारे मकून नाँ दार ।
 घूँ जन्मा शुद मजानी गूये बर्गो तवाजद ॥
 शुद रहजने सलामत जहते तो वी अजब मेस्त ।
 गर राहजने तु नाशी सद कारवा नवाजद ॥
 अज शर्म दर दिजावम साकी तलतुक कुन ।
 वाशद के बोसए चंद वरअई दही तवाजद ॥
 वर चोवयारे चरभम् गर साया अकगनद दोस्त ।
 वर साके रह गुजारश आवे रवो तवाजद ॥
 वर अदमे कामरानी फाले वजन पे दानी ।
 युमकिन के गूये दीलत दरईं जहाँ तवाजद ॥
 ईशको शवाबो रिन्दी मजमए मुरादस्त ।
 साकी बेश्वा के जामे दर ईं जमाँ तवाजद ॥

प्रेमी मनुष्य प्रेमिका के एक ही कटाक्ष पर दोनों जहानों को न्यूँझावर कर देते हैं। प्रणय का प्रारम्भ हो गया है। उसके लिये अपने प्राणों की बाजी लगाना चाहिये।

यदि सौभाग्य से तू अपने अग्रणीत प्रेमियों से मिलने के लिये उद्यत हो जाय तो बहुत से सर तेरी चौखट से ही टकरा जायें।

बुद्धि, ज्ञान और विद्या के बल से कविता में मिठास भरी जा सकती है। जब बहुत से विषय इकट्ठे हो जायें तो कविता का पाठ पढ़ाया जा सकता है।

तेरी घुँघराली अलकों ने मेरे धैर्य को लूट लिया और इसमें कोई आश्चर्य की बात भी नहीं है। यदि तू लुटेरा होता तो प्रेमियों के सहस्रों काकिलों को लूट सकता था।

मुझे भेंप लग रही है। ऐ साकी! तू मेरे ऊपर दया दिखला। तेरी कृपा के आधार पर ही संभव है कि मैं उसके मुख का कुछ चुम्बन ले सकूँ।

मैं अपने मित्र के मार्ग की धूल पर अपनी आँखों के आँसुओं से छिड़काव कर सकता हूँ।

सफलता की आशा रख कर तू अपना कार्य आरम्भ कर दे। मैं नहीं कह सकता हूँ कि परिणाम क्या होगा। सम्भव है कि सौभाग्य की बाजी तू इस संसार में जीत ले।

प्रेम, युवावस्था और फकीरी यह वस्तुयें अभिलाषा की जड़ हैं। साकी आगे बढ़। इस थोड़े से जीवन में ही एक प्याला पिया जा सकता है।

ईरान के सूफ़ी कवि

“हाफ़िज़” वह बड़े कुरआँ कजरिज्को शीर वाज्र आ ।
बाशद कि गूये दौलत वा मुखलिताँ तवाँजद ॥

(३१)

सालहा दिल तलवे जामे जम अज मा नो कर्द ।
उँचे खुददाश्त जे बेगाना तमन्ना नी कर्द ॥
गौहरे कइ सद्के कौनो नकाँ बेस्नस्त ।
तलव अज गुमखुदगाने लवे दरिया नी कर्द ॥
सुरिकले खेश वरज पीरे नुगाँ पुर्दन दोश ।
कू बताईदे नजर हल्ले मोअन्मा नी कर्द ॥
दोदमश खुर्रनी . नुशदिल कदहे वादा बदल ।
बंदराँ आईना सद गूना तमाशा नी कर्द ॥
गुप्तमी जामे जहाँ वीं वनू कै दाद हकान ।
गुप्तआँ रोजकई गुन्वदे नीना नी कर्द ॥
आँ हनाँ शोदहा अकल कि नी कर्द आँजा ।
सानरो पेशे असाओ यदे वैजा नी कर्द ॥

ये “हाफ़िज़” ! तू धर्म (कुरान) के लिये अपने हृदय को चिन्ता कर
बनावटी बातों को त्याग दे । कदाचित् तू मंत्र मनुष्यों की संतुष्टि के
मुखी हो सके ।

वेदिली दर हमा अहवाले खुदा वा ऊ वूद ।
 ऊ नमी दीदशो अज दूर खुदारा मी कर्द ॥
 गुप्त आँ यार कजू गश्त सरे दार वलंद ।
 जुर्मश ई वूद कि इसरार हवेदा मी कर्द ॥
 फ़ैजे रूहुल्कुदस अर वाज्र मदद फ़रमायद ।
 दीगराँ हम वे कुनद उंचे मसीहा मी कर्द ॥
 गुप्तमश जुल्क चु जंजीर दुताँ अज पए चीस्त ।
 गुप्त “हाकिज” गिलए अज दिले शौदा मी कर्द ॥

(३२)

सहर बुलबुल हिकायत वासवा कर्द ।
 कि इश्क रूये गुले वामा चहा कर्द ॥
 अजाँ रंगे रुखम खूँ दर दिल अरूत ।
 वर्जाँ गुल्शन व खारम् मुन्तला कर्द ॥
 गुलामे हिम्मते आँ नाजनीनम ।
 कि कारे खैर वे रूओ रेया कर्द ॥

एक ऐसा प्रेमी था कि जिसके साथ ईश्वर प्रत्येक अवस्था में वर्तमान रहता था परन्तु वह उन्हें देख नहीं पाता था और दूर से उनका नाम ले ले कर पुकारता था ।

उस यार ने कहा कि उसे (मंसूर) को शूली मिलने का कारण यही था कि वह प्रणय के रहस्यों को समझ गया था और उन्हें खोलता था ।

यदि यह पवित्र आत्मा फिर से सहायता करे तो अन्य लोग भी वही करने लगे जो ईसा किया करते थे (मृतकों को जिला देना और रोगियों को चंगा कर देना ।)

मैंने उससे पूछा कि तेरी यह जंजीर के समान अलकें किस लिये हैं । उसने उत्तर दिया कि “हाकिज” अपने पागल दिल की शिकायत करता था, इसलिये उस पागल को बाँधने के लिये ।

(३२)

सुबह को बुलबुल ने प्रभात कालीन वायु से कहा कि देखो पुष्प के रूप ने मेरी कैसी अवस्था कर दी है । उसके प्रेम में पड़कर मैं इस अवस्था को पहुँच गया हूँ ।

अपने रूप के रंग से उसने मेरे हृदय को रक्त में परिणित कर दिया है और इस उपवन के द्वारा मुझे काँटों में फंसा दिया है ।

मैं तो उस सुन्दरी के साहस का कायल हूँ, जिसने बिना किसी वनावट के हृदय पर अधिकार कर लिया है ।

खूशशा वाद-आँ नसीमे सुहगाही ।
 कि दर्दे शव नशीनों रा दवा कर्द ॥
 मन अज वेगानगों हरगिज न नालम् ।
 के वामन हर्चे कर्द-आँ आशना कर्द ॥
 गरअज सुस्ताँ तमा करदम खता वूद ।
 वरअज दिलवर वफा जुस्तम् जफा कर्द ॥
 जे हर सू बुलबुले आशिक दर अफराँ ।
 तनुम दरभियाँ वादे सवा कर्द ॥
 नकावे गुल कशीदो जुल्फे सुंबुल ।
 गिरहवन्दे क्वाए गुंचा वा कर्द ॥
 वफा अज ख्वाजगाँन शहा वामन ।
 कमाले दीनोदौलत जुल वफा कर्द ॥
 वशारत वरचकूये मै करोशाँ ।
 कि "हाकिज" तौवा अज जुह्दे रेया कर्द ॥

(३३)

इस्कत न सिरेंसरेस्त कि अज सर वदर शवद ।
 मेहरत न आरिजेस्त कि जाए दिगर शवद ॥

इसके तु दर बल्लनमो मेहे नू दर विजम ।
 नारगिर अंरुल्ले शुरी न न न दर शब्द ॥
 दर्मेत दर्दे इरक कि अंरर इलाजे क ।
 दरनंद सई बेश सुमाई बतर शब्द ॥
 अजल गके मनम् केदरी शठ दर शब्द ।
 कर्यादे मन जे इरक न अकलाक दर शब्द ॥
 गर जा के मन सरिरक कियानम बकिरा दर ।
 किरते इरक जुम्ला बयकवार दर शब्द ॥
 वै दरभियाने अन्क बरीदम सुखे निगार ।
 दर हैअते हि अत्र मुदीते कमर शब्द ॥
 गुफन कि इन्विला कुनमज बोसा मुक नै ।
 अगुजार ता कि माद जे उकरअ बतर शब्द ॥
 ऐ दिल बयाद लालश अगर बादखुरा ।
 अगुजार हाँ कि मुदर्याँ रा खबर शब्द ॥
 “हाफिज” सर अत्र लहद बतर आरद अपाने बोस ।
 गर साके ऊ बपाए शुमा पए सिपर शब्द ॥

मेरे सीने और मेरे हृदय में तेरे प्रेम ने पैदाश के साथ प्रवेश किया था और अब वह प्राणों के साथ निकलेगा ।

प्रेम एक ऐसा रोग है कि उसकी जितनी ही औपधि की जाय उतनी ही रोगी की अवस्था और भी बुरी होती जाती है ।

इस नगर में केवल मैं ही एक ऐसा मनुष्य हूँ जिसकी प्रेम में रोने की आवाज आकाश तक पहुँच जाती है ।

यदि मैं अपनी आँखों से आँसू बहाऊँ तो एक नदी प्रकट होकर तमाम खेतों को भर दे ।

रात मैंने अपने प्रियतमा के मुख को देखा । उसे काली अलकों ने आच्छादित कर रखवा था । उसे देखकर ऐसा ज्ञात होता था मानो चन्द्रमा को बादलों ने ढक लिया हो ।

यह हाल देखकर मैंने कहा कि क्या मैं चुम्बन लेना प्रारम्भ करूँ । उसने उत्तर दिया कि तनिक ठहर जाओ । चन्द्र को बादलों में से निकल आने दो ।

ऐ हृदय ! यदि तू उसके अधरों की याद में मदिरा पीकर मतवाला बनना चाहता है तो इस प्रकार अपना कार्य कर कि बैरियों को खबर न होने पावे ।

यदि तुम “हाफिज” को समाधि पर चलो तो वह उसमें से निकल कर तुम्हारे पैरों का चुम्बन ले ले ।

(३४)

इश्क़े तू निहाले हैरत आमद ।
 वस्ले तू कमाले हैरत आमद ॥
 वस ग़र्ज़े वहरे वस्ल काख़िर ।
 हम वा सरे हाल हैरत आमद ॥
 नै वस्ल वैमौंद व नै वातिल ।
 आँ जा कि ख़्याले हैरत आमद ॥
 अज़ हर तरफ़े कि गोश करदम ।
 आवाजे सवाले हैरत आमद ॥
 यक दिल वनुमों कि दर रहे ऊ ।
 वर चेहरा न ख़ाले हैरत आमद ॥
 शुद मुन्हज़म अज़ कमाले इश्क़त ।
 आँ रा कि जलाले हैरत आमद ॥
 सर ता क़दमे वजूदे "हाफ़िज़" ।
 दर इश्क़ निहाल हैरत आमद ॥

(, ३५)

अक्से ख़ुये तु चु दर आइनये ज़ाम उक्लाद ।
 आरिफ़ अज़ ख़न्दये मए दर तमए ख़ाम उक्लाद ॥

हुस्ने रुये तु वयक जलवा कि दर आईना कद ।
 ईं हमा नकश दर आइनये औहाम उक्ताद ॥
 चेकुनद कज पये दौराँ न रवद चूँ परेकार ।
 हर कि दर दायरये गरदिशे अय्याम उपताद ॥
 मन जे मसजिद व खरावात न खुद उक्तादम ।
 ईं नम अज अहदे अजल हासिले फरजाम उक्ताद ॥
 आँ शुद ऐ ख्वाजा कि दर सौमुआ वात्रम वीनी ।
 कारे मन वारुखे साक्की व लवे जाम उक्ताद ॥
 ईं हमाँ अक्से मयौ नकशे मुखालिक कि नमूद ।
 यक फरोगे रुखे साक्कीस्त कि दर जाम उक्ताद ॥
 गैरते इश्क जवाने हमाँ खासाँ वनुरीद ।
 कज कुजा सिरें गमश दर दहने आम उक्ताद ॥
 हर दमश वा मने दिल सोखा लुक्ते दिगर अस्त ।
 ईं गदा वीं कि चे शाइस्तये इनआम उक्ताद ॥

वस वह उससे मिलने के लिये व्यर्थ के विचारों में पड़ गया। तेरे मुख ने दर्पण में जैसे ही अपनी शोभा दिखलाई वैसे ही उसके साथ ही साथ उसी दर्पण में संसार की सारी विचित्रतायें अंकित हो गईं।

जो मनुष्य समय रूपी चक्कर में पड़ गया है वह उसके साथ चक्कर लगाने के अतिरिक्त और कर ही क्या सकता है।

मैं स्वयं पूजागृह से मदिरागृह में नहीं चला आया हूँ। मैंने जो सृष्टि के प्रारंभ में प्रतिज्ञा की थी यह उसी का फल है।

महाशय जी! वह समय व्यतीत हो गया जब आप मुझे पूजागृह में देखते थे। अब मैं प्रणय की पूजा करने लगा हूँ और मेरी पहुँच साक्की के चेहरे और प्याले के आँठों तक हो गई है।

मदिरा की यह झलक और उसमें एक दूसरे के विरुद्ध दिखलाई देने वाले चित्र साक्की के ही दृष्टि फेरने के परिणाम हैं। जैसा कि प्याले के दर्पण में हुआ है।

प्रणय की शरमिन्दगी ने तमाम मुख्य मुख्य और बड़े बड़े आदमियों की जुवान काट डाली थी। आश्चर्य्य यह होता है कि उसके प्रेम का रहस्य साधारण मनुष्यों को कैसे मालूम हुआ।

देखो तो यह दीन हीन उसका पुरस्कार पाने के योग्य किस प्रकार हो गया है कि उसके साथ वह सदैव कोई न कोई दयाभाव प्रकट किया करता है।

मन के दर जुम्रये उश्शाक वरिन्दी अलमम ।
 तबले पिन्हॉं चें जनम तश्ते मन अज वाम उफ़ाद ॥
 जेरे शन्शीरे गमश रक्त कुनाँ वायद रफ़ ।
 काँ के शुद कुश्तये ऊ नेक सर अंजाम उफ़ाद ॥
 दर खमे जुल्के तु आवेस्त दिल अज चाहे जकन ।
 आह कज चारा वहाँ आनदो दर दाम उफ़ाद ॥
 पाक वॉं अज नजरे रास्त व मक़तुद रसीद ।
 अहवल अज चश्मे दो वॉं दर तमये खाम उकताद ॥
 सूफ़ियाँ जुम्ला हरीफ़न्दो नजर वाज्र बले ।
 जॉं निर्याँ "हाकिजे" दिल सोज़्ता बदनाम उफ़ाद ॥

(३६)

आशिकों रा दर्द दिल दित्यार भी वायद कशीद ।
 दाते यारो गुस्तये अग्यार भी वायद कशीद ॥
 दाद खाही रा कि भी खाहद जे मुस्ताँ दादे खेश ।
 इन्तजारो दानदादे दार भी वायद कशीद ॥

प्रेमियों में मेरा नाम एक बड़े और नतवाले प्रेमी के नाम से प्रसिद्ध है ।
 अब जब मैं इस प्रकार कलंकित हो गया हूँ तो इस भेद को द्रिपाने से
 क्या लाभ ।

उसकी प्रेम की तलवार के नीचे बड़ी ही प्रसन्नता से जाना चाहिये ।
 उसके हाथ से जिसकी सृष्टि होती है वह एक बहुत ही उन्नत परिणाम पर
 पहुँचता है ।

मेरा दिल पहिले तेरी दृष्टि में आ कर अटक गया था । फिर रश्क से
 निकला तो तेरी काली लट्ठों के बन्दे में फँस गया । शोक 'दुर्ग' में निराश रह
 रहा था ।

नस्तुस्त मोएज़ए पोर सोहदवत ईं हर्फ़ेस्त ।
 कि अज़ मुसाद्वे ना जिंस एहतराज़ कुनेद ॥
 वजाने दोस्त कि ग़म परदए शुमाँ न दरद ।
 गर एतनाद वर अस्ताफ़े कारसाज़ कुनेद ॥
 मियाने आशिको माशूक़ फ़र्ते विस्वारस्त ।
 चु यार नाज़ तुमावद शुमा नियाज़ कुनेद ॥
 हर आँ कसे कि दरीं हल्का जिंदा नेस्त वइश्क ।
 वरू चु मुदी वक्तवाए मन नमाज़ कुनेद ॥
 अग़र तलव कुनेद इनाम अज़ शुमा "हाफ़िज़" ।
 दवालतश वलवे यारे दिलनवाज़ कुनेद ॥

(३८)

मनो इंकार शराब ईं चे हिकायत वाशद ।
 ग़ालिब न ईं कर्दम अज़लो फ़िफ़ायत वाशद ॥
 मनकि शवहा रहे तक़वा ज़दा अम वादफ़ो चंग ।
 नागहॉ सर वरह आरम चे हिकायत वाशद ॥
 जाहिद अर राह वरिंदी न वरद माज़ूरस्त ।
 इश्क़ कारेस्त कि मौक़ूफ़े हिदायत वाशद ॥

बहुत ही अनुभवी साधु की शिक्षा यह है कि बेजोड़ साथी से सदैव अलग रहो ।

यार के प्राणों की शपथ देकर कहता हूँ कि प्रणय में तुम्हारे सिर पर कलंक का टीका कभी भी नहीं लगेगा ; यदि तुम ईश्वरीय कृपा पर विश्वास रखो ।

प्रेमी और प्रेमिका में बहुत बड़ा भेद है । जब प्रेमिका अपनी मान लीला दिखाने तो तुम उनको मनाने के लिये विनयी किया करा ।

इस जगत् में जिन सन्तुष्ट के हृदय में जगत नहीं है, जात्रो में जाता देना है, उसे मन समझकर उसके उपर भव परी

"हाफ़िज़" यदि तुमने जोड़ पुष्कर जति से उसे उम्मी मनोमोहक यार के

ता प्रकृतो कब्ज नीनी वे मारकन नशीनी ।
 यक मुक्तावत वगोयम खुदरा मवीं कि रस्ती ॥
 अरौ रोज दोदा वूदम ईं कितनहा कि वरखास्त ।
 कज सरकशी जेमानी वा मा नमी नशस्ती ॥
 सुस्ताने मन खुदा रा जुल्कन शिकस्त मारा ।
 ता कै कुनद सिगाही चंदी दरज दस्ती ॥
 दर मजलिसे गुमानम दोशौं सनम् चे खुश गुफ ।
 वा काफिरौं चे कारत गर बुत नमी परस्ती ॥
 अज राहे दीदा "हाफिज" ता दीदा जुल्के पस्तत ।
 वा जुम्ला सर वलंदी शुद पायमालि पस्ती ॥

(४३)

ऐ वे सवर वकोश कि साहव सवर शवी ।
 ता राहरी न वाश कि राहवर शवी ॥
 दस्तज मसे वजूद चु मदीने रह बुशोद ।
 ता कीमियाए इश्क बेयात्री व जर शवी ॥

जब तक तू बुद्धि और विद्या के चक्र में रहेगा तुझे सफलता कभी भी प्राप्त न होगी। मैं तुझे एक गुर बताए देता हूँ। स्वयम् कभी शिक्त मत बनना।

वस फिर स्वतंत्रता तेरी है। उस दिन जब कि तू क्रोधित होकर उठ गया था मैंने सोच लिया था कि कुछ न कुछ बखेड़ा अवश्य ही उठ खड़ा होगा।

ऐ मेरे सम्राट ! ईश्वर के लिये अब तो कुछ मेरे ऊपर तरस खा। तेरी अलकों ने मेरे हृदय को चुटीला बना दिया है। यह काली नागिनें कब तक डसती रहेंगीं ? मेरी कुछ तो सुनाई कर।

रात को मदिरा बेचने वालों की सभा में उस प्यारे ने मुझसे एक बहुत ही अच्छी बात कही कि यदि तू मूर्तिपूजक नहीं है तो तेरा विधर्मियों से क्या सम्बन्ध है ?

"हाफिज" बड़ा ही प्रतिष्ठित था। परन्तु जब से उसने तेरी विखरी हुई अलकों को देखा है वरवाद हो रहा है और प्रतिष्ठा से बहुत दूर जा पड़ा है।

(४३)

ऐ अज्ञानी ! प्रयत्न कर ताकि तेरा अज्ञान दूर हो जावे। जब तक तू स्वयम् इस मार्ग पर नहीं चलेगा दूसरों के लिये क्या रास्ता बतावेगा।

अपने अस्तित्व को ईश्वरीय मार्ग पर चलने वालों के समान छोड़ दे। इससे तुझे प्रेम का कीमियाँ प्राप्त होगा और तू सुवर्ण बन जावेगा।

खानो खुरत जो मर्तबए खेश दूर कर्द ।
 अंगारसी बखेश कि ये खानो खुर शवी ॥
 गर नूरे इश्के हक वदिलो जानत ओफ़द ।
 विहाह कज आफताये फलक खत्र तर शवी ॥
 यकदम गरीक बहे खुदा शो गुमाँ मवर ।
 कज आव हक वह बयक मूए तर शवी ॥
 अज पाए ता सरत हमा नूरे खुदा शवद ।
 दर राहे जुल जलाल चो बेपाओ सर शवी ॥
 बज्हे खुदा अगर शवदत मंजरे नजर ।
 जी पस शके निर्माँद कि साहब नजर शवी ॥
 बुनियाद हस्तिए तु चू जेरो जवर शवद ।
 दर दिल मदार हेच कि जेरो जवर शवी ॥
 दर मकतबे हक़ायके पेशे अदीबे इस्क ।
 हाँ ऐ पिसर बकोश कि रोजे पिदर शवी ॥
 गर दरसरत हवाए विसालस्त 'हाफ़िज़' ।
 वायद कि खाके दरगहे अहे हुनर शवी ॥

खाना और सो रहना तुझे तेरे पद से गिराते हैं । तू अपने आप को उस समय पहिचानेगा जब विश्राम और विलास को तिलाञ्जलि दे देगा ।

यदि ईश्वर के प्रेम का प्रकाश तेरे हृदय में हो जावे और तेरा प्राण उससे ओतप्रोत हो जावे तो परमेश्वर की शपथ तू आकाशी सूर्य से भी अधिक प्रकाशित हो जायगा ।

तू क्षण भर के लिये ईश्वरीय नदी में डूब जा और विश्वास कर ले कि सातों समुद्रों का जल तेरे एक बाल को भी नहीं भिगा सकेगा ।

तू शिर से लेकर पैर तक ईश्वरीय प्रकाश में प्रकाशित हो उठेगा । पर यह होगा तभी जब तू परमेश्वर के मार्ग में निज को घुला देगा ।

यदि ईश्वर की शक्ति मदैव तेरी दृष्टि में रहने लगे तो निस्सन्देह तू उसका प्यारा बन जायगा ।

(४४)

वरौ ऐ तवीवम अज सर कि खवर जे सर न दारम ।
 वखुदम दमे रिहा कुन कि जे खुद खवर न दारम ॥
 वैयादतम् कदम नेह कि जे वे खुदी शवम वेह ।
 मै नावो नोश वहमदेह कि गमे दिगर न दारम ॥
 गमम् अर खुरी अर्जी पस न कुनम् जे गम खुरी वस ।
 नजरै कि जुज तु वाकस वसरत नजर न दारम ॥
 दिगरत मगू कि खाहम् जे वरखुदत विरानम ।
 तू वरीनो मन वरानम कि दिलज तु वर नदारम् ॥
 जे जरत कुनन्दे जेवर व जरत कशंद दर वर ।
 मने वेनवाए मुजतर चे कुनम कि जर न दारम ॥
 वमन अर्चे मै परस्तम् मदेहेद मै कि मस्तम ।
 मवरेद दिल जे दस्तम कि दिले दिगर न दारम ॥
 दिले "हाकिज" अरवजोई गमे दिल जे तुंद खूई ।
 चु वगोएदत वगोई सरे दर्द सर न दारम ॥

(४४)

ऐ वैद्य ! मेरे सिरहाने से उठ जा । तू दवा कैसे देने आया है ? मुझे तो अपने शिर का भी होश नहीं है । मैं अपने आपे से बाहर हूँ । मुझे थोड़ी देर इसी अवस्था में पड़ा रहने दे ।

मित्र ! मेरी कुशलता पूछने के लिये आ जा ताकि मैं इन बन्धनों से छुटकारा पा जाऊँ । मुझे निर्मल और मीठी मदिरा पीने के लिये दे । और इस हृदय में अब कोई चिन्ता नहीं है ।

मैं तेरे अतिरिक्त और किसी पर दृष्टि भी नहीं डालता । यदि तू अब भी मुझे देखने आ जाता तो मैं सम्पूर्ण दुखों को सहन करने के लिये उद्यत हूँ ।

तेरे शिर की शपथ, तेरे अतिरिक्त मेरे लिये दूसरा कोई नहीं है । वस एक दृष्टि कृपा की चाहिये । मुझसे फिर यह न कहना कि मैं तुझे निकालना चाहता हूँ अपने पास रखना नहीं चाहता । यदि तूने मुझे अपने पास न रखने का प्रण कर लिया है तो मैंने तेरे साथ रहने का ।

सोने से ही तेरे आभूषण बने हैं और सुवर्ण से ही तू प्राप्त होता है । मैं निर्धन दुखिया हूँ । करूँ क्या मेरे पास धन ही नहीं है ।

मैं मदिरा-भक्त हूँ पर अब मुझे न चाहिये । मैं मस्त हो रहा हूँ । मेरे हाथ से मेरा दिल मत छीनो । मैं दीन हूँ और मेरे पास दूसरा दिल नहीं है ।

तू हाकिज का प्यारा नहीं बनता और जब वह तेरे सम्मुख नए दिल की पीड़ा की कहानी रखता है, तब तू क्रोध में आकर कह देता है कि मुझसे यह शिर की पीड़ा सहन नहीं की जाती है ।

(४५)

फाश मी गोयमो अज गुफये खुद दिल शादम् ।
 वन्दये इश्कमो अज हर दो जहाँ आजादम् ॥
 तायरे गुल्शाने कुदसम् चे देहम शरह फिराक ।
 के दर्री वाँगेहे हादिसा चँ उक्तादम् ॥
 मन मलक वूदमो फिरदौसे वरीं जायम् वूद ।
 आदम् आर्वद दर्रीं दैरे खराव आवादम् ॥
 सायए तूवाओ दिल जूये हूरो लवे हौज ।
 वहवाये सरे कूये तु बेरक अज यादम् ॥
 नेस्त वर लौहे दिलम् जुज अलिके कामते यार ।
 चे कुनम् हकें दिगर याद न दाद उस्तादम् ॥
 यक नजर कर्देमो सद तीरे मलामत खुर्देम् ।
 दानये चीदमो दर दामे बला उक्तादम् ॥
 कौकवे यश्ते सरा हेच मुनफ्जिम न शानाक ।
 यारव अज मादरे गेती वचा ताले जादम् ॥
 मीखुरद खूने दिलम् मर्दुमके चश्मो सजास्त ।
 के चरा दिल वजिगर गोशये मर्दुन दादम् ॥

(४५)

विदरो मादरे मन वन्दा न वृन्द वले ।
 मन तुरा वन्दा शुद्धम गर्चे व अस्त आवादम् ॥
 ता शुद्धम हक्का व गोशे दरे मैश्वानये इरक ।
 हरदम आयद रामे अज नौ वमुवारकवादम् ॥
 पाक कुन चेतुए "हाकिम" व सरे जुल्क अज अरक ।
 वर्ना ईं सैल वमादम् व वरद तुनियादम् ॥

(४६)

मस्तम् अज वादए शब्दाना हनोत्र ।
 साकिण मा नरकू खाना हनोत्र ॥
 मैकशीओ वराम्त्रा मी गोई ।
 तौवा करदी जे इरक या न हनोत्र ॥
 नाजनीनां जे इरके तू विस्लाह ।
 आलमे तौवा कर्द मा न हनोत्र ॥
 हस्त मजलिस वरों करार कि वृद ।
 हस्त मुतरिव दरों तराना हनोत्र ॥
 चरम मस्तश वदान्त्रए जादू ।
 मी जनद तीर वर निशाना हनोत्र ॥

मेरे जन्म दाता पिता तेरे सेवक न थे पर मैं तेरा अनुचर बन गया हूँ ।
 परन्तु सेवक होते हुए भी मैं स्वतंत्र हूँ ।

जब से मैं ने प्रेम के मदिरा-गृह का सेवा व्रत धारण किया है तब से कोई
 न कोई नया रंज मुझे इस व्रत पर बधाई देने आ ही जाता है ।

अपने इस सेवक के आँसुओं को अपनी काली अलकों से पोंछ दे नहीं
 तो यह दिन प्रति दिन की बाढ़ इसके अस्तित्व को भी बहा ले जायगी ।

(४६)

रात को जो मदिरा पी थी उसका नशा अबतक बना हुआ है और
 पिलाने वाला भी अभी तक यहीं उपस्थित है ।

तू मुझे वायल भी करना है और फिर बड़े दर्प के साथ कहता है कि तूने
 अब भी प्रेम करना छोड़ा या नहीं ।

प्रियतम ! तेरे प्रेम से सारा संसार हाथ खींच बैठा है, परन्तु मैं अभी
 तक उसमें लव-लीन हो रहा हूँ ।

यह बैठक सदैव से ऐसी ही चली आ रही है और उसमें वही राग अब
 अलापा जा रहा है ।

और उसकी मतवाली आँवों से तीर छूट छूट कर अब भी लक्ष्य पर
 पड़ रहे हैं ।

“हाफिज” सन्ना दरमियां आमद ।
मी कुन्दवार अब केराना हनोज ॥

(४५)

ऐ बाद मुदकू वगुजर तू आ निगार ।
बकुशा गिरह जे जलकश व वू प्रथमन वचार ॥
वाऊ वगो कि ऐ बुते नामेहुवाने मन ।
वाजा कि आशिकाने तू मुदन्द जे इंतजार ॥
दिलदादाएगो मेह तू अब जौ लरीदावम ।
वर मा जफाओ जौरे किराकत खा मदार ॥
कदी व रोजगार करामोश थंदा रा ।
जिनदार अहूदेचारे वफादार गोश दार ॥
ऐ दिल बेसाज वा रामे दिवानो सत्र कुन ।
ऐ दीदा दर किराकश अजी वेश खूं मवार ॥
वारे खयाले दोस्त जे पेशे नजर मशू ।
चू वर विसाले दोस्त नदारेम इस्खार ॥
“हाफिज” तू तावके रामे हाले जहाँ खुरी ।
विसवार राम मखुर कि जहाँ नेस्त पाएदार ॥

ऐ दीन “हाफिज” ! तू निकट आ पहुँचा है परन्तु प्यारा अब भी तुम्हसे कनाई काट रहा है (कतरा रहा है) ।

(४६)

ऐ कस्तूरी की सुगन्ध से सुगन्धित वायु ! तू मेरे प्रियतम को गलों से होकर आ । और उसकी काली धुंधराली लटों को बिखेर कर उनकी तनिक सी सुगन्ध मुझ तक पहुँचा ।

उससे कहना कि कठोर हृदय ! तू वापस चल । तेरे प्रेमी विरह-वेदना में पड़े हुए तड़प रहे हैं ।

हमने दिल दे दिया है और प्राण न्योझावर कर तेरा प्यार पाया है । अब तो हम पर कृपा कर और इस जुदाई लूरी अत्याचार को रोक ।

समय अधिक व्यतीत हो जाने के कारण तू ने इस सेवक को भुला दिया है । प्यारे ऐसा न कर । तू तो अपने प्रेमियों के प्रति अपने वचनों को पूरा करने के लिये विख्यात है !

ऐ हृदय ! तू विरह-वेदना से मैत्री कर ले और धैर्य धारण कर । और नेत्रों ! तू अपने किराकतों से तूने तूने किराकत ख्यात न बनायो ।

(४८)

मुर्से दिलम् तागरेस्त कन्दसीये अर्श आशिगॉ ।
 अज ककसे तने मल्लु सेग गुदा अज जहाँ ॥
 चूँ बेपरद जाँ जहाँ सिन्दरद तुअद जाये ऊ ।
 तकिग्या गदे वाजे मा कंगूरये अर्शे दौं ॥
 अज सरे ईं साकदौं चूँ व पर व मुमें जाँ ।
 वाज नशेमने कुनद वर दर आस्ताँ ॥
 सायण दोलत किन्द वर सरे आलाम बसे ।
 गर वे कुशद मुर्से माँ बालो परे दर जहाँ ॥
 दर दो जहानश मकाँ नेस्त वजुज कौके चर्दा ।
 जिस्मे वै अज मादन अस्त जाने वै अज लामकाँ ॥
 आलामे उलवी बुवद जलवागदे मुर्से माँ ।
 आवे सरेऊ बुवद गुल्शने वासे जिनाँ ॥
 तादमे वहदत जदो "हाकिजे" शोरीदा हाल ।
 खामये तोहीद कश वर वकें इन्सो जाँ ॥

(४८)

मेरे हृदय का पवित्र पत्नी अमरलोक का निवासी है। अब वह इस शरीर के पिंजड़े से ऊब गया है और संसार से अपना मुख फेरने के लिये उद्यत है।

जब वह इस संसार से उड़ेगा तो उसके स्थान पर सदरह का वृक्ष होगा और हमारा वाज अमरलोक के शिखर पर जा बैठेगा।

प्राणपखेरू इस मृत्युलोक से उड़ कर पुनः उसी स्थान में प्रपना घोंसला बनावेगा जहाँ कि वह पहले रहता था।

यदि हमारा पत्नी आत्मिक जगत में अपने परों को फैला दे तो सारा संसार महत्वपूर्ण हो जावेगा जैसा कि हुमा के परों की छाया से होता है।

आत्मा का घर इन दोनों जहानों में कहीं भी नहीं है और यदि है तो आकाश पर, शरीर में इसका कुछ दिनों के लिये बसेरा होना आवश्यक है परन्तु रूह का निवास स्थान किसी खास स्थान में है।

हमारे पत्नी का घर है अमरलोक में और यह चरता है स्वर्ग के उपवन में।

ऐ दीन "हाकिज" चूँकि तू ने अद्वैत का दावा किया है, अतएव तू मानवी और जिनों के जगन से बाहर चला जा और अद्वैत में ही अपने जीवन को विसर्जित कर दे।

(४९)

वगैर अज्जों कि वे शुद दीनो दानिश अज्ज दस्तम् ।
 वेआ वगो कि जे इश्कत चे तरफ वर वस्तम् ॥
 अगर्चे खिर्मने उन्नम गमे तू दाद व वाद ।
 वखाक पाए अज्जीजत कि अहद नशिकस्तम् ॥
 चु चर्रा गर चे हकीरम वर्रा वदीलते इश्क ।
 कि दर हवाये रुखत चूं वमेह पैवस्तम् ॥
 वेयार वादा के उम्मेस्त तामन ज्ञ सरेअम्न ।
 व कुजे आकियत अज्ज वहे ऐश नशित्तम् ॥
 अगर जे मटुमे हुशियारी ऐ नसीहत गू ।
 सखुन व खाक मयफगन चेरा कि मन मस्तम् ॥
 चे गूना सर जेखिजालत वरआवरम् वर दोस्त ।
 के खिदमते वसजा वर नयामद अज्ज दस्तम् ॥
 वसोख "हाफिजो" आँ यारे दिल नवाज न गुफ ।
 कि भरहमे व फिरस्तम् चो जातिरश खस्तम् ॥

(५०)

दर कस कि नदाराद व जर्गो मेहे तु दरदिल ।
 हफा कि बुन्द नायते ऊ जाय यो बानिल ॥
 वरदाश्तन अज इशके तू दिल किके मुदालस्त ।
 अज जाने खुद आसो बुन्द अज इशके तू मुशिर कल ॥
 अज इशके तू नासेद चु मरा मनोनुमायद ।
 ऐ दोस्त मगरहम तु कुनो हस्ले मसादल ॥
 गश्तेम जर्गोरा कि वगोतेमो नदीदेम ।
 हमचू तो कसे जेना दर शक्लो शमादल ॥
 ऐ जादिदे सुदनी बदरे मैकदा बगुजर ।
 ओ दिलवरे मन वी कि बुन्द मीरे कयादल ॥
 अज वस्त तू शुस्तंद रकीवो जे तमो दस्त ।
 नू गश्त मरा कामे दिल अज लाले तू हासिल ॥
 "हाफिज" तू वरो बंदगिए पीरे मुगो कुन ।
 दर दामने ऊ दस्त जानो अज हमो बगुसिल ॥

(५०)

इस संसार में जो मनुष्य तुम्हसे हार्दिक प्रेम नहीं रखता वह वास्तव में कुछ भी नहीं है। उसकी प्रार्थना सर्वांश में व्यर्थ और बेकार है।

तेरे प्रेम से दिल हटा लेना एक असम्भव विचार है। प्राण से हाथ धो बैठना सहल है परन्तु तेरे प्रति प्रणय का छोड़ देना कठिन है।

शिक्षा देने वाला जब मुझे यह शिक्षा देता है कि तेरे प्रेम में न पड़ूँ, उस समय प्यारे ! कदाचित् तू ही इन समस्याओं को सुलझा सके।

मैंने सम्पूर्ण जगत का चक्र लगा डाला, पर तू कहीं भी नहीं दिखाई पड़ा।

ओ अभिमानी विवेकी ! आ इस मदिरा-गृह के द्वार पर आजा और मेरे उस प्रियतम को देख जो सब देवताओं का स्वामी है।

प्यारे जब से मेरे हृदय की आकांक्षा तेरे ओठों से पूर्ण हो गई तब से लोभी प्रतिद्वन्द्वी तेरे मिलने के विचार में मतवाले हो रहे हैं।

ऐ "हाफिज" ! तू जाकर शराव बेचने वाले के स्वामी की चाकरी कर ले और उसका दामन पकड़ कर फिर संसार की सभी आशायें छोड़ दे।

(५१)

हिजाबे चेहरा जाँमी शब्द गुयारे तनम् ।
 खुशा दमै कि अजाँ चेहरा पर्दा बरफ़िगनम् ॥
 चुर्नी क्रकस न सजाये चूँ मने खशइलहाँस्त ।
 रवम् व गुल्शाने रिजवाँ कि मुर्गे आँ चमनम् ॥
 अर्याँ न शुद कि चिरा आमदम् कुजा वूदम् ।
 दरेगो दर्द कि गाफ़िल जे कारे खेशतनम् ॥
 चिगूना तौफ़ कुनम् दर किजाए आलमे क़ुदूस ।
 चु दर सरा चे तरकीवाँ तख़्ता बंदतनम् ॥
 अगर जे खने दिलम् वूए मुश्क मी आयद ।
 अजब मदार कि हमर्दद नाकए खुतनम् ॥
 मरा कि मंजरे हूरस्तो मसकनो मावा ।
 चरा वफ़ूए खराबातियाँ बुवद बतनम् ॥
 तराजे पैरहने ज़र कशम् मर्वी चूँ शमा ।
 कि सोजहास्त निहानी दरुने पैरहनम् ॥
 बयाओ हस्तिए "हाफ़िज़" जे पेशे ऊ वरदार ।
 कि वावजूद तु कस न शुनूद जे मन कि मनम् ॥

(५२)

बारहा गुप्तमो वारे दिगर भी गोयम् ।
 की मने दिल गुदा ईरान, वस्तु भी पोयम् ॥
 दर पसे आईना तूनी सिफतम् दास्ता अन्द ।
 उधे उस्तादे अखल मुक्त चुगोभी गोयम् ॥
 मन अगर सारमो गर गुल नमन आरण हेस्त ।
 की अता दस्त कि भी परारदम भी रोयम् ॥
 दोस्ताँ ऐव मने येदिले हेरो मकुनेद ।
 गौहरे दारमो साहब नखरे भी जोयम् ॥
 गर्ने बादके मुलम्ना मण गुलगू ऐवस्त ।
 मकुनमा ऐव कजू रंगे रिया भी शोयम् ॥
 सन्दओ गिर्यए उशक जे जोय दिगरस्त ।
 मय सरायम वशवो वक्ते सहर भी मोयम् ॥
 वायजम मुक्त कि "हाफिज" दरे मयखाना मवू ।
 गो मकुन ऐव कि मन मुशके खुतन भी जोयम् ॥

(५२)

मैंने सब तरह कहा और अब फिर कहता हूँ कि मैं अपनी इच्छा से इस मार्ग पर नहीं चल रहा हूँ ।

मुझको परछाई के समान दर्पण के पीछे बैठा दिया है । मृत्यु मेरे मुख से जो कुछ कहलवाना चाहती है कह रहा हूँ ।

मैं कण्टक हूँ या पुष्प पर उपवन का माली उसे सजाने के लिये जिस प्रकार मुझे उगाना चाहता है मैं वैसे ही उगता हूँ ।

मित्रो ! मुझ घबड़ाये हुए प्रेमी की निन्दा मत करो । मेरे पास एक मोती है और मैं किसी अच्छे परीक्षक अथवा जाहरी की खोज में हूँ ।

गुदड़ी बाजार में गुलाबी शराब कहाँ ? मेरे ऐसे फटेहाल प्रेमी के पास ऐसी वस्तु कहाँ से आई ? लोग कहेंगे, परन्तु बुरा न मानना, इस समय मैं एक ढोंगी बना हुआ हूँ ।

प्रेमी लोग किसी अन्य कारण से हँसते और आँसू गिराते हैं । मैं रात को गाना गाता हूँ और प्रातः काल रोता हूँ ।

उपदेशक ने मुझसे पूछा है कि ऐ "हाफिज" तू इस मदिरा-गृह के द्वार पर क्या सूँघा करता है ? उससे कह दो कि वह बुरा न माने मैं तो खुतन के मुशक को सूँघा करता हूँ ।

(५३)

दिलम् रबूदए छली वशेस शोर अंगेज ।
 दरोगे वादओ कत्ताले वज्जओ रंगामेज ॥
 फिदाए पैरहने चाके माहखुवाँ वाद ।
 हज्जार जामए तक्कवाओ खिर्कए परहेज ॥
 फिरश्तए इश्क नदानद कि चीस्त क़िस्ता भख़ाँ ।
 वखाह जामो गुलावे वखाके आदभरेज ॥
 गुलामे आँ कलमातम कि आतिश अंगेजद ।
 न आवे सर्द जानद दर सखुन वर आतशे तेज ॥
 फ़कीरों खस्ता वदरगाहत आमदम रहमे ।
 कि जुज विलायतुअम् नेस्त हेच दस्तावेज ॥
 वेआ कि हातिके मैखाना दोश वा मन गुफ़ ।
 कि दर मुक़ाने रिजा वाशो अज क़जा मगुरेज ॥
 भवाश ग़री बवाजूए खुद कि हर सत्यत ।
 हज्जार शोबदा वाज्जद सिपहे मकरंगेज ॥

(५२)

बारहा गुलामो नारे दिगर भी मोयम् ।
 की मने दिल मुदा ईरख न, बगद भी मोयम् ॥
 दर पसे आईना नूती लिक्तम दास्ता बन्द ।
 उधे उम्मादे अखन मुक़ बुगोमी मोयम् ॥
 मन अगर आरमो गर गुल ननन आराय देस्त ।
 की अर्जा दस्त कि भी परवरदन भी रोयम् ॥
 दोस्ता ऐव मने बेदिले ईरख नकुनेद ।
 गौदरे दारमो नाइव नधरे भी मोयम् ॥
 गर्चे बाइलते मुलम्ना मय मुक़मो पैरस ।
 नकुनना ऐव कजु रंगे रिया भी मोयम् ॥
 चन्दओ गिर्ये उरशाक से जोय दिगरस्त ।
 मय सरायम बराओ बके, महर भी मोयम् ॥
 वायबन मुक़ कि "हाकिम" दरे मयकाना नव ।
 गो नकुन ऐव कि मन सुरके खुतन भी मोयम् ॥

(५२)

मैंने सब तरह कहा और अब फिर कहता हूँ कि मैं अपनी इच्छा से इस मार्ग पर नहीं चल रहा हूँ।

मुन्क़ो परछाई के समान दर्पण के पीछे बैठा दिया है। वस्तु मेरे मुख से जो कुछ कहलवाना चाहती है कह रहा हूँ।

मैं कण्टक हूँ या पुष्प पर उपवन का नाली उसे सजाने के लिये जिस प्रकार मुझे उगाना चाहता है मैं वैसे ही उगता हूँ।

मित्रो ! मुन्क़ बचड़ाये हुए प्रेमी की निन्दा मत करो। मेरे पास एक नोती है और मैं किसी अच्छे परीक्षक अथवा जाहरी की खोज में हूँ।

गुदड़ी बाजार में गुलाबी शराब कहाँ ? मेरे ऐसे फटेहाल प्रेमी के पास ऐसी वस्तु कहाँ से आई ? लोग कहेंगे, परन्तु बुरा न मानना, इस समय मैं एक ढोंगी बना हुआ हूँ।

प्रेमी लोग किसी अन्य कारण से हँसते और अँसू गिराते हैं। मैं रात को गाना गाता हूँ और प्रातः काल रोता हूँ।

उपदेशक ने मुन्क़ने पूछा है कि ऐ "हाकिम" तू इस मदिरा-गृह के द्वार पर क्या सूँघा करता है ? उससे कह दो कि वह बुरा न माने मैं तो खुतन के मुश्क को सूँघा करता हूँ।

ईरान के सूफी कवि

(५३)

३७९

दिलम् रबूदए खली वशेस शोर अंगेज ।
 दरोगे बादओ कत्ताले वजओ रंगामेज ॥
 फिदाए पैरहने चाके माहूरयाँ बाद ।
 हजार जामए तकनाओ खिकए परहेज ॥
 फिरस्तए इश्क नदानद कि चीस्त किस्मा मत्तौ ।
 वजाह जामो गुलावे वजाके आदनरेज ॥
 गुलामे आँ कलमातम कि आतिश अंगेजद ।
 न आवे सद् जनद दर सखुन वर आतशे तेज ॥
 फकीरों खस्ता बदरगाहत आमदन रहमे ।
 कि जुज विलायतुअम् नेस्त हेच दस्तावेज ॥
 वेआ कि हातिके मैखाना दोश वा मन गुरु ।
 कि दर मुकाने रिजा वाशो अज कजा मगुरेज ॥
 मवाश गरां ववाजूए खुद कि हर लावन ।
 हजार शोवदा वाजद सिपहे मकरगेज ॥

जामो

[जन्म १४१४ ई० : मृत्यु १४९२ ई०]



जामी
 (श्री० वाई० एम० काले के सौजन्य से)

इसका पूरा नाम था मुन्ला नूरहीन अब्दुल रहमान। परन्तु जन साधारण में यह जामी नाम से ही विख्यात थे। खुरासान नामक एक छोटे से नगर में इनका जन्म हुआ था और उसी में मृत्यु भी। यह बड़े भारी विद्वान, ऊँचे कवि और जिज्ञासु थे। इन्होंने पचास से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं। इनमें से तीन दीवान हैं जिनमें उच्च कविताएँ हैं, सात प्रेम कहानियाँ तथा उपदेश प्रद मसनवियाँ हैं। उन्होंने इतने विषयों पर अपनी लेखनी उठाई है कि लोगों को आश्चर्य होता है। मुहम्मद साहब के उपदेशों से लेकर, पौराणिक कहानियाँ, सन्तों के जीवन चरित्रों, व्याकरण, पिंगल इत्यादि पर भी उन्होंने लिखा है। रहस्यवाद पर उन्होंने जो पुस्तकें लिखी हैं, वह वास्तव में ध्यान देने योग्य हैं। इनमें से दो पुस्तकें—लवाहे और तहफ़ातुल अहरार, जिसके पद मैंने उद्धृत किये हैं, विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें से प्रथम, रहस्यवाद की उत्तम से उत्तम पुस्तकों में से एक है। कल्पना की ऊँची उड़ान, भाषा, और उसकी उपयुक्तता तथा शैली के लिहाज से इसकी गणना खमी की मसनवी और अत्तार की मंतज़कुत्तैर के साथ ही की जाती है। इन दोनों से जामी ने सीखा भी बहुत कुछ था। उसके चरित्र में किरदौसी, हाकिम, सादी, अनवरी और स्याकानी इत्यादि के चरित्रों से भिन्नता थी। और यह भिन्नता थी उसकी स्वतंत्रता। वह किसी भी द्वार में नहीं गया। जिस समय उसकी मृत्यु हुई वह प्रसन्न था और निर्धन भी। उसकी निर्धनता ने उसे कभी भी हतोत्साह नहीं बनाया और न कभी उसने आवश्यकता पड़ने पर दान करने से मुख मोड़ा। उसने जो कुछ भी लिखा अपनी इच्छा से परन्तु डेवोज के शब्दों में वह लोगों के लिये बहुत ही सुन्दर तथा उच्च कविताएँ छोड़ गया है।

इनकी रचनाओं में व्यंग देखने ही योग्य है। प्रोफेसर ब्राउन ने इनका एक उदाहरण दिया है एक बार वह कुछ पंक्तियाँ पढ़ रहे थे। जिनका आशय था—

“तुम मेरी निराश्रित आँखों तथा पीड़ित हृदय में इन प्रकार उम रहे हो कि कोई भी मुझे दुःख से आना हुआ सुनने ही स्वप्न में देखनाई देना है”

इसी समय किसी ने पूछा

“मान लिये कि वे सच हो”

जामी ने उत्तर दिया “मेरी सोचने की शक्ति तुम्हारी है”

उनके जीवन के विषय में कैप्टन नैसन और वैरन विक्टर रौसन के लेख बहुत ही उत्तम हैं। इस विषय का अध्ययन करने-वालों को इनसे लाभ हो सकता है।

प्रमुख रचनाएँ :—

लवाहे,

युसुफ़ जुलेखा,

सुलेमान अबजाल

लैला मजनूँ।

(१)

गुनमश मे लिखे मनोहा नकस ।
लिखो मनोहा तुई इमरोज व वम ॥
अज कदमत सञ्जए पेशम दमीद ।
वज नकसत जौके ह्यातम रसोद ॥
मेने शता बुद जे तो बीमारीयम ।
वेह जे सद इतलाक गिरिभतारीयम ॥
सेहते मन दौलते दीदारे तुस्त ।
शरवते मन लज्जते गुफारे तुस्त ॥
रूप तो बुद महवते ईमाने मन ।
नूरे यकी जद अलम अज जाने मन ॥
आँचे रसोद अज तो वजाने सकीम ।
वाशद अजाँ हुज्जतो नुरहाँ अकीम ॥
उधे बुदम अज तो वआँरह शिनास ।
मुनत्तिजे आँ नेस्त दलीलो क्रियास ॥

(१)

मैंने उससे कहा कि हे मेरे पथ प्रदर्शक ! यदि आज संसार में मेरा कोई सुभेच्छु अथवा उत्तम पथ पर चलाने वाला है, तो वह केवल आप ही हैं ।

आपके चरणों के स्पर्श से मेरा जीवन रूपी पौधा लहलहाने लगा । आपके वचनों से मुझे जीवन का आनन्द प्राप्त हो गया ।

आपकी कृपा में मेरा रोग आरोग्यता में परिवर्तित हो गया और अब मेरे बन्धन महत्त्वो भवतंत्रनाओं से बंध कर हैं ।

आपके वचनों में मैं दूर-भरा हो जाता हूँ । आपके वचनों ने जीवन में स्फूर्ति आती है ।

आपका मुख इतने से मेरा ध्यान-मग्न से धारण हो जाता है और मुख पर हाँसे पड़ने से मुझे निश्चिन्त हो जाता है ।

आपकी तरफ से दया-पत्रक वचन को ही मुझे प्राप्त हुआ है वह तक था प्रेम से नती मिल गया ।

आपके कारण मैंने जो जो बंधन-बन्धन छोड़े वह बाद विचार अथवा सुमान के सहारे नहीं । मैंने जो जो बंधन छोड़े वह बाद विचार अथवा

वर मन अर्जी पम पमे वारे नमुन्द ।
 वर क्लो मकसूद गुनारं नमुन्द ॥
 लेक अर्जी बीम जे वा ओप्लम ।
 कत तो मवाद कि जुग ओप्लम ॥

(२)

गुफ़ कि जामी मशी अन्देशा नाक ।
 चँ शुदन आईना जे अन्देशा पाक ॥
 वाश हमेशा खेरे दिल वमन ।
 आईना अतदार मुक्ताबिल वमन ॥
 ता जे करोगे कि जे मन वर तो ताक ।
 दानिशो दीदे तो शब्द दीद यान ॥
 याक्ते तोरा अज तो रिहानद तमाम ।
 जुम्ला यके गाधीओ वस वस्सलाम ॥

(३)

उधे दिलज पेश. न दानिस्ता बुद ।
 पेशे नजर जुम्ला हवेदा तमुद ॥

अब मुझे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं रही अब मेरे सम्मुख प्रकट हो गया ।

परन्तु एक और भय मुझे व्याकुल कर रहा है । कहीं आ होना पड़े ।

(२)

पीर ने कहा कि “जामी” अपने हृदय में किसी प्रकार के भय सन्देह को स्थान न दे ।

जब तेरा हृदय-दर्पण निर्मल हो गया है तो सदैव प्रसन्नता से मेरे रह और उस दर्पण को मेरे सम्मुख रख ;

ताकि जो प्रकाश तुझे मेरे द्वारा प्राप्त हुआ है, उसकी कृपा से तेरा विस्तृत हो और नेत्रों को उसका दर्शन करने की सामर्थ्य प्राप्त हो,

और प्रेम स्वरूप दाता तेरे अहंकार को हटा दे, जिससे तुझे सबमें व दिखलाई पड़े । वस अब जा ।

(३)

हृदय को जिन बातों का ज्ञान पहले नहीं था, वह सब अब साफ तौर से नेत्रों के सम्मुख वर्तमान हैं ।

दीद के आत्म जे समरु वा समा ।
नेल बजुब बाजिनो मुमकिन नमा ॥

(४)

हस्तिए बाजिव यके आनद बचात ।
हस्त तआयुन जे शयुनो लिहात ॥
कसरते सूरत जे लिहातलो बस ।
अल्ल हमा बहदते जातत व बस ॥
वह यके मौज हजारों हजार ।
रुए यके आईना हा बेसुमार ॥

(५)

कदं चुईं बन्द हुआई नरा ।
दाद जे हर बन्द रिहाई नरा ॥
रिश्तए नन अज गिरहए कैदरस्त ।
बर गिरहम गौहरे इतलाकबस्त ॥
ऊत्रए नाचीच बचतु आरमीद ।
हस्तविए खुद रा हमगी वह दीद ॥

पृथ्वी से लेकर आकाश तक सम्पूर्ण विस्तार में ईश्वर के अविच्छिन्न और
रुब भी नहीं है ।

(४)

वह एक ही है । उसके रूपों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है ।
यदि यह नाना रूप उसके हैं भी तो वह केवल उसके गुणों के कारण
हैं । प्रकट रूपों की अधिकता केवल गुणों पर ही निर्भर है ।
सबका मूल तथा तत्व एक ही है । समुद्र एक है, परन्तु तहरें लाखों ।
सुख एक है और दर्पण अगणित !

(५)

जब पीर ने यह रहस्य मेरे समुख प्रकट कर दिया, मेरे सभी दन्धन
डोले हो गये ।

कारागार से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रकार की बन्तुओं से
मेरा सम्बन्ध टूट गया । हृदय में विश्वास आ गया ।

अस्तिव हीन बूंद समुद्र में मिल गया और अपने जीवन कर्ता सरिता
की सैर भी कर ली ।

दीद के आलम जे समक ता समा ।
नेस्त वजुज वाजियो मुमकिन वमा ॥

(४)

हस्तिए वाजिव यके आमद वजात ।
हस्त तआयुत जे शयूनो सिफात ॥
कसरते सूरत जे सिफातस्तो वस ।
अस्त हमा वहदते चातस व वस ॥
वह यके मौज हचारौ हचार ।
रूप यके आईना हा वेसुमार ॥

(५)

कदे चूई वन्द कुशाई मरा ।
दाद जे हर वन्द रिहाई मरा ॥
रिश्तए नन अज गिरहए कैदरस्त ।
वर गिरहम गौहरे इतलाकवस्त ॥
ऊत्रए नाचीज बवह आरमीद ।
हस्तिए खुद रा हमगी वह दीद ॥

पृथ्वी से लेकर आकाश तक सन्पूर्ण विस्तार में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है ।

(४)

वह एक ही है । उसके रूपों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है ।
यदि यह नाना रूप उसके हैं भी तो वह केवल उसके गुणों के कारण
हैं । प्रकट रूपों की अधिकता केवल गुणों पर ही निर्भर है ।
सबका मूल तथा तत्व एक ही है । समुद्र एक है, परन्तु लहरें लाखों ।
मुख एक है और दर्पण अगणित !

(५)

जब पीर ने यह रहस्य मेरे सन्मुख प्रकट कर दिया, मेरे सभी बन्धन
डोले हो गये ।

कारागार से मुझे मुक्ति प्राप्त हो गई और सभी प्रकार की बस्तुओं से
मेरा सन्बन्ध छूट गया । हृदय में विश्वास आ गया ।

अस्तित्व हीन दृढ़ समुद्र में निल गया और अपने जीवन रूपी सखिया
की सैर भी कर ली ।

दर नूतरे नदर वो नीजे निहार ।
 यावन नूमा जस्ताए रोश आशकार ॥
 नूँ पण मौदर मूर दरिया शिनाकर ।
 हेन मौदर जुत मौदरे नद न पाकर ॥
 नूँ वतनाशा मूर बुद विनागरीस्त ।
 हेन न दानिस्त कि जुत वह नोस्त ॥
 "जामी" अगरे कींकि जमी इस्तो पा ।
 ता कि वदी वह शमी आशना ॥
 यकीए वह आमदा मन्वास सौ ।
 तालिबे दुरीं मौदरे खास शौ ॥
 दर दिलत अच शोला हासोन इस्त ।
 लायेका अई हुस्त मकालोन इस्त ॥
 सोदतए शोलए हाजाव आश ।
 सागए शरहे मकालाव आश ॥

(६)

रीनके प्यामे जवानीस्त इश्क ।
 माए कामे दो जहानीस्त इश्क ॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया ।

जब मोती के लालच में, उसी मरिना की तरफ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही में था ।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया है "जामी" ! यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी लगा और उसी न्वास मोती और लाल की खोज कर ।

तेरे हृदय में मस्ती की आगिन प्रज्वलित हो रही है । अतएव मोठे वचन कहना उचित है ।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों में जलकर मरने के लिये उद्यत हो जा ।

(६)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है ।

मैले तहर्हक वक़लक इश्क़ दाद ।
 चौक़े तजर्हद वमलक इश्क़ दाद ॥
 चूँ दिलो जाँ वूए ताआग़ुक गिरिफ़ ।
 या गिले तन रंग ताल्लुक गिरिफ़न ॥
 रावतए जानो तने मा अज़ओस्त ।
 मुर्दने मा जीस्तने ना अज़ओस्त ॥
 उलवी व सिफ़ली हमा वन्देवयन्द ।
 पस्ते शवे क़द्रे वलन्देवयन्द ॥
 मह कि व शव नूर देही चाफ़ा ।
 परतवे अज़ मेह वरो ताफ़ा ॥
 खाक ज़े गरङ़ूँ न बुवद तावनाक ।
 ता असरे मेह न युफ़द व खाक ॥
 चूँ वतन आजादा ज़े मेहरस्त दिल ।
 संगे सियाह हस्त दराँ तीरा गिल ॥
 हर कि दर आतिशे इश्क़स्त चर्क़ ।
 अज़ दिले ऊ ता वस्तनोवर चे फ़र्क़ ॥

आकाश को हिलने-डुलने की इच्छा प्रेम ही ने प्रदान की है और त्वगीव दूत में सदाकौँची बनने की शक्ति प्रेम ने ही भर दी है ।

मन और प्राण में जब प्रणय का प्रकाश पहुँचा तब उन दोनों में मिश्र तथा शरीर से सम्बन्ध जोड़ लिया ।

हमारे शरीर तथा प्राणों के बीच केवल यही एक बन्धन है और इसे के बल पर हम मरते तथा जीते हैं ।

आकाश और पृथ्वी सब उसी की रस्तियों में बंधे हुए हैं और उनकी महानता तथा उच्चता के सम्मुख सब के सब हार मान रहे हैं ।

चन्द्रमा जो संसार के अंधकार को रात में निकलकर दूर भगा देता है, उसके प्रकाश से ही प्रकाशित है ।

निष्टी तब तक नहीं चमकती जब तक आकाशस्थित सूर्य का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता ।

यदि शरीर में दिल है और वह भी प्रणय से रूखित हो गया है, तो निष्टी में काले पत्थर के समान है ।

जो मनुष्य प्रणय की अग्नि में नहीं जला है, उसके चरित्र का अन्तर के फूल में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है ।

दर गवरे लहर जो मौजि विदार ।
 थापन हमा जलपण कोश आशकार ॥
 चूँ पण मौदर मण दरिया शिवाक ।
 हेंच गोहर जुज मौदरें लुव न पाक ॥
 चूँ वनमाशा मण लहर विनिगिरीस्त ।
 हेंच न दानिस्त कि जुज वह नोस्त ॥
 "जामी" अगर जोकि जदी दस्तो पा ।
 ता कि वदीं वह शबो आशना ॥
 मकीण वह आमदा मज्जास शो ।
 तालिचे दुरीं मौदरे खास शो ॥
 दर दिलत अज शोला हालोन दस्त ।
 लायेका आँ हुस्न मकाशीत दस्त ॥
 सोरुतण शोलाण हालत आश ।
 सागतण शरहे मकालात आश ॥

(६)

रीनके पेंयामे जवानीस्त इश्क ।
 नाए कामे दो जहानीस्त इश्क ॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया ।

जब मोती के लालच में, उसी सरिना की तरफ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही में था ।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया तो "जामी" । यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी जमा और उसी खास मोती और लाल की खोज कर ।

तेरे हृदय में मस्ती का आग्न प्रचलित हो रहा है । अतएव मोठे वचन कहना उचित है ।

तू प्रेम की मस्ती की लपेटों में जलकर मरन के लिये उद्यत हो जा ।

(७)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है ।

मैले तहर्हक वफलक इश्क दाद ।
 जौके तजरुद वमलक इश्क दाद ॥
 चूँ दिलो जाँ वूए ताआशुक गिरिफ़ ।
 वा गिले तन रंग ताल्लुक गिरिफ़त ॥
 रावतए जानो तने मा अजओस्त ।
 मुर्दने मा जीस्तने मा अजओस्त ॥
 उलवी व सिफ़ली हमा वन्देवचन्द ।
 पस्ते शवे क़द्रे वलन्देवचन्द ॥
 मह कि व शव नूर देही चाफ़ा ।
 परतवे अज मेह बरो ताफ़ा ॥
 खाक जे गरडूँ न बुवद तावनाक ।
 ता असरे मेह न युफ़द व खाक ॥
 चूँ वतन आजादा जे मेहरस्त दिल ।
 संगे सियाह हस्त दरौँ तीरा गिल ॥
 हर कि दर आतिशे इश्कस्त गर्र ।
 अज दिले ऊ ता वस्तनोवर चे फ़र्र ॥

आकाश को हिलने-डुलने की इच्छा प्रेम ही ने प्रदान की है और स्वर्गीय दूत में सदाकाँची बनने की शक्ति प्रेम ने ही भर दी है ।

मन और प्राण में जब प्रणय का प्रकाश पहुँचा तब उन दोनों ने निहो तथा शरीर से सम्बन्ध जोड़ लिया ।

हमारे शरीर तथा प्राणों के बीच केवल यही एक बन्धन है और इसी के बल पर हम मरते तथा जीते हैं ।

आकाश और पृथ्वी सब उसी की रस्तियों में बंधे हुए हैं और उनकी महानता तथा उच्चता के सम्मुख सब के सब हार मान रहे हैं ।

चन्द्रमा जो संसार के अंधकार को रात में निकलकर दूर करता है, प्रेम के प्रकाश से ही प्रकाशित है ।

निहो तब तक नहीं चमकती जबतक आकाशन्धित सूर्य का प्रकाश उस पर नहीं पड़ता ।

यदि शरीर में दिल है और वह भी प्रणय से रदित है तो वह काले निहो में काले पत्थर के समान है ।

जो मनुष्य प्रणय की अग्नि में नहीं जला है, उसके हृदय तथा मनोबन्ध के फूल में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है ।

दर मूवरे बहर ओ मीठे निहार ।
 यापत हमा जन्मण मोश आशकार ॥
 चूं पण मोहर मूण दुरिमा शिलाक ।
 हेच मोहर जुत मोहरे मूद न गाक ॥
 चूं वतमाशा मूण सुद विन्निगिरीस्व ।
 हेच न दानिस्व कि जुत वह मोस्व ॥
 "जामी" अगर जीके अदी दक्षो पा ।
 ता कि वदी वह शची आशनी ॥
 मर्काण वह आभदा सच्चास शी ।
 तालिधे दुरी मोहरे खास शी ॥
 दर दिलत अब शोला हालोत हस्त ।
 लायेका ओ हुस्न मकालीत हस्त ॥
 सोरुतण शोलण हालोत वाश ।
 सारुतण शरहे मकालोत वाश ॥

(६)

रीनके पेयामे जवानीस्त इश्क ।
 माए कामे दो जहानीस्त इश्क ॥

समुद्र के विभिन्न रूपों में, आनन्द मयी लहर के समान, सभी स्थानों में अपने ही को पाया ।

जब मोती के लालच में, उसी सरिता की तरफ दौड़ लगाई तो वहाँ भी उसी लाल को पाया जो मेरे पास पहले ही में था ।

सैर करने के लिये स्थान की खोज की तो वही समुद्र दृष्टि में आया ।

ये "जामी" ! यदि इस समुद्र को ही जानने और पहचानने के लिये तूने इतना प्रयत्न किया है,

तो अब इसी के गर्भ में डुबकी लगा और उसी खास मोती और लाल की खोज कर ।

तेरे हृदय में मस्ती की आग्न प्रवलित हो रही है । अतएव मोठे वचन कहना उचित है ।

तू प्रेम की मस्ती की लपटों में जलकर मरने के लिये उद्यत् हो जा ।

(६)

प्रणय युवावस्था की शोभा है और दोनों जहानों के उद्देश्यों का सार है ।

यारे हम आवाज़ वहम परदा साज़ ।
 तू जे तपे फुकुर्ते ऊ दर गुदाज़ ॥
 यार हम आहंग वहर सीना तंग ।
 तू जे गमश कोफ़ा वर सीना संग ॥
 जोरकये वज़ चुनाँ गीर यार ।
 कश जुवद अन्दर दिलो जानत करार ॥
 महरमे खिलवत गहे राजत शवद ।
 मूनिसे शवहाए दराजत शवद ॥

(१०)

जलवा गरे कुंगुरे यकशाख़ शौ ।
 न रामा जने ताहमे यक काख़ शौ ॥
 रू व यके आर कि फ़रख़ुन्दा गीस्त ।
 तर्के दुई कुन कि परागन्दा गीस्त ॥
 मेवए मक़सूद कै आरद दरख़न ।
 ता न कुनद पाए व यक जाए सख़्त ॥

तेरा साथी तेरे साथ बैठे हुआ स्वर में स्वर मिला रहा है, और तू उसकी विरह-व्यथा में अपने आप को घुलाए डालता है ।

तेरा सदैव का साथी मित्र, तेरे हृदय में ही है और तू उसी के लिये रो रो कर सीने पर पत्थर पटक रहा है ।

तनिक सावधान हो जा और ऐसे से दोस्ती कर जो सदैव तेरे प्राणों और दिल ही में निवास करे ।

वह तेरे रहस्यों की कोठरी की ताली अपने पास रखे और विरह की लम्बी रातों में तुझे सान्त्वना प्रदान करने का प्रयत्न करे ।

(१०)

एक ही वृत्त की चोटी पर बैठ जा और एक ही डाल पर आसीन होकर अपना राग अलाप । यदि तेरा ध्यान किसी की ओर आकर्षित होता है तो उसके अतिरिक्त और किसी को दिल में जगह न दे ।

यह एक बहुत अच्छी बात है । अपने दिज्ञ को चारों तरफ़ दौड़ने से रोक, क्योंकि ऐसा करना अच्छा नहीं है ।

वृत्त में वह मेवा किस समय दिखलाई देता है ? उस समय जब कि उसके फलने का समय आता है । उसी प्रकार तू भी उसी समय फलेगा जब एक स्थान पर दृढ़ हो जायगा ।

तारे सनोवर के कुवर साफिली ।
 अज रामे इरके कि न सादवदिती ॥
 चिन्दगिए दिल वरामे आशकोस्त ।
 तारके जो वर कदमे आशकोस्त ॥
 ता न शवद इरक व दिल बुर्गेगी ।
 गर्मिए दि व नेस्त कुज अकमुर्गेगी ॥
 ऐ शुदा तारे तो वद अज नोकू आ ।
 तुके सद अन्दोह से ताक अरकू आ ॥

(७)

गद् दम से अन्देशाए गादे बनी ।
 मह बकलक श्रीनिओ आदे बनी ॥

(८)

गद् बगिआले दिले शैश शमी ।
 रूप चो दीवाना व सहरा नेदो ॥

(९)

यार हम आगोरा बहम वादा नोरा ।
 तू पसे जानुए राम अन्दर सरोरा ॥

सनोवर का क्या काम है ? बेलावर रखना, और वह भी प्रणय की पीड़ा से। प्रेम से परिपूर्ण कर देना उसका काम नहीं है।

दिल का अस्तित्व प्रेमी की जलन में ही है और प्राण का शिर प्रणयी के चरणों पर पड़ा हुआ है।

जब तक दिल किसी दूसरे के अधिकार में नहीं चला जाता उसे प्रणय का अनुभव नहीं होता। और प्रणय के अनुभव के बिना दिल का होना न होना बराबर है। ऐ प्रणयी !

तेरा काम सुन्दरियों ने बिगाड़ रक्खा है और उनके नीचे कटाकों का शिकार बनकर तुझे सहस्रों विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है।

(७)

कभी तो तू किसी चन्द्रमुखी के ध्यान में मस्त रहता है और चन्द्रमा को तरफ देख देख कर आहें भरा करता है।

(८)

कभी तू किसी मृग की चाह में मतवाला होकर जंगलों में निकल भागता है और घरवार त्याग देता है।

(९)

तेरे अंक में तेरा प्यारा बैठे हुआ मदिरा के प्यालों पर प्याले खाली कर रहा है परन्तु तू शोक के बोझ से दबा हुआ रोता है।

चारै हम आवाज़ बहन परदा साज ।
 तू जे तपे कुकर्त ऊ दर गुदाज ॥
 चार हम आहंग बहर सीन तंग ।
 तू जे रामश कोला बर सीना संग ॥
 जोरकने बर्ज चुनों गीर चार ।
 कश बुद अन्दर दिलो जानत करार ॥
 महरमे खिलवत गहे राजत शवद ।
 मूनिसे शवहाए दराजत शवद ॥

(१०)

जलवा गरे कुंगुरे चकशाख शौ ।
 न रामा जने ताकमे चक काख शौ ॥
 रू व चके चार कि करखुन्दा गीत ।
 तके दुई कुन कि परागन्दा गीत ॥
 मेवए मकनुद कै चारद दरखन ।
 ता न कुनद पार व चक जाए सत ॥

तेरा साथी तेरे साथ बैठा हुआ त्वर में त्वर मिला रहा है, और तू
 उसकी विरह-व्यथा में अपने आप को घुलाए डालता है ।

तेरा सदैव का साथी मित्र, तेरे हृदय में ही है और तू उसी के लिये रो रो
 कर सीने पर पत्थर पटक रहा है ।

तनिक सावधान हो जा और ऐसे से दोस्ती कर जो सदैव तेरे साथी और
 दिल ही में निवास करे ।

वह तेरे रहस्यों की कोठरी की ताली खरने पास रखे और रिक्त से
 लम्बी रातों में तुझे सात्वना प्रदान करने का प्रयत्न करे

(११)

तवाहे " जामी "

(१)

यारव दिले पाको जाने आगाहम देह ।
 आहे शवो गिर्याण सहर गाहम देह ॥
 दर राहे खुद अहाल जे खुदम वे खुद कुन ।
 अंगह वेखुद जे खुद वखुद राहम देह ॥
 यारव हमा खलक रा वमन वदखू कुन ।
 वज जुन्ला जहाँनियों मरा यकमू कुन ॥
 रूप दिले मन सर्फ कुन अज हर जिहते ।
 वज इशक खुदम यक जहतो यकरू कुन ॥
 यारव वेरिहानेयम जे हिरमाँ चे शवद ।
 राहे दिहोयम वकूए इरकाँ चे शवद ॥
 वस गत्र कि अज करम मुसल्माँ करदी ।
 यक गत्र दिगर कुनो मुसल्माँ चे शवद ॥
 यारव जे दो कौन वे नियाजम गरदाँ ।
 वज अकसेर फक सर्फराजम गरदाँ ॥
 दर राहे तलव महरमें राजम गरदाँ ।
 जाँ राह कि न सूर तुस्त वाजम गरदाँ ॥

(१)

हे ईश्वर ! मुझे पवित्र हृदय और विचारवान् प्राण प्रदान कर और ऐसा कर जिससे मैं रात को तड़पूँ और दिन को रोऊँ ।

अपने मार्ग में पहले मुझे ऐसा बना दे कि मैं अहंकार को भूल जाऊँ और फिर मुझे ऐसा मतवाला बना दे कि मैं तुम्ही को ढूँढ़ता फिऊँ ।

हे ईश्वर ! मुझे सभी लोगों के प्रति बुरा और उनसे प्रथक कर दे ।

मेरी इन्द्रियों को सभी सांसारिक वस्तुओं से हटाकर अपने में केन्द्रीभूत करले जिससे कि तू ही मेरा सर्वस्व हो जावे ।

हे ईश्वर तू ने बहुत से पथ भ्रष्ट मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लगाया है (अपने में विश्वास उत्पन्न कर दिया है) फिर मुझ गुमराह का भी यदि अपने में (ईश्वर में) विश्वास उत्पन्न कर देगा तो क्या बड़ी बात होगी ?

मुझे भी उचित पथ पर ला । उस मार्ग से जो तेरी तरफ नहीं आता है मुझे लौटा कर उस पथ पर डाल जो तुम्ह तक पहुँचाता है ।

मुझे दोनों जहानों के प्रलोभनों से छुटाकर अपनी खोज में मतवाला बना दे ।

तूने बहुतों को उवारा है । मुझे भी उवार ले ।

(२)

मन हेचम व कम जे हेच हम वित्यारे ।
 अज हेचो कम अज हेच न आयद कारे ॥
 हर सिर कि जे असरारे हकीकत गोयम ।
 जानम न बुवद वहा वजुज गुफ़ारे ॥
 दर आलमे क़क़ बेनिशाने औला ।
 दर किस्सए इश्क़ बेजवाने औला ॥
 जौकस कि न अहे जौको असरार बुवद ।
 गुफ़न वतरीके तर्जुमानी औला ॥
 सुफ़न गौहरे चन्द कि रौशन खिर्दआँ ।
 दर तर्जुमए हदीसे आली सनदआँ ॥
 वाशद जे मने हेचमदाँ मोतमिदाँ ।
 ई तोहफ़ा रसानन्द वशाहे हमदाँ ॥

(३)

ऐ आँके वकिदव्लए बुताँ रुस्त तुरा ।
 वर मरज चेरा हिजाव शुद पोस्त तुरा ॥

(२)

मैं अकर्मग्य हूँ और बहुत से अकर्मग्य मनुष्यों से गया बोता हूँ ।
 साधारण और निम्न श्रेणी वालों का कार्य उसी श्रेणी वालों से नहीं सरता ।
 मैं रहस्यों को कहता अवश्य हूँ परन्तु रहस्य उद्घाटन करने वालों में से
 नहीं हूँ ।

प्रेम के मार्ग में यदि लन्यास ले तो उसमें ग़म नाम रहना ही उत्तम है
 और प्रणय की कथा कहने में ग़म ही बना रहना उचित है ।

दिल दर पग ईनों आँ न नेकूस्त तुरा ।
यक दिलदारी वसस्त यक दोस्त तुरा ॥

(४)

ऐ दर दिले तू हज़ार मुशकिल जे हमा ।
मुशकिल शवद आसूदा तुरा दिल जे हमा ॥
चूँ तफ़्फ़ुग़ दिलस्त हासिल जे हमा ।
दिल रा व यके सियारो वगुसिल जे हमा ॥

मादाम कि दर तफ़्फ़ुग़ वसवासी ।
दर मज़हबे अह्ने जमा शर्ननासी ॥
वदह कि नई नास बले नसनासी ।
नसनासिए खुद जे जेहल मीनशिनासी ॥

ऐ सालिके रह सखुन जे हर वाव मगोए ।
जुज राहे वसूले रवेअरवाव मपोए ॥
चूँ इल्लते तफ़्फ़ुग़स्त असवावे जहाँ ।
जमईअते दिल जे जमये असवाव मजोए ॥

उसने किसी को दो दिल क्यों नहीं दिये हैं ? इसमें भी भेद है । यदि तेरे एक ही दिल होगा तो तेरा मुकाब भी एक ही तरफ़ होगा ।

(४)

ऐ मनुष्य ! इन बहुत सी वस्तुओं की तरफ़ ध्यान आकर्षित करने से तेरे हृदय में बहुत सी कठिनाइयाँ आ उपस्थित हुई हैं । तेरा हृदय इन्हीं कारणों से विपत्तियों का केन्द्र हो रहा है ।

जब इतने रहस्यों के कारण तेरा हृदय इस प्रकार व्याकुल हो रहा है तो उसे सब ओर से हटा कर एक ही तरफ़ लगा ।

जब तक तू प्रेम और विश्वास में संलग्न रहेगा तब तक तू लोगों की दृष्टि में बहुत चुरा जचेगा ।

ईश्वर की शपथ, तू मनुष्य नहीं वरन् राक्षस है । परन्तु अपनी मूर्खता के कारण तू यह भी नहीं जान सकता कि तू राक्षस हो रहा है ।

ऐ पथिक ! तू अन्य प्रकार की बातों को न सोच और उस भक्तवत्सल तक पहुँचाने वाली सीधी राह को छोड़कर कोई दूसरा मार्ग ग्रहण न कर ।

जब सम्पूर्ण सांसारिक वस्तुएँ दुःखदायिनी हैं तब तू केवल एक ही वस्तु से लगन क्यों नहीं लगाता ।

तू जुझवी हक कुलस्त गर रोजे चन्द ।
 अन्देशण कुल पेश कुनी कुल वाशी ॥
 जामेजिशे जानो तन तुई मकसूदम ।
 वज्र मुर्दनो जीस्तन तुई मकसूदम ॥
 तू देर बेजी कि मन बेरकम जे मियाँ ।
 गर मन गायम जे मन तुई मकसूदम ॥
 कै वाशदो कैलिवासे हस्नी शुदा राऊ ।
 तावाँ गश्ता जमाले वजहे मतलक ॥
 दिल दर सुनूवाते नूरे ऊ मुसतहलक ।
 जाँ दर गलवाते शोके ऊ मुसतगरक ॥

(१०)

रुख गर्चे नमो नुमाई तो मरा सालहासाल ।
 हाशा कि बुवद मेहे तोरा बीमे जवाल ॥
 दारम हमा जा वा हमा कस दर हमा हाल ।
 दर दिल जे तू आरजू व दरदीदा खयाल ॥

ईश्वर अंशी है और तू अंश है । यदि कुछ दिनों तू अंशी (उसी कुल) की धुन में लगा रहा तो फिर उसी के स्वरूप को प्राप्त कर लेगा ।

प्राण और शरीर के पारस्परिक सम्मिलन में भी तू ही मेरा अभीष्ट है और मृत्यु तथा जीवन का भी तू ही अभीष्ट है ।

तू बहुत दिनों तक जीवित रह । मैं तेरे बीच में से निकल गया हूँ । अब यदि मैं अपने को "मैं" कहकर बोलता हूँ तो उससे तेरा ही आशय निकलता है ।

वह दिन कब आवेगा जब मैं अपने अस्तित्व के इन प्रकट बख्तों को फाड़ कर उसी प्रकाश में लवलीन हो जाऊँगा ।

उस समय मेरा दिल उसके रूप के प्रकाश में मिलकर विलुप्त हो जायगा और मेरे प्राण उसकी चाह के दरिया की लहरों में डूब कर विलीन हो जायँगे ।

(१०)

तू से तूने मुझे
 तेरा प्रेम मेरे

दिलखलाया है, परन्तु इससे यह
 हो जावे ।

होऊँ तू मेरे हृदय के अन्दर
 तू के सम्मुख सदैव तेरा ही

(१३)

तीक्ष्ण वडोर्के गुक्तिण सादो मौर ।
 तत्तलीमे दिला अज नयजोके ऊस्त नौर ॥
 रम्जे जे निहायन मुक्तगाते तुयूर ।
 मुक्तम वतो गर फण कुनो मंतिकेतेर ॥

(१४)

ऐ कुलबुले जाँ मस्त जे यादे तो मरा ।
 वै मायण राम पस्त जे यादे तो मरा ॥
 लज्जाने जहाँरा हमा दर पाण किगन्द ।
 जौके कि देहद दस्त जे यादे तो मरा ॥

(१५)

वर ऊदे दिलम नवाखन यक जमजमा इस्क ।
 जाँ जमजमा अम जे पाण ता सर हमा इस्क ॥
 हक्का कि व अहददा नयायम वेहँ ।
 अज ओहँदए हक गुजारीण यकदमा इस्क ॥

(१६)

ऐ ईश्वर की खोज करने वाले ! तुम्हें इस मार्ग पर चलने के लिये उसे छोड़कर सभी वस्तुओं से दिल को हटा लेना है ।

मैं तुम्हें पर सन्यासियों के अग्निम पद का एक रहस्य प्रकट कर रहा हूँ । यदि तू उनकी बात समझता है, तो इसको भी समझ जा ।

(१७)

कि हे मेरे प्राणों के भवामी तेरी स्मृति में यह हृदय मनवाला हो रहा है और शोक की पूँजी घटने लगी है ।

तेरी याद में जो आनन्द मुझे प्राप्त होता है उसने तमाम ससार के मज्जों को अपने पैरों से रौंद डाला है ।

(१८)

मेरे हृदय रूपी सितार पर प्रेम ने एक ऐसी गति वजा दी है, जिसके प्रभाव से मैं सर से पैर तक प्रेम ही प्रेम हो गया हूँ ।

सच तो यह है कि मैं सहस्र मुख से भी प्रेम को पूर्णतया धन्यवाद देने में सफल न हो सकूँगा ।

(१६)

या मन वहवाका विलरुहे समेहतो ।
हम फौक़िओ हम तहतियो ना फौक़ो न तहत ॥
जाते हमा जुन्न वजूद कायम ववजूद ।
जाते तू वजूदे साजिजो हस्तिए बहत ॥

बस बेरंगस्त चारे दिलखाह ऐ दिल ।
काने न शवी बरंग नागाह ऐ दिल ॥
अस्ले हमा रंगहा अजाँ बेरंगस्त ।
मन अहसना सिवरातम मिनहाहए दिल ॥

(१७)

हस्ती बक़यासो अक्ले असहाये क्यूद ।
जुन्न आरिजे आयाँनी हकायक़ न ननुद ॥
लेकिन चमुकाशकाते अरवाये शहूद ।
आयाँ हमा आरिजन्दो नाहन्न वजूद ॥

(१८)

वा गुल रुखे खेश गुफूम ऐ गुंचे देहाँ ।
हर लहजा मपोश चेहरा चूँ अश्वा देहाँ ॥
जद खन्दा कि मन वअक्से खूवाने जहाँ ।
दर पर्दा अयाँ वाशमो वे पर्दा नेहाँ ॥

रुखसारे तो वेनकाव दीदन न तवाँ ।
दीदारे तो वेहिजाव दीदन न तवाँ ॥
मादाम कि दर कमाले इशाराक बुवद ।
सर चश्मए आकाव दीदन न तवाँ ॥

खुशीद चू वर फलक जनद रायते नूर ।
दर परदा तू वो खीरा शवद दीदा जे दूर ॥
वाँदम कि कुन्द जे पर्देए अत्र जहूर ।
फनाजिरो इल्महो ईलैहे मिन गैरे कुसूर ॥

(१९)

दामाने गिनाए इश्क पाक आमद पाक ।
जालूदगिए वजूदे वा मुश्ते खाक ॥

(१८)

मैंने अपने गुलाब के से मुखवाली प्रियतमा से कहा कि ऐ सुन्दरी ! तू मानिनियों के समान अपने मुख को सदैव छिपाये न रखा कर ।

उसने हँस कर उत्तर दिया कि मैं तो संसार की अन्यान्य प्रेमिकाओं से विल्कुल भिन्न हूँ । मैं पर्दे के भीतर साफ दिखलाई देती हूँ, परन्तु उसके बाहर छिपी रहती हूँ ।

जब तक तेरे मुख पर नकाव न पड़ा हो उसका दिखाई देना असम्भव है । और तेरी सूरत बिना पर्दे के दृष्टि में ही नहीं आ सकती ।

जिस समय सूर्य, अकाश में पूर्ण रूप से प्रकाशित होता है, उस समय उसका देखना नामुमकिन है ।

यदि तू पर्दे के भीतर भी हो तब भी पूर्णरूप से प्रकाशित देखने में, तेरी आँखें दूर से ही चौंधिया जाती हैं ।

परन्तु, इसके विपरीत जब वह बादलों के अन्दर होता है तब सरलता से देखा जा सकता है ।

(१९)

प्रेम का अश्वल विल्कुल पवित्र और अदाग है । वह किसी पर अवलम्ब नहीं है । उसका अस्तित्व एक मुट्ठी धूल के साथ सम्बद्ध नहीं हो सकता

चूँ जल्वागरो नज़ारगाए जुम्ला खुदस्त ।
 गर मा व तू दर्मियाँ न वाशेम चे वाक ॥
 हर शारों सिफ़त कि हस्तिए हक़ दारद ।
 दर खुद हमा मालूमो मोहक्क़क़ दारद ॥
 दर जिम्ने मुक़य्यदात मोहताज वख़ेश ।
 अज़ दीदने आँ गिनाए मुतलक़ दारद ॥
 वाजिव ज़े वजूद नेको वद मुसतग़नीस्त ।
 वाहिद ज़े मरातिबे अदद मुसतग़नीस्त ॥
 दर खुद हमा रा चू जावदाँ मी वीनद ।
 अज़ दीदने शाँ वुरूँ ज़े खुद मुसतग़नीस्त ॥

वह सब को प्रकाश और पवित्रता प्रदान करने वाला है। यदि हम और तुम दोनों उसके बीच में न रहें तब भी उसकी कोई हानि नहीं हो सकती।

उसके लिये किसी ऐसे मध्यस्थ की, जिसमें होकर वह अपने आपको प्रकट कर सके, आवश्यकता नहीं है। प्रेम एक ऐसी वस्तु है जो ईश्वर के सभी गुणों और विशेषताओं में वर्तमान है।

फिर उसको क्या पड़ी है कि वह अपने आपको अन्य वस्तुओं द्वारा प्रकट करे।

उसको उचित और अनुचित, भले और बुरे कियों की भी परवाह नहीं है। उसको प्रतिष्ठा और उसके दर्जों की कोई चिन्ता नहीं है।

जब वह सब को सदैव अपने अन्दर ही देखता है तो फिर उसको अपने से बाहर देखने की उसको क्या परवाह है ?

पृ० ८—संसूर हल्लाज : एक बहुत बड़े सूफी भक्त थे, जिन्होंने घोषित किया था कि 'मैं सत्य हूँ।' उनके ऊपर धर्म-विरोध का दोष लगाया गया और ऐसे निडर वाक्यों को कहने के कारण उनको फांसी की सजा दी गई, क्योंकि उलमाओं की राय में ऐसे वचन इसलाम धर्म के विरुद्ध थे। सूफी उनको बहुत पूज्य और प्रतिष्ठित समझते हैं और महान सिद्ध पुरुष की तरह मानते हैं।

पृ० १०—याकूब : एकक के पुत्र और एक सिद्ध पैगम्बर थे जिनका हवाला कुरान में 'कुल के प्रधान' की तरह दिया गया है। वह यूसुफ के पिता थे।

पृ० १०—यूसुफ : कुरान में विस्तृत विवरण दिया हुआ है। "जामी" ने इनको प्रेम कहानी को अपनी पुस्तक 'यूसुफ व जुलेखा' में अमर बना दी है। वे अपनी शुद्धता के आदर्शों के लिये प्रसिद्ध हैं। एक बार जब वह अपने पिता और भाइयों सहित मिश्र जा रहे थे तो उनके डायी भाइयों ने उनको एक कुएं में डुकेल दिया, किन्तु वह बच गये। बाद को मिश्र की शाहजादी जुलेखा का उनके प्रति प्रेम हो गया। जुलेखा बुराई की ओर उन्हें ले जाना चाहती थी, किन्तु उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस पर उनको कैदखाने में बंद कर दिया गया। जांच करने के बाद वह निर्दोष पाये गये, और छोड़ दिये गये।

पृ० ११—करहाद व शीरी : करहाद एक महान प्रेमी था, जो शाहजादी शीरी के प्रेम में फंस गया था। शीरी ने उसकी बहुत कठिन परीक्षा ली जैसे पहाड़ में से नहर निकलवाई। लेकिन उसने उस कार्य को पूरा किया। किन्तु शीरी ने अपने वादे को पूरा करने से इन्कार कर दिया। तब उसने अपनी आत्महत्या कर ली। अपने सच्चे प्रेमी की मृत्यु को सुनकर शीरी ने भी अपने प्राण त्याग दिये। "निजामी" ने अपनी कविताओं से इस घटना को अमर कर दिया है।

गुफा का मुंह बंद करवा दिया लेकिन उनको रास्ता मिल गया और उनकी कोई हानि नहीं हुई और अद्रुत रूप से बन गये

- पृ० २१—अफलातून : यूनान का एक बहुत बड़ा दार्शनिक था ।
- पृ० २२—कार्थः : मूसा पैगम्बर के देश का था । वह अपनी सम्पत्ति के लिए प्रसिद्ध था । मूसा के विरुद्ध विद्रोह करने और अपनी दौलत वमण्ड के कारण उसको सजा मिली ।
- पृ० २२—जैहूँ : स्वर्ग-लोक की एक नदी का नाम है ।
- पृ० २८—इब्राहीम : छे पैगम्बरों में से एक हैं, और ' परमात्मा के मित्र ' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं । ईसाई, मुसलमान और यहूदी तीनों इसको अपने पैगम्बरों में से मानते हैं ।
- पृ० २८—इसराफील : एक स्वर्गदूत है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह प्रलय के दिन तुरही बजाकर मरे हुए लोगों को जगावेगा ।
- पृ० ३३—जुलकरनैन : यूनान का सम्राट, सिकन्दर : कोई बहादुर पुरुष जो इब्राहीम के समय में रहता था ।
- पृ० ३५—फिरऔन : मूसा के समय में मिश्र का बादशाह था । वह लाल सागर में डूब कर मर गया ।
- पृ० ३५—सलमान : अली के मित्र का नाम ।
- पृ० ६२—क्यामत : प्रलय ।
- पृ० ६३—जुब्बा : सर का पहनावा ।
- पृ० ६३—सूफ : ऊनी लवादा जो सूफी पहनते हैं ।
- पृ० ६३—सीमुर्ग : एक चिड़िया ।
- पृ० ६५—लुकमान : एक बहुत बड़ा दार्शनिक जो अपनी बुद्धिमत्त के लिये मशहूर है । यूनानी उसको एसाप कहते हैं ।
- पृ० ७०—तयम्मुम : जहां पर नमाज के वज्र के लिए पानी नहीं मिलता है, वहाँ मुसलमान नमाजो वालू का प्रयोग करते हैं, जिस क्रिया को इस नाम से पुकारा जाता है ।
- पृ० ७५—तरसा : मूर्तिपूजक : ईसाइयों को भी इस नाम से पुकारते हैं ।
- पृ० ७६—दफ व चंग : वाजों के नाम ।
- पृ० ८३—जिवराइल : स्वर्ग का दूत, जिसके द्वारा मुहम्मद साहब पर कुरान उतारी गई : कभी २ ईसाइयों के पाक दूत को भी इस नाम से बतलाया गया है ।
- पृ० ८६—खुतवा : शुक्रवार की प्रार्थना । इसकी महत्ता यह है कि पैगम्बर अकसर इस दिन उपदेश किया करते थे ।

